অথ কাশীখণ্ড।

পুরাণ

-

বড়ানন বক্তা ও আগন্তামূনি লোভ।।

बीदुक बनागम आरम्ल

अधिका मियांनी

গ্রাপুত নীভানাথ বসু মন্ত্রিক কত্ত্ব

প্রাকাদি ছেন্দে নির্চিত হ'বা

ক্ৰিকাড়;

मन्मित्र विकास मार्थिक में मार

क्र अक्रा १८७५३ त्याप

4 M + 4001

म्हीभव !

-

প্ৰবৃণ	,	পূ ৰ্কা
राष्ट्राद वापना ४ मश्टात्वव	িবিশর্মার যায়ুপুর দরশন	ş 1
रह कि		29
विद्यार्शित इकि निवतन मौत्रम	निजनमात वसन्य । पत्रभम	\$49
भूर ^१ र	निवभाषात्र सक्ता पुरी प्रयभन	i9
লোবায়ুদ্রা মৃতীয় প্রাণ্ড	नियममात्र दूषटलाकः वतमन	Ş₩
শিশ্বাপ নিতের দর্শসূর্ণ এবং আগ-	मि रममान खक्तभूवी महमन	7.3
ত্ত্রনির দক্ষিণ্ডির গমন ৫	भिवभन्तींद्र मन्नद्याक माना	1
प्रशास्त्रामिक ईश्महालक्षीवस्त्रिक १	শ্নিপুরীর র হাস্ত	4
रेम्हाभन्ग छ याहाड जनसाहक	ণপ্রথমির রুম্বার	20
गणात करी छेलादमण (मन क	ক্ৰ ৰোপাখ্যান	Ą
ाथमः अर्थः नभाषः 🔭 🔏	মহলোক কথন	. ,
	रेरकु% वर्गन	20
~11744	শিষ শর্মার মুক্তি	42
	कि डोज कर्नः गग शः।	Q١
শিব শশা্র বিশ্বন	7,4-7,7, 7,1-1,1	
ও গাসিত তুক্র াবিত মলুবাদি-		
াত্ৰসপুরীতে ভোলের বিবরণ ১ং		
१६४ मध्यात्र जन्मताश्रुति कर्मन ५१	नगण्डा कार्डिट्यन : श्वाम	88
ि" व मर्फाइ श्रद्धा रणां के प्रशंभ वे	या । भूख कथ्म	84
	महाविष्ट्र जातीयमायनिकृति द्वयम	8.
भिष्णमंत्र व धारि श्रीम महासम् ३६	संस्थान	8< 0.
िक्षणात रेमश्र १८६ म संसम ।	कानी निर्मान क्यम ७ शका	u.
रिश्तनपात वक्पश्रती मत्रभम देश	निहास	১ই

क्रुडीशब ।

প্রকরণ			প্ৰ
ধনজ্য গণিকের উপাধ্যান	ga	প্রস্থাক বিবরণ	5-4
কান ৈ নববের উপা খ্যান	63	বৃদ্ধার্ক কথন	3.58
मख्यानि देशायाम	63	কেশব আদিতা কথন	> 9
कानवाशीय माध्या	७२	বিষ্টার্ক বি বরণ	204
स्ट्लाहनात् छेलाशान	ಶಿತಿ	গঙ্গাদিতা ও यमापिত। कथन	À
ভুতীয় স্বৰ্গ: সমাপ্ত:।	'nй	यके कर्भः नमालः।	306
नम्हित कथम	৬৭	্ৰদার কাশী জাগমন	55
म ्जी त लग्ह न	45	ক্ত গণের কাশী গমন	22.
বিবাহ নিৰ্ণয়	98	ৰপদ্দীশ্বর ক'ন	\$54
গুন্থছর নিজ্যকর্ম	(a)	পিঙ্গলাক্ষাদি গণের নিঙ্গ কথ	# 775
महारमस्वत मगात शरीफ शमा	म् १७	গণেশের কাশী গমন	>> ¢
एक थे उसे श्रमासः।	` 4b	কাশীতে বিষ্ণুর আগমন	325
		বৌদ্ধনত প্রচার	755
mbh 7 str.		निवमादगत भिक्तां।	ડે રફ
		निसम चर्नाः नमासः ।	>20
अविद्वा कथ- ७ एकर उक			
বিধি	4 12		
বাণপ্ৰাস্থ আগ্ৰেম কথন	7:		
णा घाट्यांशं कथन	₩ ₹	शक्षतमी जीर्थ कथन धवर छह	可行
भृका लक्ष	かん	हम উপাशान	\$ ₹ @
षिवमार्गंत दोला मानन	75	विक्र नीयन छेशायान	15%
अङ्गादिक रयाशिमीत कानी शमन	78	आहि किनवानि दौर्य कथन	300
क्षामः अर्थः नमान्यः।	98	মণিকৰিকা কথ্স	1.63
		্কশবের চতুবিংশতি মৃত্তি	
- Commission of the Commission		344	, °. 2.
	,	पश्राद्यंत कानी शामनन	333
प्राचीत कानी गमन	86	কপিল জীৰ্থ কথন যোগী যৰ্কেশ্বৰ কথন	> 54
यूह्यकात छेत्राचान	'	খোগা যদেশ্বর কথন	508
17,7 11	, %	কণ্ডধাত উপাধান বিস্তাতকপাল উপাধান	383
		ावहार्क्याम प्रभाग	78:
गक्रेंटलयत छेन। थानि	7 6.5	हिमालत शिंउ स्नकांत कथ	∯ ¼ .

স্চীপত্র।

er#76	•		পূৰ্তা
প্রকরণ ১৯৯৯ ১৯৮৮	288	কামেশ্বরোপাখ্যান	~
শৈলেশ্বর উপাধ্যান	389	বিশ্বকর্শেশ্বরোপাশ্ব্যান	
রত্বেশ্বর উপাধ্যান	284	मक्तरमा ও मटकथ्दार्शिशीन	124
কলাবতী কনাার উপাখান	367	म्कोत मकालदा भगम	155
অষ্টম স্বৰ্গ সমাপ্তঃ।	3 4 3	एकर ५६ १४	२००
গল্পাসুরের উপাখ্যান	200	সেনকার গর্ভে সভীর ক্ষ	₹•8
হংসভীর্থ কথন	A	পার্বভীর বিবাহ	à
অন্তবৃত্তি তীর্থের জাগমন	5 6 9	হর পার্কভীর কাশী যাত্রা	₹• <i>¹</i> !
শক্তি স্থান কথন		एक अछि द त्रम्म	À
ছুর্গাস্কুরের উপাখ্যান	300	একাদশ স্থাঃ সমাপ্তঃ।	ə · q
নৰমঃস্বৰ্গ শ্ৰাপ্তঃ	7 23	अक्षाना व गर्भाखरा	4,11
		-3:8:0-	
		alt-fraguestations	
শিবলিক্ষের বর্ণনা	748	পাৰ্কতীশ্বরোপাখ্যান	5 .p.
প্রণবেশর কর্থন	7.66	গ্ৰেশ্বোপাখ্যান	•
पग नागक विष्णुत छेशांचान	223	সতীশ্বরোপাখ্যান	ફ° રુ -
ভেকিব উপাখ্যান	792	অমৃতেশ্বোপাখ্যান ও অনুধি	
ত্রিপিষ্ট পীঠ কথন	290	জের কথন	À
তিলোচনেশ্বর কথন	Ð	ं विषयादगत् कांगी यांजा छ	
পারাবভাধ্যান	242	ॅॅब्र अस	5;0
কেদারেশ্বরোপাখ্যান	395	ব্যাস কর্তৃক ভীর্য প্রসংশা চাম	71-
यटमत छ्रामा	à	য়ণ ব্ৰছ কথন	₹\$}
यरमत् वत् श्राशं ७ शकीतमुक्ति	196	্বাদের ভিক্ষাধারণ	१५8 -
ধর্মপীঠ উপাখ্যান	2F.7	কাশীভে ব্য:সের শাপ ও জন	•
ধৰ্মপীঠ নাহাত্মা	55 .2 · .	ভিক	714
দম রাজাত উপাখ্যান	-98	বাবের কাশী ভাগ	25km
দশমঃ স্বৰ্গঃ সমাপ্তঃ ;	21-Q	বছবিধ লিঙ্গ কথন	ð
**	!	রঙ্গমণ্ডে হরপার্কভীর গমন	ं २०६
	ا ا ر	कामण कर्णः मगास्तः।	२७४ -
ৰীরেশ্বরোপাখ্যান	e de la composición dela composición de la composición de la composición dela composición de la composición de la composición de la composición dela composición dela composición de la composición de la composición dela		
মুল্যাগিদ্ধানীর ভূতীয়া ব্রক	16.0		
वीत क्षणि महारम्दवत श्रेष	, השנ י	The state of the s	
क्शन	572	हिंछ स्हीशब मनावुड्या	
1 171 .		-	

बिधिकशी थराइनमे।

--3K5K---

অথকাশীখণ্ড৷

অথ গুরুদের বন্দনা এবং মহাদেবের স্থাতি।

প্রার। এগ্রন্থর পাদপ্র করিরা বন্দন: বাহার প্রদাদে ভব বন্ধন মোচন। অজ্ঞান তিমির নাশি বিদ্যার প্রকাশ। নাধনের মূপ সংস্রাতে বার বাস। বিশের <mark>মাধৰ চুণ্ডি আ</mark>র ছণ্ডপাণি। কালরাক্স গুহু গক্ষা বন্দিয়। ভবানী।। কাশী মণিকর্ণি কাশীবাদী দেবগণ। ভক্তি-ভাবে সকলের বন্দিয়া চরণ।। কাশীধাম ব্রজাণ্ডের সংস্রার স্থান : বিশেষর লিক্ষরণে গুরু অধিষ্ঠান।। গুরু স্থান কাশীধাম ২স্ত ভিন্ন নয়। ত্রিজগতে ভাহার তুলনা নাহি হয়। শিব তুলা কাশীংয় জান-मन्न त्रांनि। नमाभित शक्तकाल नमानत्म छानि॥ श्रद्धान त्रक्रश्राप রবিতে প্রকাশি। তার উর্চ্চে দশনথে প্রকাশিত শশী॥ ততি শোভা শুভ আভা তমগুণ নাশি। ব্যাশ্রহণ্ট পবিধান রুযোপর বসি। সর্বাময় লম্বোরর জন্মমাথা রাশি। হাড্মালা কণিজাল কঠে বিষ বালি।। বিশ্ব-মূল হস্তে খূল মৃদ্ধ মৃদ্ধ হাসি। ত্রিলোচন বিভূষণ ভালে কর্মেশী।। **ष्ट्रक् पृत्यु प्**त्यु करत धृष्ट्या ध्यत्रामी। क्रोडाडात शक्रारमवी मनाहे উল্লাসী। বামভাবে গৌরী সদা অন্নদাতা কাশী। বিশুন জিনিয়া কপ বর্ণেছে অতসী।। সদানন্দ সদা সুধে শক্তি সহ বাসি। ননি ভূজিগন সঙ্গে প্রেম অভিনামী॥ গর্ক ভীর্ষ সর্ক দেব স্থিতি বারাণসী। মুক্তি-দাতা সর্ক জীবে শিব পঞ্জোশি॥ কারণ হইতে স্থল স্কুল ৰূপ-ভাষী। যোগিগণ ধা**ন জন্য কম্পিত প্ৰকাশি।। সংধনেতে** িছি হৈলে কারণে প্রবেশি। এক বস্তু ভিন্ন নছে উত্তম ৰূপসী।। কাশী বাসী ত্তপা-निष्म सम्भाष्य यति । छोहात्र क्रभाष्ट छत्व कानीयश्च छाही । श्रीजानाथ বস্তুদাৰ অফিকা নিবাৰী। কাশীখণ্ড ভাষা রচি করিল প্রকাশি।।

কাশীখণ্ড।

অহারয়ঃ।

-348HE-

বিস্থাগিরীর রূদ্ধি বিদরণ নারদ সমাদ

প্রার। শিবা তরে শিব কহে কাশী বিবরণ। মাত্রেল বসি অন্ত আরু ল আবর্গ।। কার্ডিকের দেই কথা করে অগস্ত্যেরে। সেই কণা বেপ্রাল কর্ছন স্থতেরে।। কাশীখণ্ড পুরাণীয় এবট্ সংবাদ। সর্ব-শান্ত্র সারোদ্ধার অভুত আস্বাদ্যা প্রথম অধ্যায় বিদ্ধা নারদ সম্বাদ্য স্থাতেরে কহিল বাবে করিয়া আহলাদা। তীর্থ যাত্রা করিয়া নারদ তপো-ধন। নর্মালাকে স্নান করি বিদ্যা জাগমন।। বিষ্যা পর্বতের শোভা কে পাবে বৰ্ণিতে। জন্ধ লভা ফল ফুল জন্তু নানামতে।। নানদ দেখিয়া বিদ্যা প্রশাস করিল। পাদা ভর্মপুর্কি আননোত বসাইল।। পদ নেবা করি পুর করে প্রজম। শুভ জালাপন পরে করে উপক্রম। নানামতে স্তুতিবাদ করে বিরিবর। এক্সতেকোময় ভূমি পরম ঈশর।। তব পাদ-পদ্ম রক্ত পাইত: আমার। বুচিল চিত্তের ষত ছিল কথ্যকার।। মুনি আগনমে বিশ্বা মনে অভিয়াম। সংগাত্র নিন্দিয়া ফরে জাপনা বাধান।। ধর্ধির কালে কেল্ মোর ভুল্য নয়। শিবের শশুর এক মান্য দিমালয়।। এত শুনি নিশ্বাস ছাড়িল ভপোধন। কর্যোড়ে বিদ্ধা জিলাবির-त्रवा। कि एक छाक्ति। अन् सुनीर्घ नियोग। ना क्टेल कर कियो शुर्व অভিলাব।। মুনি বলে শুন গিরি আমার বচন। এক দিন সুমেরুতে ছিল আগমন।। আমার সাক্ষাতে েটা ভোমাকে নিন্দন্ন। ভোমাকে (पश्चित्र) महन एन कथा छेम्य । कामि यन करन जात किया जारह हु:स। বিশাস কারণ এই কহিল সমাুখ।। এই মতে আলাপ করিয়া মুনিবর। विषाप्त क्रेंग्रा लिल रेक्कुं नगत्।। सूनित्व विषाप्त करि विद्या महामिछ। নানামতে আল্লাকে নিনিবেক অভি। থিক মোর জীবন যৌবন পরাজ্য। खाँ जि रेहरक भहां खत्र मा तरह मध्या। भूरमक भर्तिक भन्ते थर्क अति किरम। नर्कमा मरमर्छ एक्म छिखिल विस्मरम।। निकामिति সমা মনে উপায় ভাবয়। ভূমেক্লকে কি ৰূপে করিব পরাধ্যা। সুমে-ক্লকে প্রদক্ষিণ করে দিবাকর। এইত গৌরব তার তালিব সম্বর।। যে बार्श क्रार्रात हमाहण माहि ६४। कृतिय अमन हहसी खाविन कारत ।।

দ্বিতীর অগার বিদ্ধা বাজিল বিস্তর। রুদ্ধ হৈল যেই পণে চলিবে हाक्टर ।। सूर्या श्रथ कति ताथ विकाशितितता । कुर्जार्थ रहेन एम कामिन प्रस्तत ॥ कञ्करन इंहरवक डोब्स जिम्ह । जीविया बाकून विश्वा बाकून रुष्य । त्रजनी প্রভাত দিবাকরের উদয়। भूवन भौवन मान कति प्रश्न-শ্রা। এক চক্র রথখান অক্লণ নার্থি। সপ্ত ক্র টানে রথ চলে শ্র-রতি।। কত পথ ছাড়াইয়া ভাইল সম্বর। জামিষা ঠেকিল যথা বিধা-जिबियत । श्रथ ना शाहेग्रा कानाईएलक मार्दाथ । स्थका कवि वर्षमान বিদ্ধা মহামতি।। রথ পথ রুদ্ধ করিয়াছে বর্তুমান। দাঁডাইল বোড়া চলিবার নাহি স্থান। নিনমণি এত শুনি হইল বিস্ময়। একি অন্যন্তব সর বিধি বিপর্যায়।। একক আকাশে কিবা করিব উপায়। স্থকিত হইয়া ভাবে না দেখি সহায় ।। দ্বিসহত্র দ্বিশন্তক যোজনের পথ । নিমি-ষাকে ছাড়াইয়া যায় যার রথ।। বন্ধ হৈয়া পথে তেঁহ রহে কভকাল। অক্রলে ব্রহ্মাণ্ড সাঝে ঘটিল জঞ্জাল।। পশ্চিমে রক্তনী সদা পুরের সদা मिन। (यम विधि कियाका**धः इटेलक दी**न। सूरासूत सद्भाग इटेल কম্পিত। ঘটিল প্রমাদ অতি একি চমকিত।। দৃটি লোপ হ্য দেখি যত দেবগণ। একতা হইয়া চলে ব্রহ্মার সদন।। ভূমে পড়ি গোড় করে প্রণাম করিয়া। নানামত স্তুতি করে ভক্তিভার হৈয়া। ভূমি আদি ভাষাদি বিধান। নৃষ্টিকারি। জগৎ পালনকারি মোহনমুগারী।। সংহঃ রক জগতের তুমি তিপুরারী। সৃষ্টিরক্ষা কর প্রভু হইয়া কাণ্ডারী।। স্তুতিবাদ করি কহে বিশ্বা বিবরণ। রুদ্ধি বিশ্বা দরে সূর্য্যপথ নিবারণ ।। শুনিয়া দেবতা বাক্য করিয়া স্বাস্থাস। উপদেশ কছে ত্রন্ধা মুখে মৃত্যুবাস ।। কাশীবাসি তপত্তী অগস্থা মহায়ুনি। যাহ তথা এই কাৰ্য্য মাৰিত্ৰেন তিনি 🕫 পিতানত মুখে শুনি অগন্তা সম্বাদ। দেবগণ মনে বড় হইল অভ্লোদ।। वामनात खडिमात्र कामीभूती लाख । अकार्या माधन खात कार्यक धडाव ।। প্রণাম করিয়া সবে হইয়াবিদায়। কাশীপুরী উদ্দেশিরা চলিল স্থ্যায়।। তৃতীয় অধ্যায় তবে শুন বিবরণ। আইলাদ হইয়া চলে যন্ত দেবগণ। পথে পথে নিক্জাগ্য প্রশংসন করে। ছবিজে মিলিচহইল মণিকণি ভীরে। স্লান করি হরিক্ষরি ক্রিয়াকাণ্ড করি। বিধেশ্বর দরশন করে বাঞ্জাপুরি।। ক্রমে ক্রমে সব ভীর্থ করিয়া ভ্রমণ। মিলিল সম্ভরে ঘথা খ্রানর আশ্রম।। স্নিষ্ণভরু তৃণ লতা শাস্ত জন্তুগণ। মুনি শিষ্য বিশিষ্নাছে করিয়া বেইনিয়া अप्र अप्र अभ कवि (एवण) नमाअ। खेरळः यत् तरम प्रभा कत्र प्रनिवाद्य।।

কালীখণ্ড চ

নানামত হাতি কৰে দত দেবগং। সম্ভাষ করিয়া মুনি দিলেন আদন। প্র-ভ্যাকে প্রণান করি আদনে বদিল। আগমন কারণ অগস্তা জিল্জাদিল।। ভবে বৃহস্পতি কথে হেরি পুরন্দর। ইঙ্গিতে বৃঝিয়া গুরু করয়ে উত্র।। ইন্দ্র আদি দেবের প্রভাকে পরিচয়। অগস্তাকে কহিলেন গুরু মহাশয়।। চতুর্থ জগারে লোগামুদ্রার প্রস্তো। স্তী পতিব্রতাধ্যা বণে নানারকে।।

লোপায়ুদ্রা সভীর প্রসঙ্গ।

পয়ার। লোপামুদ্রা পভিত্রকা পতি আঞাকারী। পতিসেকা নিযুক্ত নতত সদাচারী।। পতি সুখে সুখী পতি ছাংখে অভিমানী। ছাংগ মেন পতি সঞ্জে ্রণ জারিনী।। বাহির নাবিক কারো প্রতি নাতি জান। প জি ও পরম জ্ঞান মনে করে খ্যান।। ত্রন্ধা বিশ্ব শিব জ্ঞানি যত গেলেগ।। প্তির অধিক নাহি হয় কোন জন। প্রতির চরগোদত নিজ্য করে পান। পতির উচ্ছিন্ট মাত্র ভোজন বিধান। তব পদ্ধী গুণ কক করিব বিশ্র। বভারণা শ্বিত্রী ভাহার সদ্ময়।। বস্বা কহিব ভব মহিমা অপার। নত। পত্রী জনে হয় পতির নিস্তার ॥ খনপি পুরুষ পাপ জ্যাজনেয়ে অতি। সভীর ুলেতে প্রতি লভয়ে সুগতি।। সতী প্রতি প্রে নাছি মম অবিভার সতী সঙ্গে প্রতিবা**কে বস্**তি তাহার।। বিল হৈতে বলে যেন বাদিয়া ভূল ক্র**ল। উদ্ধার কর্মে ধীর ক**রিয়া **আতক্ষ** । সেই মন্ত পজিল্লভা মর্ম খইতে উদ্ধার করিয়া প^{্র} সসয়ে স্বর্গে**ডে।** পিন্নু মান্তু পতি তিন কুলের উদ্ধার পতিলভা ফলে হয় শাস্ত্রের বিচার। পুহুজের ধর্মে কর্মে ভার্য্য হয় মূল । ভার্ম। বিনা গৃহস্থের নাহি অন্তক্ষুল।। ভার্য্য বিনে যক্ষ আদি কর্মা আধিকার भुइएक्टर नर्तेष्ट्र इस भारत्व प्याह्य नाव।। कर्भवरण यस्त्रि विषया दश मातौ বাবত জীলন মুম্ন জুংখ অধিকারী।। আহাবের **অপ্পতা করমে ক্রমে** ক্রমে শাক পীক তিনিত খাইয়া রাখে প্রাণে।। বৈশাগ কার্ত্তিক মাথ পুণ্য তিন মান। বিশেষ আয়ম ভাতে করিবে প্রকাশ।। বৈশাখেতে জলছত্র নিবেক নিএড। জল ভাত্রশুকু বস্ত্র ছত্র আদি যত।। যথাশক্তি ভালাণেতে করি-বেও ৮৯। কার্ত্তিকে বিশেষ জান প্রদীপ প্রদান।। ব্রাহ্মণ ভোজন মাঘে আর প্রাভঃস্থান। বিহিত সকল কর্ম্ম করিকে বিধান।। বিধবার কেশবক্ষে পতির বন্ধন। অতথ্য কলিকে চিকুর মুগুন।। খড়া আরোহণে হয় প-

তির পতন। তেকারণে করিবেক ভূমিতে শ্রন। সদাচার আচরিয়া পাকে সর্বাক্ষণ। পুত্র অভিমত কর্মা করে আচরণ।। এইন্যথে করি নারী নৈবভা পালন। পতিলোকে পতি সঙ্গে পান্ন দরশন।। শীল ভঙ্গে পতি সঙ্গে নবকে প্রভন্। প্রতিবাক্য লজ্ঞানেতে নরকে গমন।। জ্রোপ মুখে প্রতিকে त्य कृत्य छेत्रद । सूनांनि कृत्रुती किना इस स्थाएत ।। शकि मनःशीए। করি বাজা থেবা কছে। পেচক হইরা রুক্ষ কোঠরেতে রহে । ভর্ত্তার ভাড়নো ভারে চাংহ ভাজিবার। বাাঘ্র কি বিডাল যোনি লাভ হবে ভার ।। পাত পরিত্যাগ করি অন্য করে মতি। শুকরী বাছরী কিবা হয়ে ছুওঁ শুতি।। छक्षांत कतित्रा कथा करह एम श्रीखरत। (वांत) हरत जन्म मुर्द्ध नाका नाहि স্ববে। শপত্নীকে যেই নারী কেষ সদা করে। পতি প্রভবিধীনা হইবে জ্মা-স্তরে। পতি সঙ্গে বনি জন্য পুরুষ দেখায়। বিমুখী কৃষণা কালা হয়ে জন্ম লয় । কুল ছম্স করে নারী যদি কে।নমজে। তিল্লেছে একেকালে ফেলে নরকেতে।। প্রতিব্রহা পুণা কথা শুনি মুনিসর। বুহুস্পঞ্চি প্রতি ভূষ্ট হইখ अन्यत्।। **इत्या व्यान ७ क अधिनात्मत् कोत्यः। एक भारक श्**षिक्या को ४२ (८२ ্দবর্গণ।। যাচক হইয়া হেখা দেবতা আইল। বিস্কোন রুত্তান্ত মত গোড়া করিল। সৃষ্টি রক্ষা কর করি নিজে।র দমন। ্রান্ত বলি নিঃশব্দ হুইল দে বগ্ৰা। মুনি বিশ্বেষ্যৰ খ্যানে করি আলোচন। কহিল করিব বিক্ষা রুছি মিবারণ।। অস্পীক্ষত হৈল মুনি হানী দেবগণ। বিদার হট্যা গেল জাপন ভবন।। প্রথম অধ্যায় মুনি চিস্করে অস্তরে। বিশ্বেশ্বর বিমুখ হইল সম্ভ পুরে।। দেবতার চরিত্র কে বুঝিবারে পারে। ছল করি কাশ্য ছাড়া করিল आभारतः। लाशायुक्ता गरमाधित्रा कृतस्त्र विकाशः। खुनिक छन्छस्त हारी বিচ্ছেদ সম্ভাপ॥ অধিক: নিবাসি সীকানাথ বস্কুদাস। কাশীখণ্ড ভাৰা রচি করিল প্রকাশ।।

--

বিক্ষা পর্বতের দর্গচূর্ব এবং অগস্তা মুনির দক্ষিণদিগে গমন।

ত্রিপদী। লোপমুতা শুন কই, দেখ দেবরাজ তাই, গিবি পক্ষ করেছে ছেদন। দেখ অগ্নি দাবানলে, এ তিন ভূবন স্থলে, সুর্যা আদি আর দেবগণ।। অতি পরাক্রম বরে, ব্রহ্মাণ্ড নাশিতে পারে, বীর দর্পে কেহ নহে ভূবন। বিশ্বা রৃদ্ধি নিবারিতে: না পারিল কেহ তাতে, আহা বিধি হইল বিশুণ।। না রাখি কাহার দার, তপস্যাতে কাল থায়, প্রতি

সঙ্গে আছি কাশী পুরে। বিধির বিপাক তার, হইল বিষম দার, ফাশী ছাড়া করিল আমারে ॥ পণ্ডিতে শাস্ত্রেতে রটে, কাশী বাবে বি**ত্র ঘটে**, সাধু শান্ত জনে আৰশাক। ঘটিল আমারে তাই, বিভিত্ত ছোৰ নাই, जुमि दिखि नकल कालक।। लाशासुना हल य है, हैशटक छेशाम नाहे, বিমুখ হয়েছে বিশেষকরে। পড়ী সংস মুনিবরে, এতি দেব ঘরে ঘরে, বিলাপ করয়ে উটেচঃম্বরে !৷ আহা প্রস্থু কালরাজ, রাথ কাশীরাজ কায়, কিছুমাত্র না কর বিচার। কিবা অপরাধ মোর, কর কাশী হৈতে দুর; কুপালেশ নাহিক্ ছোমার।। আহা প্রভু দণ্ডপাণি, কাশীতে নায়ক ভুমি, মোর ভরে জইলা নির্দিয়। আহা ঢুভিগণরাজ, রাথ যুধরাজা কাষ, অবিচারে মোর দণ্ড হয়।। আহা বিশেশর ভূমি, বারাণ্সীপুর-স্থামী, কিছুমাত্র লাভিক শাসন। তোমার নগর কাশী, থাকে যার পুণ্যরাশি, সেই পায় শুভ দংশন।। মণিকণি স্নান করি, আদি নিতা তব পুরী। মধাশক্তি পুল্ল তব লিক। নিয়ম করিয়া কাশী, বাস করি হবিখ্যাশি, কি দোবে কবিলা ভাতে ভঙ্গ।। আহা অনপূর্ণা মাই, তোমাকে বলিয়া धारे, मीन हीत्न ना कविजा भग्ना। मञ्चते। विकते। आफि. स्वी आव দেব ন[া], ক্রমে সকলেরে জালাপিয়া।। সীমাচর ভূতগণ, জনে জনে সন্ত্রাষণ, কহিলেক কাশিয়**তে কাশ্যিতে। সন্ত্র্যানী তপত্তী থাষি, আর যত** কাশীবাসি, সন্তাৰ করিল ধরি ছাতে ॥ শুন কাশী দেবগণ, করি কিছু নিবেদন, সাক্ষি মাত্র থাকিবা ভোমরা। নিজ প্রয়োজন বশে, নাহি ছাভি হানীবাবে, কি করি যাতিল দেবতারা॥ পর উপকার তরে, কাশী ए। ए यारे पूरत, छेशकात करना कि ना करता मिर्वित खासान हिल, নিত অন্তি ভিক্ষা দিল, প্রাণম্ভ গণনা না করে।। চাহিলেন ভগবান, ত্রিলোক করিল দান, বলিরাজা পরম হরিষে। মধুকৈটভের শির, দিলেক হুইয়া স্থির, নারায়ণ ছেদিলেন শেষে॥ গ**রুড় পক্ষী**র রা**জা, বলে** দর্পে মহা তেজা, হইলেক বিষ্ণুর বাহন। তবে আসি তীরে বসি, পতি সঙ্গে মহাঝাষি, শিরে করে নীর অভাতাশান।। কহিছে চক্র তরে, দেখ দেখি কাশীপুরে, স্থানে স্থানে যে আছে মন্দিরে। তবে শিব শিব বলি, পতি গত্নী গলাগলি, করি কান্দে হইয়া জন্মিরে॥ ছুই কনে মোহ পায়, থাকে বক বকী প্রায়, কিছু কালে ছইল চেডন। পুনঃ শিব শিব বলি, बरल श्रित्त एल हिल, वंख्रे किंग दनवश्वना। हिलदलक खरलायन, थाल বহু ছনরন, কিরি ফিরি দেখে বারে বার। পত্তি পাছে নতী যায়, শরী-

রের ছারা প্রায়, অবলার নহায়, চমৎকার ।। হইয়া পাগল প্রায়, করে বৈসে ক্লুণে ধায়, করে কথে ফিরিব চায় । ছই তিন পায় চলে, শিব বিশ্বেশর বলে, বলে কাশী দেখি হেডা জায় ।। এই মতে চলে য়য়, মানত দেখয়ে কাশী, ক্রমে ক্রমে কোল বছ দূর । তপো যান আরোহণে, চলিলেক ক্রোধ মনে, বিল্লা গর্ক করিবারে চুর ।। নিমিষ অর্জেকে মুনি, বিল্লোর নিকটে পুনি, সভী সঙ্গে উপস্থিত হয় । অলস্ত জনল প্রায়, ক্রোধে চক্লু রাঙ্গা তায়, যম যেন দেখি লাগে ভয় ।। পত্নী সঙ্গে মুনিবত, দেখিয়া লাগিল তর, থয় থয় কাঁপে গিরিবর । অতি থকা হৈয়ে গিরিক ছই কর যোড় কয়ি, দশুবৎ প্রণামে সন্থার ।। আশীর্ষাদ করি য়ুনি, বিল্লাকে বলিল পুনি, আমাকে সন্থার জান ভূমি । থর্ক হৈয়া কতকাল, এইকপে থাক ভাল, যাবত না ফিরি আসি আমি ৷৷ এই বাকা বলি মুনি, দিকিণে চলিল পুনি, কাশীর বিচ্ছেদ ভ্রান্ত মতি । সীতানাথ বসুদাসে, কাশীরপ্ত ভাষা ভাষে, ত্রপদী রচিল তাতে ইতি ৷৷

পরার। কত দূরে পেল যদি মুনি মহাশয়। আপনাকে মনে বিদ্ধা প্রশংসা করয়।। জদ্য মোর পুনর্জনা হইল ভাগোতে। অভিশাপ না করিয়া মুনি গেল যাতে। জদ্য কলা পরশ্ব আসিবে মুনিবর। এই মাত্র চিন্তা করে গিরি নিরন্তর।। যদাপি না আইসে মুনি নাহি বাড়ে গিরি হইলে থলের ইদ্ধির থাকে দিল চারি।। বাল্যকালে বিধবার যেন পরো-ধর। উঠিয়া কদয়ে লয় হয় নিরন্তর।। দরিত্রের মনোরথ বেমত নিম্ফল। যে মত খলের মনোরথ যে সকল।। স্পর্কা করি পরে যেবা অতি রুদ্ধি হয়। সেই বৃদ্ধি দূরে পুর্ব রুদ্ধির সংশয়। পত্নী সঙ্গে করি মূনি কোলা পুরে গেল। মহালক্ষী দেখি দোঁহে প্রগাম করিল।। নানাবিধ স্কৃতি করি-লেন মুনিবর। কাশী বিরহের আলা মুচিল অন্তর।।

অগন্তা মূনি কর্তৃক মহালক্ষীর স্কৃতি।

লছ-ত্রিপদী। ভূমি নিরাকারা, ভূমি সে নাকারা, ভূমি সে সংসার সার। বভ ইভি সব, ভোমার বিভব, ভূমি সে ভবের ভার।। ব্রহ্মা ভব বঙ্গে, ভূমি করে রজে, ভূমি পরাপর ভারা। ভব সহকারে, হরি রক্ষা করে, ভূমি হরি মলোহরা।। ভব থোগে শিব, সংহারে এ মর, ভূমি ত্রিভুবন ভরা। নমনের কোণে, ছের ধার পানে, ক্রার্থ হয় যে তারা।।
ভুমি বায় জল, আকাশ অনল, ভুমি ধরাধর ধরা। অপার মহিমা,
কেবা পাবে সীমা, সর্ক ঘরে ভুমি ছিরা। ভোমার বিরহে, কিছু নাহি
রহে, এ সংসারে সব মরা। পুণ্য অভিশয়, ধাহার থাকয়, তাহার
নয়ন তারা। ভুমি লোকমাতা, সকল ছহিতা, ভুমি সে সকল দারা।
স্তুতি করি মুনি, রহিল অমনি, ভুনয়নে বহে ধারা।।

শৈল পর্বতে নাইতে অগন্তা মুনিকে মহাক্ষী উপদেশ দেন।

প্রার। স্তৃতি শুনি মহালক্ষী প্রসন্ধা হইলা। লোপাযুদ্রা আলি-ক্রিয়া তথা বসাইলা।। ভবে পতিত্রতাধর্ম করে প্রশংসন। সভীকে দিলেন দিব্য বসন ভূষণ।। ভাগস্তা মুনিরে **তবে বর দান করে। কাশী** বিরংহের **ছ**ংখ যাইবেক দুরে।। বেদবাসি হৈয়া পরে কাশী লাভ হবে। গল্পতি গুনহ ছাথে যেই মতে যাবে।। দক্ষিণে জীশৈল আছে দেব বড়ানন। ভাঁর সজে ঘাইয়া করছ দর্শন।। বাশীর মাহাত্ম কহিবেক ভোমা স্থানে। তাহা হৈতে হবে তব ভাপ নিবারণে ।। মহামুনি লক্ষ্মী मृत्यं शहिया छेशरमभा शङ्की-भटक मिक्करगरक करिन अदयभा। वर्ष অধ্যায়েতে মুনি দক্ষিণে গমন। পথে হৈতে হইল এটিশল দরশন।। 🛎 শৈল শেখর দেখি মুনির হৃদয়। সন্তাপ সুচিয়া অতি আনন্দিত হয়। তবে মুনি লোপামুদ্রা সংখাধিয়া <mark>বলে। জীগৈল শেখ</mark>র প্রিয়া দেখ কুতৃহলে।। চৌরাশী যোজন এই গিরির বিস্থার। প্রদক্ষিণ করি যদি শেথর ইহার।। আরোহণ করে মদি পুনর্জন্ম নাই। পতি মুখে শুনি হেন বলে সতী মাই॥ প্রাণনাথ কোন কথা জিজাসিতে চাই। জিঞানিতে পারি যদি তব আঞা পাই॥ পতি অনুমতি বিমানাহি কোন কর্ম। পতিত্রতা নারীর আছমে হেন ধর্ম। মুনি বলে বল যাহা বলিবারে হয়। সভীর বচন মনে খেদ কভু নয়।। পতি অমুমতি মতে নতী কহে বাণী। অভি বিলক্ষণ কথা কহিলা আপনি।। এইশল দৰ্শনে यांन श्रूनक्त्र नाहै। जत्र कान कानी हेम्हा क्यह शाँगाई॥ जनसा वर्णन क्षित्य कर अवधान। वाक्षा हैशत त्यहे भारत्वत्र क्षमान।। बकाख ভাওেতে তীর্থ নাড়ে-জিনকোটি। বিশেষিয়া কৃছিশুন তার পরিপাটী।। अल्लाम देन भिष कुझ एक ज त्य मधुना। कावकिका कारगाया कीरेमन जात

धर्ता।। चाता भन्ना मागतमञ्जम शामायती। कांकि मात्रा कांनी मिन्तू अवांश কাবেরী।। ব্রায়ক একেজ বদরিকা কালঞ্জর। সরস্বতী যয়না অসর। ভীর্থবর ।। সেতৃবন্ধ একামর জ্ঞীতন্দ্রদেখর। ভৃত্তকর্ণ ভৃত্তভুক্ত গোকর্ণ পুরুর।। গয়া গঞ্চা আদি ক্ত করিব গণন। বঙ্গেচপে কহিল বসু ভীর্য विवयत ॥ मानम औरर्गत अम कहि निवतन । त्वन भूतारगर वाहा करतरह গণন।। ক্ষমা সভা ইন্দ্রিয় নিগ্রহ ভূত দয়া। শম দম সভোষ আজয বাণী প্রিয়া। তপ্র্যা বিজ্ঞান আদি পরিসীমা নাই। তীর্থ যাতা বিধি শুন কৃহি ভোষা ঠাই।। পুরুষ দিন উপবাস করিবে নিয়ম। পর দিন প্রাদ্ধ করিবেক যথাক্রম।। ত্রাহ্মণ ভোজন করাইয়া তার পর। পারণ করিয়া যাত্রা করিবে সহর।। জান দান প্রান্ধ আদি তীর্থের বিহিছ। कतिरक कर्य यह रेश्या माविष्ठ । अहे मव कीर्य मिना विमुक्तित में। स ত্তে হবে কাশীলাত নিৰ্বাণ নিস্তার।। কৈমিনি স্মৃতিতে হেন সাছে নিরপণ। বরণা পিঞ্চলা আদি ইড়ানাড়ী ঘেম।। ভদন্তরে অবিমুক্ত কু वुधा य नाको। किन नाको कांनी भूती जानजबहाती॥ कानी भूदत जीए अह रवह तर भरत । श्रीनार्थ छात्रक खन्ना छेशरनम करत । छटन छीत इहेरतक মৃক্তির ভাজন। আছি স্মৃতি পুরাণেতে এই নিরপণ।। প্রসঙ্গত তীর্থ যদি পাপেতে মিলম। ভগাপি তীর্যের অর্জ ফলভাগী হয়॥ সপ্তম অগ্নায় মুনি কহে ইতিহাস। শিবশার্মা মথুরাতে যেমতে প্রকাশ। ভার্থ ঘাত্রা আদি তার যত বিবরণ। লোপাযুদ্ধ স্থানেতে কংখন তথোধন।। মুধাভাগু কানী-খণ্ড বাাসের বছন। ভাষা করি বলিখারে পারে কোনজন। अधिका নিবাসী সীভানাথ বনু দাস। একা অমুদিতা হয় হইয়া উল্লাস।। কাশীবন্ত তথা खनभारति कतिया। ভाषाटक ভाषित काश मराक्रम कतिया॥ नाथू बटन अवटन इंड्रेटर अधिनाव। इति इतं शूजन कतित्व मन आना। इद्धाः শ্রবণ করে কিবা করে গাঁন। কাশী লাভ হবে তার পাইবে নির্মাণ।।

> ইতি কাশীৰ্বও ভাষা অগন্তা মুনির কাশী তাগি বিশ্বা প্ৰতি ধৰ্ম জীলৈল প্ৰতি দৰ্শন প্ৰথম স্বৰ্গঃ।

অথ শিব শর্মার বিবরণ।

পরার। মধুরা নিবাসী শিবশর্মা ভিজবর। শাস্ত্র অধ্যয়ন ভেঁহ করেন বিস্তর।। বেদ বিধি জ্ঞান ধর্মশাক্ত পুরাণেতে। ধর্ম কর্ম মিমংসা-কারক প্রমাণেতে।। তর্ক শাস্ত্র ধমুর্কেদ আর আয়ুর্কেদ। তন্ত্র শাস্ত্র জন্য শাস্তি যত নাট্য বেদ।। এই ৰূপে সর্বশাস্ত্র পড়িয়া ব্রাহ্মণ। তার পর হই-লেক পুত্র উপার্ক্তন। তদন্তরে চিন্তে ছিল কি করি উপায়। না বলিল শিব বিষ্ণু গণ মহাশয়।। সুর্যা দেব তুলস্যাদি ব্রাহ্মণভোজন। দেবালয় লিক্সন্থিত ভীর্থ দরশন । গোধেনু গোবৎস আর ভুম্যাদি কাঞ্চন। পথে কৃষ্ণ আলোপণ তড়াগ খনন।। গোঞান পতিত পত্নে গাভীর উদ্ধার। ব্রুলার অমবস্ত্র গয়া-আন্দ্র আর ।। অতিথি সেবন আর ত্রত চান্দ্রায়ণ। পুরুষ উত্তম জন্য ভীর্য দরশন।। এই সর্ব কিছু মোর না হইল ক্রিয়া। কিন্দে ভব পারাবারে যাইব ভরিয়া॥ অবশেষ চিন্তি ভিত্ত করিল বিচার। সঞ্পুরী তীর্থ দরশন মোর সার।। যাহা হৈতে ভবসিদ্ধু হইব নিস্তার। यशास्याता निव्रम कविल धर्माठात ॥ अथरम मधुदा देश्टल परियाधा धमन । বেই যে অযোধা পুরি মহা-মোক্ষধাম।। সেই স্থানে বিরাজিত আছেন 🕮 রাম। নির্দেষ সর্যত্তীরে শর্মার বিশ্রাম।। সাক্ষ স্নান আন্ধ করি পঞ্চ-বার বাস। এরাগে চলিল পুণাইতে অভিলায়। যথা ওদ্ধারকোঞ্ডণে যমুনা মহেশ নিজ জ্বপা। ত্যোত্তণে যয়না মহেশ নিজ জ্বপা। ভাগির্থী হত্ত্ব ৰূপে বিষ্ণু যে আসিলা। ত্ৰিগুণেতে তিনবেণী প্ৰয়াগ হইলা।। সুতেজ অঞ্চয়বট তথার আছর। যার মূলে এলেরে মার্কণ্ড মুনি রয়।। শল্টিক সব বেণী মাধ্য আহ্বায়। সুখ্যবাধা সর্স্তী তথাতে মিলয়। মাঘ মানে প্রাতঃ প্রান কিমা বাস করে। ভার আনারাণে মুক্তি কে ধণ্ডিতে পারে।। ঐ স্থানেতে শিবশর্মা মাঘ মাস ছিল। এক মাসে যথাযোগা नेस कर्म কৈল ভার পর কাশীতে চলিল গুণধাম। পঞ্চকোশ প্রথমেতে গণেশে প্রণাম।। शास्त्र मिक्निकां का हिलान मिन। यथा अञ्चादमयी आहरून छेडत वाहिनी।। मिनिक्नि (घतिशा वरगरह (सर्वश्रेष) ज्यानश्रेष एमन ख्रेश्व प्रत्याम ॥ मिनि-কর্ণি খ্যাত যেই কারণেতে হয়। শিবের কর্ণের মণি তথাতে পভ্র ।। এইত নিমিতে মণিকর্ণি অর্থ হয়। আর এই স্থানে আছে অনেক নির্ণর।। সাঞ্ स्रोन खोक्त कापि कति तारे खाटन। हिल्लिन शहर शक कीर्य पत्रमाटन।। পরে ভিন্নবর সম্বংসর বাস করি। ক্রমাগত নিভ্য নৈমিত্তক করে কিরি।।

वीद्राचंद्र आंत्र यक आहर लिक्स्स । मर्लद्वर किर्नर कर्मन कद्र ॥ विज-ক্ষোভ কোন মতে নিরুত্তি না হয়। তার পরে ভাবে তবে উপায় নির্ণয়॥ अथरम वामना मराभूती मत्रभरन। उथा देशक विलास भवस्त्रिभ्रदान॥ যেই স্থানে মহাকান আহে অবস্থিতি। মহাপ্রনায়েতে জগৎ সংহার শক্তি কোটি শিবলিক যথা আছে নিরন্তর। হাটকেশ ভারতেশ মহাকালেশ্র ক্রমাগত স্বর্গমর্তা পাতাল উদয়। স্বরাধুত অঙ্গ প্রভৃতি হত হয়।। সংগ্রনাড সূৰ্ব প্ৰক্ৰি আদি জীৱ যাত। আছেন তথায় সেই সৰ বিৱাজিত। উদ্ভিক্তাত তকু সুধে তুণ আদি যত। স্বেদজাত দংশ মশকাদি নানায়ত ইহার। সকলে তথা হয় লিক্লময়। পঞ্চরাত্র শিবশর্মা নিষ্মেতে রয় । পরে কাঞ্চিপুরে প্রবেশিল দ্বিত্ববর। কি কহিব সেস্থানের মহিমা অপার।। निव नक्की कां छ आत इति इत किया। शामावति मनी उथा आहम्तान পিয়া।। যথাযোগ্য সর্ক কর্মে করিয়া ভ্রাহ্মণ। সপ্তরাত্ত রহিলেন ধর্ম আচরন গেলেন সম্বরে ধথা পুরী স্বারাবভী। সেই স্থানে নার্মণ সদা অবস্থিতি ।। সেই স্থানে গেলে মুক্তি অবশাই হয়। সংক্ষেপে ফহিল পরে বিস্তারের ভয় যথাবিধি দ্বিজ্বর অত্যেবণ করি। ক্রিয়া আদি করিলেক শাস্ত্র অনুসারি ।। शक्षमा मिन क्रिक त्रहित्रा छथात्र । श्रीहति स्वतंग कति चिक्रवत रात्र ।। चर्त देश्ट शका यथा भृथी जानमदन। इतिहात विन सान सन्तर वाधारन অপার মহিমা ভার জীবের নিস্তার। ধর্ম অর্থ কামমোক্ষ চারি প্রসার পূর্বদিন ঐস্থানে অনশন করি। ক্রিয়া আদি যথাবিধি পূর্বক আচ্ছি।। ভদস্তরে পারণ করিবে হেনকালে। ম**হাত্ত**র উপস্থিত কম্পিত হিল্লোলে কি হইল বলি থেদ করেন বিস্তর। বাটীঘর স্ত্রী পুজা ভাবে নিরস্কর।। তার शत हिख्यित देवल महन्ति। य नमस्य जना हिखा ना इत छेहिक।। इति হর স্মরণেতে যাহাতে নিভার। ঐ নাম বিধিমত করিল সম্বর।। মৌনী হৈয়া রহৈ ছিজপর্মা মহাশয়। জ্ঞানতৃষ্টি চক্ষু জার ভাবের উদর ।। ক্ষণেক कारमा एक काणि विद्यानश्या मकन विश्व कि देशन मन काम अश्या शास्त्र माहाचा मर्कछोर्थ पृथ्धि कटन। देवकूथे हटेट तथ आहटम भूगायल तथसरकाशदारक शक्तक आदाहिए। (भवक्ता क्दा तरथ हामत वाक्रम।। भूगामील स्मील य छकुक्क थाती। निवमकी देनशा हल देवकुछनशरी षिणवत छ्लूक् भातग कदिया। तथमत्वा विमित्तन विक्रुक्त टेर्या। के यव विमाधिती हामत हुवात । भग मदंत्र करणाशकथरम काल यात्र ॥

সুকর্মান্তিত এবং কুকর্মান্তিত মনুষাদিশের যমপুরেতে ভোগের বিবরণ !

পহার। জারীম আধার লোপায়ক্রা জিঞাসন। অগস্তা কহেন পরে मण विश्वत्या। त्वाभाष्ट्रम। कहित्यम अन कत्भायम। भिवसमी महाभूती ক্রি দর্শন। ছরিছারে প্রাণভ্যাণ কৈল ভার পরে। মোক্ষ না হটল কেন **গুনিব, বিস্তারে। অগস্থা** কত্ন প্রি**য়ে গুন বিবরণ। গুনিলে** য'ছাতে হয় **पाप्रक (महन।। नेश सदक मद्रात हिन्द फिक्रवेत्।** एक प्रत (कर्यत পিচাপ ক্লেবর। ইয়ার র্ডান্ত শর্মা জিল্পানের গণে। গণ কংছ শুন স্থা ইছার কারণে। ধন উপার্ক্তন করি সঞ্চয় যে করে। স্ত্রীপুত্ত কুটুম্ব আত্ম পোষণের ভয়ে। অন্য ধর্ম কর্ম তারা কিছু না করম। ইহলোকে বে সব রা-ক্ষা যোন হয়। তার পরে কত দুরে রথ চলি যায়। স্কুলাকার কান্তি সব तिथितारद्वश्वास्य वर्षामञ्ज**रूभात** (य मिथि मर्विकास । ইश्वामिर्ग स्मिश्र शर्प জিঞ্জাদে পর্যায়।। এ ছেন গঠন মূর্ত্তি কোন লোক হয়। পুণাশীল বলেন लक्ष व्याकमग्रा। अष्टे मत्व मर्लादनांदक मध्यम ना करता छेलामर्कन कति প্রসামর্বদা বিভারে।। সংক্রান্তি পুর্নিমা স্মাদি পর্ব্বতে এ জনে। গুরু পুরো-হিত বাকা দুঢ় করি মানে।। পরেতে গল্পক লোক দরশন হয়। ইহার হতান্ত কহ গণ মহাশয়।। নৃপতি ঐশ্ব্যমন্ত দিনের ছারায়। গল্পবিগণের এই ব্যবহার হয়।। এটিছ পাঠ মঙ্গলাদি আচরণ যত। ইহাতে জীবিকা হৈয়া থাকে অবিরক। এই মত অর্থ আহরণ করি সব। দানাদি আক্ষাণ कमः करत व्यवस्था । ऐ यन त्वांक आणि वह श्वांत वस्र । वह व्यातम् वर्षा-*नर* जिल्लाक करा । **कम्बद्ध मिथि विमाध्दश्री काम। भिवनशी** क्रिकाटमन हेशद्र विधान ॥ भूगामील भूमीन क्रटमन विवद्रण । विमामी-मिशरक जन रमग्र गर्कक्षा। नदवञ्च कश्रवामि रमग्र दिमार्थीरत। श्रीष् हत्व अध्य कातात्र रमचा करत ॥ विमा शर्क हाष्ट्रिया रय नाना लिका रमञ्जा শিষ্যকে ভোষ্য আহারাদির ছারায়।। পুত্র প্রায় শিষ্যগণে স্নেহ ছভি-नश्र। कना नालकारत शास्त्र मान स्व कत्र। यन अजिनार इसेरमर्व পুরুষ করে। এই রূপে অবশেষে বাস বিদ্যাধরে।। ভদন্তরে উপস্থিত ৰমের পুরীতে। ভাগ্রে উপস্থিত যম দুহত্তর সঙ্গেতে।। শিষশর্মা বিফুগরণ প্রণাম করিল। গলে বাদ মৃত্যাদ স্থির চক্ষুদ্র।। কন্ত প্রমোদয় আগমন यग घटत । क्ल कान खब टेकन यम किन्नद्र ॥ जाशनात शुनावरन टेहना

क्ष वर्ग । अपू पारन कहित्वन पामात प्रकर्म। अर्मताल कृषा तथि-(उन एशामझा अहे गाका कहि अर्था विकास कत्रता। शिवगर्या मर्खायशा খুম বান ঘর। পরে বিষ্ণু গণে জিব্লাসিল ভিজবর।। শিবশর্মা বলে সধা कृति निर्देशन। धर्मति व मस्याप मस्याप इंडेन महाया। विकास मान्य खेताकाती मार्युत क्ष्मिन। धर्मा वाका छात्र छनिएक इटब्रे मून।। यटमत नशत एनहें कि জুলোভনে। যার নাম শুনি পাপী ভয় গায় মনে।। যুমের স্থাপ লোক ব্রুল কেন্দ্রে। অন্যুত্তক জন দেখি তাহার সাক্ষাতে,।। কোন কোন 🕒 🗆 📲 পুরী লাহি সেখে। এ স্থানে বসতি করে কোন কোন লোকে। ্রার স্বৰূপ এই স্থার কেবা আছে। বিস্তার করিয়া ইহা কং যোর কাছে। গ্রের বলে শুন শিবশর্মা মহামতি। স্বভাবত ধর্মামূর্ত্তি সাম্যভর ক্লিতি।। ুণারাশি ভোমাদের হয় দরশন। ভয়ঙ্কর জন্য কথ দেখে পাপী । জন।। জোধে রক্ত দবে যেন পিঙ্গল লোচন। বিক্ট দশন ভেঁছ করাল বদম গ্র ললিত বিভাত যেন দেখি লাগে ভর। উর্জ কেশ ধ্রকবর্ণ মহাছোরময়।। এলর দেবের মত করবে নিনাদ। কাল দণ্ড হাতে উর্জ আছমে বিষ্কা। ক্রাকুটি করাল মুর্থে করয়ে শাদন। স্থানত ইহাকে ধরি করহ বল্প ।। ब्यहात करें हे मार्ट्य क्यांचार मुक्तार । श्राट्स **पति शायरत का**ष्टा है मेरे ॥ পদ দিয়া গলে জ্ফু কর উমপাটন। ফুলা গা**ল ফু**রে ডার করছ ছেমন।। পলে দাড় দিয়া গাছে টাঙ্গাহ ইগারে। কাঠ যেন করাতে বিনার ভার শিবে।। পদাঘাতে ইহার বদন চূর্ণ কর। **ছই** ছাত কাট ভার প্রভার হর।। পরদার গৃহধানী কাটছ চন্নব। পরনারী সদাকাল কচনে এছন।। ে । মন্ত্রতা স্থতি বিশ্ব করি**য়া বন্ধন। অন্তর্জার এই পা**লী করছ শলেন।। श्रीहर्मात हैन्छ। कित कर्राया भ्रमम । हैस्थात वपन भरख केत्र ह मर्गम । योग মুখে বলিরাছে পর অপবাদ। সেই মুখে হান খোঁটা বাল চুই খান্ত। এই পাপী করিয়াচ্ছে পার সম্ভাপন। ভপ্ত বালি মধ্যে ভাজ চনক যেমন। নির্দোষ পুরুষে দোষ করে আরোপন। রক্ত পু'জ কর্দমতে ভূযাও নদন। পদত পরের দ্রব্য করঙ্কে গ্রহণ। ৩৫ তৈকে পুরাইরা করহ দাহন।। ওর क्षात्राम कति **एव निका करता एश लोहमना छात्र वपरंबरक छ**रत्।। পর মর্যাভেদ প্রছি**ত প্রকাশর। তুত্ত লোহা**র **স্**চ শরীরে বিশ্বর। **थ्यक पान क्रंड भ्यान क्रेड ब्राह्म विरोध । तमना तमना कांग्रे मे**त द्रांख ছেब । াব আলাণের দ্রব্য কর্মের ভোজন। উদর বিদারি বিষ্ঠা ক্রমিতে। পুরব।। নেবভার ভরে কি**য়া ভাকণের জরে।** ছতিথির ভরে কর্জু পারু নাহি

করে। স্থাপনি খাইতে পাক বিশেষিয়া করে। কুস্তিপার নম্নকৈতে পাক কর ভারে।। শিশু হতা। করি করে বিশ্বাস ঘাতন। ক্লুডর পাতকী মহা-বৌরবে পাতন।। নরক জন্ধভামিশ্রে ব্রহ্মঘাতী স্থান। পূঁজ শোণিভেতে গাঁভি ভার সুবাপান। কাল সুত্র নরকে সুগাঁ চুরি কবি। মরিচি নরকে াত্রে গুরুপদ্ধী হরি।। পূর্ণ সম্বংসর যদি সংসর্গ করম। অসিপত্র নরকেতে ভার বাস হয়।। এই পঞ্চ মহাপাপী বড় ছ্বাগর। তথ্য তৈল কড়ায়েতে। क्ष्म नादत राज । लाहात भूलात पृष्ठ कतिया श्रद्धात । धक कण्य वार নরকের ফারাগার।। স্ত্রীহত্যা গোহত্যা আর নিত্রহত্যাকারী। শিষ্ট- 🖰 গাছে বান্দ উর্দ্ধ পদ করি।। অধোত্রথ করি ভারে রাথ চিরকাল। দংশেয়। শরীর চর্ম ছিড়হ বিশাল।। মিত্রপত্নী এই পাণী করে আলিঙ্গন। ছুই বাছ উপাড়িরা করহ তাত বা পর গৃহ পর ক্ষেত্র পূবে **অগ্নি দিয়া। ভালা** কিব নরকেতে বাধ ফেন্টেয়া।। বিষ থাওইয়া মারে মিথ্যা সাক্ষী দেয়। ভবা ভৌক্ষর কালে ছলনা করয়।। গলে বস্ত্র দিয়া লৈয়া কালকুটে ক্ষেত্র তিথি প্রেল করে অন্চার যে সকলে।। লালাপির নাম নরকেতে লহ ভারে। ুঙাঁপাকে কেল গর্ভাঘাত হেবা করে।। অন্যতাপি পাপিকে र केर नेन्यारक। हेकू पर**ञ्च थिएम तम**विकाशी विश्वरक ॥ अला श्रीका करत ভূপ কেল ভশ্ধ কূপে। গোভিল সুর্জ সোণাবেচে কোন কপে।। ছেন বৈশা উপ্লিতে ফেলি নিরস্তর। মুবলে কুটিয়া দূণ করহ সম্বর।। গুদ্র বৈয়া ছিলবর্গে ক্যজাকর্ম। বিজ ভাগে উচ্চাসনে যে জন বস্ম। ভাগের্থ নরকেতে ফেল্ছ ভাষ্টরে। মন্তক ভাঙ্গছ ভার মুদ্ধর প্রধারে॥ ত্রাহ্মণ বিলয়ী পুত্র বৈশা বিজ্ঞসানি। জৃত্রিয় যাজক বেদ বেচে **দ্বিজ্ম**ণি॥ লোহা-লালা সাংসারস তৈল আর মৃত। অস্ত্রপ্ত আদি দ্বিজ করয়ে বিক্রীত।। এই সৰ প্ৰাপী যত দুঢ় বান্ধি পামে। চাৰুক মারিয়া রাথ ক্দিনে কেলায়ে॥ এই নারী কুলটা পাপিনী অভিশয়। সেই উপপতি তার তপ্ত লৌহময়॥ তুই জনে আলিজন করাহ এখন। এই মত চিরকাল করহ ভাড়ন।। জাপনি নিয়ম করি লোভে ভাগি করে। এমর দংশক নরকেতে কেলে ভারে।। অতি ভয়ক্ষর যম এ সব জম্পান। পাপীলোক দুরে হৈতে করছে দর্শন।। উরুষ ভনয় যেন প্রজাকে পালয়। ধর্মত বিচার করি প্রজাকে দওয়।। হেন থব রাজা ধর্মরাজ সভাসদ। যমপুরে নিরাপদে ভুঞ্জে সম্পদ।। যে রাজার রাজে।তে যে বর্ণের আশ্রাম। আপনার ধর্মা কর্মা করে। উপজ্য। কালজ্বে মৃত্যু হৈয়া যার যুমপুরে। শোক নাছি পায় সভ'-

नम इस भटता। य तामात तात्मा अमा मातिल मा इस। प्रवृत्ति चाशम শোক তুঃখ নাহি পায়।। দেই সব নরপতি ধর্মের সভার। সভাসদ হইয় পরম সুখ পায়।। ত্রাহ্মণ ক্ষত্রিয় বৈশা জনা আর যত। যমপুরে বাদ 🕸 ে স্বধর্ণো নিয়ত। উদিনর সুধন্ধা নামেতে নরপতি। ব্যপর্কা জন্ত্রখ রাজ মহামতি।। সহস্রাজিত**রুক্টা দৃঢ় ধর্মা** রিপুঞ্জয়। যবনাস্থ দন্তবক্ত নাভাগ মহাশয়।। রিপুমর্দ্দন করন্ধ অধর্মদেন আর। পরমন্দি পরাওক সহিত্র। অপার।। এই সব জার যত রাজার প্রধান। ধর্মাধর্মা বিচার সুনীতি বর্ষ-মান। ধর্মরাজ সভাতে এ সব নরপতি। ভুঞ্জরে পরম তুখ করমে ইন্সভি। গণ কহে শিবশর্মা কর অবধান। জন্য আর কিছু কহি পুণা উপাধানে। य बार्य ना इस लाएक यम महनन। मिक् लाहि शास्त्र पृष्ठ ना (नर्य) कथन ॥ पृष्ठभट्य भगत्म नियोत्र नपाकान । इति इत मांगाविन ग्रूट्य वटन ভাল।। সেই সব জনে নাহি মোর অধিকার। তে:শিরা সে বব জন করি समेकात ।। গোবিদ্দ মাধ্ব ছবি মুকুন্দ মুরারী। শিবশৃত্পু ঈশ শশিশিখর প্লধারী। দামোদরাচ্যত বাস্তদেব জনাত্রি। ত্যজিয়া এ শব লাম থে করে মনন।। গঙ্গাধর অস্তকারী হর নীলকণ্ঠ। কৈটভারি অভপাতি কামঠ বৈকুঠ।। চপ্তি কেশ মৃত্ খণ্ড পরশু ভুতশ। বে জ্ন এ সব নাম খ্রুয়ে विस्मय।। विकू मभुष्टमम मुनिश्ह ठक्मपत्। शोहीशंकि उत्प्रताक शिहीस শক্ষর।। নারায়ণ শঙ্খপাণি দৈত্য নিবর্হন। যে জন এ সর ভাসে কর্যে স্মরণ।। উত্র বিষমাধ্য মৃত্যুঞ্জর কামবৈরি। পীতবাস একাস্ক জন দ নীল সৌরী।। ত্রিদশৈকনাথ ক্লুবিবসন উম্পান। যে জ্ন এরের নাঁয় করয়ে যে গান।। আদা লক্ষ্মীপতি মধুরিপু নরোত্তম। জীবান্ত পিনাকগাণি শান্ত वियोगन ।। शब्दमांख जानिक कक ४३गी धार्य। एव कम व मत संबंध करहन ममन ।। एतत एतत मर्स्सपंत जिश्रास्थमन । माक्यता जन्मकारमं अञ्चल वार्य ।। वांग हलारमोनिकाक छेत्रन जूपगा अभुक्त व अव मोम द्याकाद मनन।। রামেশ্বর জীরাম রামব রাষণারী। ভুডেশ সম্মথরিপু প্রমথাবিভারী । মুরারি ক্ষিকপতি চামুর মর্মান। অপুর্ব্ব এ সব নাম যে করে মনন।। চম্দ্রকলা গিরীশ করাল পুলধারী। কেশীনাথ সনাতন কংস প্রাণবৈরি॥ ভূতপতি প্রবীর ত্রিনেত্র ভর্গভব। অপূর্বর এ সব নাম লপে যেই সব॥ গোপীপতি যছপতি বসুদেব পুত্র। ক্পুরি গৌরাক রবধান ভালনেও।। গোপধর্ম ধুরীণ গোবর্জন ধারণ। অপুর্ব এ সব নাম যে করে স্মরণ।। স্মরারি পিনাক্ধর স্থাণু ত্রিলোচন। ক্**ক অনিরুদ্ধ পলাক্**র পাপ্ছীন।:

कामीश है।

ালালের প্রেটি ভাটালে প্রতিষ্ঠিত বিশেষতা। বাজন এ সর নাম জাপে নিরস্তর।।

নাই ভালত লাজ নাম দিবা রক্তমর । দুল্লাবে গাঁথি মালা লালে যে ধরর।

কালালের কভু যম দরশন। চরমে স্ইবে শিব বিদ্যানারার।। এই

কালালের দুল্ভেরে শিথার। হরি হর চিক্ত যেবা হরিছে ধরার । ভুরভ

কালালের করিবে বর্জন। আনার অনিক জামে সেই সম্ব জন্য সর্বারভি

কালালের নামাবলি। পটিলে লভকে বুজি জিনে কালকালা। লিবশর্মা

কালালের ক্যা করিরা আবেও। অপ্ররানগর ভটে হৈল দরশন।। জুইন অধ্যার

কালালের হুইল। অমৃত সমান কথা প্রাচালি রচিল।। অফিকা নিবানী

মীল নাল বন্ধান। পাচালি প্রবন্ধে কাশীধন্তের প্রকাশ।।

শিवमाधीत अन्मतापूरी मुर्भम।

শারার। শিবশর্মা পুণাশীলে করিল প্রস্তান। নকলি অপুর্বি হেরি

বিক্ ভাব। ভপের নাহিক গীলা কহেন না যার। পণে কহে দেব

বিক্তা এই সব হল ।। কীরোদমন্ত্রন পরে উঠিল নকল। যফিহাজার বেশা।

অতি ব্রালামল । হার মধ্যে প্রধানা বে রস্তা ভিলোভমা। যেনকা উর্বিদী

কোরেখা গ্লারমা।। ইত্যাদি ভানেক লাছে কুন্দরী প্রধানা। প্রস্ত বিস্তান

রে হেলু না করি বর্ণনা।। দেবলোক সর্বিত্রেতে জ্রমণ করের। মনোরক্ষ

যোগভঙ্গ কটাজ্যেতে হয়়। নৃত্যনীক রুদোলাদ করি ভাহনিশি। দেব
হার সভাক্তি থে থাক্সে রপদী।। মত্যলোক হইতে আইসে যেই নারী।

তাহাব লক্ষ্য এবে শুনহ বিস্তারি।। মাস উপবাস ব্রন্ধ চর্যায় ভানানী।

জিবিণ্ড ভিল্ডিভে রক্ত কামন্ত্রেভ গনি।। হে সকল ব্রন্ত নারী আরম্ভ করম।

কৈবাদীন ব্রত ক্লান্ত্রভ গনি।। কর্মাজনে এই স্থলে জাসি বাস করে।

এনত জনেক আছে সংসার ভিতরে।। বন্ধবিধ সুখ ভোগ কর্মে অপরে।

অপরা পুনীতে বাস নিরন্তর করে।। সমান্ত হইল ভবে নব্ম অখ্যায়।

শুনিলে নক্ষ পাপ নিবারণ হয়।।

ज्य र्यात्याक मर्यन्।

পরার । জার পরি স্বর্ধোলোক সম দরশ্রণা শিবশর্মা একা ভাবে কৈল নিক্লপণ।। জাবশেষে গণ স্থানে জিক্ষানা করয়। কোন স্থান হয় এই

অতি তেকোমর। গণে কচে সৌরদেব হয় **অধিপ্রতি। কদ্ম পুলে**পর। প্রায় চতুর্দিনে জ্যোতি।। স্বর্গ মর্ত্য শব্দ স্থানে তেল প্রকাশিত। নয় হাজার ক্রোশ রথচক্র পরিমিত।। অরুণ সার্থি যার বিচক্ষণ মতি। ছুই হাজার ছই শত নিমিষার্জে গতি॥ পুনরায় গণে কৃছে শুন মহাশয়। জন্ধ क्र स्वारमव रमरवत छम्म ॥ अनरवत मूर्जि गव मक्न खरनरक । भामकी ভূঙীয় ৰূপা হয় বিকালেতে।। ব্ৰাহ্মণ বিকালে সন্ধ্যা করেন আচার। আর আর যত আছে নিয়ম ভাহার॥ বিধি পুর্ব ব্রহ্ম অনুষ্ঠান করে যেই। অবশেষে ফুর্বাকে বাস করে সেই।। ব্রাহ্মণ কবিষ বৈশ্য বেচে অধিকারী। উদয়ান্ত অর্থা দের দরশন করি॥ সভ্যের নামেতে স্থব পাঠ করে যেবা। প্রত্যেক মন্ত্রেতে অর্ঘ্য করে সুর্য্য দেবা।। জবা আদি তুর্ফা तक ज्यान कत्रवी । पञ्च त्यति पित्रा अर्घा श्रृ किटवक् त्रवि ॥ वात मारम मध्य-মেতে যেবা পুরু। করে। পৌষে যথা সপ্তমীতে আর অর্কবারে।। নিয়ম বরিয়া করে ব্র**ত চাম্রাকাণ। ই**হাতে সকল শোক **হ**ংশ বিমোচন।। যাব-দীয় শরীরেতে শাস্তি হয় রোগ। ভক্তিতে পুজিলে প্রাপ্তি সুর্যালোক ভোগ ॥ রবি সংক্রমেতে সূর্যা গ্রহণ যে হয়। সাল বস্ত্রগোস্বর্ণদান যেকরয়॥ , অতিশয় কল প্রাপ্ত হয় সেই নর। এই স্থানে বাস তার থাকে নিরস্তর।। অন্য নির্মেতে আছে অনেক সাধন। সে সকল কেবা পারে করিছে। বর্ণন। দশস অধ্যায় তবে সমাপ্ত হইল। কাশীখণ্ড অমৃত সহাদ প্রকাশিল ॥

्र लिवनक्षीत हैसाशूत वर्णम ।

The state of the state of the state of the state of

কিরণ অবশেষ নাছি হয়। উতৈঃপ্রবা ঐরাবত হস্তী বিরাজিত। নারদ প্রভৃতি সব মুনিতে বেটিত।। এই ইন্সেরাজ পুরী স্বর্গ স্থান নাম। বিশ্ব-কর্মা নির্মাণ করেন অনুপাম।। অগ্রমেধ অগ্রিহোত্ত অগ্নিত্রত নার। ভুলা পুরুব দান করে অনশন আর।। আর আর নিয়ম আহরে বহু মত। ত্রাক্ষ-ণেরে ভুক্তিভাবে পুত্তে অবিরত।। এই পুরী বাস করে শচীর সহিত। ইহা সম লিজুবনে আহে কি কিঞ্চিৎ।।

শিবশর্মার অধি স্থান দর্শন।

প্রার। পর্যার দরশনে জিঞাসিল ভিজ। কি প্রকারে জন্ম হৈল অ্ত্রি মহাতেজ।। গণে কতে শুন স্থা ইহার উৎপতি। নর্মাণা নদীর উটে নশ্মপুরে স্থিতি।। **দ্বিজ্ঞবংশ জান বৈশ্বান**র যেনামেতে। বিচার ক**ররে তেঁহ** লর্মিছে। ভাবেতে।। ত্রক্ষাহর্যাগৃত্বী বাগঞান্থবনগভ। ইতি মধ্যে সেক্ষ্যোনআ-প্রাম আচরিত। এতিন আস্ত্রামহতে ভাল গৃহাঞ্জয়। গৃহী আগ্রামেতে সকলের লাত হয় ॥ অতএব **বৈখানর গৃহত্ব আগ্র**য়।। এই মত সূচীসতী বিবাহ ক-রিল। পরেবৈশ্বানরনূনি যোগ জারভিল।। মহাদেব পরায়ণ চিত্তিত ক্রদয় এইৰেপে বছদিন কাল গভ্ৰয়।। স্চীর সন্তান না হওয়াতে ভাবিত। পতি স্থানে বছুমতে হইয়া থেদিত।। ক্রণোড়ে কছে বাণী করিয়া বিনর। তব পাদপত্যে গ্রন্থ কিছু নিবেদয়। হেন বাকা পত্নীর শুনিয়া মহামুনি। অনু-মতি করিলেন কহ জিলা শুনি। স্বামীর যে আজা লইয়া স্চীসতী কর। পুজাসভানের লাগি বড় খেদ হয়।। বৈশ্যানর করে প্রিয়া করছ প্রার্থনা। খাবশা হইবে পুদ্র না কর ভাবনা ।। প্রার্থনা করেন সভী পতির জাজাতে। লিছ সম পুঞ্জ হবে জামার গর্ম্ভেডে ।। বৈশ্বাসর পত্নী বাক্য অসম্ভব শুনি। गमापि योरगटक वीन ভारतन काशनि॥ खेरक हे आर्थना रेहन काविक আন্তর। ক্ষণে মৌন থাকি ছিজ করিল উত্তর।। মুখ গভ বাকা ঈশ্বরের উক্ত হয়। তব পুজ শিব হুলা ইইবে নিশ্চয়।। এই বর দ্বিজ দিয়া চলে कानी भूती । अधरमरक मनिकर्निकांसं सान कति ।। आह्न कानि कर्नन केतिसः श्रुनिवत । विरुष्णक मिश्र जांत्र मिलिल विश्वक्र म मर्निवत मर्गन कति हतिय ছইল। সম্ভানের লাগি মুনি চিস্তা যে করিল।। কাহার সাধনে শিষ সম शुक्ष इत्त । करनक विषात मानि निरुद्धभन्न निरुत्त ॥ हेशत मधिरक करनिरकत निश्चि बद्या विदेशभेदत ज्याताथमा कतिब निम्ब्या मनिकर्ति शिक्टिय

পিত শিব্দিস। যোগ আরদ্ধিলা মুনি নাহি যোগ ভঙ্গ। (রাধনেতে টেক্সা নর নিয়ম করিল। মাসাত্রত জ্বনাগত ক্টেতে রহিল।। এই নভ ক্রের্ডিল मान গত एत । हम्प्रकृत्ध स्नान कति छशना। कत्र । मिनक्रिकांत स्नान करि আইনে দ্বিজ। নিদ্ধেশ্বর মশ্বিদ্ধেতে শিবের বিরাজ।। অভীবৎসরের শিক্ষ শিরে জটাভার। ত্রিনেত্র ত্রিপুল হাতে ফণি ভুষা হার।। ব্যাপ্রচর্মা পরি-ধান ভস্ম মাথা গায়। ওষ্ঠ লাল মৃদ্ধহাস ললিত যে কার্য। পাদপীল ক্লিবা क्रश वर्गत अशात । क्रश प्राथि मुनिवत देशल ठम कात ।। आम्ध्या प्राथिता বৈশানর মহামুনি। গদ গদ প্রেমভাবে ভাবেন অমনি।। গ্রুতি ঐক্য স্তব তবে করি ডার পর। এক ত্রন্ধ অন্য কিছু না হয় বিচার।। শুনতি এই মুনি কহে ব্ৰহ্মক্তময়। নানা বস্ত কিছু নহে অব্যয় সে হয়। জলে যেন চন্দ্র রূপ দ্বিতীয় দেখায়। অসর্প রজ্জুতে দর্প ভ্রমেতে বুঝায়।। বিস্কৃকেড়ে মুক্তাঞ্চান সে যে কিছু নয়। ভ্রমমাত্র দরশন দ্বিতীয় নাহি হয়।। ভ্রদ্ধ এক क्ष विश्व क्षानिक् निम्ह्य । अहे क्ष्म यूनि व्यक्ष ख्रव या क्रया। क्ष्मा क्रिय মহাদেব তৃষ্ট হৈয়া তবে। সতী গৰ্ৱে শিব পুত্ৰ নিশ্চয় হইবে॥ এই বয় বৈশ্বানর পাইয়া সত্র। চলিলেন নিজালয় সভীর গোচর।। স্বাদশ স্থ-থ্যায় ইছা কহিব বিস্তার। যে মতে সতীর গর্ট্তে শিবের সঞ্চার।। জগস্কু কংখন শুন লোপায়ুদ্র। মতী। তৈথানর ঘরেছে শক্ষর ছারান্ধতি।। সূচীর যে গব্ধ হৈল অনেক সাধনে। চক্তকলা প্রায় গর্ৱ বাজে দিনে দিনে।। গর্ব नाम मन माग रम रथ कर्मा हिला। निविभटक मुनिवत मकलि कतिहा।। धर्व কহে শিবশর্মা শুন অভঃপর। অমৃত আখ্যান তবে কহিব বিভার।। শুভ দিনে শুভক্ষণে গ্রন্থ উত্তন। বৈশ্বানর মুনির যে পুজের জনম।। স্বর্ম মর্তা পাতাল হইতে দেবগণে। জ্রুজা বিষ্ণু মহেশ্বর স্বক্রীয় বহনে।। ই-लापि प्रवका आंत्र सूनि अधिक्षण। मकटलत्र कथात्र (य रेश्क् आक्षमन ॥ ভগবতী লক্ষ্মী যে সাবিজী শচী কার। বিদ্যাধর গন্ধর্ম অপসরী যে অপার। मक्रम जाहारत गरव धानीत्नाक करत। जानक छेरत्रव देश्य देवसानत ঘরে।। গ্রহপতি নাস তার করিল জাখানে। জাতকর্ম লাকি ব্রহ্মা করিল व्याभटन ॥ व्यामीर्काम कविद्रा मकन दावश्रा । अञ्च व्यात्न मकदलव शृद्धद्रष्ट গমন।। अञ्चासन कर्नट्रास् हुज़ापि कद्रन। शक्ष्म वर्श्नट्रा प्रीकृ। क्रम असा-য়ন।। বৈশ্বানর পুত্র অইয়া মহত উল্লাস। লালন পালন করে আর বিদ্যা-जाम।। अस्येम वर्गदत देशन भारत्यस्य अधिष्ठ। अस्य अञ्जी कूस्य देशन পুজ खगोशिक।। नयम व ८मद्रद्रक महित्र क्रिशीसम्। देवशास्त्र गृटक्टक

कतिला काशमन ।। खाइशिक एमथि मूनि मस्त्रीय इंटेल। जानीसीम कति ডবে কহিতে লাগিল।। যার খবে পুজ নাহি রুখার সংসার। পতি পুজ ছীন পত্নী ছর্ভাগা অপার।। পুজ মুখ পিতা মাতা না দেখে যাবত। নর-क्रिएक वात्र क्षीत थाएक एव कावक।। शुक्क पूथ पृष्ठ देशक मत्के मा इत्र। ঐিক পারব্রিকের যে নিস্তার মির্ণর।। ক্ষেত্রজ উরস জাত আরু করে ক্রেয়। দ্বা আর গভে পাওরা দৌহিত্র যে হয়। আপদেতে ত্রাণ করে নেহ পুজারত। এই মত সপ্ত পুজা শাস্ত্রের সম্মত।। পিতা মাতা সময়ে পুজ্জের কেহ নাই। পিতা গুরু মাতা তার তীর্থ যে দর্শাই।। পালনে ধা-त्र १ शर्द्ध माला (अर्थ एता। वर्षे माल जारमक अर्कारत सूनि कता। धारुशिल অত্যে আসি হস্তাদি দেখার। ওর্ছ দস্ত ভালুকা দেখিয়া মুনি কর।। শুভ-ক্ষুণে উদধ্য যে হয় পুজা তব। ইহার লক্ষণ আমি কতেক কহিব। শরী-্ৰেছে স্থত্ৰ ধৰি তিন গুণে দেখে। শতাঙ্গুলি ছইল স্কুত্ৰ থাকিবেক সুখে।। নের ভুরু নাগা বঞ্চ হয় দীর্ঘ বার । চাঁচর চিকুর হস্তাঙ্গুলি দীর্ঘ আর॥ হস্তাদি পাতৃ হা তালা তালুকা সুন্দর। নেত্র গলা জিহা ওঠ নথ যে অ-ধর।। এই সপ্ত স্থান যার রক্তবর্ণ হয়। বক্ষ কুক্ষি হস্ত পুতি কর্ণ নাসিকার ঃ এই ছয় উদ্বা কপাল কোটি আর। গ্রীবা জানু শরীরেতে শ্রেঠ হয় যার।। এইড বত্রিশ আছে অঙ্গের বর্ণন। ইহাতে সন্তান সুধ নৃপতি লক্ষণ ॥ কিন্তু এক দোষ দেখি ভাদশ বৎসরে। বিতাৎ হইতে বিশ্ব আছমে শরীরে।। হেন বাকা কহিয়া নারদ যাম চলি। গণে কহে দ্বি**জ মহাশর শুন ব**লি দারদের হেন বাকা শুনি পিডা মাতা। শোক **ছঃখে মগ্ন হৈল** কি কহিব কথা।। বৈশ্বানর সূচী সভী থেদিত অপার। নিবারণ নাহি হয় কি কব বিস্তার।। গ্রহপ্পতি দেখি পিতা মাতা খেদান্বিত। পিতা মাতা প্রবোধ করিল যে উচিত।। জামাকে কাহার শক্তি আছে মারিষারে। তব আজা হইলে পিতা ভলিব শঞ্চরে।। তবে যত বিদ্ধ আছে হইবে বিনাশ। মাতা পিতা পুত্র বাঞ্চ শুনিরা উল্লাস ।। প্রসর হটুয়া পরে কহে পুত্র তরে। স্থির করিয়ার পুঞ্জ পুঞ্জিবে শঙ্করে।। ইহা সম কর্ম নাহি সংসার ভিতরে। বিল্ল নাশ করিবেন দেব বিশেষরে।। পিতা মাতা প্রণাম করিয়া গ্রহ-পতি। যোড় হভে দশুমান বহুবিধ স্কৃতি।। আজা কর প্রসম যে ইরেন गर्म। अर दलि धर्পिर कामीए अर्वमा। विषयत लिक्न भूका छ-**গ্রেভে করর** দেখিলেন লিজ যে কেবল খ্যাভিসর।। এই লিজ অর্চনা क्रेंद्र निवयदे । अवना इस्टि निश्चि कामना एए करवे।। अङ्गेष्ठि धात-

তর কঠোর করিল। এই রূপে শতেক বৎসর গত হইল।। তার পরে ইন্দ্র-प्तिय जानिया ज्याम । यह ल**च वत्त ज्य गांश है क**ा हम ॥ **अहश**ि वत्त ইন্দ্র বরে নাহি কায়। বরদাতা আমার শঙ্কর মহারাজ।। গ্রহপতি দেব-রাজে বিবাদ হইল। ইন্দ্র বজ্ঞতাাগে গ্রহপতি মৃদ্ধা গেল।। হরগৌরী নিজ ভতো কাতর দেখিয়া। রুঘত বাহনে দোঁহে তথার আসিয়া।। গাল্লে হস্ত বুলাইয়া করি অচেভন। শিব দেখি বালক উঠিল ততক্ষণ।। শিবলিকো পরি শিব গৌরীর সহিতী স্তবকরে গ্রহপতি যথা যে উচিত।। তৃষ্ট হৈয়। মহাদেব কহেন সম্বর। স্বর্গে ভাগ্নিপতি হৈয়া থাক নিরস্তর। পিতা মাতা সমিভারে তথায় যাইয়া। নানাভোগ কর অগ্রি পতি যে হইয়া। ভোমার স্থাপিত শিব লিক অগ্নীশ্বর। মণিকর্ণি পশ্চিমেতে ঘাটের উপর।। এই লিঙ্গ ভক্তিভাবে যেজন পুজিবে। মনোনীত সিদ্ধি যে কামনা পুৰ্ণহবে।। শিবপদে গ্রহ পতি প্রণাম করিল। প্রভু আঞ্চামতে পিতা মাতা স্থানে গেল। পিতা মাতা চরণেতে প্রাণাম করিয়া। শিব আঞ্চা যত কহিলেক বিস্তারিয়া। পিতা মাতা সহিতে আনিয়া অগ্নিপ্রে। অগ্নিপতি হইয়া ভোগ করে নিরস্তরে।। অগ্নীশ্বর শিবের অর্চনা করে বেই। অব্শ্রা অগ্নির थाटम वात्र करत रमञ् ॥ अधित त्रांधना विधिभुक्कि कतिरव । मन्दाधि इ-ইতে অগ্নি বৃদ্ধি যে হইবে।! আছ্রে অনেক মতে অগ্নির সাধন। অগ্নি-লোকে বাস তারা করে অনুক্ষণ।। সমাগু **হইল একাদশ অ**ধ্যায়ন। ভক্তি ভাবে শুনে যেই পাপ বিমোচন।। নীতানাথ বসুদান অম্বিকা নিবানী। ভাষা প্রকাশিল কাশীখণ্ড সুধারাশি॥

লিব-শর্মার নৈথাত দেশ গ্রহন।

পয়ার। তদন্তরে কহে শিবশর্মা ভিজবর। ক্রমেতে নৈথাত বাস কহ অতংপর।। গণে কহে শুম শর্মা প্রথম নৈথাতি। বিদ্ধা পর্বতে ছিল চণ্ডালপালপিতি।। অতি ধর্মশীল হয় অথমা না করে। সর্বনা লোকেরে দস্তা হস্তে রক্ষাকরে॥ আর মত লোক পাল্লপতি। সৌরবেতে। সেই পথে নিঃশন্ধা হইয়া যায় পথে।। এমনি সৌরব পাল্লপতির য়ে হয়। দয়া-ছানে পালপতি নামে নাহি ভয়।। চণ্ডাল হইয়া মাত্র ধর্ম আচরণ। এই রপে বভ্রকাল করেন জাপন।। একদিন বছলোক যায় কাশীপুরী। নির্তরে রহিল বিদ্ধা পর্বত উপরি॥ রাত্রি যোগে তাহার পিতৃভো। একজন চলিল যাত্রিক জনে করিতে নিধন।। দেখিল সকল লোক সংহার নিশ্চমা প্রান্ধিতি কোথা তুমি উট্চঃস্বরে কয়। তব যশে বিশাস করিয়া এইস্থানে
দক্ত্তিক্তে মৃত্যু হৈল কাশী অদর্শনে ॥ উচ্চঃস্বরে কচে মবে রোদন করিয়া। পলিপতি তথা গেল ক্রন্দন শুনিয়া। তয় নাহি তয় নাহি তাকদিয়া কয়। দক্ষা বলহান তথা যাইয়া দেশয়॥ পারউপকারে দক্ষা মতে যুদ্ধ
করে। উভয়ে বিহাদে ভাল হৈল সব নরে। দক্ষা সব একমোনে মারে
পলিপতি। কাশী ধাত্রি প্রাণ রক্ষা হইল সংপ্রতি।। এই পুণো পলিপতি
ইন্থ ত ঈশর। হীনক্ষাতি যেবা করে পর উপকারা। অনামানে এইস্থানে
বাস হয় তার। বয়ণ পুরির কথা শুন অভংপর।।

--

অথ বরুণপুরি দর্শন ! 🔻

পমার। ফুপদীঘি পুঞ্জরিণী দে করে ধর্মেতে। জলছত্র ধর্ম ঘট ত্রত মির্মেতে।। অশ্বর্ণা রোপণ থেবা কর্মে পথেতে। বিশ্রামের ঘর দের পথের মধ্যেতে। ছায়ামণ্ড তাল পাধা জার দান করে। শীতল সামগ্রী মিউ দেয় ভিজ্তরে। অভি ষত্ন করি বিপ্রে ভোজন করাবে। বৈশাথেতে দেবার্চনা আর ঝারা দিবে।। ভীর্থকের উপফার করে যেই নরে। ভীর্থের कुर्तम शरथ सूराम ए करता। खन्नांखि करमदा एवा जाउन राजांन। বিনিযুলে পারাপার মৌকাতে ফরয়।। এইসব কর্মকরে শ্রন্থাযুক্ত চ্ইয়া। বরুণ পুরির প্রা**ত্তি অটিভি আদিরা।। তা**র প**্র শুন স্থা রুত্তান্ত অ**পার। বরুণ বেদতে অবিপতির বঞ্চার।। কর্মম মালির পুজ শুটিগন্ত নাম। ষ্নিপুত্র সঙ্গে ক্রীড়া করে অংবি**জ্ঞাম।। এ**কদিন স্কল বালক সঙ্গে তলে জলক্রীড়া করিয়া ভাশেষ মতে খেলে।। ইতিমধ্যে শুশকে ধরিল শুচিমত্তে लहेश यात्र अल मध्या (मध्यानाहि व्यत्य ॥ कावक वालक त्मलि कन्मन कतिल শুচিনর পিতা আগে সংবাদ করিল।। জলজীড়া জনা সবে গিয়াছি অলেতে। তব পুত্তে গ্রহণ করিল শুশকেতে।। দমাধি হোগেতে মুনি ছিলৈন তথ্ন। যোগভঙ্গ না করিল মুনি তপোধন। তারপরে স্যাধিতে দেখে মূনিকর। শুশকেন্ডে পুজাধরি জলের ভিডর । সমুদ্র নিকটে লইয়া दिश्च गर्ङान्ट्य। द्रगकाटन ऋखेब्रा शृन्य थिक करत्र॥ ममूखेटक कन ্ক্লিক্ত ওন সাবধান। এই ভাচিমন্ত পুজা বক্লণ আখ্যান।। সমুদ্র বলেন প্রভু ্কিছুই না জানি। অশকেতে ধরিরা দিয়াছে মোরে আনি।। শুণকে কা-্রিক কবে পুত্র কৈন কোলে। স্বর্গ অলকার দিল শক্ষরের বোলে।। ও-कियरक मांकाहित। क्रिक्र निवा । शदत क्रिक्र देवनादम बहेता करन निवा

ইরগোরী দেখি পুত্র আদন্দ অন্তর। যাহ পুত্র হবে জুনি বরুণ জ্রশর।।
তৎপরে শুশক জন্ত বৃদ্ধনে থাকর। শুচিমন্ত আইল নুনিবরের আলর।
স্নাধিতে ওক্স হৈরা মুনি দেখি পুত্র। সন্তান কোলেতে করি জলে ভাসে
নেত্র।। ভারপরে পুত্রের মন্তক ধরি করে। আশীর্কাদ কৈল নুনি অনেক
প্রকারে।। কত দিন পরে শুচিমন্ত ভবে বলে। ভিন্নিব ক্রশানে পিতা ভূমি
আক্রা দিলে।। শুচিমন্ত বিচন শুনিরা মুনিবর। আনন্দিত হৈয়া কহে
ভক্তহ শক্ষর।। শুচিমন্ত পিতা আক্রামতে কাশী গিয়া। বিশেশর নিকটেতে একাগ্র শইরা।। কঠোর ভপ্যা। করে ছাজার বংসর। প্রদান হইয়া
শিব কহেন সন্তব্য। ব্যুবশের লিক্স শ্বাপন করিয়া। লোলকর বৃক্তশের
পতি যে হইয়া। বরুণেশ্বর লিক্স শ্বাপন করিয়া। কোলকর বৃক্তশের
ভাহার হইবে।। বরুণেশ্বর লিক্স যোপন করিবা। প্রাদশ অখ্যায় তবে হৈল
স্বাপন । বাশীর্থণ্ড সুখাভাণ্ড অমৃত সম্বাদ। সীতা লথি বসু কহে শুনে

-#24-

यश वांत्रभूत पर्वन ।

প্রার। গণে তহে শুন শিরশর্মা মহাশর। যে প্রকারে বাগু পুরী হইল নির্মা। পুতামা নামেতে হয় কশাপ তনর। কাশীপুরী যাইরা পুতামা মহাশ্ম। বহু যে ওপায়া করে করিয়া কঠোর। এই করেপ গত হৈল অযুত বংলর। পরেতে প্রস্থানাথ প্রায় কার্মা। স্বরূপ ধারণে হইলেন যে উদয়। বর লহ যথা ইছে। কশাপ তনর। যোগে দেখে অস্তর্বাহ্য রূপ এক ময়। তদন্তরে স্তব করে পুতামা যে মুনি। পরাহ্পর স্বরং প্রস্থা লোক ময়। তদন্তরে স্তব করে পুতামা যে মুনি। পরাহ্পর স্বরং প্রস্থা লোক ময়। তদন্তরে স্তব করে পুতামা যে মুনি। পরাহ্পর স্বরং প্রস্থা দেবত। লাপদি।। নিরাকার সাকার লাপনি হরিছা একরে উনয়। লাজ হৈতে সৃষ্টি পালহ সংহার। শিবজ্ঞান শক্তি ইছা একরে উনয়। কগাহ নিস্তার হেতু এইত নিশ্চয়।। বামা রূপে হও প্রস্থা লাকি যোগ ত্না। তব সীমা নাহি হয় বর্নির কি আমি।। চফু নাহি দেব তুমি সকল সংসার। কর্ন নাহি শুন তুমি মহিমা লগার।। গান নাহি হয় বর্নির কি আমি।। চফু নাহি দেব তুমি সকল সংসার। কর্ন নাহি শুন তুমি মহিমা লগার।। গান নাহি হয় বর্নির কি আমি।। বামা রাহাদের স্করেত হয়য়। লাল বর কি আর ঐ পদে ভক্তি রয়।। কার্মার কার্মার ঐ পদে ভক্তি রয়।। কার্মার কার্মার ঐ পদে ভক্তি রয়।। কার্মার ক্রমার ঐ পদে ভক্তি রয়।। কার্মার ক্রমার লিক স্থাপিত তেথার লাল বর কি আর ঐ পান ভক্তি রয়।।

बहै भिवितिक त्यहै भू एक बैकवात ॥ अहित्क बैधरी कारक भिवभूत वान अहे वाका वित कर्स्यान क्षीनियान ॥

अथ कूटरदत्त श्रुती मर्गन।

প্রার। কহিব কুবের পুরী শুন বিষরণ। শর্মা কছে কছ সখা পুরীর বর্ণনা। বজ্ঞদন্ত ভাজাণের গুণনিধি পুজা। মাতার নিকটে থাকে সর্বদা একুরা। লালন পালন করে মাতা বহু ৰূপ। পিতা সন্নিধানে পুজ হয়ত বিরপ।। সর্বদা যে যজ্ঞদন্ত পত্নীকৈ জিজ্ঞানে। গুণনিধি আমার নিকটে নাছি আনে।। কি করে কোখার থাকে ত্রিকালে না দেখি। পত্নী কছে সদা বিদ্যা অভ্যানেতে রাখি।। দৃতকর্মে কেবল পালন গুণনিধি। খেলায় সর্বস্ব ছারি রহে নিরবধি।। মন্থানের এই রূপ হইল চরিত্র। পিতৃ সমিভারে বাস না হয় একত্র । পরে যজ্ঞদন্ত পুজ বিবাহ যে দিয়া। এই রপে কিছু কাল মাপন করিয়া।। কোন রূপে ছিল্ল পুজ চরিত্র জানিল। জোধভারে রমণীকে কহিতে লাগিল।। তোমা স্থানে নবরত্ব জাছরে আমার। খেনি জানিয়া দেহ প্ররোজন তার।। পতির এমন বাক্য শুনিয়া ভাজাণী। স্থামীকে প্রবোধ করি বুঝান তথনি।। জোধ হৈয়া জিজবর কছেন ভার্গাকে। বভনতে প্রভারণা করিলা জামাকে। পুজ আর তর মুখ না দেখিব কছু। দ্বিতীয় বিবাহ করে যজ্ঞদন্ত বিভু।। ক্রন্দন করমে পত্নী স্থামীর লান্গিয়া। গুণনিধি পরে আইল সমান শুনিয়া।।

ত্রিপদী। মাতার দেখিয়া থেদ, কি কহিব শুনি ভেদ, তারণো চলিল শুণনিধি। দিবা হৈল অবসান, কুণায় আকুল প্রাণ, কিসে নিবারিব যে প্রবাধি। দিবদ ছইল ক্রি, শিবরাত্র দেই দিন, শিব পুলা হেলু কেছ যায়। মিন্টায় স্থাক্স পায়, গুণনিধি হৃষ্ট তায়, সজে সজে চলিল তথায়॥ বন মধ্যে শিবলিক্সে, পুজিভেছে নানারক্সে, নিজাগত ছইল সবার। গুণ-নিধি থিরে পিরে, তথায় মাইয়া ফিরে, দেখে দীপ নির্মাণ আকার॥ পরিধান বস্ত্র চিরি, সলিতা দিলেন করি, প্রক্রুলিত প্রদীপ ছইল। এতেক মিন্টায় ছিল, সকলি কাপড়ে নিল, গমনেতে নিজিক জাগিল।। চোর বলি, গোর করি, উটিয়া সকলে ঘেরি, মার মার বলিয়া চলিল। প্রথ মধ্যে ধরি কেনে, কেছ মারে মুঠদেশে। গুণনিধি প্রাণ ক্লে তাজিল।। মুম্বন্ত জাগি

ছেরে, যতে চিত দণ্ডকদে, বাজিয়া অইয়া দাস শেষে। হেন শালে শিংদৃত শদ করে অনুষ্ঠ, ছভি ছাড লিবভত কেলো। তব দগুনীয় নহ। मम खिलित व इथ, मा। वर्काश्त पान्य व्याद । " : मृष्ठ तरम ७८६, धर्म থাসভা নতে, পাপীকন চৰ যোগা কিলে।। বন যমদূত হল, এই বাজি পুৰাল ন, কি কৃহিৰ ইহা। বিশেষে। শ'লাৰেৰ সুস্মীপে, প্ৰছলিত কৈল की, भ, क्षेत्र हांग्रा निवादि मटहरण।' खां। पुत्र खाटह स्मयः कि कव हाई বিশেষ, শিবরাত্র ভানশন বছে। তার পরে ফর্লাক্রমে, ভার্কিল ফালন অমে, শিবদক্ত উহ'কে যে কেছে । যদদুও পালা শুনি বন্ধা ছাড়ে আ ননি, গুণনিধি শিবলুত হয়। পিব : ব্লিপেনে বিষ , ফেলিল ভগনি পিছ। পুর্ক কর। কহিল নিশ্চার। জারত রে দেশমিন, লেলজ দেশবিপ্রতি, যম্ম ाक देवन भागवरमा। यस एक अध्देशन, देव्हद्या । का अद्यासन, क्रांटा बन থানি ভিছু বলো। শিবাশ্য আতে ান, মুভ দীপ নিবে কথা, ইঞ্ছ र शा नि वि । प्रताः श्रुवि । तः, श्रवार (सः धनवारकः, अष्टे १ दे। ें किरा वार्ता अंग केर्या, भारत समीतृति विषयम रवता कारा - বে। সংখ্য শ্লেক 🖒 শ, বান্যে গে ভতু শেষ, শিন শিব মনে নছা শ্ববে।। কাশীশ্বৰ অব্যালমে, রাজে ফিরি বারাণ্যে, হব গোরী একজ ইইয়া। কুবেবের দেখি যোগ, অতি অসম্ভব ভোগ, রূপা কবি ছক্ত বু-লাইয়া। কুবের চেতন পাইয়া দেখি হর সঞ্চে প্রিয়া গৌরী বাম দক্ষতে হেরিল। দেখি গৌবী কোপমাতি, এর থর কম্পরতি, ধনেশ্ব চক্ষ্ছভ टेन्न । नक रहक रूपस्थन, ८६वि नवन्त्री श्रद्ध, <mark>करव लोगी सिरवर</mark>न करहम। क्षित्र एक इन्हें हिर्देश कामाद्र को एक कटन, अटक मध्यकत शक्षांसन ॥ হাসিয়া কহেন ভব, শুন িয়। পু। তব, কোপ দুক্তি না হয় উচিত। বত কাল ভপ কৈল, এফাস্ত যে ওক্ত হৈল, দল্লা বর ইহাকে বিহিত্ত।। কুসেবে कतिया प्रया, कहित्लन महामाया, श्वार्थना क्वर महनानीक। कवित्नन ধনেশ্বর, আর কিবা লব বর, তব পাদ পাছে রহে চিত।। পারে তবে ক্লপা হয়, কৰণা প্ৰ দাশ ময়, ভুনি ভক্ত ৰূপে স্থা মোৰ। স্থাৰূপ হৈয়, ভনি যকপুরে হও স্বামী, ধনেশ্বর হৈয়া বাস কর।। হাশীতে ভব স্থাপিত, শিক শিক্ষ চমকিত, কুবের ঈশ্বর নাম হৈল। ভিক্তিভাবে যে পুঞ্চিনে ক্ষি धनवन्त रूदा, वह रहाश कतिएवं नक्या। वास्त्र मम भूत वाम रक दरत थश्चन जाने, धडे बाका जामात निक्छ। जात शद्व निक्छाम, मश्रद्धन

অন্তর্গাদ, নিজপুরে কুবেরের স্থিত।। গণে কহে শুন সধা, চতুর্দিণে পুরী দেখা, ঐ পরী হয় ক্লদ্রগা। শিব ভক্তি সতংপর, শিব পুলা নিরস্তর, শিবপ্রত করে সর্বর্ব ক্ষণ।। শিবভক্ত সম্পেরত, কাশীপুরী আসি যত, যথা তথা মরে কাশীস্থানে। তবে এই স্থানে বাস, করয়ে সুথ বিলাস, শিব ভক্ত শিব প্রায়ণে।। শিব পাদ প্র্যাবন্দ, ত্রিপদী করিয়া ছন্দ, সীতা নাথ বস্তুদাসে ভাবে। কহিলেন বির্চিয়া, মূল্গ্রন্থ বিস্তারিয়া, ভাবা করি পাচালী প্রকাশে।

প্রার্থ শিবশর্ম। কছে সধা করি নিবেদন। কি কর্ম করেন যভ পুলধারীগণ। গণে কছে শুন দ্বিজ ইছার বুর্ণন। জটা যে মকুট মাথে স্থেছ যে ববণ। পুল হস্তে একাদশ একত্র গমন। নিজ ভক্ত রক্ষা করি করের ভ্রমণ।। সদাকাল কাশীনাথে অর্চনা যে করে। দেবগণ রক্ষা আর ভক্তগণ পরে।। ইছারা কাশীতে বিশেশর স্তব করি। শিব পদে লিগু হয় ক্রন্ত মূর্ত্তি ধরি। কাশীপুরী ক্রন্তেশ্বরে পুলে যেই নরে। এই স্থানে অবশেষে সদা বাস করে।। সমাগু ছইল ভ্রেন্সেশ অধ্যায়ন। শুনিলে লভ্রে মুক্তি ব্যানের বছন।।

--31214---

ष्य हस्त्रभूती पर्नग।

ভাব কিরে মৃত মন জার কি ভোর ভাল হবে। দিনে দিনে

মারাজাল তাহে মুগ্ধ হরে রবে। বাল্যকালে ক্রীড়াছলে

কাটাইলে কুড়ুহলে, যৌবনে মদন জালে, ক্রমে ক্রমে মন্দ

হবে। জাইল বার্দ্ধকা দশা, এখন করিছ আশা, করে রামচন্দ্র

ভাষা, চল কাশী শেষে রবে।। গু।।

পরার। গণ সক্ষে শিবশর্মা চন্দ্র পুরী হান। ক্রমে ক্রমে উর্কৃ উঠি
পার চন্দ্রন্থানা। সুপ্রকাশ স্থাতল স্লিম্ব যে করণ। গণে কহে শুন স্থা
কহি বিষরণ।। চন্দ্র যে প্রকাশে ইল কহিব বিস্তার। ব্রহ্মার মানস পুর অন্তি মুনিবর।। যোরতর তপসা করিল মুনিবরে। অনোন্তম নামে নিরক্রম তপক্রে। নির্দিষ্ট উর্ক্লের্যাস্থান হয় তেকোরাশি। অনর চন্দ্রমান বিশ্ব ক্রমান্ত্রন প্রকাশি।। চন্দ্রির ইহতে তার বাহির ইইল। স্ক্রিণ স্লিম্বর

প্রকাশ করিল।। দোমকাপ বছ ভেজ হইল বিস্তর। দিক দব গ্রহণ করিল তার পর।। ধারণে অশক্ত হৈয়া ফেলিল ভূতলে। মহৌষ্ধি হৈস माम शृथिवीमश्राण।। তার श्रुत खन्ता माम्म त्राथ कति नम्। खन्तालारक ষ্থাস্কুথে গমন করয়।। রথ যে অশক্ত হৈল সোম ধারণেতে। সহচ্ছে প-জিয়া ভেন্ধ রহিল নিশ্চিতে।। সমুদ্র-মস্কুনকালে সোম উপজিল। পরের সোম রাজা হরে বাজপের কৈল॥ স্বর্গ মর্ত্য পাতাল দক্ষিণা দিয়া দান। অবশেষে কাশীপুরী করিয়। পয়ান ॥ সণিকর্ণি পশ্চিমেতে লিঙ্গ যোগে-श्वरत । य श्वारमण्ड मध्य काहि धाध निक्रवरत ॥ मावदारम मादिन भकाछ চিত্ত হৈয়া। সোমেশ্বর শিবলিঞ্গ তথাতে স্থাপিয়া॥ তাহার সশ্যুথে কুগু করি সোমরাজ। ঘোরতর তপস্যা সাধি নিজ ক্ষে ।। তলভবে হরগোরী প্রদান হইরে। সোমরাজে কহিলেন সম্ভট হৃদয়ে। তোমার ভবেতে ভৃষ্টি হইল আমার। যেই বর চাহ মনোনীত যে তোনার।। সোমরাজ তপভক্ষে দেখে বিশেশরে। বছবিধ স্তব করি কহিল সম্বরে॥ তব পাদ-পথে প্রভু করি নিবেদন। অচলা ভক্তিতে যেননা হয় থণ্ডন।। গেনে ভুষ্ট মহাদেব হৈয়া ভার পরে। চক্রলোকে রাজা তুমি হও নিরন্তরে॥ তুমি মোর বড় ভক্ত ভাহার কারণ। ললাটেতে এক কলা করিব ধারণ।। তব তপস্যার স্থানের ফল কি কহিব। ঐ কুত্তে স্কান তর্পণাদি যে করিব 🕫 নিজ পিতৃ দেবঝণে দে হইয়া মুক্ত। তব পুরে বাদ দদা হইবে নিযুক্ত।। আর শুন শিবলিঙ্গ ভোমার স্থাপিত। পুজিবে যে এই লিজ হৈয়া আন-**फिछ ॥ कुरूशक जरतामगी मश्यम क**हित्रा । हजूक भी मिटन छेशवादनटक র্থাকিয়া।। অমাকলা দিনে চন্দ্র কুণ্ডে স্লান করি। দান আদ্ধ তর্পণাদি শিব-পুজা সারি।। এইব্রপে বিধিমতে সকল সাধিবে। তারপরে ভারশেষে পারণ করিবে।। ঐশর্য্যান্বিত হৈয়া নানা ভোগ করে। শরীরাম্বে তার ৰাস হবে ভৰ পুরে।। এভেক বলিয়া শিব হৈল অন্তর্গ্যন। তদন্তরে চন্ত্র **দেব নিজপুরে যান।। দ্বিজবর ক্রমাগত রথেতে** গমন। চতু**ত** শ অধ্যায় इहेल गुमालन ॥

'अथ नुक्त भूती मन्त्र।

পরার। লোপায়ুক্রা নিকটে অগন্তা গুনি কন। শুন প্রিয়ানক্ষত্র প্রবীর বিবরণ্যা তার পূরে শিবশর্মাগণে কিন্তাসয়। জতি যে আশ্চর্মা

TOP TOP

शूरी क्लांग श्रांग इता। १८५ करह मक्क क शूरी हम काता। सूचित इहेंग्रा खन त्रांग हहात। खक त मिक्न इस अमृति इहें छ। मक्क अकाशिक मान देश अमृति इहें छ। मक्क अकाशिक मान देश अकाशित श्रांग करता। एकि का हता। नक्क प्र प्रांग करता। के जातान में का मिल याहेगा। वक्षण नक्षण करता। के जातान में का मिल याहेगा। वक्षण नक्षण करता। कर श्रांग करित्रा। करित्र का भाग विकास कर श्रांग करता। कर श्रांग वर्षण कर श्रांग कर श्रांग। कर श्रांग कर श्रांग कर श्रांग।

অথ বুধলোক দর্গন।

পরার। পিবশন্ধা বৃধকোক দৈখি অবশেষে। চন্দ্রপুর তেজ ন্যার ভাতৃশ প্রকাশে । পুনর্বার শিবশর্মা গণে জিজ্ঞানয়। বর্ণনা করহ স্থা কোন হান হয়। গণে করে শন জিজ্ঞানয়। বর্ণনা করহ স্থা কোন হান হয়। গণে করে শন জিজ্ঞানয়। আশ্বর্ণা পুরী ব্যলোক কর। যে প্রকাশের বুধ প্রাহ হইল বিদ্যার। বিশেষ করিয়া কহি শুন ছিল্ল ভার।। গুরুলাল্লী হরিছে চন্দ্রের মান্ত হৈল। দ্বেতা সকলে নিলি চন্দ্রে নিষেধিল।। গুরুলাল্লী ভারা সব গুরু মধ্যে হয়। হরণ করিলে পাপ হবে অভিশায়।। দেবভার বাক্য চল্ল হেলন করিয়া। অবহেশে গুরুলাল্লী অইল হরিয়া॥ নিজস্থানে চন্দ্রেদেব ভারা লইয়া গেল। দেবগুরু বৃহস্পতি থেনিত চইল।। পরে রুজ্ঞান সব থেনিত কারণ। চন্দ্রের সহিত বুদ্ধ অনেক বর্ণন।। নিপজ্জির দেখি ক্রেলা মধ্যস্থ হৈয়া। বুদ্ধ নিবারণ পরে ভারাকে লইয়া।। রুপতি স্থানে আনি ভারাকে যে দিল। ভারা দেখি দেবগুরু স্থিরচিত্ত কৈল।। ভার পরে ভারাকে দেখিয়া গর্ভবতী। ইনিক শিলেভে গর্ভি ভারিজ কিল।। ভার পরে ভারাকে দেখিয়া গর্ভবতী। ইনিক শিলেভে গর্ভি ভারিজ কিল।। ভার পরে ভারাকে দেখিয়া গর্ভবতী। ইনিক শিলেভে গর্ভি ভারিজ লিল। ভারা দেখি জালাকে গর্ভি ভারিজ লিল। ভারাকিক দেখি বুদ্ধার জিলা লিকারা তেজ কন্দ্র বার্ধ নাহি হয়। বুদ্বাই জালা লাইয়া ঐ স্থানে রুস।। এবড় জাশ্বর্গা যে স্কল দেব কয়।

टास्य रात एक भन्नी आण्टर्या ना रहा।। हेन्ह्रांक्र महाह्य किन तर्वना रा। भन ক। স্বাঁ তেজ দীপ জ্যোতি দা হর পাবক।। কাম ক্রোধ আদি করি ছয় तिशृ इत। हेशता मर्जना जीटक जाहरत निम्हता। এই ছয় निवातन एष পারে করিছে। দেইজন হয় জানি জানিবে নেদেছে। চন্দ্র ছিজরাজ হৈল এইসে কারণ। অভতত্ত্ব চন্দ্র হৈতে পাবক জনম।। বিধির নাহিক দোৰ কর্ম্মেতে ঘটার। নির্মাল চল্লের কুলো সকলক্ষ হয়।। ভার পরে তারাকে বলেন দেবগণ। বুধের জনক কেবা করিব আবণ।। ১এই বাক্য শুনি তারা লজ্জিত হইল। অধোমুধে বসি দেবী নিঃশক্তে রহিল।। মৌন দেখি কার্ত্তিকের কুপিত অন্তর। দেব বাক্য তারা ভূমি গ্রাহ্ম নাছি কর।। কোপাবিষ্ট কার্ত্তিকের দেখি ত্রন্দা কয়। ষথার্য কহিবে তারা পুজ্ঞ কার इ.स. हेर्स श्रृष्ट वृद (मर्वी कम खर्दासुरक्ष) श्रृमि (मर्वनन तन निकालप्त : সুখে।। বুধদের পিতঃভানে অতুজ্ঞা লইরা। তপস্তা করিতে কাশী গেলেন চলিয়া।। বৃধেশ্ব শিবলিক **স্থাপন করিয়া। কঠোর ত**পত্তা যোগ করেম বসিয়া। ঐ লিজে মহাদেব হুইয়া উদ্য়া বুণ ভূমি বর লহ পাহা ইচ্ছা হয়। বুধদেব যোগভক্ষে দেখিলা শক্ষরে। দ্বিনয় পুর্নকে ভবে নানাবিধ করে।। তুমি স্থক্ষ স্থুল হও রূপার সাগর। মাগার স্বারায় সৃষ্টি পালন সংহার।। তোমার মহিমা দেব কে কহিতে পারে। বলি ইন্দ্র হৈল পুরি যে পিণাকেখরে ॥ ধুর্জটে নীলকণ্ঠ নহা স্মাশানের প্রক্তি। আনন্দ কানন হৈরা জীবে কর গতি।। তব পদে মতি মোর থাকে অনুক্রণ। স্তব শুনি মহাদের বলেন তথন।। ভূমি যে হইবে অধিপতি বুধপুরে। বুধগ্রছ তব নাম আদশ্ চক্ররে।। সকলের প্জনীয় হইবে সন্ধ্ব। বুবপুরে সুখলোর কর নিরপ্তর।। আর এই বুধেশার লিফ যে পুজিবে। বুদ্ধিমন্ত সুখভোগ অনায়ানে হবে।। অত্যে তব পুরে বাস ইথে মাহি আন। এতেক কহিয়া मर्शतिय अस्ति।। शक्षनम अशांत्र रहेन नमांभग। ,श्वनित्त नखरत मुक्ति পাপ ৰিগেচন। 🧇 -

व्यथ अक्ट शूत मर्नम।

প্রার। তদন্তরে শুক্রপুরী হৈল দরশন। গণে কহে শুন স্থা কহি বিবরণ।। সহত্র বৎসর ভূঞ তপস্থা করিল। ভক্ষণ গোধুম রেণু নিয়মে রহিল।! হুতিশন ঘোরতর তপ্তা করম। তাহা দেখি ভূতনাথ হুইমা সদ্য।। মৃত কঞ্জিবনী মাস্ত ভূতকে দিলেন। হুইমোরী কার্ত্তিক গণেশ না জানেন।। অনা কেই এ মান্ত লালে জানে ভূবনো হেনমন্ত্র মহাদের দিলেন

पृथ्वचारन । पृथ्वदम्य **बसू**य कूटलत खद्गकन। मक्किननी मञ्ज शहिता मन इर्य मन ।। जासूत निश्नारक गत धारक शुक्र वरण । जात शरत जासक जासूत কোন কালে।। শিবগণ সঙ্গে যুদ্ধ ঘোরতর কৈল। একদিন অনেক অনুর নতী হৈল।। অন্ধক যে ভৃগুন্তানে নিবেদন করে। তব রুপা হৈতে আছি নির্ভর শরীরে।। আদাকার যুদ্ধেতে অনেক দৈতা মরে। ভুমি ওক্ষানা क्रितित क्रिया दक्का करता। এই थाका शुनि शुक्र वार्या विवक्तरा। उत বৈনা রক্ষাকর দেখ বিস্তানানে।। শুক্রাচার্য্য মন্ত্রপুত করিয়া তখন। প্রত্যে– কেতে নাম ধরি করিল স্মরণ।। তবে যত মৃতাসুর বাঁচিত সম্বরে। শিব-গণে মার মার **ছোর শব্দ করে।। শিবগণ দঙ্গেতে** যে মহাযুদ্ধ কৈল। না পারিরা লিবগণ পরাজয় হৈল। তদস্তরে শিব দৈন্য নন্দিকে অইয়া। শিবেরনিকটে সবকহিল আসিয়া।। শুক্রাচার্যা অমুরের হইয়া সহার। মৃত ট্ৰভাগণে অবহেলেতে বাঁচায়।। মহাদেব শুনিয়া নন্দিকে আঞা হয়। গুক্রাচার্যে। ধরি তুমি **স্থানহ নিশ্চয়। স্থাক্তা**দাত্র যায় নন্দী নহাহর্য হৈয়া। শিব অগ্রে ভার্মবেরে জানিল ধরিয়া। শুক্রাচার্য্যে দেখি শিব উদরে রাখিল। সম্বংসর শুক্রদে**ব উ**দরে রহিল।। বিশ্বরূপ দর্শন করে। সর্ম্বক্ষণ। বাহ্নি হইতে নাহি পার নিদর্শন। লিঙ্গদ্ধার দিয়া শুক্র বাহির भूजेल । स्थित खुकि सञ्चार (त प्यास्तिक कतिला। पुष्ठे देश्या सञ्चारम्य द्वामिला। ভারে। যাহ ভূমি শুক্র গ্রহ হইবে অচিরে॥ অবশেষে দেবতা অস্তুরে যুদ্ধ হয়। দৈত্যগণ না পারিয়া হৈল পরাজর।। শুক্রাচায্য আনন্দ কাননে গিয়া পরে। লিজ যে স্থাপনা করি পুজমে শঙ্করে॥ পুপ্সামাদি বিল্পত্ত সমিধ বতেক। পঞ্চাজার বৎসর অর্চনা অনেক॥ ইহাতে যে রুপা না হইল মহেশ্বরে। আগার গোগুলি রেণু করে তার পরে।। এই মত হাজার বৎসর তপ করে। তুই হৈয়া মহাদেব বলে ভার্নাবেরে॥ বর লহ **গুজা**-চার্য্য ভব মনোনীভ। প্রভু দেখি শুক্রাচার্য্য হৈল আনন্দিভ।। বছবিধ স্তব করে পর্য ভক্তিতে। সুর্য্য সোম আদি করি অফীম মূর্ভিতে। তার পরে শুক্রাচার্য্য করে মহাদেবে। শুক্রপুর অধিপতি তুমি যে হ**ইবে।** আর কহি তোমার স্থাপিত শুক্রেখরে। শুক্রবার **অইমীতে পুরে বেই** নরে। সুখলোগ করি অন্তে তবপুরে যায়। বর দিয়া অন্তর্দ্ধান হইল দরামর ॥ শোড়ষ অধ্যায় যে অমৃত বিবরণ। কতদূরে ম**ঙ্গলের পুরী** দর-শন া সীতানাথ বসু দাস অমিকা নিবাসী। কাশীখণ্ড সুধাজাণ্ড ভাষাতে প্ৰকাশি ।

ष्थ मञ्जलाताक मर्नन।

পায়ার। গণে কংছ শিবশর্মা ভূমি ধীরবর। মঞ্জ পুরীর কথা শুনহ সম্বর। ত্রন্ধার মানস পুজ সপ্তথাৰি খ্যাত। সৃষ্টির প্রথমে হয় অগ্রে ঞ্বি মাত।। সপ্তমধ্যে অঞ্চীরার পুঞ্জ অঙ্গারক। দিভীয় মঙ্গল নাম জানে সর্ফলোক।। অঙ্গারক কাশীপুরী গিয়া ভার পরে। সর্ফ ভীর্থ ক্রমে ক্রমে मत्रभनाखरत् ॥ भिवनिय स्थाना कतिया कुछ देवन । भरखद्य भत्र धात তপ্রা। করিল।। তার পরে প্রমন্ন হৃদয়ে গঙ্গাধর। মুনি অঙ্গারকে শিব দিলেন যে বর্।। **অঙ্গারকপুরে বা**দ তোমার ইইবে। **ভ**ব শিবলিঞ্ ভৌবেশর যে ঘূৰিবে।। ভৌগবারে চতুর্থীতে যে পুজে একান্তে। মন দিয়া শুন কহি ফল যেই অস্তে।। তব পুরে বাস হয় মুক্তি পদ পার। আর কল কহি শুন ভিজ মহাশয়।। ঐ স্থানে ঐ দিনে শ্রাদ্ধ যেই করে। সম্বংসরের আক্ষেকন প্রাপ্তি হয় তারে।। পরে শিবপুরের ঋনহ বিবরণ। গণে কছে শিবশর্মা করি নিবেদন।। রুহস্পতি বারাগনীপুরীতে ঘাইয়া নিজ নিমে শিবলিঙ্গ স্থাপিত করিয়া।। সন্মথেতে কুণ্ড করি তথ জার**্** ভিল। সহস্রবংশর **অনাত্রভেতে** রহিল।। ভারপরে চিন্তামণি প্রশন্<u>র</u> হইর।। লিঙ্গহতে তেজোময় ৰূপ প্রকাশিয়া।। শিব দেখি রুহস্পতি স্তব করি কয়। ভূমি হও মুক্তিদাতা জ্ঞানের বিষয়।। অফীন শ্লোকেতে স্তব করি এই মতে। মহাদেব ভুকী হয়ে কহিলা সাক্ষ ভে।। রুংপেভিপুরে ভব বাস যে হইবে। তোমার স্থাপিত লিঙ্গ ভক্তিতে গুজিবে ।। ভব পুরে বান ভার অবশ্য হইবে। অন্তেমোক সুধভোগ ঐথিকে করিবে॥ আর यिन द्रश्र्ञां विवादत शूटक इत। शूका देकरत धर्रे मिरन क्षित्र क्षु तन्न ॥ **अधि**केश सशरमय ब्रेकाटक शामिल। आश्वामितल तमरक्षेय दूर्श्यकि হৈল।। তোমরা সকলে আচরিবে বিধিমতে। ভছুপরে ব্রহ্মানি দেবতা ভাৰতে।। যথাবিধ दृश्म्भिতि পুঞ্জ। সবে করে। ভারনেধে সকলে গেলেন দেবপুরে।। তদন্তরে মহাদেব হৈল অন্তথ্যান। রহস্পতি সম্বরে আইলা विक्रम्भा ----

অথ শনিপুরীর হুত্র। ।

্পরার। অভঃপর শনিগ্রহ পুরীর র্ত্তান্ত। জন্মার মানস পুক্ত মরীচি সুর্ত্তিবন্তা ভারতি পুক্ত কলাপ দক্ষকনা। বিভা কৈল। ভার গর্ন্তে সুর্বাদেশ উদস্ক বে হৈলা। প্রতিপত্তি কনা। ভাতা সুর্বোর রমণী। বৈবস্তভাস্তরে হৈল

कनम निक्ति । यसून। इहेल कना शुक्त देश्य समा शदा करी युर्गाटक পারণে অক্ষম।। কি করিব ইহার যে উপায় চিন্তিল। ভারপরে স্বরূপাকে নিজে প্রকাশিক।। অরুপাকে কচে তথ্য গোপন বচন। সূর্যাতেক আমার অসহা যে ধ্রার।) কোপ্র কইব আমি কিছু কাল ভরে। ভূমি এই রুকান্ত मा करिएव सूर्याहत । अक्या करून स्वी अवना त्राधित। य शर्राह সুর্য্যদের শাপ না করিব।। ইহা কহি ভষ্টাদেবী পিভাস্থানে যায়। পিভা क्षिश्च करता श्रुतः कृतिल विषेश्च । श्रामीखारन ग्रंह रमशै विलश्चना इस्र। এইবাকা পিতাস্থানে শুনিত্না ভাবয় । চিস্তা করি ছদয়রে অশ্বিনী হুইল। গহনকাননে গিয়া তপ্য। ব বিলা। শুল্প পত্র আহার কেবল করি রয়! পূর্ব্যতেক ধারণ অন্তরে নদা তর।। শেষেতে অরপা গরে সন্তান জন্মায়। সাধশক মুনি শনি কন্যা ভদ্রা তায়। নিজ সম্ভানের পক্ষে স্নেহ অভিশয়। মতু বৈবস্বত আনে রুত্রান্ত নিশ্চর।। আপন আশার যম নাহিক জানায়। ক্রোধ তরি নিজপদ মাতারে দেখাও।। সপজীর পুত্র বলি স্বরূপা ক-হিল। তব পদ ক্ষয় হবে নিশ্চয় বলিল।। শাপের রুতান্ত কথা পিডাকে জানায়। ধূর্যোর সংশয় অন্মে কিছু স্বকপার। শনিকে শ্বরূপা কহে শাপ माहि यात्र। किकिए পদের মাণ্য পড়িছা অভর।। ভার পরে মুর্বাবের স্বৰ্মণা অনায়। নিরীক্ষণ করি সূর্য্য স্বরূপাকে কয়। সত্য কহিষেন দেবী রুব্রান্ত ইহার। নত্রা শাপিন আমি কহিলাম সার॥ স্বৰূপা রুব্রান্ত ভয়ে কহিলেন পরে। ভদন্তরে সুর্য্য জাম তথ্যী পিতৃহবে। কোপদুষ্টে সুর্য্যদেব ्पर्य अञ्चि পতि। कनाति वृद्धास यव क**रित्यन अञ्चित प्रश्रास्त** सूर्यास्यव অংশক্রপ হৈয়া। অধিনীর রূপে, 🏥 তথার যাইয়া। অশ্বদেখি তফীদেরী জ্ঞতগতি চলে। পাছে পাছে সুর্যাদেব ভ্রমণ করিলে।। সুর্যোর ভ্রমণে তেক চইল পতিত। অসিনী কুমারভাতে হইল উদিত।। অভঃপ্র শনি গ্রহ কাশীতে যাইয়া।। শিবলিঙ্গ স্থাপনাদি তপ আরম্ভিয়া।। আদিনাথ সম্ভুষ্ট হইয়া শমিপ্রভি। শনিপুরে বাস ভব হইবে সম্প্রভি।। শনিবারে শনীঙ্গরে যে জন পুজিবে। শনিপুরে বাস তার অচিরে হইবে। অফীদশে সন্ত্রপ্রবি পুরীপরে দেখি। গণে জিঞাসিল দ্বিজটিত্তে হৈয়া সুখী ৷৷ গণে কছে শিবশর্মা তব ছক্তি মন। জেনে কর সপ্তশ্ববি পুরী দরশন।। জন্মার মানস পুত্ত সন্ত থাবি হয়। পৌলস্তা পৌলহ কেতৃ অফিনরিচয়। অ-ক্সিরা যশিষ্ঠ এই সর প্রদাপতি। দৃষ্টির কারতে হুরা **একা ভবছি**তি।। काभी थ्र ७ प्रांकाय काग्रुक नमांग्रा नखनमा ज्यानि हरेका नमायाम ॥

অথ দথঝারির র্ত্তান্ত কথন।

পরার। অনস্থা ক্ষেমা শ্রুতি সঙ্গত শর্মানি। মৃতি লক্ষা এই
সপ্ত সতী অবন্ধিতি।। মরিচি আদির প্রতি জমে সপ্ত সতী। সর্ব প্রেষ্ঠ
উত্তম বে হয় অক্লন্ধতী।। বৈকৃপ্তিতে লক্ষার সহিত ভগতান। প্রশংসা
সভেক অক্লন্ধতীর আথ্যান।। তারপরে সপ্তথ্যবি বারাণনী গিয়া। স্থানা
মতে শিবলিঙ্গা স্থাপিত করিষা।। শস্তুনাথ প্রসংবাতে দৃটিকর্তা হয়।
এই সপ্ত পুরী পুণাবন্ত অভিশয়।। সপ্ত থাবির সংস্থাপিত লিঙ্গ কাশীপুরে।
ভক্তি ভাগে যেজন পুজিবে লিঙ্গবরে।। ভাত্র তুল্য তেজঃ পুঞ্জ তাহারা
হইয়া। এই স্থানে বাসকরে স্বকর্ম্মে থাকিয়া। অন্তাদশ অধ্যায় যে হইল
বর্ণন। শুনিলে লভরে মৃক্তি শিবের বচন।। সীতানাথ বস্তুদাস স্বিকা
নিবাস। শিব প্রেদ্ ভক্তি থাকে এই অভিলাব।।

অথ প্রবোপাখ্যান।

প্রার। শিবশর্মা ধ্রুবপুরী নেখি চমৎকার। প্রবন্ধ হইয়া কহ রুপ্তান্ত ইহার।।

ত্রিপদী। বিন্ধ কতে শুন স্থা, কি আশ্চ্যা হৈল দেখা, একপদে ভ্রমণ করয়। যেন মেরুদণ্ড কায়, পুণা এজ্জুলিত হয়, তেতেতে দৈর্য না ধর্ম। চক্রু ভামু একস্তরে, কিবা কান্তি শোভা করে, কি কহিব বর্ণনা অপার। একি অপরপ স্থা, কছু নাহি চক্ষে দেখা, এই পুরী হরত কাহার। শুন স্থা গণে কয়, নাম প্রুব মহাশয়, বিজ্ঞার শুনহ নহামতি। স্বরুত্ত, মরুর পুত্র, উন্তানচরণ চিত্র, তথা পত্রী স্কুক্তি স্থনীতি। স্বরুচি হয়েন শ্রেষ্ঠ, রাজ পাটেশরী জার্চ, ভার গর্মে উন্তম তনয়। স্থনীতির গর্মে ক্রুব, বাজ পাটেশরী জার্চ, ভার গর্মে উন্তম তনয়। স্থনীতির গর্মে ক্রুব, উন্তম লক্ষণ স্ব, চুই পুত্র উন্তানের হয়। স্থনীতি ছঃখিতা অভিনে বিভিন্ন স্থানে বস্থি, প্রুব লইয়া রহে নিরন্তর। একদিন প্রুব মাতা, রাজার সমিধি যথা, পুত্রকে পাঠান অভঃপর।। কি কব ছঃথের শেষ, বালকের বাজি কেশ, ছঃখি বলি নাহি আভরণ। প্রবের দেবিয়া ভাব, স্থনীতির বাজি কেশ, ছঃখি বলি নাহি আভরণ। প্রবের দেবিয়া ভাব, স্থনীতের বাজি কেশ, ইহার যে নাহিক তুলনা। প্রাতঃস্থা শেজা গেন, মণিনয় দীপ্ত হেল, ইহার যে নাহিক তুলনা। প্রবাহ মাতৃ আজা লইয়া, চলিয়েক

इर्स देश्या, शिकुशरम अगाम क्रामना ॥ अना अना निश्चमत्क, हत्त क्षत প্সতি রঙ্গে, যথা বৈসে পিতা সিংহাসনে। রা**ছ**-সিংহাসনে বদি, কোলে পুঞ মৃত্ হারি, উত্তম লইরা হর্ষ মনে।। শিশুসঙ্গে কুতুহলে, ধ্রুব যান হেন কালে, সিংহাসনে উঠিছে উদাত। সুক্লতি দেখিয়া ফ্রুবে, ক্রোধকরি ৰলে ভবে, নহ বিংহাসন যোগাবত ।। উত্তম পুত্ত আমার, সিংহাসনে বসি যার, ছঃথিপুজ বসিবে কেমনে। বিমাতার কটুবাণী, গুলি পুর অভিমানী, अभगारन कि तिल कथरन ॥ सूक्षां ह त्कारधरक तरह, ताका कि ह नाहि करह, দুখংমনে ভাবি অভিশয়। দেখিয়া যে মহারাজ, ধ্রুবের মলিন সাজ, ম-त्माष्ट्रः सत्माग्रदश तथा। क्षव नालाकत मान, किरत यान मान-जान, বিংহে যেন হস্তী অপুমানী। এসতি বালক ধ্রুব, মনে করি অসম্ভব, মাতা क्यांटन हिल्ल व्यालनि ॥ खन्यांटन युश्चह्म यटन यटन शांटक श्रम, यनिन वमन देश्ल (कन । शृंद्धव प्रथिवा मूथ, सूनी जित काटी दुक, क्षरव काटल করিয়া ভাবেন।। মন্তকের আণ লয়, মুখে ঘর্মা অভিশয়, অঞ্চলেতে মুখ মুছি কয়। রাজা হৈয়া বৃদ্ধিহত, তোমাকে না হৈল রত, তব সমাদর যা ক্রম্ব। দ্রুব করে শুন মাতা, একি বিপরীত কথা, এইৰূপ কিনের কারণ। সুক্রতি যেগত রাণী, তেমতি নহ আপনি, রাজা ভাবে ভিন্ন দেখি কেন ॥ সুনীতি কছেন ধ্রুব, আপনার কর্ম সব, বিধাতা সকল মূল হয়। মাতৃবাক্য শুনি ধ্রুব, মনে চুঃধ্র অসম্ভব, মাতাকে বিনয় করি কয়। শুন করি নিবেদন ब। कदित्व खना मन, फलना। कदित्छ यात वतन। एव शप कदि शित्त, ছার্থ না ভাবি অন্তরে, তুনি চিন্তা না করিবে মনে ॥ হেনবাকা শুনি সাতান একি অসম্ভব কথা, তপ্ৰসার কাল তব্ নয়। কহি পুজ তব কাছে, সময় অপেক্ষা আছে, হেনবাকা না কহ আনায়॥ থেলিবারে যাহ তুনি, পথ মিরক্ষিয়া আমি, মরে আইলে পরাণ জুড়ায়। বিলম্ব দেখিলে হয়, স্তমে-छुब श्रात्रात्रम, व्यातित्व (य द्वःश्र निवात्रम् ॥ जुमि मृतिरखद्र धम, जीवरनद যে জীবন, যেমতি অন্বের যৃষ্টি বল। ধ্রুব কহে শুন নাছা, কৃহিলে মূল বিধাতা, ভবে কেন গত কর কাল।। মাতা জানিল নিশ্চিত, বিধিমোরে বিভয়িত, বাহা ইচ্ছা আচরণ কর। সেই কালে আব্দ্রা পায়, ধ্রুব প্রণমিয়া মায়, চলে শিশু নির্ভয় শরীর ॥ পথে যাইবার কালে,বায়ু পথে দুষ্টিচলে, অরণ্যেতে করিল প্রবেশ। অতি ঘোরতর বন, চলে ধুবু অমুক্ষণ, মহিন बाज तम्बद्ध कंटनमा मश अपि दश्न कृदिन, छाशात कपूरी जातन, धन ণাম করিয়া নিবেদয়। বিধি সামুকুল হৈল, তব দরশন পাইল, কছ

4 3

উপদেশ মহাশয়।। মরিচাদি সপ্তথাষি বালক দেখিয়া ইাসি, কি আঁশ্টিটী বচন ইহার। কে ভূমি কাহার পুঞ্জ, কই শুনি সব সুত্র, সপ্তশ্নবি কহিলা সম্বর।। শুন প্রভূ ধ্রুব কয়, উত্তান রাজ্তনয়, সপ্তার্তীপ অধিকার যার। পিতৃ রাজ্য নাহি চাহি, উচ্চপদ দিতে কহি, যেন ঐ পদে হর অন্তর।। **এই উপদশ দেহ, ভত্ত্বজ্ঞান মোরে কহ্, জনায়ানে বাঞা নিদ্ধি হয়। ধু বৈ** मञ्जूशाचि कया, मुक्नम (कमावमया, मार्वायन क्षीटकम कथा। विकू क्रवे माटमा-দর, মাধব মুরলীধর, স্বাস্থদের জ্ঞীরাম রাঘব। এইরূপ স্তব করি, সপ্তথাবি বলে হরি, দ্বাদশ অক্ষর মন্ত্রদিব।। মুনি বলে কহি আমি, স্নান করি আ-ইস ভুমি, উপদেশ করাব ভোমায়। গুলি ধ্রুব শীস্ত্রগতি, স্নান করি শুদ্ধ-মতি। মুনি পদে প্রশাম করম।। ভার পদের শ্ববি সবে, প্রেশন হইরা ধ্রুবে। ছাদশ অক্ষর মন্ত্রদের। কুতার্থ হইয়া ধ্রুব, মুখে জপে বাস্থ্রদেব, গুরু প্রে প্রাম করয় 🛭 পরে ধুব মহাশন্ত, মধুবনে চলি যার, ধথার যয়না বিরা-জিত। দরশনে মধুবদ, পুনর্জন্ম নাহি হন, কি কহিব বনের বর্ণিত।। মধুবন সঙ্গ হয়, মধুসুর বাস ভার, পুর্দের আছ্ত্রে নির্দারিত। একাজ করিয়া মন, তথা করে বিচক্ষণ, আঅভাব সকলি বঞ্চিত ৷ অশেষ ভক্তির পার, তবে গ্রুব তদন্তর, কদে দেখে প্রঞ দয়াময়। শুক্লবর্ণ মর ছবি। ব্রহ্মা বিষ্ণু শিব পৌরী, স্থাবর জলন বিষ্ণু ময়।। অভিযোরভর তণ। দেবতা কম্পিত সব, উলপঞ্চাশ জলার বিষয়ণ। পুরের দেখিয়া উপন ভাবিত দেবতা সক, স্বন্ধ পদে করেন জ্বন।।

ত্রিপানী। বাস্ত ইন্দ্র দেবরাজ, নিজপদে কিবা কান, ধুর তথে
নাছিক রক্ষণ। ইন্দ্রদেব সদাভাবে, কোথার ঘাইব তবে, ধুর তপা ভরের
কারণ। ইন্দ্রদেব তার পরে, অনেক বিচার করে, তপভঙ্গে পাঠার যে
ছত। মধুবনে ধুরুব যথা, ভুতগণযার তথা, যাহাতে তপসা। হর হত।
পরে তবে ভুতচর, ভরস্কর মূর্তি হয়, নানারপে দর্শায় যে ভয়। মাধাতে
ধুবের মাতা, সল্লিকটে কহে কপা, অনেক বিলাপ করি কয়।। অভিশন
থেদ করে, পদাঘাত মারে শিরে,ধুরুব বলি কান্দে উট্ডেংস্বরে। কণেকে
ধুবের মন, যোগভঙ্গ উচ্চাটন, ভুতগণে অলেন প্রকারে!৷ বিমাছার
ক্রীবাকা, ক্রন করিয়া ঐকা,বভ্রমত বিলাপ দেখয়। মুহুর্তেকে ধুরুব মনি,
নিঃশাম ছাতে অমনি, পুন্মন বাসুদেবে হয়।। তার পরে ভুত্তর, স্বহান
নেতে চলি নাম, দেবরাজ ভাবেন উপায়। সকল দেবছা বঙ্গে, এক্রা ম্থা

तिक तरक, क्षराम कंत्रिया गर्व क्या । कहि खक्को (मर्वत्रो**रक,** शुन् गार्ट निक दार्य, रकामारमत नाहि क्य काम । यतः छेशकात इरक, शन्हारक कानित्व गत्व, शुनि स्मव श्रश्नात विमाश ॥ कमस्रद्धा वासूरमव, यथ। क्र করে ধু,ব, সেইস্থানে দিল দরশন। সন্মুখেতে গদাধর, তপ ভাঞ্চি ধুুৰবর,প্রস্থু দেখি প্রণামে ভগন।। বহু দিন অস্তে যেন,পিতা করি দরশন, বালক বিলাপ করি কান্দে। তেমতি যে ধ্রবরর, ক্রন্দনেতে উচ্চৈঃস্থর, खूमि পড़ि दित माहि वाटक ।। यु त्वत, क्रम्मत इति, हक्कू खरत शाताधित, কোলে করে বালক বলিয়। গাত্তে ধূলা ভ্যাগ করি, চৈতন্য করিয়া হরি, कक्षमाटें बहन कि इसी। एक बिश्च युव प्रशाममः श्रयोदक अवाग इत्र, विविध প্রকারে শুরু করে। ভূমি একা খর হরি, চক্র স্থর্গা আদি করি, পুরুযোত্তন **ঞ্জিকার** জীকরে II- পর্বত সমুদ্র হয়, ভাগ্নি বায়ু তেজোময়, বরুণাদি পতি ধনেশ্র। জীব অস্ত জাদি যত স্থাবরাদি জার কত, এক জংশে সর্বত্তে বিস্তার।। তুমি গুণ গুণাভীত,সুল স্থক্ষা হঙ চিত, বেদান্তেতে তুমি সারাৎ সার। নর্ক স্থানে অধিষ্ঠাতা, অকারেতে বিঞ্গতা, ভূমি নর্কময় চরাচর।। আর ঋষি যুনি যত, এক অংশে বিরাজিত, নারারণ বাস্ত্রদেব গার। আমি অস্পা শিশু মতি, নাজানি তকতি স্তুতি, প্রভু তব মহিমা অপার।। করে এইরপে স্তব, বিভৃতি যোগেতে সব, সর্বত্ত সমান দরাময়। ভক্ত প্রেমে ট্রয়া বশ্য কহিছেন শ্রীনিবাদ, ধ্রুব মৌর পরম ভক্ত হয়।। দকলের উচ্চ-স্থান, তোমার পুরী নির্মাণ, হইরাছে অতি মনোহর। মুনীভিরে সঙ্গে লবে, ঐ পুরী বাদ হবে, এই বাকা কহিলাম সার॥ স্বাভি মনোহর স্থান, বুবপুরী সু ভাষানি, বিশ্বকর্মা নির্মাণ করম। ধু,বে কহি নারারণ, वाजां भनी विरुद्धान, भित यथा जला विज्ञां अहा। हक्क द्र्या आहि यठ, वाह्य বক্লণ সভত, যাহাকে যে তথ্যা। করয়। ত্বপদে নিযুক্ত হয়, আরাধনা করি ভার, ভাহার মহিমা কত কব।। যাহার রূপাতে আমি, হয়েছি देवजूछ जायी, खन धु व जात विवहरत। कानी भूतीत माशाला, वर्गरन ना হয় সভ্যা, ভুমি যে চলত্ সেই স্থানে ।। কার্ত্তিক মাসেতে যেবা, কাশীনাথে করে সেবা, দান আদি সতত করম। সেই দর মহাধনা, কহনে মা আর পুগ্য, শিব তারে হঁয়েন সময়।। শিবলিক সংস্থাপন, বাস করে করে দান, পুন্ধরিণী কুপাদ্রি যভেক। কার্ত্তিকেতে করে দান, সেই রাজি পুণাবান, দীয়া ভার কলের নাহিক॥ গঙ্গা বহু উত্তরেতে, প্রবাহ লভ গুণেতে, স্ট্রীকর্নি, বলি হয় স্থান। কার্ত্তিকেতে চভুচ্ছ শী, স্নান করে যেবা আসি,

ভার পুণ্য কে করে বাখান।। জার কহি শুন ধু ব, কাশীপুরে তত্ত্ত্যান্দ ८व कीटवत एम जानाटण। शिव खक्ष करानी इन, जात न्यका मञ्ज दिन-নির্কাণ সে হয় অনায়ানে।। ধু র শুন কহিলাম, তুলসী আর শালগ্রাম, শঙ্খ চক্র গোপী মাটি আর। এই পঞ্চ বার ঘরে, কক্ষী স্থিত্য হয় তারে, ঈশার যে তার সাক্ষাৎকার।। মে গলে তুলদী মালা,ভার দেহে নাহি মলা। হরিহর প্রেল্ক ভাহায়। ভার পরে নারায়ণ, গরুড়েতে আরোহণ, লইনা কাশীপুরে চলি যায় । মণিকর্ণিকাতে স্নান,পঞ্চজোশেতে ভ্রমণ, বিশ্বেপরে কররে প্রণাম। ধুরুব রহে কাশীপুরে, নারায়ণ ভদন্তরে, স্বস্থানেতে করমে গমন।। পৰে ধুবুব মহাশয়, কাশীপুরে রাদ হয়, শিবলিঞ্চ করিয়া স্থা-পন। ঐ স্থানে কুণ্ড করে, তপকরে নিরন্তরে, কি কহিব তপের বার্থান।। পরে ধুুবে রূপাহর, ধুুব পুরী চলি আয়, সেই ছালে বাস নিরস্তর। পুঞ্ त्यवा यु ्त्वश्रदत, यु , वत्नादक चांगकरतः अगाया त्य नाहिक हेशत ॥ यु ,व চরিত্র আলাপ, গুনিলে যে খণ্ডে পাপ, পদে পদে অমৃত সম্ভ । ভক্তি করি যেয়া গুলে, জনায়ালৈ জ্ঞানাগুণে, সক্ষপাপ হয়ত সাহন । ভিবশর্মা গণ সঙ্গে, মহলোক চলে রঙ্গে, স্মাপন একুইশ্ অধ্যায়। কাশীখণ্ডে भु दक्था, रह मदत छटन नर्ममा, छात भूग क्रुटन मा यात्र ॥ अवस्थिय ধুুবপুরে, বাস তার মিরস্করে, শ্বির বংকা **আনিবে রিশ্চর। 'একা**নিজ পদ আবে, সীতানাথ বস্তভাবে, ভাষায় ভাষিল সমুনয় !!

मश्रामाज कथन।

পায়ার। ধু বলোক পর্যান্ত যে মব লোক হয়। তার পরে মহস্লোক শিবশর্মা যায়।। গণে কহে শুন পুণাবার দ্বিজ্ঞাব। এই লোক দেখ যত নিজ্ঞাপের পর।। সুকৃতির সীমা নাই তপঞ্জা জনেক। এক কম্পের্থ ভোগ হয় আবশ্রক।। বদা কাল বিষ্ণু প্রতি মনের ভাবন। দেবতা স্বরূপ মহাভোগ পুণাবান।। তদস্তরে জনলোক উপস্থিত হৈল। ক্রন্ধার মানস শুজ সনকাদি ছিল।। তাবতের রেছ যত্র উর্জ্ঞামী হয়। যোগেন্দ্র সকল ইন্দ্র ধর্ম করি রয়।। তাবতের রেছ যত্র উর্জ্ঞামী হয়। যোগেন্দ্র সকল ইন্দ্র ধর্ম করি রয়।। তাবতের বেছ বছ উর্জ্ঞামী হয়। যোগেন্দ্র সকল শাসেন করয়। যাহার দিগের পাসেন করয়। যাহার দিগের পাসেন করয়। যাহার দিগের পাসেন করয়।। বাসুদেবে মর আরু বাসুদেব ধ্যায়। কেবল গোনবিন্দ কিন্তে জাতিলার হন।। যাহারা এইছ করে যোগ জাচরণ। ঐ স্থানে সদাবান হয় জাতুকা।। শীর্ণ পর্ণ ভক্ষ আরু পঞ্চ জানিত্রপ। হেনন্ড শিলিরে

খাকে বর্ধা জলে জপ।। কুশাপ্রেতে জলপান মান অনশন। থাই জতে কতু হর মাসেতে ভক্ষণ।। সম্ব**ংস**র যায় নিশি করে **জাগর**ণ। শরীরেতে গুলালত। অন্তি চর্মাধীন।। মাধার জটাতে পক্ষবাস মিরস্তরে। রক্ষজানে शांटक मृत धतियन करत ॥ करु शर्म देश, बाह्र नित्रसत थारक। देनशांस অর্চ্চ চক্ষে সুর্যাদেবে দেখে।। এই রূপে বছকাল তপদা। থেকরে। অবশেবে শরীরাত্তে আইনে এই পুরে !! তার পরে শীশ্র রথ সভাপুরে ধেল। দুরে तथ तीथि मत्त खन्ता व्यवमिलः। भर्य मत दृष्ठास करून विधार्गाकः। ন্তন্মা কৰে শিবশৰ্মা ভূমি ধন্যলোকে।। বেদ অঞ্চ আর শাস্ত্র করিরা অল্যাস। ধর্ম আচরণ আর সন্তপুরী বাস।। যথাবিধি সর্কাছানে আচরণ করি। তমুত্তার কৈলে ভূমি হরি ছারাপুরী।। তদস্তরে গণনকে চড়ি দিবারতথ। সর্বস্থানে দ্রশন করি জনাগতে।। প্রমাণতঃ ভূমি দেখি বড় পুণাবান। অবশৈষে অনায়াসে পাইবে নির্বাণ। ওচে পুজ দেখ ডুমি ব্রহ্মাও যভেক। ক্রিয়া ছারা গতায়াত করে অতিরেক।। চারি প্রকারেতে জীব যত হয় **বায়। নিজ নিজ কর্ম**ফলে ভ্রমণ করায় ॥ বিশেষ**ত শু**ন শি বশর্মা ভিজবর। পৃথিধীর মধ্যে কর্ম তুনি ত্রেষ্ঠতর। স্বর্গপুরী হৈতে উক্ত কহেন মুনিগণ। ক্রিয়াসাঞ্জ হৈয়া পরে স্বর্গে আগমন।। বিদ্যাগিরি উত্তরে मिकार कियानक। आर्यावर्छ नमस्म आत माहि रक्त।। भूती मर्या का-শীপুরী লিজেতে মহেশ। আর বভ কহি শুন র্জান্ত অশেষ।। নারদ স্থা-নেতে শুনিয়াছি একদিন। জমাদ্বীপ হৈতে শ্রেষ্ঠ রসভিল হন।। চন্দ্র সূঠা তেজ যথা নাহিক প্রকাশ। কণি মণি সর্বদা প্রশ্বলিত আভাষ।। দানব নাগেতে যথা আছে বিপরীত। পর উপকারে সদা হয় আহলা-দিত।! সুখ রূপে সকলের প্রদর হৃদয়। ছাউকেশ শিবলিক উদয় তথার।। এইমতে অনেধ বিশেষ রমাস্থান। সতালোক তূলা স্থান হয়ত वर्गम । मंगांश १इल बाइन अथांत्र कानीयंख । अमिटन यांशांट नर्स शांश स्य म्खा

পার্ব। কার্ত্তিক বলেন শুন মুনি তপোধন। তদস্তরে কহি কর্ম ভূমির আখ্যান। ইহার বিশেষ আছে ভূগলে কথন। সমুদ্রের মধ্যে মধ্যে সপ্রতীপ হন। শুনা শ্রন্য শ্বীপেতে যে দেবতা গমন। সম্মনীপ কর্ম শ্রমে করে আচরণ। সুমের্কর চতুর্দিগে ইলাস্ত হয়। ইহার উত্তরে মের শাক হিরপার। উত্তর কুমা সমুদ্রে লগ্ন যে আছর। দক্ষিণেতে হ্রিবর্ষ কিম

পুরুষ হয়।। ভারতবর্ষ পূর্ব ভদ্রাখ তার পরে। কেতুমাল বিকিয়নব খণ্ড বিচারে ।। জন্মছীপ এইনত হয় নিয়মেতে। ভূগলেভে সর্ক বর্ষ মেরু উত্তরেতে।। ব্রহ্মাপ্ত মধ্যেতে মেরু এক বস্তু হয়। শরীরের মধ্যে মেরু এইমত কয়। এক চন্দ্র সূর্য্য জিনি সর্বত্তে প্রকাশ। ভারতবর্বের মধ্যে শু-नर तिरमय । शका यमूंनात भर्धा अखदत निर्मात । ইर्शत अधिक देनिस्यात्रश ভীর্য আর। ভার পর প্রয়াগ যে নর্ফ তীর্থনান্ধ। যথা গেলে পাপ্রথংন নাহি কালবাকে।। জার শুন জীর্থরাকে মহিমা অপার। ভারতবর্ষের মধো নর্ক তীর্থ সার।। অনা তীর্থ কামা করি প্রাণভাগে করে। তাহার উদ্ধার নাই শাস্ত্রের বিচারে।। ভীর্থরাজে মৃত্যু কিমা দাগর সঙ্গমে। কান্য করি যেট নর মরহের সঞ্চনে।। জনারাদে তার মুক্তি কে থণ্ডিতে পারে। জার শুন জীর্থরাজে মহিমা সম্বরে।। জীবের পাতক পাকে মস্তকের क्तरम । अवार्ष मूखन केरल मर्कशाल नारम ॥ ध्रे छीर्थ मान मान আদ্ধি যেব। করে। কি কর জাহার ফল বাস সোমপুরে॥ ভাহার অধিক कानी नर्स चौर्य नात । शृथिदौष्ड कानी नरह महिमा अशात । जिन्हा अ-ত্রেতে বারাণনী স্থিতি হয়। প্রলয় কালেতে কাশী নাশ নাহি পায়।। जनमध जूमि मत्त्र त्य कारनटक इक्षा कानी शुरी धरम नाहि खनश निन्छत्।। ७९क्। (लट्ड काली वामि क्लांगानस्य डॉमि। आमन्य कानन इम्र अविमुक्त কাশী।। তরুগুলা জীব জস্কু সবা জ্ঞান রাশি। পঞ্চ ক্রোশ মধ্যে যার হয় वित्रवामि ॥ किलाम खक्ता ऋक मग्निक विन । शौर्यत निस्तीन एम निव ঘটের আসি।। আর কহি শিবশর্মা কাশীর মাহাল্যা তথা যেবা পাপ করে না হয় নিরন্তা।। তার দণ্ড করে। কাল তৈরব অপার। প্রদায় পর शीजा मानमा आहा। शहतत असिके हिन्छा शहबन इत्ता अहैमक दह्निय পাপের বিস্তারে।। কর্ম দোধেপ্যে ভোগ হয়ত নির্বাদ। নরক অধিক দেশু করে যে পিশার।। ক্লদ্র পিশার ছইয়া বহু জন্ম বাস। বিধিসতে যোগ তপ यে করে অভ্যাস।। বহু কালজেনে আন হয় যে উদয়। কালী প্রাণ-ভ্যাগ কর্মকলে মুক্ত হয়।। ত্রন্ধা কছে শিব্দর্মা শুন্হ বচন। কাশীর महिल्या गर्न मा इष्ट्र वर्गम ॥ शिवभन्दा वटन विवि कृति निर्वणम । मकुटनत পিভানহা টহ অপেন।। জিজ্ঞানা কুরিতে কিছু মোর মনে লয়। না পারি विकारक भारत वार्या क्या। बच्चा वरण स्य क्या दिलाएक मस्त कहा। নে সকল ক । আমি জানিত্ব অন্তর।। তোমার নির্বাণ বার্ত্ত। কিজানিতে ^{মন।} বিক্লিকে বিস্তারিয়া **সব** বিষ্ণুগণ।। বিষ্ণু ভ**ক্তজনে** কিছু নাহি প্র-

গোচর। একাণ্ড গোলক শত দেখে নিরম্ভর H এতবলি একা সম্ভাবিল বিকুগণে। গণেনা প্রথাম করে একার চরণে।

ष्यं देवकुछ वर्गन ।

পরার। বিমানে চড়িরা গণ বৈকুপ্তেড দার। শিবশর্মা গণ ভরে বলে পুনরায়। দিকে বলে কভ দুর আইমু আমরা। যাইতে হইবে আর কভদুর ভারান। এ সকল আর যাহা জিল্ডাসা করিব। বিস্ফারিয়া বল গণ রস্কাত সে নব।। কাঞ্চি অবলিকা ছারা অযোগা নগরী। কাশী মাগ্রা মন্ত্রা ম্কিন। সপ্তপুরী।। হয় পুরী ছাড়িয়া কাশীতে মাত্র মুক্তি। প্রতিষ্ঠিত বিশ্বেশ্বর শত্রে হেন'উক্তি॥ ভবে কি সম্প্রতি মন নাহি মুক্তি বর্জা। विकारित। क्ष भारत जगरणत कर्छा ॥ এक खनि नांपरत करिएक दिक्तान । ষ্বাৰ্থ কহিব ভাষা শুনহে ভাৰণ।। ষ্ঠ্যান ভূত ভবিষাতি ফালত্ৰয়। বিষ্ণুব কুণাতে জানি শুনেহি নিশ্চয়। চন্দ্র সূর্যা কির**ণে** একাশে যত স্থান স্বামে ভারত স্থান দেবের প্রমাণ।। ভূমগুল সম উর্চ্ছের রালন মপ্তল। ভূনি হৈতে লক্ষ্ণ ব্যেশনেতে ভানুন্ধন।। ভানু হৈতে লক্ষ্ণ যোজনেতে নিশাকর। তা হৈতে নক্ষ্য লক্ষ্য ধোজন উপর।। নক্ষত্র হইতে বুধ দ্বিলক্ষ फेशदर । युथ देश्टक प्रहे लटक अक वान कदर।। एक देश्टक प्रहे लटक भगदान वाम । जिलाक मामन रेग्टल श्रद्धात अनाम ।। एक रेग्टल प्रके नक উপজেতে শনি। সপ্তার্ধ মণ্ডল শনি হৈছে জন্ধ গণি। সপ্তথায়ি মণ্ডল হৈছে াক ধ্ৰুকস্থান। সুভূবিস্থাভিন লোক হইলপ্ৰমাণ।। পাদগামা বস্তু গভ ধন্নী মণ্ডলে। ভূ হ'কি বলিয়া তাকে সর্বলোক বলে।। ভূলোক হইতে ভানু ন'ওল যাবজ। ভূলে।ক হেন খ্যাত জানহ ভাৰত।। মহনোক কিভি হৈতে কোটি যোকনেতে। জনলোক ভিকোটি যোজন ভূমি হৈছে।। চতু হোটি ভূমে হৈতে তপলোক জান। কিভি হৈতে অই কোটি পত্য-ब्लाक श्राम । महात्नाक देशक केंब्र देवकुर्धनमत्। जूलाक कहेंद्व कालि ৰেড়িল প্ৰহর।। যেথানে বসতি করে শ্রীসতী সাক্ষাতা। সভত প্রতর দানে আছে উদ্য হাত।। বিজ্ঞা কোটি বোলনেতে কৈলাহ পুরি হয়। যথা বিশ্বনাথ কামে গৌরী বিরাজয়।। গুছ গণপতি লোকে সমুবে নন্দী-गता करोजातं भन्ना कम कम खिन कता। अर्थान्य त्या मकता जिन ৰেত্ৰ বিশাল। ওঠ সাল মৃত্হাস প্ৰকাশ অনল।। গলে । ।লে সৰ্পহার

কণি ভূবা আর। হত্তেতে ভদুর আর ভন্মালা সার।। বাজচর্ম পরিধান র্যভ বাহন। লমোদর অভি সুললিত দরশন।। পাদপত্তে কিবা শোভা বর্ণনা অপার। ত্রকা আদি দেবে অন্ত না পার যাহার। সকলের সার বেদে চকিতে না পায়। লীলার কারণ মাত্র শরীর ধরয়। ক্ষগতের এক বস্তু সাধনে না পার। হৃদ্ধে থাকিয়া সব প্রকাশিত হয়।। সকল দমন কণ্ডা সৰ্ব গুণাতীত। সত্ম রক্ষ তমঃ তিন গুণে বিরাজিত।। গুণক্রমে সৃষ্টিপালে সংহার করয়। সর্ব্দ কর্ত্তা সেচ্ছা বিনে সব প্রকাশর।। প্রবৃত্তি নিরৃত্তি মাত্র কিছুতেই নয়। অমূর্ত্তি প্রম ব্রহ্ম সদা শ্রুতিকয়।। বাাণ্ড তক্ষ নিত্য শুদ্ধ সর্ক বিপর্যায়। সকল কারণ কর্ত্তা পরাৎপর হয়।। আনন্দ স্বৰূপ ব্ৰহ্ম হয় নিরাময়। সমাধি যোগেতে যাতে নির্দ্তি লাব্রয়।। क्रेश्वत शतम त्क्यांकि क्रमञ्जूक त्रहा यांत्रश्रमा अक वस्त्र नाना मूर्खि करहा। সর্ব্ব গোপনীয় চিত্ত আনন্দ অপার। বেদ বিধি সর্ব্ধ শান্তে হয় সারাৎসার মহা প্রলয়েতে তিনি অন্ধকার ময়। ইচ্ছাশক্তি ছারা তেজ উদিত করয়। কৈলানেতে পঞ্চবক ত্রিনেত্র ধরম। শক্তিকে তাজিয়া শক্তি ভাবাতীত হয়। তারপর মহাদেব বৈকুণ্ঠ আদিয়া। ব্রহ্মান্সাদি ভাষত দেবতা আ-बाहेशा। **जाशन अधर्मा गर** बाताइटन क्लि। नर्स कर्द्धा कति वाका कचि-বিক্ত কৈল।। দেবলোক গত্মকা অপসর। আদি যত। মঞ্জাচরণ করে বিধি বিধানত।। স্বৰ্গ মৰ্ভ্য পাছালের এক কণ্ডা স্কুল। জগত কারণ সেই সকলের মূল । সর্বৈশ্বর্যা মহাদেব হরিছে অর্পিয়া। আনন্দে অপার প্রেমা-নন্দেতে ভাষিয়া।। যথা বিধ নমস্কার শিবকে করিল। ভার পরে ভ্রন্ধানি হরিকে প্রণমিল।। শঙ্কর সারক ধকু দিল গদাধরে। একাত্মক এক অঞ্চ হৈল হরি হরে।। নারায়ণ প্রতি বর দিলেন শক্তর। জামাকে যুক্তেতে ব্দরী হইবে সম্বর।। ইচ্ছাশক্তি জানশক্তি ক্রিয়াশক্তি দবে। বিষ্ণুর মা-ब्रांट सूच क्रवं क्ट्रेंट्राः कर जलकरम आति सूक्तिभए मित्। नात्रांत्रक প্রতি এই বর দিল শিব।। তার পর বাস্তুদেব করি আলিঙ্গন। কৈলালেতে नमानिर प्रतिन भगते ॥ निकानिक दूर्थमत्र जानरक छातिल । इर्ध्युक नर्क **द्या श्र शहर ताम।। देवकुर्श्वमारथत त्राका कान्दिक कथा। दावा कृद्य** ষেবা পাঠ রয়ে সর্বাথা।। ইহুকালে মুখভোগ অত্তে সুর্গবাস। শিব বকিঃ এই স্থির । নিহ নির্যাস।। এই জধ্যা যত্র করি গুহেতে রাথয়। তার গুছে लक्षीशिक के । विद्राबद्धा। नक्क जानम भाकि केचरी एवं वाएक। सर्भ WAR TORUTOR

অথ অগস্তা কার্ত্তিকেয় সংবাদ।

পরার। ব্যাস বলে শুন তুত অগস্থাের কথা। যে কথা শুনিলে পাপ নাশ্যে সর্বাধা। প্রদক্ষিণ করিলেক প্রীশেল শিখর। কার্দ্তিকের রুম্য স্থান দেখে মুনিবর। সুকল সুপুষ্পা তক্ষ লভাতে শোভিত। নানা পশু পক্ষী তথা অতি সুচরিত। কুপ বাপি ভড়াগের কাহিক গণন। লোহিত নামেতে গিরি অপুর্ক দর্শন॥ কৈলাদের সমাস্থান অভি চমৎকার। সেখানে দেখিল মুনি বসেছে কুমার।। প্রত্নীর সহিত দশুবতে প্রণমিল। যোড় করে নানাবিধ স্তবন করিল।। স্তুতিতে হইরা ভূষ্ট দেব ষড়ানন। মুনিকে বসিতে দিল উ-গুম আসন। কুশল জিজাপা করি কহে মুনিবরে। অবিমুক্ত ক্ষেত্রের কু-শল কহ মোরে।। ত্রিজগত মধ্যে কাশী সম পুরী নাই। ধর্ম অর্থ কাম মোক চত্বৰ্গ চাই । পাৰ্শভীর নিকটে কছিল পঞ্চানন। এ তিন উপায় হয় নির্মাণ কারণ।। পশুপত যোগ আর ভীর্ণ সিভাসিত। বারাণসী নগরি মুক্তির অধিষ্ঠিত।। জ্ঞীপর্মত হিমালয় আদি যত গিরি। যত যত আরো-ব্দন আছে দিবা পুরী।। ত্রিদণ্ড ধারণ সর্ব্ব কর্ম্মের সন্মাস। তপ্তা নির্ম যত ত্রত উপবাস।। সিন্ধুর সঙ্গম আর অরণ্য কিন্তর। মানস পার্থিব ধারা ভীর্থ মনোহর।। উসরাদ্বিবিধ পীঠ আলায় পঠন। মল্লের যপন আর অ-গ্নিতে হবদ।। নানা দান যজ দেবতার আরাধন। ত্রিরাত্রাদি সাঞা বোগ বিষ্ণু উপাসন।। মুক্তির উপার এই নব নিরূপণ। শ্রুতি স্মৃতি পুরাণেতে আছরে গণন।। সার সপ্ত মুক্তি পূরী সর্বান্ত প্রধান। মুক্তির সাধন এই সব मृक्ति द्वान ॥ किन्ह वह यह ठीर्थ द्वानी প্রाপ্তিকর । কাুনী পাইয়া মুক্ত হয় জঙ্গম স্থাবর।। অভএব কাশীকেত্রে বিখেশর প্রিয়। কাশীকেত্র. কুশল 'প্রশ্নের হেড় হয়।। কাশী হৈডে আসিয়াছে দেহ আলিক্সন। কাশীবাসি স্পর্মে পাপ সঞ্চয় নাশন।। উত্তরের বায়ু যদি করে আগমন।। কাশীর ্দিম্পর্কে তাকে করি আলিক্ষন।। ভুমি কাশীবাদি মহাঋষি পুণ্যবাদ। পা-্কিছে মাথার কেশ করি গঙ্গাস্থান।। অগস্তোর সমীপে অগস্তি ও তব। ল্লান দান দেব পিতৃ কর্মা করি সব।। ক্লুতর্ত্তা হয়ে জীব কাশী ়ল পায়। কার্ত্তিকের হস্ত দিল অগস্তোর গায়।। অতি সুখী হৈল ৩২ প: শয়া ঋষি। नम्रन मुक्तिक टेश्मा थानि करत वित्र। धारनत विद्रारम विश्व व का व्यवसत। কার্ডিকে যে ছবে জিঞ্জাসিল মুনিবর।। পুর্কে ভগবৃতী তে র দেব ভগ-িৰান। যে বংগে কাশীর গুণ করিছে বাধান।। বসিয়া মায়ে: কোলে করেছ- শ্রবণ। সেই বাপে কহু মোরে কাশীর বিবরণ।। কার্ত্তিক বলেন শুন অগস্তা তাপন। বলেছি কাশীর কথা অমৃত দরন।। অবিমৃত্ত ক্ষেত্র অভি গুপ্ত ত্রিজগতে। মথা নিচ্চা নিছি নকে বনে নিছিনাথে।। আদেহ পতন যেবা করে কাশীবান। তাহাতে বিরাজ লক্ষ্মী করত্রে নিবান।। অনায়ানে ভক্তি মৃত্তি কাশী বানে পার। জানিয়া কাশীর গুণ না ছাড়িনে তার।। অবিমৃত্ত গুণ হয় মুখে কব কত। সহস্র বদনে তাতে হয় পরাভূত।। নীতা নাথ বসু দান মনোছাথে গার। কাশীখণ্ড ভাবে পঞ্চবিংশতি অধ্যায়।

-31816---

वर्थ कविश्वक कथन।

আরে মন আমার। তবু তোরে করি সাধবান। দেখির। দেখনা আয়ু হৈল অবসান।। করিছ কি সুখ ভোগ, শরীরে জন্মিল রোগ, না করিতে পাবে যোগ, চল মন কুতৃহলে, সীতানাথ বসু বলে, পাইবে নির্মাণ।। গ্রা

পন্নার। অগন্তা বলেন কল করি নিবেদন। প্রসন্ন হইরা কহ কাশী বিবরণ।। কি কপে হইল কাশী অবিযুক্ত নাম। কোন কপে হইলেক ম-হালক্ষী ধাম।। ত্রিলোক পুজিতা মণিকর্নি কেন হয়। যথনে না ছিল গঙ্গা তথাতে উদয়।। কি ছিল তথনে তথা কহ ভগবান। বারাণগী কাশী রুজ্র বাস কেন নাম।। কেনবা হইল মহাশ্যশান আখ্যাত। এ সকল কথা মোরে কহ জগন্নাথ।। কার্ত্তিক বলেন পুর্কে এই প্রশ্ন ভার। জিজ্ঞাসিল শিরা শিবা অতি চমৎকাব।। জগত জননী তবে শিবের উত্তর। শুনেছি যেরপ সব শুন মুনিবর।। না ছিল প্রলন্ন কালে স্থাবর জঙ্গর। শুনেছি যেরপ সব শুন মুনিবর।। না ছিল প্রদন্ন জল সলিল ধরণী। না ছিল গগণ কিবা দিশ্ব শুনিবর।। না ছিল অনল জল সলিল ধরণী। না ছিল গগণ কিবা দিশ্ব শুনিবর।। না ছিল অনল জল সলিল ধরণী। না ছিল গগণ কিবা দিশ্ব শুনিবর।। বাপ রুস গন্ধ স্পর্শ শন্ম বিবজ্জিত। দিগিদির নাহি ছিল জঙ্গি চমকিত। কেবল তৎ সহ ব্রক্ষ শুনির বিদিত। বচন মনের অগোচর শুক্ষ জিতি।। কপ নাম বর্ণ হীন নহে স্বক্ষ স্কুল। ক্রম্ম দীর্ঘ লয় গুলু হন সর্বি মুল।। উপ সর নাহি তার নাহি জপচন্ন। পচাকিতে শ্রুভি যারে আছে বলি কয়।। সভ জ্ঞান জনস্ক আনন্দ্র তেজোনর। প্রমাণের বাহ্য যার নাহিক

गःगात । विकल्म त्रहिक मान्ना नाहिक याहात । क्रिमां क मोमा नाहे म-হিমা তাহার।। দ্বিতীয় রহিত তেঁহ সদা বিহারয়। দ্বিতীয় ইচ্ছায় ভাতে इहेन छेन्य ।। जमुर्खि इहेया मृखि कतिन कण्णना । नदन अधरा छन कल সন্তাবনা। সর্ব জ্ঞানময়ী সর্ব গতা সর্বব্ধপা। সকল কারিণী সর্ব সৃষ্টি সর্ব্ব कूला॥ नकत्वत अक मन्ना। नकत्वत जामि। नकव मान्निनी नकी नकव मः-হতি।। অমনি ঈশর মুর্ত্তি করিয়া কণ্শন। অন্তর্ধ্যান হইলেন একা সনাতন পরাখ্য অমূর্ত্তি জিনি তার মূর্ত্তি আমি। সর্বাচিন প্রাচীন ঈশ্বর নামে নামি একক পুরুষ জামি সক্রা বিহারি। নিজ দেহ হৈতে দেবী ভোমা সৃষ্টি-কারী। প্রধান প্রকৃতি ভূমি মায়া গুণবভী। বৃদ্ধি ভত্ত জননী পরম নি র্ক্ত-ক্ষতি।। জামি আদ্য পুরুষ মান্দে করি ধ্যান। ক্ষেত্রের সহিত করি ভো-মার নির্মাণ।। কার্ত্তিক বলেন শুন লোপামুদ্র। সতী। যে পুরুষ ঈশার সে শক্তি সে প্রকৃতি।। পরম আনন্দ রূপ সেই ছুই জন। সে আনন্দ ধাম সদা করমে রমণ।। প্রসম কালীন সেই ক্ষেত্র কদাচন। শিব শিবা দোঁছে নাহি ছাভয়ে সঙ্গন । যেখানে না ছিল জল জলাধি উদয়। শিব শিবা প্রেয়কে-खं त्यरे कारत रहा। क्लाब्बत तर्ख धरे क्रिनारि **जारन।** जवकारा जडा-ন নান্তিক ভক্তি হীনে। শিবভক্ত বাস্ত মূর্ত্তি ইচ্ছা আছে যার। ক্ষেত্রের রহস্ত তারে করিবে প্রচার।। সে অবধি অবিমুক্ত ক্ষেত্র একে কয়। শিব শিব। শয়ন পর্যান্ত সুথময়।। শিব শিবা সম্ভাবেতে ক্ষেত্রের সম্ভাব। শিব শিবা অসম্ভাবে ক্ষেত্রে অসম্ভাব ॥ না পুজে মহেশ কাশী নাহি যদি পায়। ব্যানিবে নির্মাণ যাত্রা নাহি আছে ভার ॥ আনন্দ ধানের নাম আনন্দ কা नम । अधिल जामण वन नाम जिल्लाहन !! जामण कानरन लिक जानरण-র মূল। আনন্দের জীব সেই আনন্দ অতুল। এই মতে ক্ষেত্র অবিমূক্ত খ্যাত হয়। শুনহ ত্রাহ্মণ মণিকর্ণির উদয়।। আনন্দ কাননে শিব শিবা ছুই জন। শরত সভত আছে হইর। মিলন।। ইচ্ছা করিলেন সৃষ্টি করিতে অ-পর। তাতে সর্বভার রাখি হবে শৈবচর।। তবে দোঁহে বামভাগে সুধ'দুটি করে। **অপুর্ন পুরুষ এক জন্মিল সম্ব**রে।।

--

जब मंश्रविक जाहासना मगिकनि कथन।

পরার। সর্ব গুণধার নিলমণি ছাতিধর। পরিধান পীতা ব্র পুরুষ প্র-বর ॥ চতু জাশব্দকা গদাপক ধারী। বিরাট পুরুষ দেখি। ল ত্রিপুরারী

মহাবিষ্ণু নাম তথ্য পুরুষ প্রধান। তোমার নিঃখানে বেদ হবে আগুয়ান। त्वन देश्टक मकन क्वानित्व महागत्र। त्वन पृत्ते शद्य मृत्ति कत्रह छनत्र॥ যুদ্ধি তত্ব স্বৰূপ বিষ্ণুকে হেন বলি। শিব শিবা জানন্দ কাননে সে মিলিল মহাবিকু সেই আঞা ধরিয়া মস্তকে। তপ্যা করিব হেন ভাবিল কৌ जुरक।। श्रृञ्जतनी अनन कदिया ठक्कभएत । निजरमञ्जूष वार्ति मित्रा जासा ভরে। পঞ্চাশ হাজার বর্ষ উগ্রভপ করে। চক্র পুঞ্জরিণী ভীরে সুস্থির শরীরে।। মৃড়ানীর সঙ্গে মৃড় করমে বিহার। দেখিল তপায়া বিষ্ণু করে চমৎকার। মৌলি আব্দেনিয়া শিব প্রদংশা বচ্বে। কহিলেন বর লহ সেই নরায়ণে। ছুই ভিন বার হেন কহিল শঙ্কর। চঁকু মেলি উটিরা বলি-ছে গদাধর যা প্রসন্ন হইয়া থাক দেহ এই বর । ভবানী সহিত তোমা দেরি সিরস্তর।। তোমার চরণ পাতে চিত্ত মধুকর। মধুপানে মত্ত হৈয়া রহে যে তৎপর। এবমস্ত বলি শিব বরদান করি। শুন বিষ্ণু এই সব বরের বিস্তারি বিষুদ্ধ তথকা দেখি হেলাইল মাথা। প্রবণ ভূবণ অহি মণি পড়ে তথা। এই হেডু চক্র পুঞ্জরিণী মনোহরে। মণিকর্ণি নামে খ্যাত চইবে সংগারে। বিষ্ণু বলে প্রভু তব কুগুল তপনে। মুক্তিক্ষেত্র শুভ ভীর্থ হউক এখানে। চক্র পুষ্করিণী তীর্থ সহ'জ্যোতির্ময়। প্রকাশ এখানে কাশী নাম এতে रुम् ।।

ত্তথ কাশীর মাহাত্ম্য কথন।

পয়ার। আর এক বর দেহ না কর বিচার। পর উপকার তরে প্রার্থনা আমার। আরেজ স্তন্ত পর্যান্ত জন্ত সংজ্ঞা যার। চারি ভূত গ্রামকেরে
মুক্তি হয় তার। য়ান সন্ধা। জপ হোম বেদ অধ্যায়ণ। সন্তর্পা পিশুলার
দেবতা পুজন। গো ভূতল স্বর্ণ অশ্ব জার বিস্থুয়ণ। দীপ অর বস্তু কন্যা
আদি দান ধন।। রুষোৎ স্থর্গ ব্রভোৎ স্থর্গ লিক্সাদি স্থাপন। এই ক্ষেত্রে যে
করেছে নর্বাণ সাজন। আর আরিক্তিত কর্ম আদি করি যত। সেলি,যে
মুক্তি দে পাস্তেতে বিনিত। শাক্ষাযোগ জ্ঞান দৃষ্টি ব্রত তপ দান।
বিনা ক, পুরে ছউ ফ জন্তুঃ নির্বাণ। শশক মসক কীট সরপ
উরগ। প চক্ষ কাশীতে মৃত সংসাধি পরাগ। কাশী নাম মারে
সদা হবে পি কর। কাশীপুরে সদা সত্য মুগের উদয়। স্বা উত্তা-

কর্ম পবিত্র সকল। কাশীপুরে করিলে হইবে মহাকল। বিষ্ণু বাক্য হেন শুনি দেব ত্রিলোচন। বিহিত বিবিধ সৃষ্টি কর নারারণ। সর্ব পিতৃ সম স্তুত করহ পালন। ছুফ নিষ্ঠা চেষ্টা সদা করিবে স্থাপন। বলে মর্তে যেরা ভোমায় অবিজ্ঞা করয়। ভাহার সংহার আমি করিব নিশ্চয়। পঞ্চক্রোশী কাশীক্ষেত্র মম্ রাজধানী। এখানে আমার আজ্ঞা সকলেতে মানি। কাশী বাসি শাসিতে আমার অধিকার। কাশীতে কথম আঞা নাহিক কাহার। कांभी मत्रमान कवि भरत जाना स्मर्टमा शतकरमा कांभी भवि भूक इरव रगरव। বিহু বলে প্রস্থু ক্ষেত্র মুহিমানা জানে। ভক্তি হীন কাশী মরে কি গতি ণে জনে। মহাদেব বলে বিষ্ণু কর অবধান। জন্যত্র করিয়া পাপ অভক্ত আক্রান। আশীতে মরিলে কাশী মহিমার গুণে। যা গতি ছইবে তাহা ক-রহ অবং । কাশীতে প্রবেশ করিবার কালে পাপ। কাশীর বাহিরে থাকে ভাবিয়া সম্ভাপ । মণিকণিকায় স্নান দেখে বিশ্বেশ্বর। অনায়াসে হয় সেই ক্সদ্রতন্ত্র ধর। অন্যত্ত্রে করিয়া পাপ কাশী যদি মরে। কাশীর প্রসাদে সেই ভবনিত্ব তরে। মিখ্যাবাদী ভক্তিহীন অবিমুক্তে মরে। প্রসন্ন হইয়া কাশী युक्ति (पन छोट्र ॥ कृर्य) विमा पिनकर्क्त नट्ट धना खन। कामी विदन किवी করে মুক্তি বিতরণ। প্রাক্তুত পাশেতে বদ্ধ ভ্রন্মা আদি যত। ত্রিগুণ চকিশ পাশ ত্রিগুণে জড়িত।। হেন দৃঢ় পাশে বদ্ধ এ ভিন সংসার। কাশী বিনা পाम काटि कि वा बाह्य खात। वह द्विम गांधा राश वहन वाघांछ। যোগ হৈতে ভ্রম্ট হৈয়া গর্ত্তবাস তাত।। কাশীতে করিয়া পাপ কাশী যদি মরে। বে রুদ্র পিশাচ হৈয়া মুক্তি হয় পরে।। কাশীতে মরিলে পাপী ন-রক্রু না হয়। তৈরব যাতনা তার শাস্তি মাত্র যায়। সতত না পার কার গর্ভ ছংখ সারি। তাজিয়া পরম রাজ্য শেষে কাশী পুরী।। কখন যমের দুভে লয় বমপুরী। কথন বিষ্ণুর দুতে লয় স্বর্গপরী। এই ভয়ে কাশী সেবা করিবে সম্বরে। পাপ যম গর্ত্তবাস এই তিন দ্বরে।। কাশীতে নাহিক কাশী করিলে আন্তার। অদ্যাকল্য পরস্থাবা মরণ নিশ্চর।। ভাবত বিলয় কাশী করিবেআগ্রর। সাবধানে করবাস পাপনাহি হয়। মরিলে জনম ভ 🛭 छ-শ্মিলে মরণ। কাশীতে মরিলে জন্ম হয় নিবারণ।। পুজ্ঞ ক্ষেত্র ক' 🛕 বৈষ্ণ-বী সায়া ধত। ভাজিয়া জীবেতে হবে কাশীবাদে রভ। মরণ দু ্তে আছে। यता निह जामि। समरप्त अमुखि कान ना कतिरव जूमि॥ यदमह बहिसगर्ग भिष्ठांत्र ठेन ठेनि । नहिक्द्र शांकिदक कृद्व यन धनि ॥. च क्रिता यदक देखि कामीरंक खाळाहा। यादे बरन कतिरवक राहे गांधु इहा 👉 बांगि करह

শুন মুক্ত অগস্ত্যের তরে। কহিয়াঞ্চনর কথা জার কহি পরে।। মলিক আখান সীতানার্থ দীন হীনে। হরিহর কুপা কাশীখণ্ড ভাষা জনে।। শুদানন্দ সঙ্গাশ্রমে ভাষে সমুদর। ভাষিত্র মুখ্য ভাষা ছাল্পি জাগারি।।

-31816-

কাশী নির্মাণ কথন ও গঙ্গার মাহাত্ম।

প্রার। আনন্দ্রান্ন থেই প্রকারে হইল। বিস্তারিয়া অগস্তাকে कार्डिक कश्मि।। विक जिल्लानिल महारमस्वर गान्तरक । खतिहरू बारा-ণসী আখ্যান কি মঙ্গে।। শিব কভে শুনতে ব্রিজ্ঞণত ঈশ্ব । নারায়ণ বিশ্ব-कर्ण नकी প्रताद्भव ।। सूर्य। रुएम मगात द्रोब्रात भूख मन । व्ययद्राध संख्य আরম্ভিল অসম্ভর ৷ দৈৰয়েলে অধ্যমেধ পূর্ণ নাহি হয়। কপিল য়ুনির শালে বংশ ধ্বংস পায়।। নিজ পিতামহ কুল উদ্ধার লাগিয়া। যোর তপ আর্ডিল হেমতেকেগিরা। গঙ্গাদেশী অভিব্যাপ্ত নিজৰূপে হয়। সূর্গ মর্ভ্য পাভাগ ত্রিলোকেতে ভালয়।। ত্রনাণ্ডেভে ধারারপে একভির পর 🕻 कानमर अनुभा इन गर्स भादार मात्र । जिल्लाक कननी गर्स कांतरभद्र गाउ है ক্ষান শক্তি ক্রিয়াশকি ইচ্ছাশক্তি থার।। শুদ্ধবিদ্যা শুদ্ধ বর্মা রূপাত্মিকা কার। এক। মহর্ষি দছ্চিত শক্তিময়।। বিশের নিভার লাগি আগমন হয়। যত্র করি আনি ভারে মস্তকে ধরয়। ত্রৈলোক্যেতে অন্য যে স্কর্ ন্তীর্থ শত। পুণাক্ষেত্র ধর্মকেতা যজ্ঞ জাছে যত। ভূমি জানি ব্রহ্ম দেইগণ আদি সব। ছপ আর চারিবেদে পুরুবন্ধ ভাব।। ভ্রন্ধারেণ্ডভে মত শক্তি আছেন বিস্তার। গলানেবী সুমেরণে সম্ভব ক্ষর। দুরস্থ থাকিয়া গঞ্জা বলি ডাকে যেবা। স্থান যে মমন আর ভব্তি ভাবে গেবা।। ভাগার ফলের কথা শুন গদাধরে। শরীরাজে স্বর্গভোগ বছুকাল ভরে ii আনেক তথাক্সা भूदर्न करत एक कीरव। कांत्र भरत मर्क्कीर्थ खमन कतिरव।। कितारक शकालीरत मना वाम कति। स्मराटख देवकूछे भुती कवमा छाहाति ।। श्रास দান ও গ্যে আছে আদি আর। ধেই নরে সদা করে অক্ষয় সুর্গ ভার।। - छवेख् छ । वि छीर्थ यक मञ्चलप्र । यह नदत लका मादव आहा (यात्र) इत्र ॥ वद्यकान । वा भाभ चाहत्र करता भक्ता मत्नाम माळ यूङ करनवर्त्ता। সজাবুণে সর্ব ভীর্থ পুরুর রেভায়। কুক্সক্রের দ্বাপরে কলিতে গলা ২র ন স্থুক্তি হৈছু ।তোঞ্চান ত্ৰেতা ভপ কয়। কলিতে কেবল গঞ্চা মুক্তিহেতু

হর। যুক্তদান খ্যান যোগ তপজাদি যত। সহস্রাংশে তুলা নহে গঙ্গা त्मरात मछ।। भक्नारात्म खक्तकान स्य एवरे नद्य। अकीमण यान व्यक्ति কি করিভে পারে,। এভাবুক অভাকান অভা বর্গ হয়। গঙ্গাতে যে खान्त करत मर्सकल भाषा। शक्राम्नान विस्त मिथा गतीत क्वतन। अन्य জন্য যত ক্রিয়া রুখা সে সকল।। গঙ্গাতীরে শিব লিঙ্গ যেবা পুজা করে। অনম্ভরে কোটি অংশে তার গুণ ধরে। যেবা গঙ্গাতীরে পিতৃ প্রাদ্ধ আদি করে। ভার জুলা পুণাবান নাছিক সংসারে।। অন্যস্নান হৈতে যেবা গলা-স্নানে যায়। চিন্তাকুল পাপ গব রোদন করম।। কিসে বিশ্ব করিবেক পদে পদে কিরে। শ্রান্ধ করি গঙ্গা দরশন ধেবা করে। সকল পাপেতে मुक्त (मेरे नेत्र १६। अनोहारम क्रुडीर्स मि खानिर्द निम्म्ह ।। (कान ध्यम-ক্ষেত্র কিন্তা বাণিজ্যতে বার। ইহাতেও গঙ্গালাত সর্গর্গতি পায়।। অগ্নির যেখন শক্তি দাহন করয়। অনিচ্ছাতে গঙ্গালাত হয় পাণক্ষম। ाक्रास्तित त्यहे बद्ध भगन कद्रहा। श्रथमत्था मृजू। देहत्व पुक्लिशंन शाह्र।। জন্মান্তরে বন্ধ গুণ্য করে যেই নরে। ইহুজন্মে গঙ্গাপ্রান্তি জনায়ানে ভরে कर्य राम পালেভে মোহিত পূর্বাপরে। यেই নর গলাপ্রতি নদীজান করে।। শিব কন শুন হরি গজার মাহাত্ম। ভক্তি ভাবে বেবা সেবে সেই नत्त मुक्त ।। निष्पाभी इरेग्रा बीर दर्भ छात्र कृदंत । रेख्न लाक भिष्य लाके निकुटनाक शदत ।। काहि धर्मा नमस्बद्ध भन्नादक त्य दम्बि। अहे कीय चर्म ভোগি অচিরাতে সুখি। হরিহর একাতাক ভিন্ন বস্তু নয়। গৌরীতে গঙ্গাতে मिक कार इस निम्ध्या। अहे हाति अक वक्ष करेक्फ स्व मन्न। हैशास्क स्व জেদজ্ঞান অখোগতি হয়। গঙ্গাড়ীরে সবৎসা গো যেবা করে দান। শিবলোকে গোলোচকতে ভার অবিষ্ঠান।। **জন্মাবিধি ধেই নরে গলায়ান** करता कीवमा क तारे नता प्रक्ति एक्शकता। शकासादन मूना किथि वि-চার না করে। স্মরণেতে থেই নামে সর্দ্দ পাপ হরে॥ গঙ্গাভীরে বাস করে সেইও পঞ্জিত। স্লোক্য হইবে মুক্ত শুনহ নিশ্চিত।। গঙ্গার মহিমা যেই গুনে নিরন্তর। গঙ্গান্ধান ফল ভাগি হয় সেই নর।। জল ছুগ্ধ মং ুভ দ্বি कूना आत । कत्वी त्रक वन्तम वह करी मात ॥ युक्टमत्व अर्द ्रमत्र यसन क्तिया । भूगारमारक वान करत हर्यहिल रेह्या ॥ ग्रजाबीरत ८ । । सम्र स्पर्हे मंत्र करता श्रृष्णतिनी मिथी मोरन रमहे कल थरत। श्रका अन्यस स्महे পুণ্য হয় নিরে। ভাহার মহিমা কেবা বর্ণিবারে পারে।। ^{। প্র}ের নিয়মিত मञ्जाहरू छेळ मारन। शकाकीत काणि जल्टम ना इस , मारन।। जन्म

नक्दब्रिक देवता अक्षात्तान करता। क्षत्रहरूल यक शांश मक्लि मःशांत्र । বৈশার্থ কার্ত্তিক সাসে স্লানে যন্ত গুণ। সংক্রান্তিতে সহস্র গ্রহণে লক্ষ পুণা।। বাজীপাতে অনস্তর বিষুদ্ধে অবুত। অরনেতে শ্রান দানে কলেছে नियुष्ठ ॥ कृथवकी (अञ्चलान करत एक्ट्रेनरत । श्लारलाक मल्या एक यून यर्ग-বাস করে। গঙ্গাভীরে ভূমি দান ধে জন করয়। ভাহার ফলের কথা শুনহ নিশ্চর।। ছুই শত দশহাত দীর্ঘে প্রস্কেরীক। পাঁচ বিঘা পাঁচ কাঠা হয় পরিমিত।। সেই ভূমি ক্ষুত্ররেণু বুগ পদ্মিশ। ইন্দ্র চন্দ্র সেই লোকে হয় ভোগবাৰ।। পারে সগুলীপে রাজা ধর্মকানী হয়। নরকন্ম পিড্লো-কের উদ্ধার করয়।। তদস্তরে পিড়ুলোক স্বর্গবাদী হৈয়া। অবশেযে মুক্তি আর প্রাপ্তি করাইরা।। গরে ক্যান কল্লে পজানেরে বিনাশিরা। পরম ভারোগ্য যোগে প্রাপ্তি যে হইয়া।। কিয়া নর ভক্তি করি বারাণণী যার। অনায়াদে মির্কাণ মুক্তি গেই নয়ে পার।। স্থার মতে মুক্তি উক্ত আছরে। লিখন। তাহার কারণ এই শুনহ বর্ণন।। অন্ধাযুক্ত হৈয়া যেবা ভূমিদান করে। এই জমে তার মুক্তি কে খণ্ডিজেপারে॥ চিত্র শুদ্ধি না হইরা करत जुमि मार्न । अर्थ जान करत कामी आखिर के निर्द्धा ।। नितस्त मार्मा विधि भक्ताञ्चान करता। हेक्क्यूती वान इब नेक रहक धरता। श्रृक्षतिगी कृ-भाषि गाम य य कन इहा शका नतगान ता**रे** कल नात भाषा अथ-তাদি রক্ষ সব করিয়া রোপণ। পুলেসর কানন আদি করে যেই জন।। ইহার অধিক কল গ্লাম্পর্মে হয়। গলার মাহাত্ম কছ কহনে না যায় গাভী অম কলাদানে বেই ফল জান। গলাজল পান মাত্র ফল শন্ত গুণ।। সহত্রেক তান্দ্রারণ করে যেই নর। গঙ্গাজন পান মান্ধ নিপাণ জন্তর 🗵 ভক্তি করি গঙ্গাম্বান করে যেই নরে। অক্ষয় যে স্বর্গ ভার গুনহ মুরারে।। পঞ্চারানে রতজনে দেখি যম দুত। সিংহ দেখি মূগ বেৰ হয় জানচ্যুক্ত।। আশী রতি অর্ণ দান করে গঙ্গা তটে। মহাত্র্থী হৈর। অর্গভোগ তার মটে । ভার পরে ক্ষয়ুদ্ধীপে রাজা বে ছইরা। শেষে প্রাণ্ডি অবিহুক্ত মির্দাণ াইয়া। চন্দ্র গ্রহণ সোমবারে যদিস্যাৎ ঘটে। রবিবারে সুর্বগ্রহণ হৈলে প্রটে ॥ চূড়ামণি যোগ এই শাক্সমক্তে হয়ঃ প্রসাম্লান করে যেয়া। यक करन। व्या अका रक्षों मि श्रीश मा तरह भकासारम । भक्कीत महिमा ग्र मा एवं व रम।। कृति कींग्रे दक्तांनि शिष्ट्रक अञ्चालता अञ्चात अज्ञात कांत्रा अर्थ । वी घटन ।। देकार्धमारम एकुशरक मनमी (म किथि। छाहाटक

নকর হন্তা হয় উপন্থিতি।। তাতে নিশি জাগরণ করে থেই নরে। গলা পূজা দশবিধ দ্রবা উপহারে।। দশ নৈবেদা আর শাস্ত্রমন্ত মন্ত্র। শিব বিফু ব্রহ্মা ভগীরথ হেমবস্তা। ভিলম্প্রা দশ লাডু জিক্ষবরে দিবে। আর দশ যুক্ত দীপ তথাতে স্থালিবে।। জনেক প্রকার দ্রবান্ত্রাছে বিধিমত। গলাপুজা দিয়া স্নান করে নর যত।। তদন্তরে দশবিধ স্তবে করি স্কৃতি। তাহা পাঠ করিবেক করিয়া ভকতি।। সেই নর দশক্ষ্ম পাপক্ষর করে। পাপের বিশেষ কহি শুন গদাধরে।। বিনা দানে প্রবা যোর উপদান করে। বিধি বিনা হিংলা যেই সেবে নিরন্তরে।। পারন্ত্রী ব্যবহার কায়িক এই জিন কটু বাকা জার নিখ্যা কথা সর্বাক্ষণ।। পারন্ত্রী ব্যবহার কায়িক এই জিন কটু বাকা জার নিখ্যা কথা সর্বাক্ষণ।। পারন্ত্রবা মন আর জনিই চিন্তন কথা। বাক্যময় এই চারি জাচরিত যথা।। পারন্ত্রবা মন আর জনিই চিন্তন মিখ্যা কর্মো মনে অভিলায় সর্বান্ধ্যণ।। এ তিন হয়ত পাপ মনের মানস। এইনত দশক্ষমার্জ্জিত পাপ দশ।। ক্ষয় করি অচিরে বৈকুপ্ত নর যায়। পারে বারণিলে আলি মুক্ত পদ পায়।। সপ্তবংশতি অধ্যায় সমান্ত হইল। শিব সন্ধান্থা শিবা পুনজিজানিল।।

প্রার। গঙ্গার প্রসঙ্গ কথা শুনিরা পার্কিন্তা। সানন্দ হইয়া জিজাসেন শিব প্রতি।। চক্র কুণ্ডে বিষ্ণু তপ করিলা যথন। ভগীরথ ভাগিরথী
না ছিল তথন।। ভবে কি প্রাকারে দেব কহ ছেন কথা। চক্র কুণ্ড সহ যে
পঙ্গার মিলনতা।। শঙ্কর কহেন শুন ছির করি মন। শুন্তি স্বৃতি সর্প্রশাস্ত্র
ভাছে নিরূপণ।। ভূত ভবিষাৎ বর্তনান যাহা হয়। ঐ সব লিজা বস্তু আছয়ে উদয়।। আমি যাহা কহি তাহা শুন বরাননে। ইহাতে যে অবিশ্বাস
না হবে কথনে।। অগস্তা জিল্ডানে পুনঃ পার্কিন্তী নন্দনে। গঙ্গার মাহাত্মা
আর শুনিব প্রবণে।। গঙ্গার মাহাত্মা দেব কি আশ্বর্মা কথা। কুপা করি
কহ দেব শুনিব সর্ক্রণা।। যড়ানন বলেন শুন কুপ্রক নন্দন। শঙ্কর কহেন
শুনে প্রীমবুসুদন। গঙ্গাতীরে আদ্ধ আর যে করে তর্পণ। সতিল করিয়া
কর্মা করে সমর্পণ। তিলসন্দ্রা পিভূলোক হয় প্র্যবাস। অবা যে মুক্ত
হয় শুনহ নির্মান। আর কহি শুন কিছু মহিনা গঙ্গার। ইতি ।স পুরাণেতে আছয়ে বিজ্ঞার।। বাত্মীক নামেতে দ্বিজ হইল উদয়া সন্ধ্যাহীন
প্রণাদি করয়ে বিক্রম।। জ্বান্তির ।। প্রশারা লইয়া নর্কনা ব হারা। এক

দিন ভারণ্যেতে ভ্রমণ ভাতর।। দৈবখোগে ব্যাহা নকী করিল কুমার। নিজ ক্ষীবলৈ স্পায়্ড্য হৈল ভার।। ধন দুও সতত প্রহার করে আফি। দুড়বারি लहेत्रा राल यथ। यम वनि ॥ विज्ञ श्रुष्ट लहेत्रा विवाद धर्मतान । द्वान द्वान পাপ ইহার কহত অব্যাজ। ভল মহারাজ চিত্রগুঞ্লব কর। কোন অংশে পাপ ইহার বাকী নাহি রয়।। ভার পরে যথা উক্ত নরকেতে ফেলি। নানা बार्श माखि तम् कामिया गाकृति॥ एक्नकाटन देनत्व এक जान्नर्गः হইল। দিলে ব্যান্ত খার অবশিষ্ঠ মাংস ছিল।। গুথিনীতে ঐ মাংস নথে कति नग्न। भूनामार्ट्स अना देव वृक्षिनी दिश्य कान्न।। कृष्टे कटन विदाप ए-हैन किन्ता। मध्य देशक विश्व किन्न शकारक शक्ता। ताहे करनः विश्व সুত মুক্ত যে হইল। স্বৰ্গৰাভ স্বৰ্ণরখে চড়িয়া চলিল। দিবা মূর্ত্তি ধরে ছিল দিবা আভরণ। অপনর সমনে করে চামর বাজন।। সুখে স্বর্গাস ছিজ করিলা সম্বর। গঙ্গাসম তীর্থ নাহি শুন গদাধর।। প্রস্থাতীরে বাস कल वर्गरम जलात। शका माय-कीर्जन कर्मन न्यान जाता। भानाकारिम करते क्या (यह नरत । क्रमाशंक मभसताः भूगा इक्तिकरता। अना कीर्द्ध বিধিমত তিন বঁৎসর রব। গঙ্গাতীরে নিমিষার্গে সেই ফল পার। সমাগ্র रहेन अर्थेनिश्निक अधात्र। अभित्न नक्त्य सूक्ति नित्वत आकात्र॥

পরার। পার্কতী নন্দনকৈ অগন্তা মুনি কয়। পাসু কিয়া দুরস্কর যেই নর হয়।। আর কোন মতে বা আশন্ত কলেবর। য়ানে অপারক কহ কি উপার ভার।। কার্জিক বলেন ভবে শুন মুনিবর। অন্য তার্থ হৈতে গলা কোটি অংশান্তর। সকলের সার শিব মন্তকেতে ধরে। হেন তীর্থ নাহি আর পৃথিবী ভিতরে। যেই জন গলাতীরে আসিতে না পারে। তালার উপার কহি শুন মুনিবরে।। গলার সহস্র নাম গুরুতর অতি। তালার উপার করে করিরা ভকতি।। জিল্লামধ্যে সহস্র নাম পাঠ যে করিবে। যে মত নিরমে মন্ত্র উজারণ হবে।। সেই মত গলানাম পাঠ করে সবে। যথা তথা হ কে গলালান ফল হাতে।। আমৃতা আনন্দর্যকা ইন্দীরা ইম্বরী। উত্তমা হিলা ঝিল্ল থাকারণ হরি। ১ কারো ই কার রূপা এক মোক্ষ করি থারাবছ লা। ওলানী উত্তমরী।। বিন্দুরূপা বিন্দু যে রূপিনী কাদ্যিনী পালরপার ছিলারা ছবিনী। এরকার কিপানি টার বর বিহারিনী।। বিশ্বরূপা ভাগিরথী মুক্তি বিতারিনী। যন্ত্রনার নালিকী করে বিহারিনী।।

মাভা নকার কপিণী তরজিণী ।। ধকার বিপ্রহা ছুর্গা ধর্ম শহিরিণী। নানা
ঝলা পাতক নাশিনী ফুৎকারিণী ।। শিবেসি গোড়শী সিন্ধু তরক বৃদ্ধিনী।
ছরশির বিহারিণী জিতীশ জয়ন ।। ইহার বিংশতি গুণ নামেতে গণিত।
গালার সহস্র নাম স্তব স্থলনিত।। উনবিংশতি অধ্যায় গঙ্গার মাহাত্ম।
সমাপ্ত হইল কাশীশশু বস্তু নিতা।। উদ্ভ আত্মান কথা শুনে যেই নরে।
চতুবর্গ কল তার লভয়ে সম্বরে।।

পরার। ক্ষান্ত বলে শুন মিত্রা বরুণ নন্দন। ভগীরথ রাজা করি শিব করি আর্থন।। ত্রন্ধ শাপে দগ্ধ পিতৃলোক উদ্ধারিতে। তপস্তা করিয়া গঞা আনি পৃথিবীতে।। স্বৰ্গ সৰ্ত্য পাভাল ত্ৰিলোক হিভ তরে। আনিয়া মিলার গলা মনিকর্ণী নীরে।। চক্র যে পুন্ধর্ণী আর আনন্দকানন। পরম खत्यात शाम शतम शायन ॥ अधाशामी क्रतीत्रथ शका शर्क हाति। काशिया মিলিল বিশেষরের নগরী।। নির্বাণ একাশ কাশী ছইলেক নাম। শিবে মুক্তিনহেকত্ব অভিযুক্ত ধাম ।। কাশীতে অনাদিনিদ্ধি মুক্তির বিলাস। গঙ্গা स्वाधिमत्त देशल व्यक्तिक अकाम ॥ कालीबीम सुपर्व शकात नीत शीता। तर्ने -হের আভাবে ভালে অতি মনোহর।। আনন্দকানন মনিকর্ণী ভাগিরথী। দেবের ভুল্লভি ধাম ভিনের সংহতি॥ পূর্ণ্যপাপ পরিহরি কাশীবাসি জন। মির্কাণ লভয়ে বুচে ভবের বন্ধন।। অহত্রে প্রয়ন্তে কিবা কাশীপুরে মরে। ভারকের উপদেশ ভবসিদ্ধু ভরে।। মহাদান তথ হোম কাশীতে মরণ। ফাশীতে মরিলে লাভ মোক ভছকণ।। মাহেন্দ্র প্রভৃতি য**ভ** দেবভার গণ। মিরুক্ত আছিল পুরী হুরিতে রক্ষ।। কাশীর দক্ষিণে আদি নদী সৃষ্টিকরে ছুট্টলোক পার হৈয়া জাসিতে না পারে!। বরুণা নামেতে নদী সুজিল फेल्पत । भाभीत अटवन देश्टर भूती तका करत ॥ **हुई फि**ला हुई नमी क-রিয়া সংশ্বিত। কর্ম হৈতে দেবভারা পাইল নিক্ষ্ ভি।। পাদ্দমে দেহলি नाटम जामिन भरतम । त्रहिन तकात ज्ञात महरून जादम्म ॥ भूकिन्दर्भ ভাগীরথী উত্তরে বস্থুণা। পশ্চিমে দেহলি নামে গণেশ স্থাপনা गार्टन कानि नीमा हातिबिटन हाति। यटवा विटब्रमत त्राकवानी ननी भूती সীমাচার ভূত য**ত** পুরী রক্ষা করে। শিব আজ্ঞা বিনা কেছ <u>ৰে</u>শিতে नाटतः। ভारता विराधमात काका दत्र यात्र ७८तः। स्मर्टे स्म या १८७ शास्त जना नाहि भारत।। व विषया कहि छन कथा देखिहान। य ३८७ हहेता কাশী ভক্তির প্রকাশ।।

অথ ধনঞ্জম কণিকের উপখ্যান।

भन्नात । क्लारकात करत **क**र करह वियत्। हकिन ममुख करहे स्थ কপে বটন।। সেতৃবন্ধ নিকটে বশিক ধনগুর।। মাকৃভক্ত ভাগাবন্ধ বং সতি করম।। বিকি কিনি করি**রা ধর্ম্বেটেড সূজে ধন। সভত ভিক্তকে ভিকা** करत ममर्भन । ভिक्तिভाবে সেবে मना यत्नाना कुमात । इहेबा मण्यूर्न छिह বিনতা কন্ধর। ধনঞ্জয় গুণগ্রাম বর্ণন না যায়। ধর্মা মূর্ত্তি সাক্ষাতে সৃঞ্জিল বিধাতায়। চিরকাল গৃহ ধর্ম করে আচরণ। কালেতে ছইল ভার মাধের মরণ।। অতি পাপিয়দী ভার মাতা ছুই মনা। যৌবনে করিয়াছিল পতিরে वक्षना ।। योवन अक्षात काल मिन कुई छाति । योवस्थत अर्व्स शिक वरक থেই নারী।। অঘোর নরকে বাস ঘটরে ভাহার। শীল ভঙ্গ নরকেতে প-ভন ভর্ত্তার !। শীলভঙ্গ নরকেতে নারী কম্পারর দিকার পরে প্রামা পুক-রেতে জন্ম হয়।। বাছুরী হইয়া নিজ পুরীব ভক্ষর।। পেচা হৈয়া অন্ধ রুক্ কোঠরেতে রয়।। পর পুরুবের করম্পর্ণ স্থ**ং হৈতে। বাঁচাইয়া তত্ত্**তভা ৰুবতী যতনেতে।। পিতি ভবে করিয়া শরীর সমর্পণ। সভীর আজার হল সুর্যোর স্তন্তুন।। ভাত্রি পত্নী অমুশ্র। পতি সেবা রক্ষে। ত্রিগুণ ত্রিমূর্নি গচর্ত্ত ধরে কুভূছলে।। সোমদন্তা তেরদুর্কা সাভিল কমর। ভ্রন্ফাবিসু শিব जिन जश्दम कमा रहा। हेश्लाटक कीर्खि शतकादन चर्तराम । श**ास्त्रका** करन घटके लक्की जब बाज ।। छाटना निव यांनी जब लात धनकत । धर्म ঙালোপত্নন হৈল ভদ্বের উদন।। করিব যে মাতৃ অস্থিতালাভে অর্পণ। ক-রিল সঙ্কত্প হেন বণিক নন্দম।। মাতৃ **অদ্বি আনি পঞ্চ** গবো ধৌত করেও পঞ্চামৃতে ধৌত করি শুধিল সম্বরে।। ধূপ দীপ আহি করিনোনা উপহারে চন্দনে লেপন করি পুড়্পে পুজা করে॥ খেত বজ্রে বেই অন্থি করিয়া কে: र्धन। यতन्तरङ পট্ট বস্ত্রে करत्र आवत्न।। छेशस्त्र मुखिका मिला किल्ल লেপান। তাত্র সম্পর্ট কেরাথে করিয়া যতন।। গঙ্গা বাত্রা করিয়া, চলিক ধনঞ্জয় পথে চলে হীন জাতি স্পর্শ না করয়।। সভত প্রিত্র জতি ছ-खिटल के न । जमा जावधारन हरल विश्व नक्त ॥ श्रथ मुख्य खत छात्र इ-ইলউদয়: ভাবি অভি ধীরে ধীরে চলে ধনঞ্জয়।। ক্রমে ক্লানে আনিলেক: কাশীর দীনার। ভার রাখি ভারি সঙ্গে ধসিল ভথার।। পরে ভারি রাখিরাং ভারের বেরক্ষণ। খাদ্য দ্রব্য জন্য বৈশ্য:বাজারেতে জান।। অন্ধরা পাইরা जीति जीत महिता सारवार मन्त्रा के सारक गामिएक शाहिक के उस उसके

বন এতে ভাবিলেক মনে। ভাহা লৈয়া পলাইরা গেল নিজ স্থানে।। ধনঞ্জয় আসি তথা ভারি না দেখিয়া। ভার খুলি বস্তু যত দেখে বিস্তারিয়া ্দথিল সকল আছে সম্পূটক নাই। ধনপ্তয়ে উজিলেক ধনঞ্য বাই।। খাহাকার করে মাথে করি করাঘাত। চারিদিগে বিচারয়ে হইয়া অনাথ। পঞ্চারান না করে না দেখে বিশ্বনার্থ। পলিল ভারির ঘরে ভাবিয়া প্রমাদ বক্ষদুরে গিয়া তারি থসাইয়া তায়। সম্পূতিকে অন্থি সাত্র দেখিবারে পায়।। বিষয় হইলা ছাভি কুদীর্ঘ নিশাস। বনে অন্থি কেলাইয়া আইনে নিজবাস।। পাছে পাছে ধনঞ্জয় আইসে তার ঘরে। শুদ্ধ কণ্ঠ ওর্ড মুখে বাকা নাহি সরে।। দেখিল বস্ত্রের কানি ভারি নাহি ঘরে। আখাসিয়া কহে তার গৃহিণীর তরে।। সভা করি কহু মোরে না ভাবিহ ভয়। যথার্থ কহিবে ধন দিব অভিশয়।। কোথা গেল পতি ভোর আনহ ডাকিনা। মোর জননীর অন্থি দেউক জানিয়া। না জানিয়া লোভে প্রতি সম্পূটক আনে। এতে তার দোব নাহি লয় মোর মনে।। মোর মদভাগ্য হেন परिक्ष বিপাকে। না করহ ভয় ডাকি আনহ তাহাকে।। এত শুনি ভিল্লি নিজ পতিকে ভাকিন। লাজে হেটমাখা করি সম্বরে আসিল।। পথে ফেলিয়াছি অন্তি ভাগাকে কহিল ধনঞ্জয়ে সভে করি বনমধ্যে গেল।। स्वर्शात्म क्लाप्त चित्र देशल विचात्त । मिश्रज्ञम इत्रेष्ठा ज्यासन्तरण कामन কোনখানে অস্থির না হৈল নির্মাণ। কি করিব উপাব্ধ যে ভাবে মনে মন।। ভনিয়া সকল দিন হইল ভভাশ। পথহৈতে পলাইল চোর মজি-নাশ।। ভথাশ হইয়া ভাবে ছুই তিন দিন। ক্ষুধা নিদ্রা শোকে ছুমু, হই-লেক কীণ ।: নিরাশা হইয়া মনে ভাবি অভি প্রঃখ। পুনঃ কাশী আদি-বেক করি মান রুখ।। গয়া কাশী প্রয়াগ করিয়া ধনঞ্জয়। স্থাপনার নিজ স্থানে গোল মহাশয়।। ধনঞ্জয় মাতৃ অন্থিকাশীতে প্রবেশ। পাইরা যে ना शाहित रमश्रह विरम्भ ।। विरम्भित जास्त्र। विरम काहात मक्छि । कामी-পুরী প্রবেশিতে পারে মুঢ়মতি।। আদি বরুণার মধ্যে পুরী বারাগদী। সক্ষ পাইয়া পরে লাম হৈল কাশী 🕕 🐇

[ে] ত্রিপদী। বারাণধী দিনা মুর্ন্তি, রূপামগ্রী পরাশক্তি, যথ ছাজিয়া জন্ত জীব। বিশের নয়নানলে, পাপ পুণা দ্ব জলে, আপনি হইয়া যার শিব।। তবে জীব শুন মর্শ্বা, নানা তীথে মৃত্যু জন্ম, পাইয়া শে না পাইল শান্তি। বলে হেন খারাণদী, আনাতে মরহ আসি, একেব লে সুচিবেক

ভান্তি।। অন্য তীর্পে দ্বিজ্বর, মরণ হটলে পর, দেবস্থ পাইরা স্বর্গে যায়। কাশীতে আশ্চর্য্য বড়, মরিয়া চণ্ডাল নর, পরম কৈবল্য ধাস পায়।। কাশী ভাতি চমৎকার, সংসার সাগর পার, করিবারে মথা ত্রিপুরারি। আপনি বসতি করে, মহাসিদ্ধি দেন ভারে, যাহাতে সংসার ভার ভরি।। ভীর্থাস্থরে কবি স্নান, অথবা ছাড়িয়া প্রাণ, দেবপুরে দেবভা দে হয়। বারাণদী পরি-সর্বে, প্রাণ ত্যাগে যেই নরে, দেহ দশা পাইতে সংশয়।। কাশীপুরে ভিন্ন নেয়ে, তারকের উপদেশে, পুনর্জন্ম করয়ে গণুন। ইউপদে অভিলাবে, কাশীবাস করি শেষে, শরীর ছাড়য়ে যত জন।। দূরে থাকে লাভ তার, মূলে হয় ছারখার, যাহা লাভ মূলে খুন্য করে। জাহা কাশীবাসি জন, হারাইয়া দেহ ধন, হইলা যিধন একেবারে।। বারাণদী পুরী নাম, অনেহ গুণের ঘাম, শিব মহিমাতে যত জন। অশেব পাপের পাপী, পাপেতে হুইয়া তাণী, কাশী বালে পাপ বিমোচন।। চরুষ সময়ে ভেঁহ, ভালে অফি ধরে দেজ, যামার্ফে ধনিতা ফণি গলে। অতনু ছইয়া শেষে, আপনে ज्याश्रमि आदम, महोद्र मा इह दकान काटन। जानक कानन कानी, हळा ভীর্থ পুণ্য রাশি, তাহে ভাগিরথীর সঞ্চার। বিস্পের প্রিয় স্থান, ভাহাতে ছাড়িয়া প্রাণ, তব বন্ধ নাহি ঘুচে কার।। একে পুরী বারাণসী, তাহাতে ৰক্ষণা আসি, ভাগিরথী উত্তর বাহিনী। মুক্তির এধান স্থান, ভাহা ছাজি ছেন ধান, মূঢ় জন্তু পাইতেছে গুৰ্নানি।। গাৰ্ভ্ড বিদে ছংখ যত, যদের প্র-ছার মত, সে সব ছইল বিমারণ। বিশেশর রুপা বলা, পারে বারাণগী खल, द्वन छात्र कत गृह कम ।। छीर्थ खत्र भाभ नाम, धर्मलाह सर्वनाम, স্ত্রাম পান প্রাণভ্যাগ ঘটে। বারাণদী পুর বাসে, এক কালে মুল মাখে, त्वम भारत्य (इन कथा बर्छ ।। कामीभूती शतिबरत, प्रिकिनिकात औरक, क्यू शांखि छन् यमि शात्र। मीलकर्श गणि गत्ल, वात्म वधु छाँ थि लात्ल, करन इम्र करनरकरण योग्रा। मनिकर्निकात धरे, महिमा लामिमा धरे, छ-শুচি পার্থিব দেহ ছাড়ে। মিজ আ্মা বোধময়, তথনি একত্র হয়, পুথক না হয় পাতেরে।। অপার মহিমা কাশী, মুক্তিপরী বারাণসী, মুলিন क्रमत्र (यह जन। क्रल्ण जना छीर्य नम, महाभानी (यह जन, जात नहन ना कर छ। १॥ पूछ मन अन वांगी, कांगी निव बांबवांनी, कन इंडि वांह व्यना भूत। छाबिया भरनत इच, एक भिर शाम्श्रव, मन व्यक्तकात इरह ছুর।। ব্রক্ষালি ছার্লাভ যাই, স্থির মোক লক্ষ্মী পাই, কমলা চঞ্চলা ভাতিস্তম।] 啊]

বিদ্যাধন গৃহ দার, ভূত্য **অশ্ব গ**জ আরি, গন্ধ মাল্য ঐশ্বর্যাদি হেন।। স্ব-র্গেডে যাইতে পারে, যে জন উদাম করে, কাশী মাত্র উদানে না পার। ভুলনা কবিয়া ভারে, বিধাভা ভুলেতে ধরে, বৈকুণ্ঠ প্রভৃতি কাশী কায়।। বৈকুণ্ঠাদি লঘু ভাষ্ণ, সকলি উপরে যার, ওর্কি উর্বি তলে কাশী পুরী। পুরুষার্থ চতুর্যায়, তারে কাশী নীচে হয়, স্বর্গ সব উঠিল উপরি।। স্থাবর জঙ্গম যন্ত, কাশীপুরে অবস্থিত, ফুদ্র রূপি সকলি জানিবে। নানা উপসর্গ যত, পাপ পূণা আদি শত, ছাড়ি সব প্রম মিলিবে।। অবশ্ব অপার কার, জন্ম মৃত্যু ক্লেশ তার, বারাশদী পুরে পরিহরি। দেহ নিড্য জ্যোতি-র্মায়, পরিগ্রহ না করয়, কিবা মৃচ লোক আহা মরি।। ক্ষিভিতে থাকিতে কাশী, কেন লোক শোক বাসী, সহিতেছে বিপদের ভার। যেখানে নিধনে শ্বরে, উপদেশ মুক্তি করে, **ছেন কাশী না** করে সঞ্চার।। তুই তিনবার খার, যথেষ্ট আচার ভার, বারাণদী বাদি এক জন। আর এক বর্ণাস্ত্রমি, ভিতেন্ত্রির নহে ভূমি, করে মাত্র শুনির ভোজন।। ইতি সধ্যে কাশীবাসি, পুণ্যবস্ত বলে ভাষি, শ্রেষ্ঠ হয় মুনির ভাষান। ছেন কাশী পুরী বাসে, নাহি क्त मन जारम, रूथा जना- रहेन नगना। इंद्रुं ि सूक्त किना, त्य करत কাশীর সেবা, গতি অস্তে লভয়ে সমান। হরের নয়নানল, দহে কর্মা নিজ কল, অঙ্কুর না হয় কাশী স্থান।। শশক সপক প্কা, বক কল বিজ রুষ্ণ, ভুরণ উরণ বনচর। শৃগাল কুকুর আদি, ভবিয়ুক্তে মরে যদি, ভাহারা म) जटल कटनवत्र।। जूबन क्रमांक मर्भ, कटतटक जिप्त धर्भ, जात्म अर्थ চন্দ্র কোঁটা ধরে। কাশী বাস করে থেই, মোর পারিষদ সেই, শিব করে शार्सकीत करत् ॥ कांगीवांका देशस तक, कल एन हत् वक, भएमा आणि **জনুক অ**বধি। মহাদেব ক্ষমুগ্রহ, সে সকল ক্ষ**ন্ত দেহ, অবসা**নে লভে মুব্দি বিধি ।। আয়কাতে মিজ ধাম, দীজানাথ বসু নাম, ভ্রজানদের আন-শিকত মন। পরম অমৃত ভাঙা, ভাষা করি কাশীখণ্ড, ত্রিপদী করিল वित्रहम् ॥

পরার। বর্ষের সকল রুদ্র আছে কাদীপুরে। অন্তরীকে রুদ্র যত দেহ নহে দুরে।। পৃথিবীতে জন্য সব আছে রুদ্রগণ। উচে জাধে দশ দশ রুদ্রেব গণন।। উত্তরে দক্ষিণে পুর্বের পশ্চিমে গণিত। দশ দশ রুদ্র হেন বেদের বিহিত।। স্কুল্ল জাসংখ্য রুদ্র হাজারে হাজার। ভাহার কাধিক রুদ্র অন্ত কাশীকার।। অতথব হৈলে কাশী রুদ্র নাম। স্বর্গ

মর্ভ্য পাতালে নাহিক হেন ধাম।। কাশীতে নাহিক জাতি অজাতি বিচার। कांगी वांगि भूटक कुछ भूको कल कोत ।। मानटकत वर्ष गर मानटम नश्रम শরশয়। শাশান শকের অর্থ হন।। মহাভূত ত্রন্ধা বিষ্ণু শিব ভিন জন। প্রলয়ে ছইয়ে সৰ ভথার শরন।। নাম মহাশ্মশান হইল এই ভরে। জবি-मुक्क नम् धाम बाहिक जश्नातः ॥ शृथितीत मरधा नम्रक्त सरधा हम्। अ-খিতে জলের লয় আছয়ে নিশ্চয়। ধায়ু মধ্যে লয় হয় ভেজ ইভি যত। আকাশে বায়ুর লয় আছয়ে নিয়ত।। অহন্ধার মধ্যে আকাশেতে হয় লয়। অহন্তার যোড়শ বিকার যুক্ত হয়। বুদ্ধিমান মহন্তত্ত্বে অহন্ধার লব।। প্রকৃতি নধ্যেতে সহত্তত্ত্বের সঞ্চার।। ত্রিন্তণা প্রকৃতি লয় নির্ভণ পুরুষে। নে পঞ্চবিংশতি তম গণ্য ভব শেৰে। দেহ গেল পতি জীব সেই পরতর। প্রকৃতি প্রলয় এ**ই কছে ধীরব**র।। ব্রহ্মা বিষ্ণু রুদ্র কেছ নারহে তথন। काल भृष्टि (म भूजन्य कर्तात्र क्याना। काशांक्ट मशाविक नतल वृथ कर। মহাদেৰ বলি তাহে করছ ক্ষৰনা। আদি অস্ত সধ্য পূন্য শিব মহামতি। লক্ষীপতি যেই সেই পাৰ্কভীর পতি।। দৈতা ৰূপে প্রলয়ে জাপনি ত্রিশু-রারি। ত্রিখুল অত্ত্রেতে করি রাখি কাশীপুরী।। শুতএব কলিকালে প্রভার-রহিত। বারাণসী পুরী বেদ শা**ল্লে নি**ৰুপিত।। ক্লদ্দ বলে ঋষিবর এই সে কারণ। বারাণদী কাশী নাম **আলন্দ** কানন।। ৰাম দহাপাশান যে জার রুদ্রবাস। পার্কাতী সাক্ষাতে শিক্ষকরিল প্রকাশ।। বিষ্ণুর সাক্ষাতে পুর্নের যে কপে কথন। শিব মুখে ছেন জামি করিয়ে জ্ঞাবণ।। কাশীর মাহাজ্য এই কহিত্ব ভোমাতে। যে পঠে অধ্যায় এই পরম ভক্তিভে।। গাধুকে শু-নাম যেই এইত অধ্যায়। পরম পুরিত হৈয়া নিব লোক পার।। কছ মুনি-বর ইহ শুনিবে কি আর । বড় ভুক্তি কাশী কথা কহিতে আমার।। গকাতীরে বর্ত্মানে অভিকা নগর। তথাতে বস্তি সীতানাথ বসুবর 👭 ব্রহ্মানন্দ রত সত নিস্তার উপায়। কাশীখণ্ড সমাপন ত্রিশ ভাধাায়।।

--

অথ কালভৈরব উপাথ্যান।

পরাঠা। তারপর শুনহ বৃত্তান্ত সর্ব নর। প্রত্যেকে বর্ণনা কাশী মহিমা জপার। অগন্তাকে ধড়ানন কহেন সন্ধর। কাশীর ঈশ্বর শিব অচিন্তা অন্তর।। যাহাকে ধ্যানেতে আর মনে নাহি পার। অব্যক্ত সভাবনীর নীরাময় হয়।। যোগীগণ সমাধিতে বস্তু নাহি গার। ইঞ্চারপে

কালক্রমে প্রকাশ অবায়।। সচিৎ আনন্দময় কেবল অভয়। গুণাভীত শুদ্ধ সত্ম হৃদয়স্থ রয়।। এই অপ অনেক কহিল বিপ্রবরে। পরে মুনি बिकांगिल शर्वको कुमादा॥ अवाय अधिका गर्मा निव यपि इत्र। ইहात विटलय कर रहेश जनम् ॥ वर्जानन कटरन अनर मुनिवत । এक मिन অবিগণ সভায় ব্রাহ্মর।। জিল্লাদিলা বিধি স্থানে ক্রেষ্ঠ কেবা হয়। খবি बूर्य वह वाका खिन बन्धा कहा। मकत्वत त्यर्थ व्याम मृधिकर्छ। इहै। লিব বিছু আমার অধীন সকলেই।। হেন বাকা শুনিয়া কুপিল নারায়ণ। ঋষিগণে কছে শুন আমার বচন।। বিষু ঘিনি সর্বকর্তা কহে সর্বামতে **এ**ই बन्ता नो जिन्दा इहेन। जिन्दि ॥ अन्तर्कत कर्व। य इरम्न नाताम् । যাহার প্রসাদে শিব আদি রক্ষা হল । তদন্তরে চারি বেদ করে পরস্পর। সকলের শ্রেষ্ঠ শিব কহিল সন্থর।। প্রণব কহেন শিব পরম প্রকামধ। ভাঁর পর বস্তু কিছু নাহি বেদে কয়।। হেনকালে আচহিতে মহাতেজ রাশি। উদায় হুইল তথা প্রলয়ের ঘদি।। ব্রহ্মাপ্ত ভেদিয়া তেল প্রকাশ হইল। দেবভাতপত্নী যত কাঁপিতে লাগিল।। তার মধ্য রুদ্ররূপ হয় ম হ'াল। তেজ রাশি ঘোর মুর্ত্তি অতি পুনির্মাল।। শিব মুর্ত্তি দেখি ত্রন্ধা কংহন সন্তর। আখার কপাল হৈতে উদিত ভোমার।। তবে রক্ষা করি ভূমি হও অনুগত। এত শুনি মহাদেব হইলা কোপবত।। নিজ অঞ্ হৈতে হয় এ কালটভাৰে। শিব দিন্দা করে ব্রহ্মা শুনি ভাসন্তব ॥ বিধির পঞ্চম মুখ নথেতে ছিজিল। একার নম্ভক কাল হস্তেতে রহিল। ভারপর নারায়ণ অভি ভীভ হৈয়া। শূলপাণি গুর করে ল**জ্জিত** হুই**রা।। বর দিলা** महानित (क्व नाताप्रदर्भ। कशरू कर्दा १७ देवकुष्ठे पुतरम्।। खन्ना प्याकि দেব যত ভোষার অধীন। তব রুপা বিনা শুন চলে কোন দিন।। অবশেষে শিন্ত নাথে একা ভাৰ কৈল। আশুলোৰ মহেশ ব্ৰহ্মাকে বৰ দিল।। ভূমি সৃষ্টিক্রা একা দেবজার পর। ভোষা বিনে সৃষ্টিকর্ত্তা নাহি স্বভস্তর।। **७ मस्रत महारम्य अस्रत छातिया। अस्र रेहरंड वक क्ना छेर्**शिङ क-রিযা।। ত্রজহত্যা নামে কন্যা মূর্ত্তি ভয়ন্তর। সরশন মাত্র ভাঙ্গ কম্পে থর থর।। কন্যা প্রতি মহাদেব ডাক দিয়া কর। এক্সহত্যা পাপ কালভৈরবের হয়। যাহ তুমি অভিশীয় ভৈরবের অফে। যথা তথা যায় কাল থাক ভার गदम। यत्रविधि देखत मा यात्र कानीश्रवी। छमत्वि खनिद्वक इहेन्रा अपती। এভবলি সদাশিব হইস অন্তর্জান। ব্রদ্ধাহতে যায় কাল-ভৈরবের স্থান।। সে কালতৈরব এক। মুও ২তে করি। স্থর্গ মর্ত্য পাভাল ভ্রমণ করে কিরি॥ সন্থরেতে নারারণ পুরেতে আসিয়া। বছবিধ বিঞ্
সঙ্গে আলাপ করিয়া॥ বছ কালান্তে কালভৈরব কাশী যায়। এজাইংতে
কন্যা ভাগি ভৈরবের পায়॥ তদন্তরে মহাদেব মনেতে বিচারি। বায়াগদে রাজা কালভৈরবেরে করি॥ কালভিরবের প্রতি কহেন বচন। তব
কুপা বিনে নহে কাশী দরশন॥ যেবা অত্যে তব পুলা নাহি আচরিবে।
কাশীবাদে তার পাপ কভু নাহি যাবে॥ মাঘ মাদে সীত পক্ষ অর্থমী
রবিবার। চতুর্দিশী কুজবার শুন সারোদ্ধার॥ কালভৈরবের পুলা ভক্তিভাবে করে। যথা সাধ্য বিধিমতে দ্রব্য উপহারে॥ যে জীবের হয় কাশী
মৃত্যু অবশেষে। অবহেলে নির্কাণ জানিবে শিব শেষে॥ একত্রিশ
ভাবার হইল সমাপন। ভাবভ্যের নিকটে কহেন ষ্ডানন॥

-1816-

बाध मध्यानि छेथायान।

পায়ার। কার্ত্তিক কহেন শুন অগন্তা মুনিবর। যে প্রকারে দণ্ডপাণি হইলা সম্বর।। গন্ধমাদনেতে পুণ্য ভদ্রনামে যক। পুত্র না হওনে তার মনে বড় ছুঃখা। এক দিন পত্নী সঙ্গে পুণা ভদ্র কর। সংগার বিক্লন যার পুজ নাহি হয়।। অনেক বিলাপ করে পত্নীর সহিতে। তার পরে ছিতে পুজ হইবে কি মতে।। শিব জারাধনা করা এইত নিশ্চর। জনায়ানে পুজ হবে নাহিক সংশয়।। পুণা ভদ্র পুজ কামে শিব পূজা করে। সঙ্গুষ্ট হইয়া মৃড় বর দিল ভারে।। তব পুজ মম প্রিয় হবে অভিশয়। বর দিয়া সদাশিব অন্তর্জান হয়।। তদশুরে ষক্ষরাজ সন্তান হইল। হরিকেশ নাম্ তার আখ্যান করিল।। দিনে দিনে বাড়ে পুত্র যেন চক্রকলা। অভিশয় তেকোনয় শরীর নির্মানা। পুণাজন্তা পত্নী সানন্দ অন্তরে। পুত্রকে सूनीक (नन बदम्य क्षकादा।। अकिन द्वृतिदक्य हिस्तिन। बन्धदा। मनन করিয়া শিব আরাধনা করে।। কাশীপুরে হরিকেশ যাইয়া সম্বর। মোর-তর তপ্রা। করিল যক্ষবর।। তার পরে প্রসন্ন। হইন্না গৌরী হর। রুখতে আইলা হরিকেশের গোচর।। বর দিলা দণ্ডপাণি কাশীতে হইবে। দণ্ডপাণি নাম তব আখ্যান করিবে।। বারাণসী রক্ষা কর ধর্মাশীল জনে। পাপাচারে দণ্ড তুমি কর দণ্ডপাণে।। মম সম ভূষা তুমি করিবে ধারণে। किं श्रिक किंदि क्रिक किंगी मुख्य अपने।। उर श्रुका विदन कांगी वाटमट বিষ্ণল। তব নিশ্বা-জনের কাশীতে নাহি স্থলা। বড়ানন কংহন অগস্ভা

সন্মিধান। শিব আঞা শাসনের জি কব বিধান।। দণ্ডপাণি ভূতা বলি মোর দ্বেদ হৈল। তেকারণে কাশী ছাজি বাস যে গ্রীশেল।। বলিশ অধ্যায় দণ্ডপাণির বর্ণন। সমাপ্ত হইল অধ্যা অতি স্কুশোভন।।

-148/4

অথ জানবাপীর মাহাতা।

পরার। অগস্তা কছেন দেব শুন যড়।নন। জ্ঞানবাপীর মাছাত্মা যে করিব আবণ।। কন্দ কহে শুনহ কুন্তক মুনিবর। জ্ঞানবাশীর-বৃত্তান্তেতে পাপের অস্তর।। যে কালেতে জনোর সঞ্চার নাহি রয়। ফল রসে জীবের शांत्र में कि इत्र । अदिशुक्त महादम्य बहिन द्वन काला। महाक्रम कथ ধরি হস্তেতে ত্রিশৃলে।। যথা ত্রহ্মা বিষ্ণু লিক আছে প্রকাশিত। তথা আসি মহাকৃত্র হৈলা উপনীত।। মনেতে ভাবিলা দেব জল কোথা পাব। सूभी उन खरन निरम ज्ञान कता हैय।। এভ विश्वि तर है शान विश्व घा-एत। जिन्न चारुत देश बतात डेमप्र।। सूनीयन बन दमि निव जूरी হৈল। ত্রন্ধা বিকু ছুই লিজে অভিষেক কৈল।। সেই কুণ্ড জ্ঞানবাপী व्याकाम क्रितल । व्यवस्थि क्रामनाशी केमस इहेन । क्रामनाशीटक स्वता सानानि कत्य। जारात कटलत कथा करूरन ना रहा। नर्स शांश मुक्त रेरहा গেই সৰ নর। জনারাপে যুক্তিপদ লঙ্গরে বছর।। ছার কহি ওনা স্থানি মাহাত্মা অপার। শুকুপক অন্তমীতে রহম্পতি বার।। পুয়া নক্ষত্রেতে বাতীপাত যোগ হয়। যেই নর জানবাপী জলে আছি করর।। কোট পর। আন্ধ কল কবন্য ভাহার। পিতলোক স্বর্গে যার হয়ত নিস্তার।। অর্থ্য নী কি চড়র্মনী ডিথিরভান্তরে। উপবাস করি যেবা প্রতি স্নান করে । তার পরে জামবাপী জল পান করে। শিব লিক্ষমর হয় কে থণ্ডিতে পারে।। উপবাস একাদশী ফিথিতে করিয়া। ত্রিগণ্ডুয় জল ঐ ভীর্থের খাইয়া।। ভার ক্লে ত্রিশুণাত্মক লিক্সের প্রকাশ। অহিকেতে সদা সুধ অত্তে স্বৰ্গবাস।। জ্ঞানবাপী আর হয় শিব তীর্থ নাম। জ্ঞান তীর্থ তারক कार्य निकीटनत्र थात्र।। मतुनटन कक कल ना चात्र वाथान। याहात कर्नि কাম্পর্মে অবশ্য নির্কাণ।।

अथ सूरलांहनांत छेशांथान।

পয়ার। স্থার এক ইতিহাস শুন মুনিবর। হরিশর্মা নামে এক কাশী-পুরে ঘর ॥ তার এক কন্যা হৈল পরমা স্কুন্দরী । নপের বর্ণনা তার করি-তে না পারি। আশ্রুষ্ঠা যে ৰূপ কি কছিৰ তব স্থানে। ভাছার ভুলনা मिट नाहि बिष्वता। **खत्तरह स्काकिन पूर्त करत शनाव्य।** स्वक्ना। আসি সৰ নিন্দরে আপন।। সুষ্ঠা ভরে অন্ধকার কেনেতে জুকায়। রাভ্ ভয়ে চন্দ্রদেব বদনে মিশার।। উর্দ্ধে অধে। শ্রেণী যেন ক্রনেতে থাকর। (फनकम कूक्त किमा नरद करा। भारत श्रेक्षन रयन हक्षण खमत। हक्क् দ্বর অহর্নিশি ভেমতি করে। জবা পুলো মুক্তাঞ্জেণী যেন আছোদর। দত্ত পংক্তি ওষ্ঠাধর তেমতি শোভর।। কণ্ঠদেশে তিল রেখা দিয়া কাম কর স্বৰ্গ মন্ত্ৰ্য পাতালে অমন নাহি হয়।। অমূল্য রতন মেন বদনে ঢাকুয়। কুচন্বর সেই রূপে বসনে উদর।। নাভি উর্দ্ধে লোম শ্রেণী অভি সুশোভর। चार्या चेर्क द्याम स्टब्स त्यन यथि नात्र ।। खन्न खन्न भाषक्त छेशमा ना इम्र । जगरनटक इश्यनाम कारम शांक तम्र ॥ सूरणांचना एक्टब (यवा सम्रद्रम् কোণে। নিমিৰে রহিত হৈয়া থাকে স্তম্ভ মনে।। শুভক্ষণে সুলোচনা কল্মে ছিজ ঘরে। অন্য লোক মুখানাহি নয়নেতে হেরে॥ নিভা নিভা জান ব্যাপী প্রাতঃস্থান করি। জানবাপী শিবলিঙ্গ মন্দিরেতে ফিরি।। জব্লি कति शामाग्रुष्ठ शाम कति शरत । यस्मित्र याच्ये ना कति त्यस्य यात्र घटतः।। এইকপে বছকলৈ করিয়া জাপনা। রাত্রিয়োগে নিজ্রাতে জাছেন সুলো-हमा।। ८६नकाटन शक्तर्व जानिया कामीभूत्री। कनगरक हिन्ना नया यात्र चुराकति॥ अथ मर्थः विक्रमाली तांकन आहिल। शक्षर्स महिङ्कुद्ध जरनक করিল ৷ পরস্পর মুন্ট্যাথাতে হইয়া কাতরে। গন্ধর্ক রাক্ষ্য ছুই প্রাণ ত্যাগ করে।। গন্ধর্কের মৃত্যু ট্রুল দেখি স্কুলোচনা। অভ্যস্ত কাতর হৈয়া कत्रत्र कलगा।

ত্রিপদী। শিব ভক্ত মুলোচনার সদাচিত্তে শিবার্চ্চনা, পদ্ধানিকে স্বামী আন করি। অশেব করুণা করে, শিব শিব বলি স্মরে, প্রাণভ্যাণ করিল সুস্পরী। পদ্ধান রণেতে মৈল, জার শিব ভক্ত ছিল, সেই পুণ্যবলে হৈল রাজা। মলরা কেন্তুর পূজ, মালকেন্তু নাম স্থত্ত, রাজ্যভোগ করে মহা-ভেজা। সুলোচনা ভার পরে, কর্ণাট রাজার ঘরে, রাজ্কন্যা হইল সুস্বরী। কন্যা দেখি রাজা সুধী, কলাবতী নাম রাখি, পালন করেন পাঁটেশরী।।

দিনে দিনে বাড়ে কন্যা, জপে গুণে হৈল ধন্যা, বিবাহের কাল উপস্থিত
পুর্কজন্ম সংক্ষারে, শাল্যকেড়ু বিভা করে, উজয়ে পরম আহলাদিত।।

দৌতে দোঁহা জনুগত, নানাসুধ ভোগ রত রাজা রাণী পরম সন্তোঘে।
রাজের সাঁশিত অভি, পুজন্ম প্রজাপতি, রাজ্যে লোক থাকরে
হরিবে।। রাজা রাণী ছই জন, সদা আনন্দিত মন, জনমে জন্ম তিন পুজ

হৈল। পুজের দেখিয়া মুধ, হইল পরম সুধ, নানা সুখে বছকাল গেল।।
সুলোচনা শিব ভক্তা, আভরণে হৈয়া ত্যাকা, রাজাক যে করয়ে
ধারণ। ভস্ম অক্ষে, নদা মাথে, শিব শিব দদা মুখে, অস্তরেভে সনাশিব ধর্মন।। ভেত্রিশ অধ্যায় সাক্ষ তার পর শুন রক্ষ, অভি চমৎকার
হর জার। রাজা সদা থাকে রক্ষে, নিতা নিত্য ভূক্বভন্দে, দিন গত করে

দিরস্তর গ্র

∸ ত্রিপদী 🎮 শালাকেত্ব এক দিনে, বনি রাজ নিংহাদনে, চিত্রকরে চিত্র পট আনে। নরপতি দেখি ভুষ্ট, কলাবতী হবে ক্ষী, পাঠাইলা রাণী সলিধানে।। চিত্রপটি দেখি রাণী, শিরে করাবাত হানি, মুচ্ছিত হইলা কলাবভা। ভার পরে জ্ঞান হয়, চিত্রপটে দৃষ্টি রয়, ভর্জনীতে নেহারয়ে সতী।। বারাণসী অন্তরীক, পুত্তলে করিল লক্ষ্য, একিশব বক্লণা সম্বর। অর্গোদ্ধার মণিকণি, গঙ্গা মথা উত্তরিণী, যম যিনি তৃণ ত্লা হর।। তিন ৰূপে তিনধার, বহিতেছে নিরম্ভর, মোক বিধারিনী সর্কসার। জ্ঞানত্তপ শিব যথা, শিবা নিজত্তপ তথা, মহিমা বর্ণিতে শক্তি কার।। হরিশ্চন্দ্র প্রতিষ্ঠিত, প্রবলাক তথাস্থিত, কপালে মোচন তীর্থ সার। মৎস্যোদনী ত্রিলোচন, কাশীতে পাপ মোচন, ক্ষেশ্বর যজেশব আর।। দেখে বিনায়কেশর, তথা গুয়েশর হর, ভুকীশুর পার্কতীশরাদি। एमदर्थ छकुदर्सरमञ्चत, श्रुतार्थ क्रेश्वत यत्न, श्रुत्यश्चत विविध नमाश्चि । नात्रश्चक শিবলিঙ্গ ভীর্থেশ্বর নক্ষী ভুঞ্জ, মনোরজে হেরে দৈলেশ্বর। হেরে রাণী ময়েশ্বর, সন্ত সাগরেশীশ্বর, জিপুরেশ লিঞ্চ গঙ্গাধর।। তারাঞ্চে থলিত थए, वार्यम्बद्ध छदयक्ष, विरत्नांग्रहम्बद सर्वमात् । नकल दम्यर बानी, करन सुक्री करन कानी, रमस्य शक्ष शाखु खत्र कात ॥ रमधित्रा अस्तारमधत নারদ স্থাপিত হর, অনাদি কেশবেশ্বর শিব। দেখিল বলি কেশব, আর কত শগ্রন্থার, গঙ্গাধর উদ্ধারেন জীব।। দেখরে জাদি কেশব, ভদত্তে

বিশ্বামাধ্ব, বামন কেশৰ রাণী দেখি। ধরাহ কেশব বুক্ত, হেরে তথা হর মুক্ত, শঙ্খ মাধক দেখে আঁখি।। লক্ষ্মী নৃসিংহ মাধব, আর তৃত একেশব, নুসিংহের হেরিক প্রসাদ। হেরে গোপ গোপীশ্বর, বর্ক বিনারক করে, শেষ মাধ্ব দেখিরা আহলাদ।। সারস্বত গঙ্গা বার, সরস্বতী नर्कनात, शकानन छीर्थ मन्ताकिनी। मयुशा चानिष्ठा शक, चात एएथ कुछ विक, खाकःशत खारव तांगीला कारवायत कर्शनील, चिव हतरा खरील, বিশের যে নিতম উদিত। নাভি হরে মধ্য অংশ, প্রদতীশ্বর শিব অংশ, চন্দ্রাভ্য ক্রমে অবস্থিত।। বীরেশ্বরে আত্মানর, লিফ কেদারের হয়, শুক্র কেশেশ্বর অবস্থিতি। নথ লোম অলন্ধার, অন্য দর্ম লিক তার, দক্ষিণ হস্তেতে হয় মুক্তি।। চিত্ৰপটে শিবৰাপ, বিনায়ক ধর্মা কুপ,বিশ্বভুজা দশা-শ্রমেধক। ক্রমে ক্রমে য**ত দেখে, আনন্দ অপার সুখে, কি** ভাহার বর্ণিব অধিক।। জ্ঞানবাপী দেখি রামা, ক্রন্সন করয়ে বাসা, পরে অচেতন কলা-বভী। যতেক স্থীতে সেলি, একি একি একি বলি, কেন হেন হইলা গো সজী।। কেছ ক**হে দেখ সখী, আচন্থিতে হৈল এ**কি, বুঝিতে না পারি কে কারণ। কেই বলে অন্য ভাব, মনেহত জন্মিস লাভ, তেকারণে হইল এ~ মন I আর স্থী কহে ওগো, তুমি যে কাছার মাগে; স্ভা বটে সোর মনে লয়। অন্য রামা ক**হে শুন, মনে আছে আ**র কোন, বুরিতে না পারি भा निकात । काम नथी बटन देशन, निथा हिन्छ। कह देवन, हन शहे हा-জার নিকটে। কেছ কেছ শীস্ত চলো, ভুমিত কহিলা ভালো, রাণী সূক্ষ্য रमचि विद्य शर्षे ॥ विद्यादाचा चात्र शर्तत, मयत्व माखुना करत, कलावजी निकटिट याता सनित्रा ता नव कथा, माम विव्यतिल छथा, अनुमान क-রিয়া বুঝার ।। পুর্ককালে কোন ভাব, চিত্রপটে হৈল লাভ, বছদিনে ভা-হারে দেখিল। ভাবে জঞ্চ পুলকিত, ইহাতে হলে। স্তন্তিত, কলাবভী **टिन महिला। टिकटतथा अहै मदन, जिक्क क**ति अञ्चमादम, छिक्क छि ह्याँ स्नात भंतीरत । পर्छ न्मार्ट्स कनावणी, सुन्दित स्हेन मण्डि, मरन देशन कथा समा-स्टात ॥ जब नथी जिम्रात्म, शूर्त्व एक विवतरण, सुरलावना आहिल रथ काटन । मृशकित आशमम, ताका एकि वास मन, जीक देशा किसाटन म-करण ।। तांगी नकझरण कन्न, निरंतमन महामन्न, यमि क्रणा केत्र अधीत। এই ভিক্ষা দেহ মোরে, যাব আমি কাশীপুরে, ফলহীন স্বামী আজা বিদে।। মাল্যকেভু শুনি বাকা, চিন্তেভে করিয়া ঐক্য, কহিয়াছ বভু উপ-

सिन। क्षिटि प्रति कानी गांत, अनाग्रात्य मुक्ति शांत, धरे कथी कहिन विटम्म । दांका वाक ना कदिया, शृक्षक ताक्षक मित्रा, किछू धम जिका করি লয়। শুভক্তণে দিন পাইয়া, কলাবতী দকে লইয়া, মালাকেতু কানী हिल यात्र। यथा व्यविश्वज्ञभूती, ख्या याहित्रा छेडति, व्याक्ष मंगिकिनि सान হৈকল। অপরেতে বিশেশর, দর্শন করি প্র, ক্রমে ক্রমে সব দেখাইল।। ক্ষাত্তী পূর্ব কথা, তাহে নাহি জনাথা, মনে পড়ে সব বিবরণ। তীর্থ পৰ সাহে তথা, স্বামী লইয়া যথা তথা, অগ্ৰে পথ কৰি নিবীক্ষণ।। জ্ঞান-चात्री खत्ध हत्न, क्लांवठी कुज़्रत्न, सामीत्क मकन नित्तिमन। शिष्ठ পত্নী ছাই জনে, অতি আনিন্দিত মনে, সেই স্থানে ছোর ভপ কৈল।। ভবে বছ দিনাব্বরে, হর গৌরী আসি পরে, তুই জনে প্রসন্ন হইল। রাজা রাণী ছুই জনে, করে তপ ঐক্য মনে, হর গৌরী সন্মুখে দাঁড়াইল।। কলাবভী মালাকেতু, শিব কহে তুই হেতু, বর লহ যাহা ইচ্ছা হয়। পদ্মী পতি আনন্দিক, নিব নিবা উপন্থিত, বছ বিধ স্তব করি কয়।। অন্য বর নাহি ্টাই, সদা ঐ পদ পাই, অঠোর যন্ত্রণা নাহি হয়। পতি পত্নী ভক্তি দেখি, महारमवं देश्ला सूचि, निक रम्ट्र क्रिलिन लग्नं॥ त्री जानाथ क्यू मीना. লক্ষানন্দ রূপা বিনা, কাতর হইয়া নিবেদয়। আমি অতি হীন জানে. मिदानिनि अहे मत्न, जाल यम खब्द कुशा इत।

ইতি শ্রীকার্ত্তিক অগস্তা সংবাদে চৌত্রিশ অধ্যায় সমাস্ত।

-31240-

ধনপ্তর বণিকের বিবরণ ও কাশীতে গঙ্গার মাহাজ্য জ্ঞানবাপী তীর্থাথানে ও কলাবতী মাল্যকেডু নিকাশ নামো তৃতীয়া স্বৰ্গঃ।

জথ সদাচার কথন!

শন্ত্রার। অগন্তা করেন শুন প্রস্থু বড়ানন। অবিমুক্ত মহাক্ষেত্র নির্বাণ কারণ । অবিমুক্ত কথা যত অমৃত শিধর। শুনিয়া না হয় তৃপ্ত আমার জ-खत ।। अन्नवाशी कथा श्वनि भाज मन्त्र श्राम इत्र । जिल्लुवरन कीर्थ यक कानी সম নয়।। কাশী বিশেশ্বর গঙ্গা তিন দীগুমান। যেথানে সেথানে আছে खबर्च निर्दाप H कनिकाटन एकन है लिया यह नव । कि**क्ट्र** शाहेटन कानी গঙ্গা বিশ্বেশ্ব।। কলিতে তপন্থা দান প্রত ভব্তি ক্ষীণ। কিব্রুপে ছ্টুবে मुक्ति कात्र विशेष।। द्वार मान दिएन कामीशुरत मुक्ति हरू। इन कथा আপনি কহিলে মহাশয়।। কি কি জাচরণে কাশী পাইবারে পারে। মোর-भरन लग्न कामी शाम नमाहारत ॥ आहात शत्र भन्न उश्वा आहात । आहा রেতে আরু বৃদ্ধি পালের সংহার।। প্রথমতঃ সদানার কহু মোর স্থানে। ভোমাকে যে ৰূপে বলিয়াছে ত্রিলোচনে।। কার্ত্তিক বলেন মুনি শুন বদা-চার। আছরিয়া যে আচরে লভয়ে নিজার।। স্থাবর জঙ্গম ক্লুমি জাদি कन्छत । शक्ष शक्षी नतक्तरम धर्म कट्लवत ॥ धनक्त देश्टक रम्य वह क्या ধর। সহস্র ভাগেতে পুর্বিহইতে উত্তর।। উদ্ভিক্তস্বেদককরাবুক্ত অগুক্লাক नकरल উउन व्यांनी बानिटव निश्रक ॥ व्यांनीटक উद्धम दुद्धिमञ्च एक कीव । वृक्षिमक मर्या व्यर्क कानित्व जूरमव ॥ जाकारगरक व्यर्क रमस्य व्य इत्र वि-हान। विदान हरेए इंड वृद्धि य अधान । कुछवृद्धि रेटए कुई। अर्थ निवस्ता कर्जा रेश्टफ (अर्थ कान सकारक ७८ शवा। मृक्तिन सका। थानीत क्रेयन । गक्ष काफ वस एक विध्ववत ॥ गमाठादा थाकिता गक्त व्यथिकातः। व्यथिकातं श्रीम इम्र देशका छुताशास्त्र।। व्यक्षवयः वाकारण कतिदव সদাচার। তথাপি শতেক বর্ষ জীবন ভাতার ।। পরাধীন কর্ম যত করিবেক ত্যাগ। ছঃখি পরাধীন তোর সেও সুখভোগ।। যে কর্ম করিলে অন্তরাত্মা कुछ इम्र। क्रिटिक रम्हे कर्ष्म विश्रही छ नम्न।। अध्यय छन्नधर्म भून निम्नम বংযম। করিবে ভাহাতে যত্ন এই জান ক্রম। সভ্য ক্রমা ঋজুভা প্রসাদ **শহিংস্ন। অ**পিশুন ধ্যান দম করিবে গণন।। মাধুর্যাতা মৃত্ব এই যম-ৰাম দশ। করিবে বতন এতে হইয়া সরস।। শৌচদান তপঃ স্থান ত্রত অধারন। মৌন হরে উপোশন উপস্থ দপ্তন।। এই দশ নিয়ম বলিয়া শান্তে কর। যতন করিবে এতে অবশ্য নিশ্চর।। কাম ক্রোধ লোভ মোছ মঙ্গ मादम्बाछ।। करेष्ट्रम् देवतीयम् बामित्व मर्ख्या।। काम्य कारम् कविदवक् ध-

র্ষ্মের সঞ্চয়। বল্লীকের শৃঙ্গ যেন ক্রমশঃ বাড়য়। পরকাল ধর্ম মাত্র হ-ইবে সহার। জানিয়া ধর্মেতে সদা করিবে উপার।। পিতা মাতা দারা सूरु ले जि विक्रुवन । शतकारन रकर मरक ना करत अमन ॥ अभिरत बकक প্রাণী একক মরয়। সুকৃতি ছন্ধৃতি কর্মা একক ভোগর।। পঞ্চন্ধ পাইলে দেহ তেরাগিরা দুরে। বান্ধবেরা বিমুখ হইরা যায় পুরে। কর্মাত্র পাছে পাছে কররে গমন। অভএব করিবেক ধর্মের যতন।। উত্তম উত্তম কলে भवक क्रिट्व। अथम ठाकिम कुन छे दक्ष इटेट्व।। विक अथायन हीन স্মাচার হীন। অলপ চরন্ন ভোজি যমের অধীন।। রাজিশেবে চারি দণ্ড প্রক্ষকাল নাম। উটিয়া সে কালে স্মরিবেক হীত নাম।। গঞ্জানন ইম্পান উদ্ধানী লগনী হরি। একাণী গহিতে ব্রক্ষা প্রথমেতে করি।। ইন্দ আদি দেব যত বশিষ্ঠাদি মূদি। গঙ্গা আদি নদী গিরি এটেশলাদি গুণি।। সমুদ্র की द्वाप आपि मामगापि तव। मन्मनापि वन यक न्याविद्य अख्वा ॥ उन्न ত্রুরা আদি ধেনু করিবে সারণ। কম্প রুক্ষ আদি রুক্ষ করিবে মনন।। কা-ঞ্চন প্রভৃতি ধাতু উর্বাশীরগণ। গরুড় প্রভৃতি পক্ষ করিবে মরণ। অন-স্তাদি নাগ গল প্রসাবত আদি। উট্ডে:প্রবা আদি অশ্ব সণি কৌজভাদি॥ अक्ष की आमि शिष्टित का यक नाती। देनिमियामि अत्रगा वातांगनी आमि পুরী। নিজ বিশ্বেশর আদি অকু আদি শ্রুতি। সনকাদি যোগী বীজ প্রবৃষ প্রভৃতি ॥ বৈক্ষর নারদ আদিশৈববাণ আদি ৷ প্রহলাদ প্রভৃতি দুচ্ত্রত দধি-চ্যাদি।। বদান্য স্মরিবে হরিশ্চম্ম আদি রাজা। জননীর চরণ স্মরিবে মহা-তেজা !। পিতাকে স্মরিয়া গুরু করিবেক ধ্যান। করিবে তৎপরে আবস্থাক অনুষ্ঠান॥ গ্রামের নৈথাত কোণে কিছু দূরে যাবে। ভূণে ভূমি আচ্ছাদিয়া মলাদি ভাজিবে।। বস্ত্রে আচ্চাদিবে শিরকর্ণে উপবীত। সন্ধ্যান্তরে দিনে ভেঁহ বসিবে নিশ্চিত। উদস্থ বাজেতে দক্ষিণ মুখ হবে। সৌন হৈয়া মল মুব্র সভত ত্যজিবে।। দাঁড়াইলা জঙ্গে কিয়া গবাদি সন্মুখে। লাকলে আক্লয় ভূমে হইবে বিমুধে। মৃত্তিকা লইবে জন্তু ককর বৰ্জিত। করিবে মৃত্তিক। শৌচ যেমত বিহিত ।। একবার লিক্সে দিবে গুছে পঞ্চবার। দশ বার বাম হজে নিরম তাহার ॥ গুই হাতে সপ্তবার এক এক পদে। গুই হত্তে তিন বার শুধিবেক মৃদে।। এইৰূপে গৃহীশৌচ করিবে প্রচুর। ভা-বত শুধিবে যাবত গন্ধ যায় দুর।। ক্রমশঃ দ্বিগুণ ব্রদ্ধচারি জাদি ভিনে। দিবা হৈতে রাত্রে অক্স শৌচের বিধানে । তদর্ঘ পথিকে শৌচ আছরে विथान । छोतानि गाथिए लोह रुमर्क समार्थ । औरलारकर रुमर्क विथि

শান্তের বিহিত। সুস্থকালে ফান না করিবে কদাচিত।। সকল নদীর জলে মৃত্তিকা পর্বতে। গোমরের পুঞ্জে কিবা শৌচ করি বতে।। নানামতে শৌচ বিধি করি আচরণ। কখন না হর শুদ্ধ ভাব ছুই জন। শৌচে আর্ড ধাত্রি কলবান মৃত্তিকার। এই মনে আহতি ব্রতের গ্রাদে কার। শৌচ করি পরে করিবেক আচমন। ভার পরে করিবেক দল্ভের ধাবন। স্বস্থাবক্তা প্রতি-नम वंकी नवभीरक। आंत्र त्रविधारत कार्ड ना निर्देश स्टब्स्ट । निविद्ध मियन किया कार्छत अजीरत । श्रीमणे शस्ट्रिय मूर्य त्याधन कतिरत ॥ श्रामण अ-कुल क्छ कार्छत अमान। शीनवर्त अक अक शीरनत विधान। बाह्य আত্রতিক আদি কার্চের নিয়স। বেদমন্ত্রে দন্তধাবনের উপক্রম।। দন্ত কার্ছ গন্ধ বন্ধ্র পুষ্প অধ্যক্ষার। উপবাস দিনে না করিবে বাৰহার॥ ভবে প্রতিংস্থান করি সন্ধ্যার কম্মন। করিয়া রাত্রের পাপ হইবে মোচন।। সন্ধ্যা হীনে নাহি কোন কার্য্যে অধিকার। করিলেছ কর্মাজাত ফল নাহি ভার॥ ক্ষয় নর্শনের পর রবি উপাসন। ভার পরে বিধিমতে করিবে তর্পণ । জগ্নি কার্য্য করি করে যেদ অধ্যয়ন। পরে উদরের ভরে ভিকা পর্য্যটন। এই মতে প্রতিঃকার্য্য করি স্মাপন। মধ্যাক্ সমরে স্থান করি আচরণ। মধ্যা-ছেতে সন্ধ্য। করি বর্থা বিধি মতে। বলিবক্ত আদি কর্মা করি সাবহিতে।। ক্ষতিথির গাবকাশ দেখি কিছুকাল। ভোজন গৃহেতে বাবে গুল্ধ হৈয়া কাল।। যথা বিধি ভোজন করিয়া শিশু নকে। দিবসে ভাটাবে কাল পুরা-ণাদি রক্ষে।। স্বায়ং কালে স্বারং সন্ধ্যা করিয়া বন্দন। প্রতীকা করিবে অতিথির আগমন। **আসিলে অতিথি তাকে দিবেক** ভোজন। আগনার শক্তিমত করিবে ভোষণ 🕯 ভোজন করিয়া পরে করিবে শরন। নিভাকর্ম এইমতে: আছে নিৰূপণ । এইমতে নিতাকৰ্ম যে করে আচার। অবসাদ কখন না ঘটরে তাহার। অক্ষানন্দে ভাবিরা ভাবিল সুভাহার। কাশীখণ্ড भूषं शक्कितः मञ्ज्यपाम्

পানীর। ক্ষা বলে শুন মুদি বিশেষ বিধান। নদাচার তবে কিছু করিব বাধান। যে কথা শুনিলে পাপ বিনালে অশেষ। অজ্ঞান তিমির যোরে না হয় প্রবেশ। ত্রাহ্মণ ক্ষত্রির বৈশা ছিল্ল তিন বর্ণ। মাতৃগর্ত্তে ক্ষম উপনয়নে ছিল্লম। এনবার নিলেকাদি শয়নান্ত কর্ম। যেদের বিধান নতে আঁচরণ কর্মা। সভাকালে গর্ত্তাধান মহা মূলা ছাড়ি। ক্যান্সনের পূর্ব পূংববন কর্মকরি॥ সীমস্তোমন্তন বর্ষে অইমে বা মানে। জ্ঞানে

化加索二十四烷 特克斯 埃里 人名马克克

कतित्व कर्या खांक अविरामाय । अकाममा मिरन नाम कर्या खांठतना अक् देश्ट हरू ये मारमट निक्म मन।। वर्ष मारम कतिरवक अम स आनन। যথা কুল কালে। চূড়া **কর্ম আচ**রণ গ এ সকল কর্মে গার্দ্<mark>র পাছক সংক্ষয়।</mark> क्रमणः এ সৰ कर्मा अधिकात इत्र ॥ मश्रम अधेम वर्ष गाविजी अन्य। छेशमत्रतम् यदकः इटेटव खाच्या। धकामण वर्गत्तत् ক্ষরিয় উপনয়। স্থাদশ বৎসরের বৈশ্ব কাল উক্ত হয়। কামনা বিশেব আছে কালের বিশেষ। পঞ্চন বৎসরে বর্চে অর্থনে আদেশ।। রিধির বিধানে করি সাবিজী গ্রহণ। এক্ষ্যারি আশ্রমী হইবে যেই জন।। সদাচার পরে গুরু আরাধনে রভ। যথাবিধি বেদ শাস্ত্র পঠিবে নিয়ত।। ধরিতে মেখলা দণ্ড পৈতা ক্লক্ষাজিন। যথাবিধি ভিক্ষা আচরিতে প্রতিদিন লক্ষ্যারী আশ্রমের যেই সব ধর্ম। সাবধানে করিবেক সেই সব কর্ম।। করিয়া স্লাভক ত্রত ত্রনাচর্যা লোবে। ছাড়িয়া গৃহস্থ ধর্মা লইবে বিশেবে।। षाखरगत हिन्द कं कालान मा तिहित्त। ख्रा रहाम कतित्व नकनि मिथा इत्य । स्थला व्यक्ति क्ष बन्दान्ति हिङ्का शृहत्त्वत त्वन यक व्यक्ति कर्य ভিন।। वनচারী চিহ্ন নথ লোমাদি ধারণ। দণ্ড কমণ্ডলু আদি যতীর सक्तन ।। अन्य सक्तन होन इड्ट्स खाळगी। पिरन प्रित इड्ट्सिक आंत्रनिख গামী।। ত্রিন কমগুলু আদি জলেতে কেপিয়া। গ্রহণ করিবে সন্ন বিহিত করিয়া। সন্কাল করিবেক বেদ অধ্যয়ন। সাবিত্রী জপিবে আর সূর্য্য আরাধন।। ত্রাজ্মণের বেদাভাগে ভপ্যা। পর্ম। বেদ পাঠকরি দিক হইবে উত্তর।। উপনয় দিয়া নাঙ্গ বেদ অধ্যরন। যেজনে করয়ে সেই জাতার্য্য আপন।। বেদার্শ্বীম পাক বঞ্চ জাগ্রির আধান। রুভি হৈয়া যে करत तम श्राष्ट्रित जाद्यामि ।। छेल्याचि मन नम जानार्या कानित्व। जा-চার্বেরে শত সম পিতাকে মানিবে । পিতার সহস্র মাতা গৌরবেতে হয়। বেদ পুরাণেতে ছেন আছমে নিশ্চর।। ব্রাক্সণেতে কানী ক্রেষ্ঠ ক্ষুত্রি वलवान । धरन धारना देवना रकार्छ गृज अन्त्रमान ॥ कार्छमत्र इस्त्री रयम মুগচর্ম ষয়। জধায়নে ছীন ছিল তেমতি গণর।। গ্রন্থর নিক্টে না করিবে ছুইট মন। না করিবে মুখে গুরু নাম উজ্ঞারণ ।। গুরু নিক্ষা করে কিষা অপবাদ কয়। কাণে হস্ত দিয়া কিষা খানান্তর হয়।। গুরুপত্নী বু-বতী স্পশিষ্যা নমস্কার। না করিকে কদাচন নিয়ম ইহার।। মাতা পিতা গুলু তিন করিয়া নেবন । তিনলোক জয়ী হয় পাস্তে নিৰপণ।। ব্ৰহ্মচৰ্য্য এই সতে করি আচ্রণ। হইবেক বিশেশর রূপার ভাজন।। বিশেশর অ-

-181

खर्थ नाबीत नक्त।

পরার। বিবাহ করিবে কন্যা সুবর্ণা সুন্দরী। পিতার সপিও গোত্র কন্যা পরিছরি।। মাতামহ গপিও গোত্রের পরিত্যাগ। বিবাহের যোগ্য কন্যা কহে মহাতাগ।। অপস্মারি ক্ষরী শেত্রী কুল তেরাগিরে। বরেবে কনিষ্ঠ হৈলে বিবাহ করিবে। পর্বেত নক্ষত্র রক্ষ নদী সর্পনামা। পক্ষী পুল্প নামা কিয়া ভাকিবেক রামা।। ভাষিকাজী হীনাদি দীর্ঘাঙ্গী ভাারাগিবে। অতি ক্লগালীরে কন্তু বিভা না করিবে। অতি লোম যার অক্ষে কিয়া লোম নাই। তুল রক্ষ কেশ যার প্রশস্ত না পাই।। মোহে কুলহীন কন্যা বদি বিভা করে। নিরুক্তি সন্তান জন্ম হর তার ঘরে।। প্রথমতঃ কন্যার লক্ষণ পরীক্ষণ। করিয়া করিষে পরে কথা নির্কশ্বন। সুলক্ষণ সম্বাচার বাহার শেশর। বিবাহ করিতে তাকে হেন শাস্ত্রে কয়।। ক্ষন্স বলে ভন্ম মুনি কহিলাম এই। ব্রক্ষারী সদাচার শাস্ত্র উক্ত যেই।। প্রসঙ্গক কহি ভন্ম কন্যার লক্ষণ। ভাল মন্দ যাহাতে হইবে নিরুপণ।। ব্রক্ষানন্দ জাশা ব্রক্ষানম্ব্রের আশ্বর। কাশীখণ্ড ভাষা ভাবে ছত্ত্রিশ জধ্যার।।

भवति। कल बर्ण एम मिखा वक्रण एमत्र। जीलकणविकी देश्या इसी सूची रहा।। जारू वर्ष श्रद्धांक्रम साहे क्रम। भरीका करितन भूति मातीत शक्षण। मतीत क्रावर्ख शक्ष छात्र। मद यत्र। भरिवर्ण धहे छात्रे लक्ष्यण सम्प्रतः।। शक्षण कार्या यावर मिरत स्थान एखाएउ वलिव शक्षरणत्रः। विरम्प ।। श्रद्धां भाषकक्षित्र था छात्र भरतः। क्षत्रुर्छ क्रकृति नथ शास्त्रत्र छिभरतः।। श्रद्धाः शास्त्रि कर्या लाग कार्य छेत्रकृतः। क्रमम मिट्य द्वांति মধ্য বলিভার।। মধ্য স্থানপ্রে নাভী আর কুকুীতর। পার্শ ভতুরুই আর উদর হৃদর।। জার যে বক্ষল বক্ষ শত্রু কর্মন। অংশ কক্ষ বাস্তু মণি वश्व कत्रख्य। श्रानिशृष्ठं शानिष्टल शानि फलद्रश्च। अञ्चर्ष अञ्चर्ति मश्च शृष्ठंक काणिका । विवृक्त करशाल कर्थ रुख् राख्नु बिखा। मना अधव अर्थ কিতা আদত্রা। তালু হান্য নানা ভ অকি পক্ষ কত। কর্ণ ভাল সীমন্ত মৌলিক মৌলি জাত।। নারী অঙ্গ সক্ষণের ছম্মাটি স্থান। বেদ পুরাণেতে হেন আছমে বাথান।। মৃত্যু সাংসল স্লিম সম পাদতল। অরুণ অস্বেদ ওর্চ বছ ভোগ কল।। ক্লফ্লভা যিবর্ণ খণ্ড রেখা পদতল। বর্পাকার হইলে ঘটরে অমঙ্গল।। শন্তা চক্র রজ আদি রেখা পাদ তলে। ক্রিতি পতি পত্নী হর ঘটরে মঞ্জে।। মৃষিক প্রস্থাদি পদতলে রেধা। ছুর্ভাগা देवथवा इःथ मार्तिक সূচিকা।। অঙ্গুঠ বর্জুল ভাল অঙ্গুলি ঘনার্ত। তা-खवर्ग नथ जान जानित्न निम्नज।। পाদপৃষ্ঠ সমুন্নত প্রশংসিত হয়। বর্ত্তল न्**रेल अ**ल्क सूथ जिल्मा। गमशांकि **ए**ड बढ़ा वर्जु **ल सूफा**त। जासू ভাল সুরুত্ত দেখিতে মনোহর। হস্তী শুশুকার উরু ঘন প্রশংসিত প্রশস্ত বিশাল কটিহস্ত পরিমিত।। নিডম্ব উন্নত সুল অতি ভোগকর। ক্ষিকের নির্মাণ মৃদ্ধ মাংগল সুক্ষর।। বন্ধি প্রশস্ত মৃদ্ধ উন্ধত কিঞ্চিৎ। গভীর দক্ষিণাবর্ত্ত নাভী প্রশংসিত।। স্থুল কুক্ষি মৃছ পাশ মুখভোগ করে অতি সুখভোগ করে কম্পিত উপরে।। মধ্য ক্ষীণ হইলে ভোগেতে আঢ়া इया अछि जाना नहीं यात्र मर्या विविद्यत्र ॥ अजू स्या दामावित मक्त কুঁচর। ঐথর্য্য লভরে যার সমান কদর।। ঘনর্ত্ত চূচ পীন শীভ পরোধর। श्चायवर्ष सूबर्ख् व कमत्र सून्मत्।। शिवत कत्वत मिन्ना थन थोना करत। ऋल দীর্ঘ ক্ষক্ষের ভোগ ভোগরে বিস্তরে।। অংশ সুসংযুক্ত শুভ কক্ষ থকারোমা গুড় অন্তি গ্রন্থি নাছিক উপমা।। কদম কলিকাকার হস্তের নির্মাণ। অভিশয় সুখ ভোগ সম্পদের স্থান।। পাণিতল মৃত্ রক্তবর্ণ প্রশাংসিতঃ। প্রশংসিত পাণি পৃষ্ঠে উন্নত কিঞ্চিৎ।। রক্তব্যক্ত পভীর প্রশস্ত করে রেখা মংস্বস্থিত আদি প্রশস্ত মৃচিকা।। সরল অঙ্গুর্ত স্বস্ত অভি শোভা স্থান। অঙ্গুলি সুপর্ব দীর্ঘ অভি সুনির্মাণ।। অরুণ নথের অঙ্গ প্রশংসিত অভি। নিমজ্জিত মেক্তদণ্ড পৃষ্ঠে ভাগাবতী।। সমুদ্রত ঋষু ক্বতাটিকা মুসক্ষা। ভিরেখা অন্ধিত ত্রীবা প্রশংস গণন । কদর ভাঙ্গুল স্বস্ত হনু ঘনতর। ক-পোল প্রশন্ত সম্মত সুপিবর ।। সমান সম্মেশ সবর্ত্ব সুবদন। পিডা माणा मूच क्यान चिक्र स्मामन ॥ स्वता वर्ड ने जिन्न क्षानक चारत । शक् বিষক্ত যেন ওঠ মনোহর।। ছম্মবর্ণ বত্তিশ দখন প্রশংসিত। মৃত্ রক্ত শুভ কিন্তা শোভাতে গণিত।। স্থিধ কোকনদাভাষ প্রশস্ত তালুকা। ক্রমে তীয়া রক্তলয় প্রশস্ত ঘণিকা।। অক্ষন্ধিত দশন হসন সুস্থ অভি। সময়ুগ পটু নাগা বহু ভাগাবতী। ছুই তিন খুত দীঘ'ণ্ডভ এককালে। নম্ন প্র-শস্ত রক্ত কোন তুরিশালে।। সুঘন থাকির পর ন্নিই সূক্ষ ভাল। কার্ম্ম ক আফুতি ক্র প্রশস্ত কপাল। প্রশস্ত লয়িত শুভাবর্ত্ত কর্ন জান। আর্ছ চন্দ্রাকৃতি ব্রয়াস্থাল ভাল স্থান। সীমন্ত সরল স্কৃত্ব নৌলি সমুন্নত। অলি কুল ছায়া প্রায় কেশ প্রশংনিত।। ভাষণো ভালে কিবা থাকয়ে মূনক। বাম কপালেতে কিম্বা হৃদয়ে তিলক। প্রশস্ত লক্ষণ এই করে নিরূপণ। হৃদয়ে লাঞ্জন যেন অতি মুলক্ষণ।। দক্ষিণ বক্ষ যে রক্ত ভিলক লাঞ্জন। চারি কন্যা তিন পুঞ্জ করে প্রেসবন । ভিলক লাঞ্জন রক্ত আর কুচে হয়। এক পুজ প্রস্বিয়া বৈধ্ব্য লড়য়।। শুছের দক্ষিণ ভাগে তিলক থাক্য়। রাজপত্নী হয় কিয়া রাজা প্রনবয়।। নানাতো মশক রক্তবর্ণ যার রয়। রা-জার মহিনী প্রিয় আবিশ্বক হয়।। ক্লক্ষেবর্ণ হৈলে প্রতি স্থানে তুটা হয়। নাভী অংশ তিলক সকল গুভমর। মপক তিলক চিত্র ভঞ্চে নারিড্রভার নাভী অধে লাগুন করয়ে পজিব্রত।।। করে কর্ণে কপালে কঠেতে কিবা হয়। ঘশক হিলক কিবা লাঞ্ছন উদয়। প্রথম গর্ভেছে গুল্প অবশ্য দর্গ । কণোল ত্রিপুল অক্ষে ঠাকুরাণী হয়।। শয়নে দর্শনে কিটিমিটি কুলক ।। किशिष्ट कहरत किया अनाभ वहन ।। अकि मांनी कर भूर वेदर मह मिन्। দক্ষিণ আবর্ত্ত অভি প্রশস্ত লক্ষণে ।। পৃষ্ঠ মধ্যে আবর্ত্তন নাভীব আকার। বহু ধন বস্তু **স্তব অন্মায়ে তাছার** 🛭 উদর বেধিনে পূর্কাবর্ত্ত কুলক্ষণ। একে পতি নধেন্বয়ে কুলের পতন।। কণ্ঠগ দক্ষিণাবর্ত্তে সীনন্তে ললাটে। নৈধব্য বিবিধ ছাথ সেই জনে ঘটে॥ ঘাড়েতে আবর্ত্ত নার লোনের পাক্ষ। অবস্থা বর্ষের মধ্যে পতি মন্ত হয়।। সম্ভক্তে আবর্ত্ত প্রদক্ষিণ কিবা সাগ। मन निन मर्या शिक्ष यात्र यम याम ।। किंदिनन कविर्द्धन कुल है। रुद्धाः নাভীতে আবর্ত্ত পতিব্রতা পরিচয়।। পৃষ্ঠাবর্ত্তে পতি বধে কুলটা বে 🕫 । কন্যার লক্ষণ এই কহিল নিশ্চয়।। কার্ত্তিক কহেন শুন কলস নদান । জ্ঞ-শীলা হইলে কুলকণে সুলকণ।। সুশীল; হইলে কুলকণে সুলক্ষ্যা নিয়ত এমতি আছে শাস্ত্রের লিখন।। মুলকণা মুশীলা সাবিত্রী পতিব্রভা। বিজে-শ্ব অনুগ্রহে লভয়েবনিতা 🖣 পুর্নজন্মে শূলপাণি পুজিষাছেবারা। স্কুরাণী কুম্মরী পতিব্রতা হয় ভারা।। তীর্থেয়াম করে কিয়া শরীর ছাড়ন্ন। লাবগোর ভর ক্লিণী সুলক্ষণা হয়।। জগতের জননী ভবানী পূজা করি। সুচরিত্র
স্বাধীনা ভর্তুকা হয়নারী।। সুশীলা সাধিকা সুপাচিকা যদি হয়। ইহকালে
স্বর্গ অপবর্গের আলয়।। সুলক্ষণা সুচরিত্রা নারীর সাধনে। অপ্য আয়ু
পতি দীর্ঘ আয়ু পায় প্রাণে।। প্রথমে লক্ষণ পরক্ষিয়া কুলক্ষণা। পরে
সুলক্ষণা বিভা করি বিচক্ষণা।। কহিল লক্ষণ এই গুণপ্রথ তরে। বলিব
বিবাহ ভেদ শুন হে সাদরে।। সমণ্ড হইল তবে সপ্তত্রিশ অধার। কাশীবণ্ড সুখাভাও রচিল ভাষায়।।

-31814-

অথ বিবাহ নির্ণয়।

পরার। কন্দ বলে শুম মুনি বিবাহ প্রভেদ। জ্রাক্ষা দৈব আর্থ প্রাক্ষাপতা পনিচ্ছেদ।। আফুরি গান্ধনি আর রাক্ষা পিশাচে। এই অই প্রকার
নিবাহ শাস্ত্রে আছে।। আফ্রান করিয়া বরে কন্যা করে দান। যথা শক্তি
আলক্ষারে প্রাক্ষা তার নাম।। যজ্ঞ থাত্বিশে কন্যা দান দৈব হয়। আর্থ
কন্যা দিয়া বরে ছটি গক্ষ লয়।। কন্যা দিয়া বলে ধর্মাচার ছই জন। অর্থী
জন্ম প্রাক্ষাপতা ইহার গণন।। এই চারি বিবাহ ধর্মত শুদ্ধ হয়। পিতৃলোকে নিস্তার্থে ইহার তনম।। ধনে ক্রম করি কন্যা বিবাহ করয়। আন্
ক্র ভাহার নাম অধনে গণয়।। কন্যা বব পরম্পর প্রক্রিপ্রাহ্ম করয়। ক্রম্বিবাহ নাম ভাহার নিম্পর।। কন্যা বব পরম্পর প্রক্রিপ্রাহ্ম । ক্রম্বিবিবাহ রাক্ষ্য। ক্রম্বিবাহ নাম ভাহার নিম্পর।। কর্মা বিবাহের গ্রহণ করে কর। উত্তম বিবাহেদ এই করিল গণনা।। স্বর্ণার বিবাহের গ্রহণ করে কর। উত্তম বিবাহেদ ক্রি কন্যা লভে শর। বৈশ্ব কন্যা দণ্ড লভে শুল্রে বস্ত্রদশা। অসবর্ণা বিবাহের জানএই দিশা।। যদাপিকিঞ্চিৎ কন্যা দিরা লম্বপণ। কন্যার
বিক্রম পাপ পায় সেই জন। অপত্যা বিক্রমী কম্পে নরকেতে বাস। অভভব ন। করিবে কন্যা ধনে আশা।।

অথ গৃহত্ত্বের নিভাকর্ম।

পরার। বাণিক্ষাশন্পতি যেবা বেদ পটি হীন। কুবিবাহে ক্রিয়া-কলের পত্ন। বিবাহের বহিছে করিবে গৃহ কর্ম। পঞ্চযক্ষ ক্রিয়া

নিত্য পাবকাদি ধর্ম।। ব্রহ্ম যজ্ঞ বেদ পাঠ তর্পণ পিতৃয়ক্ত। দেব যক্ত হোম বলিদান ভূত যক।। নৃষক্ষ পতিথি সেবা এই পঞ্ যজ। প্রভাই ক-রহ আদ্ধ গৃহাপ্রমে বিজ্ঞ।। ভিক্ষুক আইলে ভিকা করিবে প্রদান। গৃহস্থ এ সব কর্ম করি পাবে মান।। সভত অভিথি সেব। করিবে যতনে। অ-তিथि रेषमूथ रेश्टल नत्रदक शंख्रान ॥ मङ्गानिक रेत्र अंति कार्यन कार्यान करिन বে। সায়ংকালে বলিদান পত্নী আচরিবে।। বলি বৈশ্য কর্মা নাহি করে যে खाना। मातिज इटेरव कांक रामित्क शमन।। रवरमानिक वर्म वित्रकांन আচরিবে। এই রূপে গৃহে থাকি শুভগতি লভে।। ধর্ণী অইনীতে তৈল, माश्टमत वर्ष्क्त । शक्षमणी ठकुमणी कतित्व शानन ॥ धरे मव पिटन मा করিবে ক্ষোর কর্মা। স্ত্রী আর করিবে ভ্যাগ এই বেদ ধর্ম।। উদয়াস্তমমে সুর্য্যে কভু না দেখিবে। জলমধ্যে নিজৰূপ কভু না ছেরিবে।। বস্ত্র ছক্ত উল্লুক্তন না হয় উচিত। নগ্ন হৈয়ে জলে কন্তু না হবে শক্তিত।। দেবতা ব্রাহ্মণ ধেনু আদি পুজাগণ। প্রদক্ষিণ রাখি সদা করিবে গমন।। রজস্বলা সেবা না করিবে কদাচিত। গহিত আসনে বসি ভোজন নিশ্দিত।। নবাল পকুলি মাংস ভোজন করয়। দেব পিড় না পুজিয়া পাপ অভিশয়।। গো-স্থান বল্লীক ভঙ্গে মুত্র না ছাড়িবে। গোবিপ্র সমা থে কড় বচনা করিবে জন্মিনা আলিবে মুখে পাপ কর্মঅভি। প্রাণী হিংসা পাপ না করিবে শুভমতি।। স্থান না করিবে গাত্তের মাজ্জ ন। জাসন না করিবেক পদে আকর্যণ।। নথ লোম দক্ষেনা করিবে উৎপটন। অশুভ যেসব কর্মা করিবে বমর্লা। নিরম্ভর শ্রুতি জপ শৌচাচার করে। অন্তহ হইলে বৃদ্ধি পুর্বজন্ম স্মরে।। দেবতা ভাকাণ নিন্দা নাহয় উচিত। মনুষ্যের স্তৃতি নাকবিবে কুদাচিত।। যথা বিধি ধর্মা কর্মা করি আচরণ। দেব ঋষি পিতৃ ঋণ করিবা মোচন।। শ্রুতির যতেক কর্মা করি পরিত্যাগ। মধ্যত্ব আশ্রুরে জান শিক্ষা মহাভাগ।। ভত্তকানে মুক্তি লাভ কিয়া কাশীপুরে। ভত্তকান এক জন্মে হইতে না পারে ।। কাশীতে মরিলে মুক্তি আছমে নিশ্চিত। অতএব কা-শীতে আগ্রর সে উচিত।। সেই কাশী সদাচার বিনে নাহি পার। সদাচাতে ना लख्वित कथन छाहात्र।। अनकस कथा छनि प्रनि कटर भूतः। दह वछा-নন কাশীকথা আর গুণ। কাশীস্থানে কোন কোন লিজ আন দাতা। বি-' স্তারিয়া কছ শুনি সেই সব কথা।। কাশী বিনে প্রিয় ভূমি নাছিক আমার কাশী দ্বিঅক্ষর নাম অমৃত ভাণ্ডার।। অগতেন্তার হেন বক্ষা শুনি যজানন। मुनिदक कट्टन श्रष्ट कांगीत वर्गन ।। यो जानाथ महिक अधिका शहरावाय ह

কাশীরও স্থাভাষে করিল প্রকাশ।। ত্রন্ধানন্দ গ্রানে ভ্রন্ধানন্দের আ-শার। সমাপ্ত হইল ভাতে অইট্রিশ অগ্যার।।

-

अथ महादम्दवत मकत् शर्वत्र भमन।

পরার। অগন্তা জিল্লানা করে পার্কতী নন্দনে। আর কাশীমাহাত্ম শুনিকে ইন্ছামনে।। ক্ষম বলে শুন মুনি অপুর্ব আখ্যান। শিব হর ব্দবায় অচিন্তা ভগবান ॥ স্কুল সুক্ষ নছে ভেঁহবস্ক এক হয়। বৈধান মননতে যার 🗊 পার নির্ণয় ॥ নিপ্সু বঞ্চ নিরাত্মক আর নিরাকার। এমতি পরম ব্রক্ত শুনহ বিস্তার।। অবিযুক্ত ব্রক্তকের শুন বিবরণে। সকল জীবের মুক্ত হয় ষেই স্থানে।। অবিমুক্তে অনামাণে মুক্তি দেন শিব। অনা স্থানে এত্াযোগে সহালানে সব । তথানারি ক্রিয়াতে জনাত্রে পরিকাণ। বিনা मारन विमा याद्या कामीटिक निर्वेशिया। शिख्य भूक्ष्य कन कल नित्रदम द्य रमग्र মহাদান অন্যত্তের সেই ফল পায়। মহাতীর্থ গঙ্গা তথা স্লান যেবা করে। कानारत्व महाक्ष्य रम नहिंशदा। अक्षाक्राय स्वा क्रिका एम्स स्व अंदिन। अनाद्ध जुला शुक्रम ना इस ममादन।। द्यादवत निक्रम मिटम द्यवा ख्य करता। **कारा**रम्य महास्याम क्षम र मध्यत् ।। हेन्छित्र मकल स्परा प्रमन क्षित्र। अविभूत्क यम भारक निकाम जाविश्व। महा केश्वरम् अहे अन्ह निम्ध्य । अतियुख्क साम्बक स्य कन कृत्य ॥ अन्यास्थान प्राप्त मार्स মানে করে। ইহার স্থান কল জানিবে সম্বরে। খনস্ক মহিমা কাশী विरिष्ठ कि शांति। कीन मुक्तानाटन सिन कर्दन क्या करता। युक्त देश्या সেই জীব মুক্তি গতি ভাষ। অগ্নস্তা করেন দেব শুনহ নিশ্চর।। গঙ্গাধর नर्वशास्त्र मम महामग्र। कि कांत्रत कांत्र कांनी छात व कत्र । कांत्रिक ক্রেন শুন মূনি মহাশয়। না করিবে প্রেপ্ত কিছু দল্লাদ্র হৃদয়। পর্জ্ঞপ্রকার • বন্য তব কাশীভাগা। অতএব উপকায় সর্বভেষ্ঠ ভাগা। অগস্তা কুহেন প্রকৃ করি নিবেদন। কাশীনাথ কাশীভাগি আশ্চর্য্য কথন।। ইহার রু ন্তান্ত প্রভু কহ মড়ানন। কিন্তথে ঘট্ল তালি আনন্দ কানন।। বিশ্বেশ্বর কাশী ভাগি কৈল যে কারণে। কার্দ্ধিক কংখন সব মুনি সন্নিধানে॥ পদ্ধ-কম্পে স্বায়ন্ত, সমূর অধিকারে। অনার্ফি হৈল যফিসহস্র বৎসরে॥ জীব बल्ह अति यह बाङ्कि अन्त्र। महत्त भर्यात्र एक गृह छेडाभन्न॥ भना।

আদি তুণ পত্র কিছু লাছিরের। মহামাধ্য প্রস্থার ভক্ষণ করর। এই মঞ্জ অনান্টি হৈয়া সৃষ্টি দায়। একার নিকটে সব থাবিতে জানায়।। সৃষ্টিকর্ত্তা ধানিস্থ হইরা অবশেষে। সৃষ্টিরক্ষা কিসে হবে চিস্তেন বিশেষে।। করেজ ভাবিয়া বিধি দেখেন উপায়। মনুবংশে রাজখাবি হয় রিপ্রঞ্য ।। ঘোর তর তপ করে বদিয়া কাশীতে। সবে ভূফ হবে ভার রাজ শাসনেতে ।। অনার্ফি পরিভাগ হইবে সত্তর। সক্লের আপুদ ঘাইবে নিরস্কর।। ডার পর সৃষ্টিকর্দ্তা কাশীপুরে জাসি। যথা দিবদাস রাজা তপ্স্যাতে বসি। ঘোরতর তপসা। দেখিয়া ব্রহ্মা কয়। দিবদাস নরপতি শুনহ নিশ্চয়।। এক ভিক্ষা দেহ রাজা দেবভার প্রতি। তব রক্ষা বিনা সৃষ্টি যায় অধােগতি অনার্ফি কারণেতে যার ভূমওল। ভূমি রাজা হৈরা রকা করহ দকল।। দিষদাস বলে প্রভু করি নিবেদন। বিপরীত কথা মোরে কছ কি কারণ।। তপস্যা করিব আমি মুক্তির কারণ। তপস্বী হইতে সৃষ্টি রক্ষা পাবে কেন ব্রহ্মা বলে শুন সভ্য রিপুঞ্জর রাজা। তব রাজ্য শাসনেতে রক্ষা পাবে প্রজা।! তার পরে দিবদাস ব্রহ্মাকে কহিল। তবে রাজ্যশাসি আমি এই বাক্য বল।। দেবলোক স্বর্গে যার ভুজঙ্গ পাতালে। কাশীতে বসিয়া রাজ্য শাসিব কুশলে।। যে কথা কহিলাম প্রভু ভোমার চরণে। ইহা হৈলে क्ति शामि तारकात भागरम ॥ खका वरन अम निवनाम नुभवरत । स्व নাগ স্বস্থানে ঘাইবে সম্বরে॥ তুমি রাজ্য রক্ষা কর কাশীর ভিতরে। দিবদাস প্রতি ব্রহ্মা দিল এই বরে ॥ বর দিয়া ব্রহ্মা ভবে ভাবিতে লাগিল कामीनाथ कामी जात अमलुव देवता। अमव जाविया अच्चा वित्त किनाम ! धानिष्ठ इहेब्रा चाहिन यथा कृष्तिवान ॥ तका छथा याहेब्रा अनस्म नक्षावत मिवमान ब्र**डाङ** कहिल्लन नजुरत्।। शिव कट्ट कानि व्यागमत्नत् कांत्र । চল যাই মন্দর পর্বত নিকেতন।। আমার কারণে বছকাল তপ করে। পর্বতেরে দিব জামি ননোনীত বরে।। শিব হুর্গা ব্রহ্মা সঙ্গে নন্দি ভৃত্তি-গণ। একতা হইয়া সবে করিলা গমন।। স্বস্ব যানে চডি যান মন্দর প পর্কতে। যথা ঘোর তপ করে সমাধি যোগেতে।। শিব দেখি যোগভঙ্গ করিল পর্বত। অকাঙ্গে প্রণাম করি স্তব বছুমত।। সন্তুর্ক প্রমথনাথ হ-ইলা মন্দরে। মনোনীত বর লহু দিবছে তোমারে।। মন্দর কলেন প্রস্তু বর যদি দিবে। কাশী ভাগে করি প্রভু মন্দরে ভাগিবে॥ প্রর্থনা গুনিগ্রা শিব চিন্তাকুল মন। এত দিনে ত্যাগ হৈল জানন্দ কানন।। ব্ৰহ্মাকে জি-জ্ঞানে শিব কি করি উপায়। কাশী ত্যাগ করিছে সন্দর বর চায়।। বিদি

করে দেব দেব হও কুপামর। ভক্ত অভিলাব পূর্ণ করিবারে হয়। ব্রহ্মার মনের কথা বৃঝিরা শক্ষর। মন্দরপর্কচ্ছে বর দিলেন সন্থর। তব পূরে বাস মোর হবে নিরস্তর। মন্দরের প্রতি শিব দিলা এই বর।। বর দিয়া চিন্ত'কুল হইলা শক্ষর। বারাণসী কি হইবে ভাবেন অন্তর। ব্রহ্মান দেবতা অগোচরে ত্রিলোচন। অবিমুক্ত শিবলিক্ষ করিয়া স্থাপন।। ত্রন্ধার মানসপুর্ণ সৃষ্টি রক্ষা আর। ভক্ত মন রক্ষা হয় পর উপকার।। কালী ভাগি মন্দরেছে বাস করি শিব। দেবতারা কালী ছাড়ি চলিলেন দিব।। দিবদাস রাজ্য শাসে অনাকৃষ্টি গেল। পূর্থিবীর সব জীব অকটক হৈল।। মন্দরেপর্যত হয় কালীক্ষেত্র তুল্য। ছইস্থানে প্রাপ্তি হৈলে সমাপনকৈবল্য বিশেবতঃ অবিমুক্ত ফল গুণ আর। মাঘে ক্ষুণা চতুর্দ্দলী পূজা করে ভার অবিমুক্ত হৈতে বদি সেই নর নায়। তথাপিহ জনাত্রে মরিলে মোক্ষ হয়। উনচালিস অধ্যায় সব সমাপ্ত হইল। শুনিলেই মুক্তিবাস দেব যে কহিল।

ইতি সদাচার স্ত্রী জক্ষণ ও মহাদেবের কাশী জাগ মন্দরপর্কতে গমননামে। চতুর্থঃ স্বর্গত।

कामीब्रध

অবিমুক্ত কথন। ভক্যাভকণ বিধি।

পরার। ক্ষম্ম বলে শুন মিদ্রাবরুণ নন্দন। কাশীর মাহাত্ম এই করিবে বর্ণন।। আর কি শুনিতে ইচ্ছা হয় মহাশর। বিস্তারিরা ভোমাকে কহিব সে নিশ্চর।। অগন্তা বলেন শুন পার্ন্ধতী নন্দন। কাশীর মাহাজ্য শুনি কান্ত নছে মন।। অবিমুক্ত কেত্র লিঙ্গ অবিমুক্তেশ্বর। এ দোঁহাকে কি ৰূপে পাইতে পারে নর ।। কার্ডিক বলেন শুন লোপামুদ্রা পত্তি। অ-বিমুক্ত যেই ৰূপে পার মহানতি॥ পুণাভারে সমীহিত অর্থের সাধন। শ্রুতি স্মৃত বর্ত্ত সেবি পুণ্যের ঘটন।। বিহিছ না করি করে নিবিছ্ক সেবর দুরাচার পতিত আনিবে সেই জন।। অতএব বলি শুন নিষিদ্ধ বিধান। এগৰ বজ্জিৰে সৰে হৈয়া লাবধান। পলাপু বরাহ প্রাম্য লগুন গৃঞ্জন। त्राटक एपि निया निजा कतिरय वर्ष्क्रम ॥ **डिडिंड** इंडेक इश्म इक्क्यांक वरू । শার্ম কুরুট শুক পলন ভক্ষক ।। বজির্রে সকল মা স বর্জিবেক মীন । थाटव इका भावा मल ताहिक शाहित॥ माश्मामी इहेटन थाटव शक शक নখ। কচ্চপ গণ্ডক গোধা সশক সম্ভক !। জ্ঞাত মুগ পক্ষী খাবে করিয়। বিচার। রন্ধ পরস্পার যার আছে ব্যবহার।। আয় ক্ষাম স্বর্গকাম মাংস না थारैटव। विमा यटक इथा পশু हिश्मा मा कतिटव।। मिश्क शकु शर्मु। यिख कतित्व वर्क्जन। त्वम भारक अहे क्रम ब्लाइ मिक्रमन । ब्रांक्स वर्क्ष अस्तर ত্ৰাহ্মণ কামনাতে। বিনা লোভ নহে দোষ মাংস ভক্ষণেতে।। পশু বৃক্ ঔষধি দুজিল বিধাতায়। যজের কারণে এতে না দোবে হিংসার।। মধু-পর্ক পিতৃদেব যজ্ঞে হিংসা উজি। হিংমা ও ছাহিংমা ছাতে বেদে আছে বুক্তি।। উদরের তরে হিংদা করে ছুরাচার। ইহকালে পরকালে গতি নাহি তার।। শত অশ্বমেধ যজ্ঞ করে যেই জন। ভাইছতে বিশেষ মাংস করবে বর্জন। ভাপনার সূখ ছঃখ জাপনি ঘেষন। পর সূখ ছঃখ পরে জানিবে তেমন।। নাহি ধর্ম সম বন্ধু এতিন সংসারে। অন্তএব ধর্মা কর্মা করিবে সম্বরে॥ নামাগত ধন দেশ কাল পাত্রে দান। করি-ৰেক বিধিমতে হৈয়। সাবধান।। অপাত্তে করিলে দান নরকে গ্রন। করিবেক দান ধর্ম বুঝিরা সজ্জন।। অনাথ ভাজবে যজোপরীত বিবাহ। দার্ঘদি সংস্কার করে করি অমুগ্রহ॥ সেই জন সম পুণাবস্ত কেহু নর। ইহকালে মুধ ভোগ পরে স্বর্গ হয়। পিতৃগুহে কন্যা যদি ঋতুবভী হয়। विराह ना टेहरम डारक इसमी वनत्र॥ नःघांधी निष्ठा छारक विवाह रय

করে। যে জন রুষলীপতি বেদশান্তে ধরে। তার সঙ্গে না করিবে সংস্থ সম্ভাব। ছুড্জন প্রভির সেই লভে উপহাস॥ বর কন্যা দোঁহার লোষের পরীকণ। করিবে প্রথমে পরে সমন্ত রচন। সভত প্রিত্র নারী ছ্য্যা माहि रहा। श्रीक मारम उक्तरबारन छुक्छ रहा।। श्राकु श्रीसंकारन कमा। ভোগে ছতাশন। প্রকাশ উদরে শশী ভোগে অমুক্ষণ।। স্থনের উদ্ভিদেশে গন্ধর্কে অধিকার। করিবেক কন্যা দান পুর্বেতে ইহার।। শয়ন অশন জান্ধ নারীর বদন। জুশবুর্জ পাত্র ছুদা নহে কদাচন।। অমুযোগে তাত্র শুদ্ধি কাংস্তা ভত্মধোলে িরজেনাযোগে নারী শুদ্ধানদী শুদ্ধ বেগে ॥ বে নারী ক্রদাচ অন্য পুরুষ চিস্তন। না করে সে উমালোকে করয়ে গমন।। জন্মাব্যি শিশু অন্ট বৎসর যাবৎ। ভক্ষাভক্ষ্য দোষ নাহি জানিবে ভাবৎ গৃহক্ষের ধর্ম পুষাবগের পোষণ। পিতা মাতা গুরু পত্নী আঞ্জিত যে জন।। অভাগত অভিথি অপতা হুতাশন। এই নব পৌষ্যবৰ্গ করিয়া গণন। স্থান সন্ধ্যা অপ হোম সাধ্যায় ভর্প। বৈশ্য দেব আভিথ্য নখমে দেবার্ডন গৃহত্বের এই নব আবশ্রক কর্ম। আর আর আছে যত গৃহত্বের ধর্ম।। শান্ত্র অনুসারে ধর্মা যে করে পালন। ধর্মা অর্থ কাম মোক্ষ লভে সেই खना। कमानील करन शाक करें छटल उस्रा कमा खन यम दिना छन মাহি হয়।। এক দোষ কমা শীলে স্বিতীয় না হয়। অশক্ত বলিয়া লোকে কেবল বলয়।। শব্দ শান্ত্রে কবিরত নাহি মোক্ষ ঘটে। সুরম্য বনতি প্রিয় মোক্ষ।নাহি রটে।। ভোজন বগনে কিবা হইয়া তৎপর। কখন না হয় মুক্তি অতি দুরতর।। সভত একান্ত শীল হয় যেই জন। ইন্দ্রিয়ের প্রতি যেবা করে নিবারণ। যোগপথে যার হিস্তা হৈয়াছে প্রবেশ। অহিংসক ব্যনে মোক্ষ ঘটরে বিশেষ !! একান্ত শীলতা পুরুষের কোথা হয়। ইন্দ্রিয় নিবৃত্তি থোগে ধুজি না ঘটর।। দেবত। পুজন আদি কন্ট অতিশয়। সহজে কাশীতে মুক্তি সরণেতে হয়।। জানিবে বড়ঙ্গযোগ বিশেশ্রর সেবা। কাশী পুরী বাদ মাত্র তপদ্যা জানিবা।। ব্রত আদি নিয়ম যম ব্রত আদি ধ্যান। জানিবা উত্তর বাহিনীতে মাত্র স্থান।। ত্রক্ষজনে নিষ্ঠা ন্যায়াগত ধনাক্রম। ধে জনা সভত করে অভিথি তর্পণ।। প্রান্ত্রকর্ত্তা সভাবাদী শুদ্ধ চিত্ত হয়। গৃহেতে ও হেন জনে মৃত্তির উদয়।। দীন অন্ধ কুটুমতে করি জ-সদান। যথেগাক্ত পৃহস্থ ধর্মে ধাকে সাবধান।। সেই জনে কাশীপতি করুণ। কর্ম। কাশীনাথ ক্ষেণাতে কাশী প্রান্তি হয়।। কাশীপ্রান্তি হইলে অবলা মুক্তি পার। অনায়াসে কাশী মাত্র মুক্তির উপায়।। সর্ব ভীর্য স্থান সর্ক থকেতে দীক্ষিত। দত্ত সর্ব্ধ দান ক.শী যে করে আজিত। অধিকা নিবাসী বসু সীতানাথ নাম। কাশীগুণ্ড ভাষাতে বচিল অনুপাম ঃ ব্রহ্মানক্ষ যোগেতে ব্রক্ষানক্ষের আজয়। সমাপ্ত হইল ভাতে চচিশ অধ্যায়।

তাথ বাণপ্রস্থ আগ্রম কথন।

धूता। ठलटर निर्वितिष्टाम अर्विति करत छूत। नर धान धातभाषि जाममा रूट अत्व ॥ भाषा नारि छाछ यपि, करि छन जारता विधि,वांत कर्त निर्विध, काभीनार्थत काभीश्रेत। गीजानाथ वस्त्र क्या, जनांशार्ति स्थाक रूप्त, स्वन श्रथ कर्ताचार,

शशांत । ऋन्म यटल क्षम सूनि मछ्य नन्मन। एक्ममण्ड शृंदर वांग कर्ति গৃহিত্যন।। বলিতে পলিতে হৈয়া দ্বিতীয় আশ্রমে। ভূতীয় আশ্রম আশ্রা-ইবেক সন্তুমে।। পুজ পৌজ দেখি গ্রাম্য জাহার ভাজিয়া। পুজে পত্নী রাখি কিম্বা পত্নী সঙ্গে লৈয়া।। চর্মক কিবা বন্কল করিয়া পরিপানা সায়িক হইয়া বনে করিবে প্রাম ।। শাক মূল ফলে প্রঞ্ ব**জ্ঞ** পাচরিবে 🕻 गातन्त्राज्ञान उत्त निव्यास कवित्व । याक्रान्यास नथ करे। कवित्व ধারণ। জল ফুল মূলে ভিক্সু অতিথী পুজন,। অগ্রহিতা দাতা দার্ভ সন্ধার তৎপর। বৈকালিক অগ্নিহোত্ত বিধান সম্বর।। স্থাপনে করিবে শ্বনি অন্ন আহরণ। করিবেক পুরোতাস অংশ নির্বাপণ।। স্বরাংক্কত লবণ খাইবে অনুদিন। ফডোষ গ্রেহ পান করিবে প্রতীণ।। সেতুদ গ্র করক পলম মধু ভাগে। মূল্যান্ন আশ্বিনমাসে ত জ মহাভাগ।। পুর্বের সঞ্চিত ভার করিবে वर्ष्कम । आम कल मून करन बन्न निवातन ॥ मरखासूथनिक जाब कुछेर्काः **হইবে। সন্ত প্রকালক মাস সঞ্**য় করিবে।! ভিন মাস কিয়া ছয়মাস উপযুক্ত। ভাদশ মাদের কিবা অর পরিমিত। কল মূল জাদি বস্তু সংগ্রহ করিবে। নক্তভোজি কিবা একান্ত রাশি হইবে।। ষষ্ঠকাল ভোজন নিয়ম কিবা করে। চান্দ্রায়ণত্তত কিবা নিম্নস আচরে।। পক্ষতোজি মাংসভোজি বৈখালক মতি। কল মূল ভোজন করম্নে নিতা নিতি।। তপভা নিয়মে দেহ করত্রে পোষণ। নিত্য পিতৃ জার দেব করিবে তর্পণ।। জ্বয়ির সাধন

धालनाटक विद्यांभन। पृष्ट्वांम इंग्लिममा कति विव्रष्टन।। वनवामी छल-স্বীর স্থানে ভিক্রা করে। সহীত্তে বিহরিয়া প্রাণমাত্র ধরে॥ প্রামা হৈতে জ্বানাইরা থাইবে ভাইগ্রাস। দিবা রাজি নিয়নে করিবে বন্ধার।। এই মতে বনাআমী হইলে ব্ৰাক্ষণ। ব্ৰহ্মলোকে পুজিত হইবে সর্বৃক্ষণ।। জা ৰুৱ ভূতীয় ভাগ থাকি যা কালনে। চর্তম ছাড়িয়া দক্ষ কবিৰে এমণে।। ঝণতার লা শোধিরা পুঞ না জন্মাইরা। মোক্ষু ইচ্ছা রথা যায় ঘটা না ক-বিয়া।। প্রাণীয়াল ঘাহা হৈতে নাফি হয় ভর। সর্কপ্রাণী ভা**হাকে অ**ভয় দাতা হয়। একাকী চরিবে জাগ্নি গৃহ ভাগে করি। গোল্ফ কাম গ্রামে ভাষ খাবে ভিক্তা করি।। জীবনে মরণে কিয়া বাঞ্চা না করিবে। ভূচকে নিডেল থেন কাল প্রতিক্ষীবে।। সর্বত্তে মমতা পূন্য সমতা অংশ্রয়। বৃক্ষয়লপাসী মুক্তি ইচ্ছা আশংসয়।। ধান শৌচ কিন্ধা নিভ্য একছি শীলতা। এই চারি **धर्मा कर्मा कतिरत ग**ीथा ।। बोर्गिक एक्**त भाष नाहि विदातिरत । बीकास्त्**त কল্প হিংসা ভাষাতে হইবে॥ রমন করিবে জল্প করি পরিবার। বাবি পান করিবেক বন্ধ্র পরিক্ষার।। অভুজে: বর বাক্য কহিবে নদায়। অভ্রেণ ান নিরক্ষেপ হতে নিরাত্তর।। অধ্যাত্মনি নীরবন্ত কেশ নথ বসি। কৃঞ্জু দশন দশুধারী ভিক্ষা আসি।। অলাবু মৃত্তিকা কাঠ বংশ পাত্রধারী। স-**জিবি তৈজন** পাত্র ভি**কৃক** সামরি।। কথমিক গ্রহণে **গোনহত্র** হত্যার। স্ত্রীসঙ্গ করিলে কুন্তিপাকেতে সে যায়।। এককালে ভিক্ষা করিয়েক জম্প তর। নিয়মিত সতত করিবে অভি তর। অংশাহার বহিঃস্থায়ী ইত্তিয় নি-লছ। রাগ ছেব হীন ভিন্ধু মোক্ষ পরিত্রহ। যাহার জাতামে বভ মুহূর্জ থাকিয়।। ক্লুক রুত্য দেই জন জ্বনমহাশয়। আজিয়া বঞ্জি যত গৃহত্ত্বের ভাগ। একরাত্র স্থির ঘদি দহে সর্ব্ব তাপ।। অনিত্য শরীর স্বরারোগ ভাতি लुहः **क्ष्म मृ**ङ्का क्रिम नना **काट्य स्मित्यः। नानारयानि क्रम**ा विर्याग প্রিয়জনে। অপ্রিয় সহিজেদক ঘটে অন্তব্দণে।। অধর্ম গইতে তুঃখ দযুস্তব दश्र । नहरक निर्वाण भाषा पालना घुँछ।। निज कभा त्माय देहरक मानाभक গতি। মনুষোর হটতেছে সদা কাল অভি ।। শরীর অনিত্য জানি কার্যার নিভাঙা। সভত মুক্তির মত্ন করিবে সর্লথা ।।

অথ আগ্ৰেষ্যে কথন।

পয়ার। ভিক্ষাপাত্তে পরিভাগে কর পাত্রীখাছি। শতশুণ পুণ্য

প্রাপ্তি হয়ে মহামতি। চতুর্থ আশ্রুমে ক্রেমে সেবিয়া পণ্ডিত। নির্দাদ হন ইয়া ব্রন্ধ হইবে নিশ্চিত।। বন্ধু হেডু কুর্দ্ধির আত্মা অসংঘত। জীমস্ত 🔭 হিছে সঙ্গ করিবে নিয়ন্ত।। আচতি স্মৃতি পুরাণ উপনিনদাদি। স্লোক সুত্র ভাষা আর যত শাস্ত্র বিধি।। বেদার্থ বচন শানি ত্রহ্মচর্য্য ক্রম। তপোদম শ্রদ্ধা উপবাস পরিশ্রন। স্বাত্মন্তান হেডু স্বতরেতে গৃহী যত। স্বাশ্রমে পাকিরা আত্মভানে ইচ্ছারভ।। জ্যোতব্য মন্তব্য দুফলা আত্ম বিশেষ। আত্মজান হৈতে মুক্তি আছয়ে নিৰ্দেশ। যোগাতান বিনে আত্মজান নাহি হয়। চিরকাল সাধিলে নে যোগদিদ্ধ পার।। অরণ্য আজম কিয়া গুহুন্থ আলোকন। ত্ৰভ দান ভণ্য 🕶 কিবা পদ্মান্ত।। মুগাগ্ৰ দুৰ্শন শৌচ एमोन मञ्ज करा। अ तकल टेश्टड (यांग ना इम्र मखन।। अভियोध नेपांगांग ভাষাতে নিশ্চর। পুনঃ২ ধ্যান্যোগ যোগ সিদ্ধ হয়।। আআতে নিথুন সদা দ্যাতে ক্ৰীড়ন। আজাতে সুত্ৰ জনে যোগ নিৰূপণ।। আত্যা বিনে ছিতীয় না দেখে যেইকনে। আত্যানাম সে যোগীল ভ্রমা পরায়ণে।। যোগ নামে আত্যা মন দোঁহার মিলন। প্রাণ প্রোণবোরে যোগ বলে কোন কন বিষয় ইন্দ্রিরখোগ যোগ কেহ বলে। বিষয়ীর যোগসিদ্ধি নাহি কোমকালৈ তুর্ণিবারে মনোরুত্তি যাবৎ নাকাটে। যোগের সংবাদ বার্ত্তা ভাসংখনা ঘটে। রুদ্রি হীন করি মন ক্ষেত্রজ্ঞ আতারি। এক্ড। স্ইকে হৈল যোপ-निक्त छ। उ विक्ति व है स्मित अखत यूथ कति । मरनटक नियुक्त नेपा कतिरेव সাবরি ।। হেন মন ভাত্যাতে করির। নিয়োজন। ভাব হীন ক্ষেত্রজের 🛎-ক্ষেতে স্থাপন। এই ধান এই জান জনা শেষ আরি। সে কেবল জানি-(दक शृहरका विश्वात । या वस्त्र माहिक जांदक जांदक लांक वरन ।: (इन বাকা প্রভায় কাহার নাহি ফলে।। জাপনাকে লাপনি প্রভাক্ষ ব্রহ্ম যা कुमाती नातीत राम खोरूब अछात्र ॥ धार्याभी कथन छाडा छानिएछ मा পারে। জন্ম অক্ষে যেন দীপবর্ত্তি না নেহারে।। জনিশ অভাবে নে আ-পনি বেদা হয় । বুলাহেড় নির্দেশ করিছে না পার্য[া]। বাতা-ষাতে যেন ক্ষণ স্থির নহে নীর। প্রনের যোগ তেঁহ চিন্তু নহে স্থির।। চিত্ত হৈর্য্য হেতু বায়ু করিবে বন্ধন। সেই হেতু যভ্যা যোগের আদর্শ।। আসন ধারণা প্রত্যাহার প্রাণায়াম। গানি সমাধি এই ছয় যোগাঞ্জপ্রমাণ। ভাসনে ভেদ চতুরাশি লক্ষ হয়। ইহরি বিশেষ জ্ঞাত শিব মহাশ্র।। চৌরাশি আসন তাতে শিব সংগ্রহিত। তাহাতে আসনদ্য আছে উলাক্ত বিংহাসন এক আরু কোনল আসন। অতি শীম এই ছুই সিন্ধির সাধন।।

বামপদ পাৰি ভাগ গুছতলে দিয়া। দক্ষিণ চরণ বাম উরুতে রাবিয়া। এই সিদ্ধাসন শীন্ত যোগসিদ্ধ কর। ইহার অভ্যাস দেহ দুঢ় অভিতর।। দক্ষিণ চরণ বাম উক্তে রাখিবে। বামপদ দক্ষিণ উক্ততে উঠাইবে।। পূর্ত্তনত ছুই করে অঙ্গুর্ত ধারণ। দুড় দেহ হৈরা অভ্যাদিষে পঞ্চানন 🔢 অথবা যে জাসনেতে তুথ হয় যার। স্বস্তিক প্রভৃতি আসনের অঙ্গীকার॥ यार्गत नायरम कान क नव विकारत। अल विक्र निकरिएक याग ना **সাধিতে ।। জীৰ্ণগোষ্ঠ অরণ্যৰক্ষিত্র সাধিতানে। মশকদংশক্ষাদি আছে** যেই-र्शाम ।। रेड्डा बुक्क ब्रह्म किया आह तम हस्ता । किन हुक ज्याकात कि-কৰাদি ধরে।। ছুর্গন্ধ স্থানেতে যোগ না হয় সাধন। জলেতে ব্যাপিত স্থান করিবে বর্জন। উদ্বেগ রহিত স্থালে ইন্দ্রির সুখলে। মন সে প্রসম্ যথা ধপের আমদে। অভি জ্ঞানা হইকেনা হবে ক্ষ্পিত। মল মূত্রে বাধিত না খুবে সাব্ধিত।। পথজ্ঞান্ত না হইবে না হবে চিন্তিত। সুস্থ হৈয়া যোগ ্রুক্ত ছবে খোগবিত।। উত্তর্গ উন্তান পদ সব্যে ন্যস্ত কর। কিঞ্চিৎ উন্নত वर्षः क्षम् छे भर ॥ मूर्विष्ठ महाम प्रस्त मर्ट्य स्ट्रम् स्ट्राम् । ज्ञान् स्वरूत विरुद्ध अमिरवक सर्था। हे खिन्न नकल कतिरव मित्रमन। माली छेक माछी नीठ छ-জিবে ভাষন। হেন মত সভাশীণ করিবে নিরস। উত্তম মধ্যম প্রাণায়াম अश्वाम ॥ अनिल अवतः रेहाल मकलि भवल । अनिल निम्बल रेहाल मकलि নিশ্চলা। **স্প**নিল করিয়া বন্ধ যোগী স্থাত হয়। যাবত দেহেতে প্রাণ তাবত জীবয় । প্রন বিগমে মৃত্যু জাছমে নিয়ম। গ্রাণ নিরোধনে ভাতে করি-বেক জন্ম। যাবভশরীরে বন্ধথাকয়েপ্রন। ক্রমধ্যেদৃষ্টিনির প্ররথাকে মন তবিত শমন ভর না বাকে ভাহারে। কাল ভরে ত্রন্ধা সদা প্রাণারাম করে যোগী যোগসিদ্ধ হয়ে প্রাণ নিযন্তবে। প্রাণাগ্রাস করিবার এইত সন্ধানে লঘু অক্ষরের মাত্র। জানহ জাখ্যান। অধন ছাদশ মাত্রা প্রাণায়াম মান।। চতুর্বিংশ মাজা হৈল স্বধ্যমে প্রণন। উত্তম ছবিশ মাজা প্রাণ নিরোধন।। (थेम कल्ला विश्वान क्यांत श्रांनाशास्त्र । कावटम क्यांत प्रक्री कल्लान मधारम ॥ উত্তর্গে বিষাদ ক্ষমে যোগী দিক্ষি প্রাণ। যথা ইন্টা লয় ভথা ক্রমে দেবা-মান।। ছটাৎকারে প্রাণ যদি করমে রোধন। রোমকুপা পথে প্রাণ করে নিগমন। শরীর বিদরে কুর্চ রোগাদি জন্মার। বনহস্তী পর প্রাণ স্বৰশে করম। বন্য পজ সিংহ কিবা জীনে মৃত্যু হয়। করিবে শাস্ত্রের নিয়মেতে लक्या नव ॥ कनव नः निःक आन त्यानी ज्वाम काम। अहन कवित तिता कर्षिय नितरम्।। इछिभ चाळ्य वाट्य इश्तात गमन । अग्रोग प्रकार वाटम

करत अञ्चल। अंख श्रेव श्रोण नाम हरेल हेशत। माफीहक खन्न यस्य राज्ञ ভাহার॥ প্রাণ নিবন্ধন মোক্ষ তবে যোগী হয়। প্রাণারাম ক্রম এই কহিল নিশ্চর। দুঢ়াশন যথা শক্তি প্রাণের রেচন। করিবেক বাম ছাণে দক্ষিণ शृतगा। शोष**्यः वर्षग** ह**ळ घटन करत धान। एन व्या**गायारम रामिक्स ক্ষণে পান । সূর্যাপথে করিবেক প্রাণ আকর্ষণ। উদর গত্তে রভাতে করিবে श्रुत्र ।। कुछक कतिया काटम हालाटक द्वहन । क्षेत्र वहत्य विद्या कति दव मीतन। अहे योगानटम खोशी कूमटन बाक्स। दश्म बदल छिन मान অভাস করয়। উভয় নিয়মে সেবা করিয়া নিক্র। শুদ্ধ নাড়ীপণ যোগী निक क्षांग रहा। बाष्ट्रीनन ऋफ टेर**टन** ८२म मक्ति रहा। यथयर धांतन बाह्य কবিতে পারয়।। নাদ অভিব্যক্তি অদলের প্রদীপণ। আ্রোগিতা উদিত হইবে গুণগণ।। প্রাণারাম দেছ মধ্যগত মে প্রন। আরান নামেতে জান ভার নির্দ্ধিরন। একশাস নয়মাত্রা প্রাণারাম কর। অধ্যেতে ঘর্ম মধ্যমেতে কপ্প হয়।। উত্তম সহিত্তে প্রমানন উর্চ্ছে উঠে। তিন প্রাণারাম হৈতে তিন বলে ঘটে। প্রাণায়ামে দোষ নালে শাস্ত্রের লিখিত। প্রত্যাহার ষোগ হয় পাপ বিনাশিত।। ধারণেতে নন স্থির ধ্যানে দরশন। নমাধিতে মোক শুভাশুভ বিনাশন।। আসনেতে দুঢ় বেছ অভিশয় হয়। বড়কের ভয় ফল কৃহিলনিশ্চয় মা **প্রাণায়ায় স্বাদশ্বেত প্রভাগের হয়। প্রভাগিরা** ত্তাদশ্যারণা তাকেকর।। তাদশ ধারণা ধ্যান ঈশ্বর দর্শন। ভাদশ থানেতে সমাধির নিক্রপণ।। সমাধির পরে জ্যোতি অনস্ত প্রকাশ। তাহার দুর্গনে याकांत्राटकत निर्वाण। वायु त्यांग अक्ष टेशका घणानित धनिन। छनस হইবে দিন্ধি অভূরেতে শুনি।। যুক্ত প্রাণারাম হর বাাধির সংশয়। অধুক্ত **ष्ट्रांग** धार्टा व्याधित উদর । হিকাশ **খান শি**র চক্কু কর্ন বাখা। প্রনের वाकिकत्म अमेरश मर्कशा ॥ छाटम यूक यूक वासू यूकर भूरत । यूकर वन्न করিবেক যোগীবরে ।। **বিষয় হইতে ই**চ্ছিয়ের **সা**হরণ। প্রভাহার ইহরে আখান নিৰপণ।। কৰ্ম যেন অস সব করে জাকিঞ্ন। তেন ইন্দ্রিরের যেবা করে আহরণ।। নি**পাপ হইয়া সেই সিন্ধ যো**গ হয়। প্রত্যাহার বি-বানের এইত নিশ্চর।। নাভি দেশে ভাতু ভালু দেশে শশধর। জধোমুগ্র वरन्त्रं व्यक्त श्रीत्म निवाकतः।। स्वमण्ड मल्द्रप्र सूधा क्रित्त (म काय। इत्व যোগী বিদ্ধ হবে হইরা নির্ব্যাক্ত। উর্দ্ধে, নাভি স্বধে তালু উর্দ্ধে, জানু इत्र। अट्य मामी विश्वतीक कत्र मिर्नत्र ॥ काक हथ्यू मृत्य स्रश कतित्वक পান। নির্জার হইবে যোগী সিদ্ধ হবে প্রাণ।। ভালুরুদ্ধে, রসনা রাধিয়া।

সুধা পিৰে। ছয় মাস অভ্যাসেতে নিৰ্দ্ধর হইবে॥ উর্দ্ধ জিল্পা স্থির সম পान करत (यहे। शक्षमभ नित्म मुज़ाक्षत्र इतव ताहे।। **ताज**मन्द्र विवदत রদনা অগ্রভাগ। হয় মানে করি হয় সাধি মহাভাগ।। অমৃতে পূর্ণিত দেহ যোগী মহাশর। তুই তিন বর্ষ পরে উর্জ রেডা হয়।। বোলকলা পুর্ণ দেহ নিতা যার হয়। ভক্ষকে দংশিলে ভাকে বিষ না লাগর।। সিদ্ধাসন প্রাণা-য়াম প্রত্যাহার যোগী। ধারণা জভাবে তবে হবে অমুরাগী॥ ভিনং भक्षञ्च अन्दर्भ धात्रव । धात्रवा ইश्टक विल सूनिक्टत मन ॥ इतिलाल दर्व जूनि नाना जनक ज। ठज्रकान थान करत विधित महिला। वरन किकि ধারণা ইছার অনুষ্ঠান। কণ্ঠে জল তথ্ অন্ধ্যন্ত ভাসমান।। কুন্দা ভাবা-কার বীব্দ বিকুণ সহিত। ধ্যান করি লয়ে ব্দল ধারণা সঙ্গীত।। তালুতলে ইন্দ্র গোপ মণি জ্যোতির্ময়। ক্রিকোণ রেফেতে যুক্ত রুদ্রের জালয়। महारङ्क शास्त अहे नहत शाहर। वाब्रू इच्च क मर्शा चार्ट्स निकारन।। অঞ্চন সন্নিত তেঁহ মণ্ডল আকার। ঘরীজ ঈশের ধ্যান বারু ধারণার।। खकातका क्रिक त्याम मतीह अकान। नाथ नमानित याटक तमरस निर्याप्त ॥ শপর ইকারাক্ষর বীজ বাতে হয়। চিত্তের সহিত প্রাণ ভাহাতে ধারয়।। মোকছার কণাট পাটন পটু ইনি। প্রণ ধারণা নাম ইহাকে বাখানি॥ স্তম্ভ নিপুরনী আর দহনি ভাষণি। ভুতের ধারণ পঞ্চ পঞ্চন সমনী।। বৈংগাজুর অর্থ চিন্তা শাস্ত্র বিনির্ণয়। নিশ্চল ভত্তের চিন্তা গানি নাম হয়।। সগুণনির্ভাগ ছুই গানের প্রভেদ। বর্ণভেদেসগুণ নির্ভাগ নাভিভেদ।। সমস্ত্র সঞ্জ ধ্যান অমন্ত্র নিগুল। ধ্যানের সজেদ এই কহিলেন পুনঃ।। সুখাসনে বলি বাহু দৃষ্টি অন্তর্মন। শ্রীর সমতা ধান মুদ্রার কথন। অথমেধে রাজসুরে যেই পুণালয়। স্থিরাসনে ধ্যান যোগে সেই পুণ্য হয়॥ শব্দ আদি পঞ্চমাত্রা শুভিত্তে যাবং। ধ্যানেতে অস্থিএই জানিবেতাবং ॥ তার পরে সমাধি জানিবে বিনির্ণয়। সমাধিযোগেতে যোগীহয় ত্রহ্মময় ॥ পঞ্চ নাড়ী थांत्रमा विकित नाष्ट्री थान। चापन थाटनटक नमाथिर शतिमान।। जन लवर्गत त्यारम नामा त्यन इसा व्याखा नारन केका तार नमाथि निर्मस व्यार्गित मध्यक्त बहुव बीनरमत लग्न । स्मेरे मध तम छटव मधीन स्मृष्ट । कीवाळ्या श्रुवमाञ्चार्काहात नमका। निर्मिकण्य नमाधित कहिरणन यथा ।। আত্মপর শীত উষ্ণ কিছু না জানায়। বস্পধি সময়ে ছব ছবে জত্মনয়।। ক্পান্ত কালেতে নছে কৰ্মেতে লেপন। বৃক্ত সমাধিতে অন্তে না হয় ভে-क्म के बुकर का श्राह विशव सात्री करहत कर्य एक बुक एकी य सात्री

श्रीमदत्र ॥ बुख्य श्रीमा अवद्वीय स्पष्ट करन । उच्च मन्द्र गरिन कांत्र इस विश्व-মানে।। বিক্লান জানন্দ ভড় দুকী তাংহিত। বাকামন অগোচর কারণ ব-ক্ষিত ॥ জন্মবস্তু হেন জন্মবাদী নিৰূপণ। বড়ক বোণেতে বোগী ভ্ৰমেড মিলন্। মুতে মৃত ফেলিলে সে মৃত মাত্র হয়। ক্ষীরে ক্ষীর মিলে যেন হয় कीत्रभग्न।। स्थाभी खाक्क लिन देशता खक्कपत्र रुग्न। लग्न विधि निकालन क्रिक নির্ণয়।) মর্সা জলে করিবেক অংকের মাজ্জন। কটু সমু লবণ বা করিবে ভক্ষণ। ক্ষীর ভোজি ভক্ষগরী কিতকোধ হবে। লোভ আদি সক্ষাশক্ররে ভেয়াগিলে । সম্বংসর ছেনমন্ত ক্রিয়া ক্রন্ড্যাস। হইবে পর্য যোগী সভত প্রকাশ ।। মহামুদ্রান ভয়তামুদ্রা উড্ডিয়ান। জলজর মুদ্র মূলবন্ধ মুদ্রা আন যোগীর হবে সেই যোগসিদ্ধি ভজে। নাজীজাল শোধন ঘটন চন্দ্র সূর্যো। দর্বদা রব্যের শেষে মহামুদ্রা নাম। মহামুদ্রা স্থাপি কভে পরণব্রহ্ম ধাম।। खर्च यात्र शक्त किया इस वक्कश्यत्य । अलख्य (मैं) हाटक मक्क शरक पृष्ट भरत ॥ কান্ধি পুরীবেক প্রাণে রেচিবেক জ্বে। এই মহামুদ্রা মহাপাপ বিদ্যং**স**মে राप्य अक्रानिया श्रेमः भूत्यं। अक्रानित्व । कुरा मन्था इरेटर स्म मुक्ता विम জ্জি বে । নাহি রহে পথ্যাপথ্য সর্ম নির্ম: বিষ্ণান করিছেছ অমৃত্তের तम ।। कत कुर्य खद्यावर्ष खन्ना द्यांश जानि । मश्रम्मा जन्मारम कत्रता नामा বিণি । কপাল কুষরে জিল্পাপ্রবেশকরিবে : জনখ্যে দৃক্তিবদ্ধ করিয়া রাখি-বে। থেচরী নামক মুত্রা জন্তাদ করিলে। রাগ নঘট হয় ভয় নাহি কোন काइनः ॥ ८४१ द मानम जिल्ला ६४५त श्रांकन्न । अञ्चल ८४५ दी सुञ्जल नाम दन्न ॥ শরীর যাবত কিন্দু স্থিরতার হয়। তাবত না থাকে যমরাজ হৈতে ভয়া। নভমূজার যাবত বন্ধন স্বেহে থাকে। বিশ্বর নিগম হৈতে নাহি পারে ভাকে।। দিবা রাজ হংস পক্ষী উন্ত ডিন করম। অভ্যাব উভ্ডিয়মান ভার नाभ रुत्र । तक्षः छेळा चाट्य भेरे भाळा निक्शन । तामकाचू कर्द्दर्ट कदिटर ধারণ।। উড্ভীয়ান বন্ধ এই মুদ্রা অভ্যাসিবে। মৃত্যুত্তর সেই যোগী কন্ধু না লভিবে।। কণ্ডে নাড়ীক্ষাল জবোগতি নভজল। মহাচুংধ নালন বন্ধন আসন্ধর । আলদ্ধর বন্ধে কণ্ঠ সক্ষু চিত হয়। বায়ু স্থির অগ্নিতে পীযূষ না প্ৰজন। গুহু ভাগে পাদপাঞি গুহু আকুঞ্চিত। উৰ্জ্ব আপনি মুগ বন্ধন विहिष्। प्राकृशिष कर्ष सम्द्रातक हम तारथ। हैश कालकात वर्ष अक्रिय কারকে।। অধোগতি আপুন বলেতে উর্ফ্য করে। বার যার উদ্ধানম গ্রন সমীরে॥ প্রাণাপান মাদ বিষ্ণুসূল বর্ষ আর । একথা ইইরা বিশ্ব লাভ হয় षात्र ।। व्यापान कारशङ् केका मनभूत क्षत्र । मूल र काला गरन क्षत्र गुरा हुन

প্রাণপণ সবে জীব উর্দ্ধে অধে ধায়। স্ব্যাসব্যে সদা চলে স্থিতি নাহি পশা अनवक शकी त्यन ने का नाहि इंग्रा अनवक कीव आना आर पाकर्षमा অপানে কর্ষর প্রাণ প্রাণ আপনাবে। উর্জ অব্যোত্ত ছুই যোগী ৰুক্ত करता। इकारत वार्वित यात्र भकारत श्रादिशा ११ म ११ म मन की व करण দিবংনিশি। একবংশ সহস্ত আর যেবা হয় শত। অজপাগায়ত্রী জীবু জপরে সতত। অজপা শঙ্কলে সরবপাপ যুক্ত হয়। যোগের বিহিত বিধি কহিল নির্ণয়। নামা অন্তরায় এতে উপস্থিত হয়। যোগ হানি করে যোগী অনের নিশ্চর। দূর কথা শুনে দুর বস্ত দৃষ্টি হয়। যোক্ষন শতেক গতি ক্ষণেকে করম।। অচিন্তিত শাস্ত্র তথ্য পাঠ হয় তার। বড়ই ধারণ শক্তি লযু वर्ष अति ।। कारण क्रम कारण कुल कारण खण्ण ह्य । कारण वर्ष शतकांत्र अरव-न कत्रम्। शक्षः शक्की छ य। त्याय जनामात्म इम्। मिता शक्क मिवा वानी गहरक छेम्य ॥ मिना कना। প্রার্থন। করুরে অভিশর। দিবা দেহ ধরে দিবা পদ লাভ হয়।। গোগ নিজি স্থৃতক,এসব অন্তরায়। হইবে উদয় ভার ক্ষতির উপায়।। এ সকলে যদি স্নেহ চিতে নাহি ক্ষিপে। তবে প্রাপ্ত হয় পরে ব্ৰহ্মার স্বৰূপে।। যাকে প্রাপ্ত হৈলে পুনর্বার রাগ নাই। যভুঙ্গ যোগেতে . তাকে লভে যোগী ভাই। এক জন্ম হেন যোগ কিনে সিদ্ধি হয়। যোগ-বিদ্ধি না হইলে কন্তু মুক্তি নয়।। নির্কাণের তুই পথ আছুয়ে নিশ্চিত। কাশী মৃত্যু কিবা যোগ শৈদ্ধি সমুদিত ।। কলিতে কলুস রুদ্ধি ইন্দ্রিয় চঞ্চল অপ্স আন্ধু যোগ নিজি নছে যোগ ফল।। অতএব কাশীপুরে বিশেশর স্থিতি। রুণা করি লোকে দান করিলে যুক্তি।। কাশীপুরে সুখে যেন নির্দ্ধাণতা হয়। যোগ আরাধনে মুক্তি তেমতি লভয়। কাশীতে শরীর ষোগ মহাবোগ কয়। কাশীবোগে অবশাই ওড মুক্তি হয়।। বিশেশ্ব বিশালক্ষী চুক্তি সভাপানি। কালৱাজ গজা এই বড়ঙ্গ বাধানি॥ কাশীতে বড়ক যোগ নিতা জ্জাসয়। দীর্ঘ নিত্রা প্রাপ্ত হৈয়া অমৃত ভূঞ্য়।। প্রণব কেদার কৃতিবাদ বীরেশ্বর। ত্রিপিষ্টক বিশেশ্বর বড়ঙ্গ অপর। বরুণা সক্ষম আর অসার সক্ষম। আনবাপি মধিকর্নি ছতি অমুপ্র । একাইদ ধর্ম কুপ বড়ঙ্গ অপর। অভ্যাদির। কাশীতে নির্বাণ লভে নর।। গঞ্জানা বহাযুত্তা পাতক নাশিনী। সেবিবা কাশীঞ্চনর হৃত্তি প্রদারিনী।। কাশীতে সঞ্চার শুদ্রা হয়ত থেচরী। থেচর হইবে জন্ত তার সেবা করি।। ভূরদেশ रहेंदर छिए कामी स्मानमन। छेछ छोत्रान ग्रहान्य धरे निवशन।। वित्य-भेत सान है। ती निर्देश के बाहर । जानकत रक्ष धरे में जिल्ल स्वाहर । भक्र विश्व

লাতে কালীপুরী লা ছাড়য়। এই মুল বন্ধ মহাছু:খ বিনাদার।। নানা
মতে যোগ বিধি উক্ত এই হয়। বড়ক নমুত্র যোগ কহিল নির্দান। উত্য
যোগের মধ্যে রের্ছ কালীযোগ। কালীযোগ জাত্যানিয়া নানে ভবরোগ ।
যাবত ইত্রির নাহি হইবে তৎপর। ব্যাধিতে বাধিত না হইবে কলেবর।।
মাবত থাকরকালবিলম্ব ভাবত। যোগ যুত হইবেকছাড়ি নানানত।। আধি
বাাধি সঙ্গি ম্বরা মৃত্যর লক্ষণ। নিকটে জানিয়া কাল কালী জাত্রমণ।।
কালীনাথ জাত্রমিলে নাহি কালভয়। জতুর হৈলে কালে প্রাণ হরণকরে ।।
কালীপুরে মরণ মকল জতিশয়। অত্রব কালীপুরে নাহি কাল ভয়।।
গৃহি যেন কালে জতিথিকে প্রতিকয়। ভাগ্যবন্ধ কালীপুরে কাল নির্মীক্ষম।
কলিকাল ক্ষত কর্মা ত্রিকটক কহে। খানন্দ কাননে ত্রিকটক ভরনহে।।
জক্মাৎকাল আসি করিলেক গ্রাম। কাল ভয় ভীত আজারিবে কালীবাস।
অধিকানিবাসী সীতানাথ বস্তুলান। কালীয়ণ্ড ভাষারিতি করিল প্রকাশ।।
ব্রক্ষানন্দ সমাগ্রের ত্রেজ্বিশ্ব পায়। সমাগ্র হইল একচজিল অধ্যায়।।

कार मेले। धक्रा ।

প্রার। জগস্তা বলেন শুন-পার্বিকী নন্দন। কিরপে নিকটে কলে হয় নিরপা। সরণের চিক্ল কিছু কহ মোর স্থানে। এত শুনি কুমার কহেন হয়্মনা। শুন কহি কাল চিক্ল মরণ লক্ষণ। যাহাকে জানিলে মৃত্যু হয় নিরপা।। দক্ষিণ নাসাতে বায়ু বহে অথপ্তিত। এক দিবা রাজ ভিনবং-সর জীবিত।। ছই তিন দিন যদি বহে দেই মত। অফাদেশ মানে মৃত্যু ভাহার নিয়ত।। নাসা পাই বোগে বায়ু বহে দশদিন। ছয়মানে দেই ছয় মৃত্যুর অধীন।। নাসাযোগে ছাড়ি বায়ু মুখে বহে যার। ভিতীয় দিবসে মৃত্যু জানিহ ভাহার।। সপ্তম রাশিতে গত হয় দিবাকর। জয়্ম নক্ষত্রেতে জার থাকে শশধর।। দক্ষিণ নাসাতে বায়ু বহে দে সময়। অকক্ষং সেই কালে মৃত্যু ভার হয়।। পুরুষ পিকলক্ষণ সে কালেদেখর। তিতীয় বংসরে মৃত্যু ভারার নিশ্চয়।। বীর্ষ্য মল মুক্ত কিবা ক্ষুত মৃত্রু মলা। এক কালে হয়্ম ভারবর্ষ আয়ু বল।। ইন্দ্রনীল নিতনাগ রুক্ষ আকাদেতে। দেখিয়াজানিসে মৃত্যু ছয়মাস গতে।। দোঘ হীন দিনে মুখে লইবেক বারি। দিবাকর পৃর্তের রাখি কেলিবে ফুংকারী।। ভাকে বদি ইন্দ্রচাপ হয় দয়শন। অবঞ্চই ছয়মাসে ভাহার মরণ।। জরক্ষতি প্রন্ধ বিক্রপাদ্যের আর। না দেখে ছে

দ্ধনে মাতৃ মণ্ডল সঞ্চার।। ক্ষতি নিকটেতে মৃত্যু তাহার নিল্টয়। ছইবেক योक्तीन मिथि मि नगर।। जक्तक्रिक क्रिक्त क्षेत्र नोगो जब क्ल । विक्रुश्रम ক্রমন্যে নেত্র মাতৃমণ্ডল । একরপে আর রূপ এক রুসে আর। ছইলে উদরে মৃত্যু নিকটে তাহার।। কণ্ঠ ওঠ রসনা দশন তালু লোবে। সতত জানিহ ভার মৃত্যু ছন্নমানে !! নথ শুক্র নিতান্ত মালিন বার হয়। ছর মানে মৃত্যুক্ত ভার অবতা করর।। বাবার সময় মধ্যে অত্তে খুত হয়। মরণ পঞ্চম মাসে कांबिटन निकास । कुरुलाम मिटन योत करन कारनाञ्ग। ছन्नमारम मृजूर কার আছে নিশ্ধপণ।। সুস্রাত হৃদর কর চরণ শোঘণ। হইলে জানিবে ভিন মানেতে মরণ। ধুলেতে কর্দমে কিয়া খণ্ড পদ রেখা। পঞ্চম महिनहरू मृज्य नटक रूपत रमधी।। वित रमक काटक होत्री कतरत कल्लाम। চতুর্ধমানেভেতার অবস্থানর।। দর্গণেতে প্রতিবিশ্ব মস্তকবিহীন। দেখিলে ছইবে মালে মৃত্যুর অধীন।। অভিজ্ঞা হয় তারবাক্যের খলন। আকাশে ইন্দ্রের ধন্ম হয় দরশন। রাত্রেছই চন্দ্র দিবাছইদিবাকর। দিবাতে ভারকা চক্র দেখে যেই নর।। রাত্রেভে আকাশ দেখে নক্ষত্র রহিত। চারিদিগে চক্র ধনু দেখে আচ্মিত।। রুক্ষের উপরে কিবা পর্মত শিখরে। গন্ধর্ম মগালয় দেখে যেই নরে।। দিবাতে পিশাচ মৃত্য দেখে যেই জন। অবস্থা নিকটে তার ঘটরে মরণ।। এসকল চিহ্ন যদি এক চিহ্ন দে**থে। প্রতিকা** कतिरव जिल्लान मृज्य भएक ॥ केरत कर्न वक्ष कति ना छटन रय स्वनि । ऋष স্কুল হয় স্কুল কুশ হয় পুনি।। অবস্তাই মাসমধ্যে ভাহার মরণ। কাটাইবে (महे काल कतिया गर्जम।। जानिन एएटल हात्रा मिक्कर एनथन। शक्षम শিবনে ভার মরণ ঘটয়।। ভুত প্রেড পিশাচ রাক্ষণ গৃধুধর। কুরুর. খ্কর জার শৃগাল বানর ॥সরভ সলভ সেন **আর অখতর। স্বংগ্রতে ইহার** পৃত্তে বহে যেই নর।। অথবা পরীর মাংস করমে ভক্ষণ। বৎসরাত্তে অব-भाहे घरेरस मत्रवा। त्रक्रभरका शूष्म **बर्ख प्रवस् पृतिक। स्विधि यद्म पर्ये** মানে মরণ নিশ্চিত। গল্পনন্ত বল্যীক স্বথবা ধুলারালি। স্বপ্নে স্বাহরণে মৃত্যু ঘটে বর্ষ মাসি।। মণ্ডিত মন্তক তৈল করি অভ্যঞ্জন। আরেছিণ शक्तर्स । ए कर्रात्र शमन ॥ एक्यरब चलटन जालनाटक रवर करा इशमान गर्धा क्रांत्र कर्वक मत्त्व ॥ कालन मखरक किन्ना महीरत लबन ॥ घरत्र कृग कार्ड एतमारम मृजुर रम् ।। ऋकार्य स्मर कृष्णवञ्ज পরিধান। स्मीरमध राज ्युब्रि-स्मर्ट्य विमानान ॥ किन योगभात कांत्र व्हेटक ना भारतः। जनमाह किनेशांत्र मार्था तमहे मारत ॥ जात्र काल कुमानी बाबादन बाह शादन। जन

भारे मृष्ट्रा छोत घटने रगरे बादन । वानदत ठिएता चटन श्रृक्तिन्त यात्र পঞ্জ দিবসে যম দরশক পার।। কুপণের দান শক্তি অভিশক্ত হয়। দাভার कार्भना 🐠 इरेटन फेंगत ॥ अङ्गणि निकृषि देशम निकटि मत्रन । चाष्ट्रक অনেক আরু মরণ লক্ষণ।ে জানিয়া লক্ষণ যোগে নিযুক্ত হইবে। অঞ্জ লিবের কাশী আশ্রয় করিবে।। কাল বঞ্চনের হেতু আর মৃক্যঞ্জয়। জানিক্স বিশেষ কাশী করিবে আঞ্জর।। জোধ করি যমতারে কি করিতে পারে। মৃত্যুঞ্জ আপনি তাহাকে রক্ষা করে।। শিশুতা বিগত যেন রহিল কুমার। যৌবন বিগত দেখ বাৰ্ছক্য সঞ্চার।। এক দেহে চারি ভাব দেখি সহাশর। সকল ত্যালিয়া কাশী করিবে আত্মর।। অন্য অন্য মরণের চিত্র থাক সুত্রে। মৃত্যু পূর্ব্ব চিহ্ন ছরা না দেখে বর্বরে ॥ ছরা পরাভবে পরাভব সব হৈতে। ধনহীন জন যেন তারুণ্য রহিতে॥ পুজে বাক্য নাহি শুনে পদ্মী প্রেম ছাডে। না মানে বান্ধব লোকে অবকানকরে॥ অরাভুর দেধিরা পুলার পর নারী। পরাঙা খী হয় নিতা আপন স্কন্দরী।। ছরা দে বিষম ব্যাধি দুঃথের নিদান। মরণ হইতে জ্বা করে জপ্যান। যোগ তপস্ততে কাল জিনিতে না পারে। কাশীবানে অবহেলে কাল অয় করে।। যুক্ত দান ব্রস্ত আদি পুণোর সঞ্চার। না থাকিলে কালীবাস ঘট**য়ে কাছার।। বোস জল** ত্রত দান সব কাশীবাস। কলিকাল পাপ প্রাস্ব হয় নাশ।। আঞ্জ করিয়া কাশী পুজে বিশেশর। পাইয়া ভারক **জান** মুক্ত হয় না নুরুট্র घडेटत एक सूर्य कामी इंटेटन मत्रग। सिट सूर्य कथन ना घटके धनी धन । 📺 🕏 কাশীবাদ অর্গবাদ ভুক্ত হয়। ছংখান্ত লভয়ে পুর্নে পরে স্থা ক্ষা ॥ কনর कल्यद्र थाकि एक विरुधक्त । काली विटन रूके ना स्टेल किश्वत क्रिकाश দিরদাস নরপতি পুণাবান কাশীবাস সুখভোগে আছে **অনুষ্ঠা**ন।। ব্রহ্মানন্দ মতি ব্রহ্মানন্দের আশায়। নমাগু হইল তাতে ছিচলিশ ব্যাসায়।

क्रिवर्गात्मत त्रांका भागन।

পরার। অগন্তা কংখন শুন দেব যড়ানন। দিবদাস রাজা শাসনের বিবরণ।। মহাদেব সন্দরেতে পেলেন কি রূপেতে। বিবরিরা কই দেই শুনিব নিশ্চিতে।। কার্ত্তিক কংখন শুন মুনি তপোধন। বে রূপেতে স্ক্রি-দেব সন্দরে গদন।। সতে করি ভুতনাথ আপনার গণ। কাশীহৈতে শুতি শীত্র সন্দরে গদন।। সতি রুষা স্থান সন্দরের গ্রহা হয়। গৌরী ক্রিক ত্রিপদী। স্বর্গে রাজা সুরপজি, নানা সুথ ভোগ অতি, দিবদাস তুলা নাছি ছয়। আর আর সুথ যজ, ভাছা বা কহিব কছ, বর্ণনেতে কে করে নিশ্চয়। দিবদাস এ প্রকার, বংসর আশি হাজার, রাজত্ব করেন মহাসুথে পরে সব দেবগণ, চিস্তাকুল সমা মন, দিবদাস করিতে বৈমুখে।। দেব গুরু রুংলান্ডি, সদাই কুল্লির মতি, দেবগণ ভারে জিজ্ঞানয়। দিবদাস কাশী রাজা, হইল যে মহাতেলা, কি রূপেতে রাজা অন্ত হয়॥ কাশী ছাড়ি দেবগণ, সর্বাণ তুঃথিত মন, কহ গুরো ইহার উপার। গুরু কহে শুন যুক্তি, ভারর বাহির শক্তি, অগ্রি দেব আসিলে হেখায়। অগ্রি কাশী ছাড়ে যদি, রাজা প্রজা নিরবধি, সদা হবে কাতর অন্তর। অন্তর বাহির হৈতে, জারি হৈলে বহিন্তু তে, ভবে রাজা হইবে কাতর।। রুংম্পতি বাক্য শুনি, সকল দেবতা গুণি, বিচার করেন ভদস্তর। জারি সর্ব্ব্যাপি হয়, বাছ অভান্তরে রয়, যে রূপে না রহে পৃথী পর।। পরে সব দেবগণ, অগ্রিকে ডাকিয়া কন, স্বর্গে আইস পৃথিবী ভ্যজিয়া। দিবদাস রাজা হৈতে, আরি গেল বহিগতে, গেল অগ্রি স্বর্গতে চলিয়া।

পরার। দিবদাস রাজ্য তাজি অগ্নি যে চলিল। অগ্নি বিনে রন্ধনাদি কিছুনা হইল। রান পূজা করি রাজা পাক স্থানে যায়। রাজা দেখি পাককর্তা সম্মুখে দাখার।। থর থর কম্পবান বচন না কর। ইছা দেখি দিবদাস জিজালা কর্মন।। ভার পরে পাককর্তা করে নিবেদন। জ্যি বিনা ভব রাজ্যে না হয় রক্মন।। তব ভবে সব দ্রবা স্থা পত্ত করি। রাধিরাছি আজা হৈলে আনি দিছে পারি।। শুনিয়া এতেক বাকা রিপুক্তর রাজা। ধান করি যোগাদনে দেখে মহাতেজা।। দেবভার তক্র এই রাজ্যন্ত कति। क्लिकात्त गर्स व्यक्ति रेनब्रात्म इति । कत्मक भरतक प्रतिक प्रति রাল্য প্রকা যত। কাতর হইয়া সবে হৈল উপস্থিত।। রাজার অঞ্চেত সুৰে করে নিবেদন। অমি বিনে প্রাণ যায় করহ রক্ষণ।। অকারণ দেখি রাজা প্রজা আন্থাসিল। চিন্তা না করহ সবে প্রজাকে বলিল।। জগ্নি গেল বায় বরুণ কিছু নাহি চাই। মিজ তেজে করি জগ্নি রাখিব সদাই।। বায়ু বরুণ চক্রদেব না রাখিব রাজো। অপমান করে সব ত্যাগির অব্যাজে।। যেগে-বলে ইহা আমি উদ্ভৱ করিব। নিজ রাজ্যে সুর্যাদেবে অবশ্য রাখিব। युर्ग। कुरलास्टव जामि तारे ता कात्र। युर्गारमव आपि श्रुक्तम जामात रव হন !। তদপরে দিবদাশ যেংগেতে বিগল ! চন্দ্র অগ্নি বায়ু বরুণ স্বতন্ত্র ফ-রিল।। দিবদাস রাখা সব প্রকা আখাসিরা। যোগবলে রাজা রক্ষা সভত করিয়া।। **অগ্নি চন্দ্র বায়ু বরু**ণ স্বর্গে শীঅ গেল। অপমান তত্ত্ব সব নিবে-मन देवल ।। ना करत वाराका किছू पिरमात ताला। जाशन मेखिए गर রকা করে প্রজা। তেতালিশ অধার ইইল সমাপন। অগস্তানিকটে কৃহিলেন ষ্ডানন।।

পরার। মন্দরের গুরা হয় অতি রমান্থল। মরকত মনি আদি করে বালমল।। রজত নিরির আভা দেব মৃত্যুঞ্জয়। বামে গৌরী সদানন্দে তথা বিরাজয়। চতৃদ্ধি নৈ দেবগণ অতি সুশোভন। মন্দর বেইটিত দেব পটেটতে ঘেরণ।। কাশী ত্যাগে বড়ানন তাপিত করয়। বদানন্দে মনে ছঃখ কেং না জানয়।। অতি ক্ষীণ বল হৈল কাশীর লাগিয়। আপনার মনোমধ্যে তাপিত হইয়া।। কণালেতে চহল আছে অতি মুশী হল। অক্স সন্তাপেতে চহল হৈল ক্ষীণ বল।। শ্লিয় গক্ষা বিরাজিত গক্ষাধর শিরে। উত্তাপের আসে গক্ষা থাকে তটোপরে।। সমুদ্র মন্থনে বিষ উদিত হইল। কণ্ঠে ধরি সদানন্দে নীলকণ্ঠ হৈল।। লজ্জিত হইয়া বিষ গোহে কলেবরে। সত্ত্যুগরলি পদ্মনাল হস্তে ধরোঁ। পদ্মনাল বলয়া হইল ফণি বরে। হস্ত পাদে স্কর্বাক্তে আভরণ করে।। শিব ভাব নাহি বুকে সব দেবগণ। পার্বজী ক্ছেম প্রত্যো কহত কারণ।। কি কারণে কাশীনাথ জ্বংখিত অন্তরে। কৃপা করি আদিনাথ কংছত আমারে।৷ হেন বাক্য শুনি শিব গৌরীকে ক্ছিল। কাশীপুরী অন্তম্বর্জি উদয় হইল।৷ ভোলানাথ বাক্য ভাবে বুকিয়া

ক্রানী। কাশী বিচ্ছেদের আলা না সহে পরাণী।। হাহা কাশী কোঝা ক্রিমানের দেখা দেহ আসি। তব হান ভ্যানি হুংব পাই অহর্নিপি।। মণিকর্নি কোমা ভূমি যথা মন্দাকিনী। কত দিনে চৃষ্টিভূর হইবে আপনি।। হাহা কাশীবাসি সব কোথা যে ভোমরা। কি মতে আছরে সবে কাশী হৈয়া হারা। এ রূপ অনেক থেদ করিয়া ভারিণী। ভব নিন্দে ভবানী কহেন কিছু বাণী।। কাশীর বিচ্ছেদ আলা সহিতে না পারি। ইহার উপার প্রত্তো কর ত্রিপুরারী॥ আনন্দ কানন শীন্ত দেখহ শক্ষর। নভুবা পিতার গৃহে পাঠাই সন্থর।। বরাণসী ভ্যানি আসি প্রাণ নাহি রয়। হেন থেদ শুনি ভব উমাকে বলয়।। ছরিতে যাইব কাশীপুরেতে নিশ্চয়। এত কহি শুতনাথ ভাবিত ক্রময়।। কিনে অবিমুক্ত পুরী করিব গমন। চৌর্য টি যো-দিনী ভাবিল ত্রিলোচন।। ধর্মাশীল দিবদাস রাজাভোগ করে। তার রামজ্য পাপ ক্রম করহ সন্ধরে।। এই আক্রা পাইয়া চৌর্য টি যে যোগিনী চৌরাজাণ গুয়া সাল হইল কাহিনী।।

-

চতুঃষ্ঠি যোগিনীর কাশী গমন।

পয়ার। কলস উত্তব কহে কার্জিকেয় প্রতি। যোগিনীরে কি কহিল কহু মহামতি।। যজানন কহিছে অগস্তা মুনিবরে। যোগিনী পাইয়া আঞা চলিল সম্বরে।। সকল যোগিনী মনে করেন ভাবনা। বছদিন অন্তে হবে কাশী সন্দর্শনা।। স্লাগ্যতা মানিয়া কাশী করিল গমন। দুরে হৈছে হৈল কাশী পুরী ধরশন।। পরস্পর কহে প্রভু কর্মের সাধন। তাহা হৈতে প্রেষ্ঠ হয় কাশীর দর্শন।। কহিছে কহিছে গেল কাশী নিকটেতে। প্রবেশ করিল কাশী কপট বেশেতে।। কেহ হয় নৃত্যকী কাহার ভাব দাসী। কেহ কামত্রপী কেহ বাজাইছে বাঁশী।। বেদিনীর ভাব কেছ কেহ গান করে। কেহ তম্ম মাথিয়া যোগিনী বেশ ধরে।। এ কপ অনেক বেশ সকলে ধরিল প্রথমেতে পঞ্চজ্যোশী ক্রমণ করিল।। তদস্তরে গৃহে গৃহে ক্রমণ করেয়। দিবদাসে কোন পাপ নাহিক দেখয়।। হেন মতে এক বর্ষ অতীত হইল। যোগিনী হইছে কার্ম্য সিন্ধানা পাইল।। সকলে যোগিনীগণ চিন্ধানুল মনে শিকের নিকটে সবে বাইব কেমনে।। সকলে মিলিয়া এক বুজি যে করিল কাশীপুরে বাস ইহা নিশ্চয় হইল।। ফুডকার্য্য অপারক যেই অন হয়। মরণ উচিত হয় কহিল নিশ্চয়।। এই হেডু কাশীবাস জেয় কলো হয়।

दिशा श्रीनेक कान मध्य क्रिया माद्धि कर । दिशाय एक एक श्री कि विश्व । स्वी श्री कि श्र

ইতি একাশীখণ্ডে শিৰগীতা ও মনুষ্যের মরণচিত্র ও মহাদেবের বিরহ্মালা মালো পঞ্চম সর্গঃ।

-34246-

अथ पूर्शात कांभी भगन।

পিয়ার। তদপরে ভূলপাণি ভাবিত হৃদয়। কি করিব কি হইবে না দেখি উপায়।। সুমাদেৰে ডাকাইয়া শঙ্কর কহিল। যাহ ভুমি কাশীপুরী মিশ্চর ঘলিল। দিবদাস রাজা সুধার্মিক মহামতি। তার ছিড চেই। কর ख्या कर श्रिष्ठ।। अथर्मा ना देश्टल नर्जिक निवमान । कामी खान कलाविक নাহিফ নৈর্দা। যাতে পাপ আচরণ করে নরপতি। তাহার অশেষ চেন্টা কর শীব্রগতি।। দিবদাস নিজ ইচ্ছায় কাশী না ছাড়িবে। অধর্ম হইলে কাশী অবশ্য তাজিবে। পাপহুত হৈলে কাশী না ছাড়ে যুখন। ছাহার উচিত দণ্ড করিব তথন।। ধর্মো মতি থাকিতে নাহিক পরাজয়। इंशांट अनाथा नाहि कहिल निम्ह्या। यह वाका खर्क (तत अनिया তথ্য। শিরোধার্য মানি তথা করিল গমন।। কাশীপুরী মুর্যাদের (मिथिशा नंतरन। कुछार्थ हरेल विन **ভा**বে মনে सरना। निक्र अप कान कति इक्टेन खाका। প্রবেশ করিলা নিত্য আনক্ষানন।। अभन करतम जना जाना दवन धति। त्कान दमाध नाहि शीन नियमाज शूती ह এবলে বৎসর এক ঠইলেক গছ। কঞ্চপ তনয় বড় হইল চিন্তিত।। কি ৰলিয়া যাব পশুপতি নলিহিতে। অক্ষম বলিয়া সতে ঘূৰিবে জগতে।। প্ৰভু আভা কর্ম যেবা করিতে না পারে। জীবন থালিতে মৃত্যু সমান ভাছারে। এত ভাবি অর্কদেব হৃদয়ে করিল। লোলাগ্য ক্রমেতে মুর্ত্তি পরে প্রকা শিল। অসির নিকটে তীর্থ লোলাখা হইল। বরুণার কাছে তত্ত অর্কমূর্ত্তি হৈকল।। ভাদশ আদিতা ৰূপ স্থানেই হয়। কাশীক্ষেত্র শিবস্থান লোলাখ্য खेनत्र।। काली ছाडि सूर्गारमव ना श्रास भक्तत्र। ऋत्तर सुर्गा करण निव शाम करता। (भोरव वंशी मधुगी अर्थमी अर्थवादत। ता श्रुट्य लामाश्रा , সুর্য্যে ডক্তিভাব করে।। সর্ব্ব ব্যাধি মুক্ত হয় সেই সব নর। অবশ্র যে কাশী মৃত্যু হইবে গোচর।। শাঙ্গ ছন্ন চলিশ অধ্যায় কাশীথপ্ত। শুনিলে লভয়ে মুক্তি যায় ভবদও।।

अशे सूलकवात खेशांशांन।

লঘু-জিপদী। কার্ত্তিক কহেন, অপস্থা শুনেন, উক্ত অকরিবরণ। ভিক্ত দত্ত নির, পালী সঙ্গে লয়, কাশী করেন গমন।। কাশী করি বাস, আন ভীর্ষ পাশ, আশুন করিল তথা। দিল শাস্ত অভি, পদ্মী ভার সভী শুক্তি যে সর্বথা।। কিছুকাল পর, এক কনা ভার, হৈল বড়ই সুন্দরী।

कामीत्रभा

মূলা অঞ্জাগে, মৃহম্পতি কেন্দ্রে, আল হইল তাহারি।। ছবি শিকা মাজ্য পালন সর্বথা, বর্ণনা হয় অপার। বাজে দিনেদিনে, ধনা কশে শুনে কি কব ভার বিভার।। স্থলকণা নাম, বড় গুণধাম, উপ্নামাহিক ভার। পিছা ভাবে মনে, বিবাহ কারণে, বিরের নাহি উপার।। স্থল শীল ধনে, স্থলর গঠনে, কোথা পাব হেন বর। বিজ্ঞত আকুল, পড়ীত বা কুল দোঁহেতে বড় কাভর।। ভাবনাতে ভার, ভিজের অন্তর, দিনে দিনে হর তাপ। , বিজ্ঞ ভার পার, বড়ই কাভর, মনে মনে ইন্ট ক্রপ।। পঞ্চর সমর, ভিজে মহাশার, মুথে শিব শিব বলে। প্রাল্যা মরিল, সভী তা দেখিল, পজি সক্ষেত্রতী চলে।। কনা। খেদ করে, মম ভাগা পরে, পিতা মাজা হল হানা। ক্রদের করম, কি উপার হয়, স্থলকণা ভাবে দীনা।। পরেকে স্থোবিধি দশা করে। প্রাল্যা ভোজন, ক্রির সমাপন, একেলা চিক্তিত পরে।।।

পরার। সংক্ষণ বিলাপে যে আদি ভারা হীন। পিছা মাতা তাজি भागा अकरे का**े**न। कि कतिव कांथा यांव छेशांत्र ना स्विध। कुमाही व्याप्त देशन काकिनाय क्राची।। विवाह कि बारा हद्य हाहि बाकि भीना। कारत वा विविव आमि ভाविट्ड लाजिल ।। शिष्ठा माछा आंधारण दिवाइ त्य (प्रमा । तह त छेख्य छाट्स नाहि विश्वाम । वहन त्यात्रमुकान्य पश्चि काल नम। कथन कि एव है एथ नाहि निक्शा। वह त्ताक कहित यात्र विवाह कतिएछ। सूलक्षण द्यान वटत नाहि थटत हिटछ ॥ छम्छटत सूलक्षण ভাবিয়া অন্তর। হিত্তে স্থির কৈল রামা পুলিষ শঙ্কর।। তার পর সুলক্ষণা কন্যা মহামতি। মহাযোগ আরভিল স্থান্থর সুমতি।। এইবংগে বছুকাল ष्मित्रा। कत्रत्र। वन्त्रि हम्ब व्यविभिक्षे एम्ह मात्र त्रत्र ॥ खेळा व्यक्तकुछ छट्टि क्रमगा करता कार्यात क्रमगा त्यारा त्यांनी ध्यमश्मम । ज्ञथा वक ज्ञानक শুন্হ চমৎকার। শুভাহাগী প্রতাহ আইনে শনিবার।। কুণ্ডে দল পান क्ति निका निका यात्र। सूलकना निम्ना थटक माखारेया यह ॥ सूलकना যোগ ভঙ্গে দেখেন তাহারে। একি চমৎকার বলি ভাবেন অন্তরে।। এক पिन एक्टभी की व्यनम सम्म । जूनकृता फ्रान्याटन फेन्स वर एम्स । कटिंग ज्यामा भोती कूमातीत त्याच । हत्यनात्य कहित्यन हित्य देशा हाथि।। ক্পাকর সমানম বালিকার এতি। হেনবাকা পার্ম তীর শুরি পারপ্রিট্রা

क्षेत्रक रहेशा लिव कटएन गर्भक्षेत्र वह तम् सूनक्ष्मा यांचा हेक्का कर्मक र्योशेष्ट्रक स्थानका लिथि कर्यमिकी एत्रातीती क्षाम क्रिया करत स्थिति। प्रतिकृता हिए जारव कि लहेव वंदत । दिनकाटम होनी कानि सल शान করে। তার পর ক্রমারী বলেন ভুতনাথে। ছাগী মঞ্জে মুক্ত কর শুন कानी भेटें । भेटे राका अभि इत भोतींटक करिन । भूतका मम औषि क्षु मी पिथिल ॥ शत जिलकात चटें विश्विष संस्त्र । चेंडजेव हांगीटक कि मिर्व वर्तकता। देशा उछत किहू ना करि में छेती। केश्लिम अन स्वयं मिटवरमें किति।। ग्रमक्रणा मैज नेवी इहेटव मचत्री मम कटला धांकि मेना চুলাবে চামর। ভদস্তরে সুলক্ষণা প্রভি বলে শিব। ভব বাজে ছাগীমুক্ত অবশ্য করিব। বিশৈষে ভৌষতির কহি শুনহ বচন। অৰ্কুকুতে ছাগা করে अध्य नगम ।। अनोहार्त अर्केकुर् अल्लान रेक्न । এই क्या वर्ण हाबी वर्गनांनी देशन।। उपखरत निव करण अन सूलकर्ण। उन केशरपारण आमि हिलाम उन्नना । जुनि दंशीती श्रित्रा देशता निकटि थाकिटत । जहर्निण দ্বর্গা অবে চামর ঢুবাবে।। ভদন্তরে শিব শিবা প্রকট হইল। সুলক্ষণা भीर्बिशीत निकटिएक रवल ।। कर्ककुछ माशारेपात कि क विवर्ग । भीषभारत অর্কবারে যে করে অর্চন। কাশীবাস লাভ তার কে করে বস্তুন। অপুর্ব প্রায়ক অককুও বিবরণ।। শীভানাথ বসু ভাবি প্রীপ্তরুচরণ। সপ্তচ্চিশ केशांत्र टेंहल नेमाशन।।

-284-

कार भारबन कर्क कानाधना।

कतिद्वा भवना । माना कथा जाला भक्त क्रिन्द्र यहन क्रिक्ट्र नात्र के करहे निर्वतरम् ॥ भाषत्र दुछ। ७ मृति कहिर्द्यम् नव । नाश्यत् छसि स्वर्धाह्याध অসম্ভব ॥ শ বে ডাফ্লাইরা প্রভু ভৎ নিমা করিল। ভদস্তরে ভ্রেশাধন স্বয়ানু নেতে গেল। ক্রডাদিন পরেতে নায়দ তপোধন। ছরিপুর গানে আইল कांत्रका कृतन ।। नाताम्य कीका ऋत्व कार्ट्स निकर्तन । मुनिन्द्रत्न (हसि শাষ ভীত হৈল ময়ে।। অন্তেব্যক্তে ক্ষর্যে আসি প্রশাস করিল। ভার পরে भाषः श्राप्ति नात्रमः बिक्ता। जूषि भिन्न। श्राप्तु अद्भु अद्भावतः निरवनन्। प्रभूकि করিয়া শীঘ্র করিব গমন।। এত শুনি শাম করে ভাবে মান মনে । আইর কি ৰূপে প্ৰতা আছেন নিৰ্জনে ॥ যদি নাহি যাই মুনি ২ইবে কুপিছ। উভয় সঙ্কটে মোর হৈল বিপরীত।। যে হউক সে হউক পিছা নিকটে ধাইব। পিতা ক্রোধ হৈতে মাত্র আমাকে প্রীক্তির।। মুন্বির ক্রোধ কৈলে নাহিক উপাধ। ব্ৰহ্ম শাপে সৰংলেতে পীজিবে সদায়॥ এত চিক্তি শাঘ তথা করিল গমন। যথা ক্রীড়া স্থলেতে আছেন নার্য্নিণ।। শাস্ত্র পশ্চাডে मनि कथनि চलिल । नातास्त्राष्ट्र देश्हा मनि मञ्जायिल ॥ नाजीशन गकटनदंक रुटेल मस्किक **क्षेत्र महाति गटत टे**टल अक व्हिक 11 मिश्लामहान युनि वनाहेता गातीत्रव। नाना कथा आनात्भर करवाशकथन॥ भून हाथ भाष-क्षां अनित आहिल। मानावन क्षांक यूनि हेकीरक कुरिन ॥ भाष **७**व शूख श्रञ्जू कर्ति निरवणन। मात्रीशन भाष क्रिश्चिवहिक भग।। दहन বাক্য যতুপতি শুনিয়া সন্ধরে। বিনা অপরাধ পুঞ্জ জামিলা অন্তরে॥ শান্ত প্রতি মুনিবর কোধবুক্ত মন। ইছা জানি পাশ্বকে শ্রারথন নারারণা। কুর্তবোগ তোমার যে হইবে সন্ময়। এক শুলি শাসের কল্পিক কলেবর 🕫 নারদের মনোনীত হইবা তথনা প্রকু সম্ভাবিয়া ছুনি কুরিল গমন ॥ তখ-স্কুরে শাস্ব হৈলা বড়ই কাতর। ক্রম্পন করিক্কা থেদ করিল বিস্কুর ॥ যোড় हाटक वननाय नम् द्रथ माश्राम । विमा क्लामांदर शक् भाशित कामात्र ॥ কিনে মুক্ত হব আমি কহ অগ্নাধ। এছ বলি অন্টাক্তে করয়ে প্রণিপাত। भावित्र वरणन शृक्ष छन्। छेशात्र। कामी भूरतकारम छव शाश वरव ऋता। कामी यादम प्रशासित क्र भौतायम। समामादम वाधिमुक इटेटर क्यम । পিতার আজার শাম বারাণদী গেল। কুঞ্চ করি অর্ক্তেবে ব্রুজ্ঞ ইকল । व्यनम इर्देम त्वि वत स्मम कारत । वाधि मूक इस्य कृषि करिए कामार्क एन कथा **क**नि मात्र क्रुग् क्षा मिन। पिया क्षक्र शाहेशा मात्र क्षक्रान विन्न ।। भौगोनिरका अस्विद्यारा क्षोकः स्नि करत । स्कन काथिए एक स्निक्

পর মরে।। চিত্তেতে সম্বাহ্ম ককুনা হইবে তার। আনারাসে কাদী প্রাপ্ত
অক্তেতে তাহার। সাম্বন্ধনে শুল্লসপ্তানী অর্কবারে। কাদীক্ষেত্ত্বে শাঘাদিত্য
ক্ষান করে নরে। কুলুক্তেত্তে কোটি মুর্য্য প্রহণের ক্ষ্ণে। সেই কল প্রাপ্তি
ইর কানিবে সকল ।। আনিংকৃতি শুন চৈত্রমাস রবিবারে। শাঘাদিত্যে স্থান
দান বেই নরে করে।। তাহার কলের কথা বর্ণনা অপার। শোক ছুঃখ
ক্রহ দোধ না থাকে তাহারনা অক্টচন্তিশ অধ্যার শাঘাদিত্য বিবরণ। সর্বি
আধি মুক্ত সেই যে করে অবশা। মুলেতে আহরে বড় অতি চমৎকার। স্প্রিনিলে বশুরে যত পাতক সঞ্চারণ



थि खोशमार्क कथन।

পরার। কার্তিক কহেন পরে অগন্তোর প্রতি। দ্রৌপদার্ক বিবরণ শুন মহামতি।। বুধিন্তির ভীম আদি পঞ্চ সংহাদর। শিন অংশে জন্ম ভাষাদিগের সবার।। ভগবতী অংশেতে দ্রৌপদী আবির্ভাব। দ্রুপদার বান হাত্র উত্তব।। কর্মজনে পান্তুগণ বনেতে ক্রেল। দ্রৌপনীকে স্বরমরে অর্জুন পাইল।। পঞ্চলন শ্রৌপদীর স্বামীত্ব ইল। এক সতী পঞ্চ স্থামী কিমতে বঞ্চিল।। কানীবস্ত মতে হেন ভাবার্থ আদিল। পঞ্চমূর্ত্তি থক শিব ভাবকে ভাবিল।। তেকারণে এক শক্তি শিব এক হয়। পঞ্চলন সাত্র কেবল হস্ত ভিন ময়।। তৎপরে দ্রুপদাকন্যা কানীতে চলিল। দ্রুংখ নিবারণ জন্য সূর্য্য আরাধিল।। প্রেসর ঘইরা স্থা ক্রোপদীকে কন। পাক-স্থাল লাহ এই শুনহ কারণ।। ভূমি এই পাকপাত্রে করিবে রন্ধন। যতেক আসিবে সবে করিখে ভোজন।। কেবল নির্মণ শাত্র জানিবে ইহার। তব ভোলনান্তে ফল না দর্শিবে আর।। আর কহিন্টোপদার্ক মূর্ত্তির মাহাল্মা। রবিবারে পুজিবেক যেই সব ভক্ত।। শোক দ্বংখ ভয় ব্যাধি ভাবে না গী-ভিবে। অবশেষে কানী প্রাপ্ত অবশ্য হইবে।। দ্রৌপদার্ক আথানি বে ভ-

ত্রিপদী। স্থাদের ভারপবে, তপ করে খোরভরে, পঞ্চীর্থ মঞ্জা স্থীপে। একাত্তেতে ধান করি, চিত্তে ভাবি হরগোরী, লক্ষর্য গভ ইহল ভিলো ভচল স্থান্ধর মন্ধ, দিওমান ভবিরভা চতুর্দিলে ভৈজ প্রকাশর। উত্তকে ক্রিদী গুমন্ত, ভাতে ঘোর তপ শান্ত ভাগি যেন প্রলয় সময়। স্বর্গ-

মার্নে জীব যভ, জার দেবতা সভত, চলাচল রুদ্ধ যে প্রভাবে। কারু শিক্তি নাহি হর, মার্ক তেজ বহু ছায়, স্থর্গ মার্ভ্য পাতালেতে নবে।। সন্ধানে বিপা-एक श्रेटक, यन यन श्रांग शांक, पूर्वा किया गरिएक मा शांदत । क्षम्भदत कामी পতি, চলিলেন শীভগতি, অভিমুক্তে यथी দিবাকৰে । पूर्वतमय मध्य नागञ्ज, সমাধি যোগেতে রয়,মহাদেব বলেন সম্বৰ। শুন দিবাকর ত্মি,প্রসন্ন হট-लाम चामि, यादा देका लहि लह यह । कांका नाहिक श्रान, नमा चादह जिल्ला महान, निय निया जाविया ज्यात । जावहनार्य कृशामय गादि रहा मिया कत्र, नमत्र एडेसू नियाकत ।। जिस्तीणन कति काँगि, यूर्गा निय निया **मिरि, अर्थाम कतिहा छ व करता। क्यामांत महिमा अकु, वयन मा याह्न ककु,** विधि विक कहिएक ना शांद्र ॥ तमव तमव क्रांट्शास्त्र अवव्यास्त्र विधि বিভো ভর্ম ভীম ভূতনাথ। ভব ভর আণ কর, মৃচ্ চন্দ্র ছব, ধৃষ্দ ট্যাখা আর বিশ্বনাথ।। দক্ষ স্বতন্ত্রশান্তন, শিব বিরূপ লোচন, শাস্ত শিবাপতে विश्व चात्र । गर्व गर्नाक क्रेश्वत, राव राषा एत शत्र, गर्वती गरिक विश्ववत ॥ ভব বামদেব আর, সুচ**ন্দ্র ভূব**ণ যার, বোমদেশ কণীক্স ভূবণ। শীতিক পূলভূত, বিধি 🌉 সংস্তৃত, তাম্বক আরু ত্রিপুর স্থদন ।। পশুপাশ বিনাশন ত্রাণ রুত ত্রিনয়ন, ঈশ্বর অন্তক রুপ্তাসর। ত্রিলোচন শাশ্বত, নিদিভাঞ্জিল हेकीर, कानकृष्ठेमगांखक इत्र ॥ वर्ग मार्ग स्थाम, डेमाथा जनवर्गन, सुन মংখ্র পশুপতে। অশ্বক অমুব রিপো, ফপাদ্রুম জুর প্রভা, বার্ক্ত বিষয় হরপতে।। চক্রদেখর কামতাতি, ভুরগ গিরিজা পতি, বিশ্বনাথ আছ नाम त्रिंडि। अथित्वत वाम कर्छा, अभ नाहि नर्वटर्डा, अहे नादम सूर्वा देकला छिष् ॥ जनवर्षी छन्नशहर, कहत त्रवि सम्रामहत, सामा मण्ड महिन्द्रेष्ठ वर्गन । दमव मिवाक्त थाडि, जुकी भोती भश्रभुष्ठि, यूर्गादमस्त्रहेकम सक्नान इत रंगीयी खब रंगा, निका भाठ करत स्त्रवा, छात कल वर्गना क्रांड्स । कामी ক্ষেত্রে গঙ্গা ভটে, কিবা প্রানান্তর সঠে, অবারাশে মুক্ত সেই নর।। আরত মকলা গৌরী, পুঞা করে নর মারী, জনায়াদে পাঁপকর হয়। ভূতীয়া ওঞ্জা देग्टक, अनमन क्रि ताटक, रिवा अनकाटतटक शुक्त ॥ भवनिन क्रीन क्रिन আর ভাদশ কুমারী, পুজা যেবা করে বিধিমতে। ত্রাক্ষণ জোজন করি। তাতে সুখী ধর পৌরী, সেই নর মুক্ত অচিরাতে।। কাশীখণ্ড ক্থামৃতে, मयुर्व आफ्रिका गाँख, वर्गमा इंहेल मूनियत । शुनिरल शतम कान, इहें। वरू करव खान, विरमय क्रिया कन बाहा।। केनशकान व्याप्त, यमाख स्ट्रेन আর, অতি চমৎ কার কথা ছয়। শুনি ল পাপের ক্ষর,অনায়ানে ছুংব যায়। এই বাক্য জানিহ নিশ্চয়।।

অথ গরুভেশ্বর উপাগ্যাম।

প্ৰার। কার্ত্তিক কংখন যে অগন্ত। মু'ন প্রতি। কহিব অপুরু কথা 😘 সৃহামতি।। কশ্যপের পত্নী কক্ষ আরত বিনঙা। কক্র গর্ভে সর্প সব ভেজনী সুর্বাধ। বিনভার পুতা ভিন পেচক জল্প। প্রাক্ত হইল শেষে ব্দাৰ প্ৰায় প্ৰায় প্ৰায় কৰা কৰি কৰা বিশ্ব প্ৰায় প্ৰায়ে । কক্ষাৰ বিশ্ব কৰা বিশ্ব কৰা বিশ্ব কৰা বিশ্ব কৰা ব কহি ভব কাছে।। রবির রখের অস্থ ক'লো কিবা খেত। পণ বাথি কঁচ ভগ্নী শুনহ নিশ্চিত । বিনতা বলেন ভগ্নী প্রথে কার্ব্য কিবা। অবশ্য বিবাদ घटि भाग करत दयवा । विमन्धा विमन विश्व कत विमा भारत । कड्क करन कम, ना व्हेटव हुई बदन।। शुक्रांभव बाई तील लाह्य वावहाव। दिन्छ। विभिन्न ख्यो हेन्द्रा (श द्वामात ॥ फमशस्त्र रूक्त (मरी कांश्त नहन । यात थोका जन्म इटर बिटन त्में जन। त्य श्रीत्रित मानावर्षा बरेड निम्हत्र। कक वरण क्ष्म वर्ग पूर्वा जाम इत ॥ विमका विमित्र अभ जाम त्य उम्म । शत-ম্পর করি ছবে গেলা নিজালয়।। গুছেনীয়া কজে দেবী ছাকি পুজনণ। विमक्षात्र नटक शब कटर बिवत्रण। यह शृंखायथ। पूर्वा विवालिक रूप । त्रथ **क्या पश्मारम कावह क्षेत्रध्यक्ष । क्यो मन दल्ल भाष्ट्र। कह दिश्रोड । रक्यान इंडेरन ८३म खान प्रमुक्ति। (धना स्नारन गांक मांज आंखा शांड ७**४। भिक्षेत्र **भारेव (हम टेह्न अनुस्त्र ॥ हु**रह भाक्त । जाबन ताका वन अमस्त्र পুক্ত দিলে হেন কথা কজে শানি রব ।। তেলার করি পুজ গবে লাপে যে করি-ল। গম্লুডের দাস হবে পার হীরবল।। জননার কেন বাণী শুনি কণিগণে। পাডালে অনেক ভাল ওয় পাইরা মনে।। আর সকলরণ স্বর্গতে উঠিল स्री कार भटतरतीर मरभग कतिक। हिन जन्द-त्यस्कृतिहन क्रुक वर्ग। मांछा प्रांतम क्रुककार्यः कविन गण्यूनं ॥ छात्र शत्त ब्याद्यपरी विनछादक राम । एम एवी कथ (मधि अ:मिका मश्राम ।। शाबा वन बाहर विनकांत्र र्ममण्ड । क्या वर्ण धन निमि कहि (व (कोमोटक।) क्या मेकि विदेश साहि अध्येत वर्गन । विवका प्रक्रिम शृष्ट कर आहतारुग ।। विवक। शृद्धंत्व शहत करक रच रिमल । कब्कटक ब्रिमका गरेबा रचटनएक छलल्।। ब्राह्म कर्म सूर्य। **एक एक अन्तिमन्। जिनकाटक कक दरन कर्व कि इ इन्।। ज**नक स्टर्ग्रह

एक महिरक मा शांति। जामात रेक्ट्याकि देश वल गाँह किति । विमर्काः চলিল আরৌ বেগে অতিশয়। ক্রেড় ভিডেড চিত্তে মম হইল প্রলয় ।। তার পরে কজ দেবী পর্য়ো স্তব করে। মুর্বাইনৰ রূপা কর সময় করছে॥ পরে তেজ সহা হৈয়া উঠিল গগণে। সূর্ব্য ক্ষান্ত দেখি স্টোহে অলিভ বরণে।। ক্ষান্ত वर्ता विमन्। इहेन मम खिन्छ। श्रीकिका काइरस यांचा कत्र विक्रिका । सिक् ভা বলিল দেবী করি নিবেশন। ক্ষিত্র **খান্যাকর্ম জা**নি করিব সাধনাগ্র**াপুর্জ্** आणि विन्छ। त्य मात्राकर्म करने । व्यक्तिमिन कक मृत्र मारेबा न**प्**रक्री দাস্যকর্ম করি আইসে আপন আকর্ম সতত বিনতা মনোত্রঃখ অভিশক্ষ পক্ষীরাজ মাভাকে দেখিল একদিন 🖟 অতিশয় 📆খাছি হা মুখ যে মলির विकारित मांचा ऋति कतियाँ विसंत्र कि कांत्र **व क्र** मांचा कहित्य नि-म्हन ।। विनष्ठ। विनष्ठ भूखं स्थमह बहन । मात्रा कर्म कति आगि भरवत खरेन বিশেষ করিয়া কহিলেন ভারপরে। গুনি শেষে পক্ষীরাল ক্রোধি कारु (त ।। विन्ता वर्णन शुख कांच मा कतिरत । अधिक मा मनाथ। रेश्ल व्यक्षं इहेटव।। शङ्गेष्ठ वटलन गांष्ठा कति विदन्नन। कि श्रकात हटव इब দানীত্ব মোচন। দি বাহাতে দানীত্ব মুক্ত ভোনার হইব। আজা কর মাতা আমি অবশ্য করিব।। শীত্র ঘাহ ভূমি সাতা কক্রর জালর। কর্ত্য মাতা षांहा करह कतिव निक्षत्र ॥ शतकिम विमञ्जाकार हता कक्क कारन । कामाकक्ष देश्टल मुख्य श्रेत (कमरम।। (काम, खना मिटन लगी कत्र आहम। (कामा-कर्म भंतीरतरक ना इस गहन ।। शरत कर्गिशरण कक्ष्यू छ। किसा नषस । विसरः। র্ত্তান্ত ব্র বলিল তৎপর।। সর্পাণ বিবেচনা করিয়া বলর। ভর শাংশে शक्तरण्टत आर्छ गरा **कत्र।। अक्यक अ**ष्क ভाष्मन सभि दर्श । सृक्रुक्त नाहि थांदक स्टार्च कारत स्त्र ॥ धरे स्तित कहि गर कटक किशाना स्वयुक्त পাইলে দাসাকৰ্মেডে মোচন।। পুত্ৰগণ বাকা কলু বিমতাকে কয়। ध+ মৃত পাইটল তব দাসীস্থ মোটর।। বিমতাগৃহেতে:আসি পারীরাকে কংক গুমিরা গরুত পশ্বী মৌনভাবে রক্ষো ক্ষরে দ্বিরচিন্ত করি করে মার্ডা कारन। आसित अमृत मांका ना साविष्ट गरन है। मांका ऋरत शक्रफ करतहरू নিবেদন। অ্থাতে হৈরাছে মাজান্দ্রীর দহন।। আহার পাইলে মাই অমৃত আমিতে ৷ বিশ্বভা বলিল পুঁজ কহি যে ভোনাতে নাং নমুর্টের ভীরে: जात्व कथाद्रमत गर्गा जर्मिन मध्या यति कत्रदत्र उक्ता (सह आलिश्मी) विर्धा अक्षेत्र अविरव शिकांत भरपम खांचा। त्य ताहिता ता विद्रात ता शक्ति विद्रात বলৈ মাতা কৰি নিবেশন। কেমনে জানিব মাতা জাক্ষা কে জন।। বিশ্বস্থা

वैर्टिनेम शूख कारना वहें मरक। विलक लारनरक वक्षापुत रव शरनरक। वहें-🗷 🖼 । इत्र विटमय लक्त्य। अञ्चल प्रतिहल छोटव मा कत्र छक्त्य।। छत्रः শারে খণেখন মাতা স্থানে বলে। কি রূপে আনিব আমি ভক্ষণের কালে।। जिम जा कटरम खन खना (य लक्ष्म । खाक्क्ष भाइटक नना इंडेटब महम।। (इन কথা শুনিয়া গরুড় মহামতি । সমুদ্র নিকটে চলে অতি শীব্রগতি।। সমুদ্র কটেতে সৰ চণ্ডাল দেখিল। পাখার কাটেতে সৰ অন্ধকার কৈল।। মুখের বাদিন করে জতি সে উচিতে। আপন ইচ্ছার সর যার উদরেতে । তার মধ্যে একু ভিত্বর যে আছিল। গলার মধ্যেতে গিয়া অলিতে লাগিল।। চহাল ভক্ষর করি উচ্চাতে **ছিলেরে।** ভার পর থলেশ্বর ক্রেন সম্বরে।। কোন কাতি তুমি সভা কছিছে দিশ্চিত। ভক্ষণ করিলে তবে হবে বিপ-রীয়ত।। দ্বিজ করে শুন পক্ষীয়াজ মহাশয়। আক্ষাণ হইভ জামি কহিনু নিশ্চর pl ব্রাথ্যণে করিস রক্ষা বিনতা নক্ষন। চণ্ডাল ফতেক ছিল করিল ভক্ষণা। অবশেবে গরুড় উটিল অর্গপত্থে। নির্ভয়েতে চলি যায় অমৃত ৰখাতে ॥ রক্ষক যতেক হিল দেখি পক্ষরাক্ষা। ভরে ইন্দ্র অগ্রে হার নাছি करत जाका। शक्क एर्निया गर तक्क र भनाम। आरवभ करित शिश अग्र ह यगात्र।। प्रापृष्ठ विकेश कति कालहळ किरत । यात्मात कि इरव की हे अरव-শিক্ষে নারে।। হেন দেখি পক্ষরাক ভাবিতে লাগিল। মারা করি কীট देश्रा अधि अपूरा देश्य । अवरश्राम क्षादिश्य अगृष्ठ आवश्च । ५०० देश्राक भक्र एक कि के मार्टि इस ।। পরেতে অমৃতভাগু লইয়া ব্রিত। বেগেতে हिल्ला शक्त देश्या जांस्लामिक । सूरा लिल स्वरंग रहेश कांक्य । नांदायन কাছে গিয়া **ফ**হিল বিস্তর । গ**রুত্ অ**মৃতভাগু হরি লইরা যায়। কছ প্রভু দেবগণ করি কি উপার।। দেবগণ প্রাণ রক্তে অমৃত আছিল। বিনতার পুজালই রা বেগেতে চলিল।। এত শুনি বিষ্ণু অভি ক্রোধিত হইল। গল্প-জ্বেল পাছে অভি বেলেভে চলিল।। কন্ত দুরে গিয়া দেখা গরুত্বের সনে। বিংশতি বৎসর বুদ্ধ হৈল দেবসানে ।। নারারণ বুদ্ধে অতি হইয়া কাভয়। গরুতের প্রতি প্রতু কছেন সম্বর।। তব প্রতি বন্ধ ভূষ্ট হৈল মম মন। তব भरतानीक दह निवस अर्थन ।। क्लार्ट्स थरभयत वरण श्वन भगांपत । वाहिका कत्र इमि निव हुरे वत्र ॥ भारतात्र वरण (पर वरे वक वत्र । आमात्र वाइन ভূমি হবে নিরন্তর ।। সার বর দেহ তবে কার্য্য অবসানে। সম্বৃত্তের ভাগ্ত क्षांकि रिष्य रमयभारत ।। अवभक्ष विलय्ता शत्रक गृरह रश्या क्षा व बाकारक देशीको अञ्चल (व निर्मा। अमृष शाहेन्ना कख्य वस छूचे देशन। विनदाहक

मानाकर्म देश्ट सुक देवत ।। नर्भ नव छाकि कछ वरत मधे देशा। नकरत অমর হও অমৃত খাইরা।। নর্প নব চলিলেক অমৃত খাইতে। কজে কহে রান করি আইসহ শ্বরিতে।। এত শুনি সর্গ সর্ব চলিংলক শ্বানে। মাশ্লাতে অমৃত হরি নিল দেবগণে।। বিমতা দাসীত হৈতে হইয়া মোচন। গরুইছ कट्टन शुंख खनह कांवन ।। मांत्रीय एवं कर्य इत्र शाल्यत घरेना। बांबानती ৰাইতে পুজ হৈয়াছে বাসনা।। তথা গেলে পাতকেয় হইবে বিনাশ। ইং শুনি পক্ষীরাজ বড়ই উল্লাস ।। গরুড় কংহৰ মাডা করি নিবেরুন। ভর্ষ সঙ্গে কাশী আমি করিব গমন ।। তদপরে বিনতা গরুত কাশী যায়। গরুত ভেশর শিব লিক তাপিত করম।। পক্ষীরাজ ঘোরতর তপ জারভিল। ধর্জটি প্রসন্ন হৈরা তথার আইল।। খণেখরে প্রসন্ন হইরা পশুপতি। বর লহ পক্ষীরাজ যাহা মনোনীতি।। তার পর গরুত দেখিয়া বিশ্বনাথে। প্রণাম করিয়া স্তব করে বিধিমতে । ভূফী হৈয়া সদানন্দ বলে ভার প্রভি। নাবায়ণ বাহন হইবে মহামতি।। ছবি হব একাজক সকল কারণ। সেবা করি নারায়ণ হইবে নির্বাণ।। তব স্থাপিত লিঙ্গ যেবা পূজা করে। আমা-রানে মুক্ত সেই পাইবে সম্বরে।। হেন বাক্য বলি শিব হৈল। অন্তর্ধানী পরে শুন বিনতার তপের আখ্যান।। অবিমুক্তে ধ্রোক্রার্ক করে আরাধন অভিশয় তপ্যা করিল আচরণ।। বিনভার তপে ভই হৈল দুর্ঘ্য কেরে। বরদিল জ্ঞানযোগ ভোমার ছইবে।। পরে শিব অনুকল্পায় নির্দাণ ভোমার। এই বাক্য আমি কহিলাম সারোদ্ধার।। আর এই ধরোক্লার্ক পুজে রবিবারে। শোক ছঃথ কিছু ভার নাহিক সংসারে।। এই বাক্য বলি সূর্ব্য গেলেন সন্থরে। বিনতা গরুড় গেল আপনার ঘরে। অতি মনোহর খথোক্লার্ক বিবরণ। ইহাতে শুনিলে পাপ হইবে মোচন।। পঞ্চাশ অধ্যার কাশীখণ্ড মনোহর। সমাগ্র হইল অভিশয় যে বিস্তার॥

जथ अङ्गनार्क विषद्भग ।

পরার। কার্ত্তিকের প্রতি তবে জগন্তা কহিল। বিনতার কর পুত্র কিৰপে হইল। বিনতা গরুড় পরে কি কর্ম করিল। বিভার করিরা বর্জানন যে বলিল। দক্ষ প্রজাপতি কন্যা ছুই যে হইল। এই ছুই কন্যাক্ষে কশ্যপে বিভা দিল। কক্ষনত্তে সর্প সব হইল প্রকাশ। বিনতার গ্রহ

ভিন ডিমের আভাস।। বিনভারে কণ্যপ যে বলিল বচন। অকালেভে ডিম্ব না করিছ প্রকাশন।। এক দিন ফণিগণ গুহেতে খেলায়। তাহা দেখি বিনতার খেদ অতিশয়।। অকালেতে এক ডিম্ব বিনভা ভাঙ্গিল। কদাকার এক পুত্র পেচক হইল।। পক্ষীগণ মধ্যে কেহ না করে গণন। দেখিয়া य विनकात कुंध वर्ष मन ॥ भटनाकुः व्य विनकात वस्त्र मिन यात्र । अका-লেতে ডিম্ব এক ভাকে পুনরায়।। অরুণ নামেতে পুত্র তাহাতে হইল। অকালেতে ভঙ্গাজনা মাভাকে শাপিল। শুন মাভা আমি এই করি निरंदमन। अकारमण्ड छित्र जम देकरम कि कार्य। यम क करिएन कार्य উচিত হইবে। পরদাস্য কর্ম্পে তুমি নিযুক্ত থাকিবে॥ এই বাক্য সন্তানের বিনতা শুনিয়া। অনেক বিলাপ কবে চিন্তাযুক্ত হৈয়া।। অরুণে কছেন মাতা হইয়া কাতর। শাপ মুক্ত কিলে হবে কহিবে সম্বর্গ। তার পর অরুণ কৃষ্ণি মাতা স্থানে। শেষ ডিম্ব পুর্ণ কালে ভাঙ্গিবে আপনে।। তাহা হৈছে ষে সস্তান হইবে উৎপত্তি। সেই ভব দাস্যকর্মা করিবেক মুক্তি॥ পুর্ণকালে গরুত হইল তার পরে। প্রকাণ্ড শরীর পক্ষী মহাবল ধরে।। মাতা দাস্য-কর্ম হৈতে করিল মোচন। পরেতে শুনহ অরুণের বিবরণ।। আনন্দ কাননে পক্ষী যাইয়া সত্ত্র। সূর্ব্যদেবে আরাধনা করে ভার পর ॥ অতিশয় ত্যুট হৈয়া জাদিত্য আইল। অরুণের তপ দেখি কহিতে লাগিল।। রথের সারথী মোর তুমিত হইবে। ভক্তি করি অরুণার্ক মূর্দ্তি যে পুজিবে॥ অনায়ানে গৰ্জ ব্যাধি মুক্ত সেই নরে। পশ্চাতেতে কাশী প্রাপ্তি কে খণ্ডিতে পারে॥

-

তাথ বৃদ্ধার্ক কথন।

প্রার। কার্ত্তিক কহেন শুন মুনি তপোধন। আর এক কথা কহি শুন দিয়া মন।। রৃদ্ধনামে এক দিজ ছিল রৃদ্ধকায়। কুর্তরোগে পীড়িত অনেক কুংথ পায়। কাশীতে আসিয়া ছিল সুর্য্য আরাধয়। সুর্য্য আরাধনা বিধি-পুর্বাক করয়।। দিজবর রৃদ্ধান্ত করিয়া স্থাপন। সেই স্থানে ঘোর তপ করে অনুক্রণ।। দিবাকর প্রশন্ন ইইরা দিজে কয়। কুর্তরোগে মুক্ত ভুমি ছইবে নিশ্চয়।। আর শুন দিজবর কহি তব স্থানে। জন্য বর যাহা চাহ দিব এইমানে।। বৃদ্ধ দিজ বলে প্রভু করি নিবেদন। বয়েস অধিক হৈলে देशक अस्य वर्ष (श्रेम।। अष्ठवन कर किन नाहि वह वर्त । यूरो देशमा निवर्वि शूकित भक्षत ।। कृष्ठे देशमा क्रिंग्रामस्य वर्ष्क मिलवत । नवीन वर्ष्य इहा श्रिक्त श्रिक्त भक्षत ॥ जात कि अन वृक्ष विस्था वहन । क्षामांत क्षिणि वृक्षा मिका विवर्व ।। तिवर्वात वृक्षा मिका श्रिक्त स्पान हर्ति श्रिक्त ।। तिवर्वात वृक्षा मिका श्रिक्त स्पान हर्ति श्रिक्त । तिवर्वात वृक्षा मिका श्रिक्त । त्रावि वृक्षा क्षामा वृक्ष स्थावन श्रीकृत ॥ वृक्ष वृक्षित क्षामिक श्रीकृत । त्रावि स्व देशमा वृक्ष स्थावन श्रीकृत ॥ वृक्षता क्षामिक श्रीकृत क्षामिक व्यक्ति ।। स्व वृक्षता क्षामिक व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति श्रीकृत श्रीकृत ।।

অধ কেশব আদিত্য কথন।

ত্রিপানী। কার্ত্তিক বলেন শুন, অগস্ত্য যে তপো বিষরণ। আদি কেশব কাশীতে, চিত্তে হৈয়া হর্ষিতে, শিবলিক পুজে অনুক্ষণ।। এক দিন দিবাকর, একচক্র রথোপর কাশীউর্ক্লে করেন গমন। আদি কেশব কাশীতে, পুজেন লিঙ্গ স্থাপিতে, দেগি সুঠা থৰ্কমান হন।। তার পর দিবাকর, রথ ছাড়ি খুন্যোপর, কাশীপুরে আইলা ছরিত। যথা रमव नातात्रण, मिव शुका गम मन, उथा सूर्या देशल छेशनीक ।। क्षेत्रकिन নারায়নে, প্রকাম একান্ত মনে, স্তব করে বিবিধ প্রকারে : জুমি স্কলের মূল, ভুমি সুক্ষা ভুমি স্কুল, ভূমি কর্ত্তা সকল সংসারে ॥ অনাদি অব্যক্ত প্রভাে, চিদানন্দময় বিভাে, সৃষ্টি স্থিতি পালন সকল। সার বা মহিনা কত, ব্রদ্ধাণ্ড কারণ যত, তুমি সকলের বুঝি বল।। কি কারণে প্রভু ভবে, পুলিছেন মহাদেবে, বিশেষ বলহ দামোদর। জগন্নাথ এত শুনি, যুর্গ্যকে নিষেধ বাণী, হেন মতে কি কারণে কর।। মতেক দেখ সংসার, সকলের कर्डा इत, कातर्गाट कात्रण मक्दत । खन्ता ज्यांनि रमन गर्छ, नर्ख कर्डा जुन्-নাথ, বুদ্ধি ভ্রান্তি হৈয়াছে তোমার।। শুন মুর্ব্য জামি কহি, শিব বিনে, আর নাহি, শিব হন সকলের সার। শিব মোরে রুপা করি, দিলেন বৈকুপ্ত পুরী, তব অগ্রে কি কহিব আর । শিবলিক পুলে যেখা, ভক্তি ভাবে করে সেবা, ভার কল কহনে অপার। শিবলিঙ্গ পুজামৃত, শিরে দিয়া হয়। নত, সর্বতীর্থ স্থান কল তার ।। আর ফল কি কহিব, ভতে স্থাপাম প্রিব, তুমি লিঞ্চ করহ স্থাপন। পুজা কর ভক্তি করি। তুই হবে হর-গোরী, এই মুল সকল সাধন।। ভদপতের দিবকিয়া কেশবাদিতা উত্তর, শিবলিঞ্জ কাশীতে স্থাপিল। পুজা করে দিবভিত্ত কে**লাব আদিভা** হর, শক্ষর যে

व्यक्षिम देशन ।। তত্ৰ পাদোদক তীৰ্থে, করিয়া কর্ম সর্লার্থে, কেশবাদিতা কর দরশন। সেই নর নরোজ্ম, পাপক্ষর মুক্ত কাম, অবশেষ হয়ত নির্বাণ ষেই নর কাশীপুরে, সপ্তমী আঘিতা বারে, পাদোদক তীর্থে স্থান করে। পুলি আদিতা কেশব, সেই নরে পাপ সব, রোদন করিয়া তাগে তারে।। অধিকস্ক ফল আর, সপ্ত জন্ম পাপ তার, যত পাপ করেছে সাধন। তৎ-ক্ষণং পাপ ক্ষয়, সর্ব্ধ ব্যাধি মুক্ত হয়, অবশেষে মুক্তির ভাকন।।

व्यथ विमनार्क विवत् ।

जिल्ली। यणानन छात्र शरत, करह मूनि क्रमाखारत, विमलार्क यक विवत्ताः। विमलार्कनाम हिला, कूर्छताती हितकाल, अख्नित्र हिखाकूल मत्न।। विमल क्रानित्र। शादत, वातां नित्रों क्राह्मेल करत क्रातां वा क्रानित्र। शादत, पूर्वाणि वक्ष्मेल क्रूल, तरकां भल किरल करत क्रातां वा क्राह्मेल कर्ता क्राह्मेल ।। क्राह्मेल खात खात्र व्याह्मेल खात खात्र क्राह्मेल खात खात्र क्राह्मेल खात खात्र क्राह्मेल खात खात्र क्राह्मेल खात्र खात्र क्राह्मेल खात्र खात्र क्राह्मेल खात्र क्राह्मेल खात्र क्राह्मेल खात्र खात्र क्राह्मेल खात्र क्राह्मेल खात्र क्राह्मेल खात्र क्राह्मेल खात्र क्राह्मेल क्र

অথ গ্ৰাদিতা ও যমাদিতা কথন !

ত্রিপদী। অতঃপর শুন মনে, গঙ্গাদিত্য আখানে, ভগীরথ যবে গঙ্গা আনে। গঙ্গাদেবী কাশীপুরে, আদিত্যের পুলা করে, বিশ্বেশর লিজের দক্ষিণে।। যেই নর ভাগাধরে, গঙ্গাদিত্য পুলা করে, তার কথা কছনে না যায়। শুন মুনি তপোধন, তার পুণ্য অগণন, অবশেষ মুক্তিপদ পায়। যসাদিত্য তার পরে, কহি শুন মুনিবরে, যমাদিত্য হৈল এপ্রকারে যমেশ্বর পঞ্চমীতে, যম পুলে আদিত্যেতে, যমাদিত্য হৈল এপ্রকারে।। চতুদিশী কার্ত্তিকেতে, ভরণী নক্ষত্র তাতে, বারেতে মঙ্গল যদি হয়। যমাদিত্যে যেই নরে, তর্পণ যে শ্রাদ্ধ করে, ভক্তিভাবে করিবে নিশ্চয়।। তার পিতৃলোক সবে, অনায়ানে মুক্তি হবে, নিজে সর্ব্ধ পাপে মুক্ত

कामान्य ।

হয়। তাদশ আদিত্য সবে, মহাস্মায় শুনে জীবে, সর্ব ব্যাধি হৈতে মুক্তিপায়।। কাশীপুরে বেই নরে, স্থানে স্থানে পূজা করে, স্তব করে মাদশ রবিরে। তার পুণ্য কেবা কয়, নাছি খাকে তব তয়, কাশী প্রাপ্ত কেই সব নরে।। এক পঞ্চাশ অধ্যায়, সীভানাথ বসু কয়, সাজ হৈল আদিত্য তাদশ। ব্রজানন্দ কাশীবাসী, কুপাতে ভাষায় ভাষি, কাশীবতে অমৃত সুরস।

ইতি ঐকাশীখণ্ডে মন্দর হইতে যোগিনী ও পূর্ব্যদেবের কাশীতে জাগমন ও ছাদশ আদিত্যের বিবরণ। নামঃ ঘঠঃ সর্গ।

ব্রহ্মার কাশী আগমন।

পরার। সন্দর শিখরে শিব ভাবিত হইল। কি হৈল কি হৈল বলি চিস্তিতে লাণিলা।। যেই যায কাশীপুরী নাছি আইসে ফিরি। সমাদ না পাইয়া ভাবিত ত্রিপুরারী। অবশেষে ত্রজাকে যে সন্থাদ করিল। ত্রজা আসি কাশীনাথে প্রণাম করিল।। ত্রাক্ষাকে দেখিয়া শিব করিল সন্মান। ভার পর ত্রিলোচন কছেন বচন।। শুন ব্রন্ধা তমি সব জানহ কারণ। কাশী ত্যাগ করিয়^{ে ছ} স্থির নতে মন। বছদিন হৈল কাশী করিতে গমন। কাশী কাশী করিয়া উৎকণ্ঠ সদা মন ।। কাশী বিচ্ছেদের আলা না সহে অন্তরে। তুমি যাহ শীঘ্রগতি যথা কাশীপুরে।। যত জনে পাঠ:ইলাম কেহ না আদিল। মুনহৈয়া সর্বজন কাশীতেবছিল।। দিবদাস স্বধর্মেতেরাকা ভোগ করে। অধন্ম দেখিলে রাজ্যচ্যুত নুপ্ররে।। দিবদাস রাজ্যচ্যুত যে প্রকারে হয়। ইহার উপায় ভূমি করছ নিশ্চয়।। এই বাক্য শুনি ব্রহ্মা ভাবে মনে ম ন। শিব কর্ম সাধন ভার কাশীর দর্শন।। আপনাকে প্লাঘ্য ভান করিয়া সত্বর। আনন্দ কাননে বিধি যায় শীঘ্রতর।। ত্রন্ধানিজ রূপ তবে করি সমরণ। অভি রুদ্ধতম দ্বিজ হইল তথন।। দণ্ড কমগুলু হস্তে ককে খুকি বুথি। কপাল বেডিয়া কোটা ধীরে ধীরে গতি।। বারাণদী প্রবেশিল হইয়া গোপন। স্থানে স্থানে দর্ম তাথে করেন ভ্রমণ।। তার পব দিবদাস রাজার সাক্ষেতে। ধীরে নাবে রুজ দ্বিজ হৈল উপনীতে।। রুজদ্বিজ দেখি দিবদাস মহাশয়। গাভোত্থান করি রাজা প্রণাম করয়।। আননেতে বসা-हैया भाक वर्धा फिला । उन कति वन स्मार्थ किकाम कतिला। कि कान्रत দ্বিজ ভবে হেথা আগমন। যাহা ইচ্ছা দিব দান চাহত এই কুণ।। দ্বিজ বলে দিবদাস ধর্মশীল তুমি। তব তুলা রাজা আর নাহি দেখি আমি॥ তব স্থানে অন্য কিছু দান নাহি লব। দশ অশ্বমেধ আমি কাশীতে করিব ইহাব সাহায্য রাজা কবিবে আপনে। যজে বিম্ন নাহি যেনকরে ছুই ণণে।। ভদপবে দিবদাস ছিজে কহে বাণী। যথা সুখে যক্ত সাক্ত করহ আণনি। বাচিক্সা করিলে অর্থ অবশ্য যে দিব। যাহা কছ দ্বিজ্ঞবর তথনি করিব।। তদপরে দ্বিজবর বিদায় হ'ইল। উপায় কি করি বলি ভাবিতে লাগিল।। দিবদাস রাজ্যে আমি পাপ নাহি দেখি। কি প্রকারে রাজ্য হৈতে তারে করি ছঃথি।। শিব কার্যা সাধনা না হৈল আমা হৈতে। বিপ-বী এ হৈল শিব অঞ্জেতে যাইতে।। কমল উদ্ধব চাবে নিভিন্না অভাব ।

কাশী সেবা করে যেবা শিব তুর্ম তারে ।। পুণ্যকর্ম সাধনের থেকে কাশী সেবা। কাশীবাস হৈলে অন্য কর্ম করে কেবা।। এতেক ভাবিয়া রাজ্যা থাকে কাশীপুরে । শিবলিন্দ স্থাপিয়া পুজেন বছতরে ।। ক্রমেন স্থাপালা মেধ যে করিল। আনন্দেতে বেদবেতা কাশীতে রহিল। অগভাকে করেছ কার্তিক মহাশয়। ক্রৈডিমাসে শুক্লপকে দশমী যে হয়।। দশ আশ্বনিধ স্থান পুজা যেই করে। দশ জন্মাজ্জিত তার সর্কাপাপ হরে।। আদ্ধাদি শুর্পাকরে কলের বিশেষ। তারাপিতৃলোক মুক্ত কহেন মহেল।। আর ফল আছে ভীর্থে শুন মুনিবর। জার্ড মান শুক্লপক্ষে ভৃতীয়াতে আর । ভক্তিভাবে যেই জন স্থান পুজা করে। সর্কাপাপে মুক্ত হয় সেই সবনরে।। অন্তে কাশী বাস তার অবশ্য যে হয়। শিবের বচন কেবা থণ্ডন করয়।। আর আর কল শ্রুতি আছে বছু রপে। দ্বিপ্রাণালায় সাক্ষ হইল সজ্জেনপে।।

-31816-

হুৰ ক্ষুত্ৰগণের কাশী গমন।

প্রার। বড়ানন বলে পুন: শুন মহায়বি। এই মতে কাশীতে রহিল পদ্মযোনি।। মন্দরেতে ভূতনাথ ভাবিত অন্তর। কি হইল বলি থেদ করেন শক্ষর।। যাহাকে পাঠাই সবে কাশীতে রহিল। আছয়ে অন্যের কার্য্য ব্রক্ষ্ नो कितिला। श्रानम कानन माहे करु गांता जारना नकला प्रथकि রাখে নিজন্মনে।। ভার পরে শিব কছে চৌষ্টি গণেরে। সকলেতে শীঘ্র গতি যাহ কাশীপুরে॥ দিবদাস রাজাচ্যুত হয় যে প্রকার । একলে মিলিয়া युक्ति कतिरव हेशत ॥ जमशेत करमर भग मकरनदर । जनस् कानरन नव চলিল প্রতিভা। শঙ্কাকর্ণ মহাকাল আর মহোদর। ঘটা কর্ণ মহোদর মহামোহ কর।। দোম নন্দী নন্দাদেন কাল্পিক কায়। কুরুটাভোদর মর্রাথ্য যোমি হয় !৷ গোকর্ল জুলকর্ণ বিকর্ণ আকর্ণ : ভূমিচাও কপোদীশ স্থকেশ সম্বর।। বীরভদ্র কিরাভাধ্য চভুর্ম থ হয়। বিকুল্প পঞ্চাক্ষ ভুডাক্ষ ক্তাক যে যায়।। এইমতে সকলে আনন্দপুরী যায়। দিবদান নৃপ রাজ্য জমিয়া বেছায়।। কোন পাপ দিবদাস বাজে। না দেখিল। গণ সব পর স্পার চিস্তিত হইল।। প্রাক্তুকার্য্য সাগনের ন, দেখি উপায়। শিব প্রিয়স্থান কাশীবাদ যুক্তি হয়।। স্বস্থনামে নিবলিস্থ করিয়া ক্ষাপন। রহিলেন গণ गर **जानन्त्रकानन ॥ ११० छालिछ भि**वित्र हा है **भूका करतः। अहा**रपात्र नह-**ेक्ट पूर्व (महे: बृद्ध।। अवरम्य कामी वार्ध ना इम्न ४७नः।** जिलकार्यः ध्यात्र इहेल नमाशन्।।

जश कशमीं चत्र कथम।

পরার। ভদপরে মূনিবরে কার্ত্তিক কহিল। শিবগণ কাশীপুরী একান্তে বহিল।। আর এক ইভিহাস শুন তপোধন। কহিব অপুর্ব্ব কথা পিশাচ নোচন।। বাল্যীক নামেতে এক আছিল ব্ৰাহ্মণ। কাশীতে কপো:-দীখির লিক্ষের পূজন। ঐ স্থানে বিমলকুণ্ড ছাছে নিরস্তর। নিত্য নিত্য স্থান করি পুজেন শক্ষর।। এক দিন মধ্যাই কালেতে ভিজবরে। একান্তে বিদিয়া তথা পুৰেন শক্ষরে॥ হেনকালেপিশাচ এক আইল তথায়। অভি ভয়ন্ধর মুর্জি ঘোরতর কায়।। বাল্যীক বিক্ষাসা কৈল রুপাকরি তারে। কোথ। হৈতে আইলে তুমি কহিবে আমারে।। এরপ হইল কেন শরীর ভোমার। কহিবে সকল কথা করিয়া বিস্তার। পিশাচ কহেন দ্বিল কহি তব স্থান। গোদাবরী তটে প্রতিষ্ঠান নামে গ্রাম।। পুর্বজন্মে ত্রাহ্মণ শরীর মম ছিল। তীর্থে প্রতিগ্রন্থ করি চিরকাল গেল।। কোন পর্কে দান আমি নাহি করি কভু। ভেকারণে পিশাচত্ব হইলাম প্রভু। জলবৃক্ষ রহিত স্থানৈতে মোর বাস। মত্রভূমি সদা কাল ভোজনে নৈরাশ।। ভ্রমণ করিয়া বদি জল কভু পাই। ভৃষ্ণাতে পীড়িত হৈয়া থাইবারে বাই।। জলের রক্ষক मेर ना रमग्न थाईरङ। চিরকাল পীড়িত যে আছিছে তৃঞ্চতে॥ বছদিন পারে এক ত্রাব্দাণ কুমার। সেই স্থানে উপনীত অভি ছ্রাচার।। ভাছারে দেখিয়া আমি চিন্তিয়া অন্তরে। নিজ ভোগ ছেতু তার প্রবেশি শরীরে।। দৈষ্টোগে এক মহাজন সঙ্গ পাইল। তাহার সহিত দ্বিজ কাশীতে আইল। ভাহার শরীরে সহাপাপ আরকামি। কাশীর প্রান্তরভাগে বহিঃপথ গামী। বারাণসী প্রান্তরে প্রয়াগ ভীর্থে আর। যাতায়াত করি মাত্র নাহিক আহার।। কাশীর ত্রিপথ মধ্যে মিলে একজনে। আঞ্চন্ন করিছে তারে হৈল मात्र मत्म। याबीमन निय निव वटन छेटेळ: इद्रा । धरे नेक छटननिन আমার অন্তরে।। সেই কলে আমি হেথা আসি ভবস্থানে। কুপাকরি মুনি বর করহ বিধানে ॥ শুনিয়া ছুঃখের কথা দল্লা উপজিল। বাল্যীক বে দ্বিজ वंत्र शिभाटि कहिल।। कट्यार्कि क्रेश्वत नम् (श्वटिक मद्भावत । स्नान माटक হবে তব শুদ্ধ কলেবর।। এত শুনি পিশচি যে যান সরোবরে। জলের রক্ষক গণ নিৰেধে ভাহারে। ভদপরে পিশাচ সে অভিত্যুখ মনে। ছিজবর निकटिंग्ड करतं निरंबम्रतः ॥ शिमों करहम श्राट्याः निरंबमन कति। स्राटनत तकक्षप् स्यातः एक देवती ॥ श्रक्त व्याकांत्र यादे मदतायत कीटत । कलात

রক্ষক সব প্রহারে আমারে। এই কথা শুনিয়া বাসীক বিজ্বনার। বিজ্বতি
দিলেন বিজু পিশানের তরে।। পিশানে কংল বিজ্ব শুনহ বছন। ক্লালেতে কর ভুমি বিজুতি লেপন। তিতের আক্রাতে প্রেত ধরেন, বিজুতি।
সবোবর তীরেতে চলিন শীল্রনতি।। বহু দিন অন্তে হল পিশানে পাইল।
আন করি উপর পুরিয়া অল বাইল।। পিরা মুর্তি পিশানের ইল ভতক্ষীর
বিসানে চড়িয়া স্বর্গে করয়ে গমন।। দুরু হৈতে বিজ্বরে লগমে করিল।
তব প্রসাদেতে মুক্তি আমার হইল।। নানামত ভব করে বিজ্বর প্রতি।
তব প্রসাদেতে সোর হৈল অব্যাহতি।। পিশান মৌনন কথা যে জন শুন্তর
অনারানে সর্মপাপ তার হয় কর।। মার্মানে শুরুপ্তে চতুর্দশী তিথি
ফপোভীশরেতে যে বার্মিক হালা ফতি।। বেই স্বোন্তরে থেই নর স্থান
করে। তাহার উভম কল কে বান্তিতে পারে।। চতুঃপথাশ ক্ষ্যায় কথা
ভবি মনোহর। শুনিলে অপুর্ব ফল পার নেই নর।।

অধ পিকলাকাৰি গাণেব লিক কথন।

প্রার। ক্ষাদ বলে শুনি মুনি আমারবর্তন। যে সঁকল প্রিণে লিজ করিল স্থাপন। যে যে স্থানে যে যে মিনে লিজ শুনি মিনিছে। কাশীধার্মে যে সর্ব বলেছি তব কাছে। পিললাক্ষণণে স্থাপে পিললাক্ষণ। কপোড়ীশ উত্তরে স্থানিনে প্রাপি হয়। বীরভড়ে ক্রিণি লোক নীরভাটেশ্বর। অবিষ্ঠিকস্থারের পিলিনে মনোহয়। বীরভত্ত মুর্তি তথা যিরাকে সাক্ষাতে। ভদ্রাউট্র কাণী এই ভার্যারে সঁহিতে। ভক্তিভার্বিপুলি নল কাশীবাস কলা লভিবেক দর্শনে সে পুণা অবিকল কিরাভ স্থাপিত লিজ কিলাভেশ নাম। কেলার দক্ষিণে পূজা করি লভে কানিনাজিলুর্মা বেলার লিজ উত্তুর্মী হোর স্থাণিত। মুদ্ধকাল নিম্নেট আহরে সুপুলিত।। কুবেরেশ্বরের পাঁটিশ্বি নিকুন্ত স্থাপিত। স্থানে নিকুন্তেশ্বর পুরারে বাঞ্জিত। সংগলের ক্ষিণেতে পঞ্চাক স্থাপিত। প্রভাকেন নাম লিজ সকলে পুজিত।। তার তুতেশর লিজ ভারভূত স্থিত। সভ্যানে ভিতর মারে আছে চমকিত।। তারে স্থানের স্থাপিলেক ক্রাক্ষ গণ্রাল। ক্রিলোচন, নিকটে বিরাজে পুণাভাল। ক্রমক নামেতে গণ বিশ্বেশ্বর স্থানে । দিকটে সুখতোগ নির্ভা মুক্তি পদ পায়।। লাজলীশ নামে নিক লাকলী স্থাপিত। বিশেষর উত্তরে আছরে সুপুঞ্জি।। দণ্ডপাণি নৈখাতে বিরাধ প্রতিষ্ঠিত। জাছমে বিরাধেশর লিক মুপুর্জিছ।। মুমুখ স্থাপিত মুমুখেশর আখ্যান। शिक्षा विषय निक श्रीम निष्य कान ॥ शिलिलिशना औरर्थ साम कति নির্নেতে। দেখিরা সে কুখেশর মুক্ত পাপহৈতে। আঘাটী স্থাপিত লিক আষটোশ নাম। আঘাটা পুর্ণিমান পুরা করি অমুপাম।। ভারভূতেখরের উত্তরে মনোহর। সকল পাতক নাশি মহাপুণ্য কর।। শুক্ল চতুর্দশী দিনে যাত্রা সমৎসরী। করিলে নিপ্পাপী হৈয়া বাস কাশীপুরি । কার্ত্তিক বলেন মুনি কর অবধান। কাশীতে সকল গণ করিল প্রস্থান।। নিজ নিজ নামে লিক্ষ করিয়া স্থাপন। কাশীতে থাকিয়া করে বিশেষ চিন্তন।। চিরকাল शंग रुह किरत नाहि आहरन। भूनत्रि विखायुक इहेला मरहरण।। কাহাকে পাঠালে কাশী প্ররুত্তি জানিবে। কেবা হেন বন্ধু আছে কাশী বার্ডা দিবে। যোগিনী আদিতা ত্রন্ধা আর যুত গণ। বাছড়িরা না আদিল ভারা কোন জন।। কাশীতে প্রবেশে মোর উদরে প্রবেশ। বিনির্গত নাহি তারে কথন নিঃশেষ।। কাশীতে সংস্থিতি আর লিকার্চন পর। মমলিক সাক্ষাতে জানহ সেই নর। কাশী কাশী সদা মুখে করে উচ্চারণ। ভাহার সকল বিশ্ব বিনাশে ভংকা।। সংসারেতে যত আর প্রমাতুর যার।। কাশীতে বিশ্রাম আসি করিবেক তারা।। কাশী নাম সংগাপান করে নিরস্কর मिकी। विशा भित्र इस मिहे नेता। मक्त सूल इ माज कुल उ कालिका। জিজগতে সার সহাপাতক নাশিক।।। কাশীর সহিমা গুণ জানিরা নিশ্চয় যোগিনী প্রভৃতি সব ক,শীপুরে রয়।। অন্য আদে সব আমা ছাড়া বাহি इन्नै। কাশীর গোঁবতে মোরে নাছি রাথে ভন্ন।। যে সকলে কাশীপুরী काँतल श्रादिण। जामात अक्त शरू नेव नवित्य ।। कांगी बाकि छाता त्यात करत जातायम। जामिय इक्षांच भूमई त्थति जात जम। देशन जाबि ভাকি কথা আনিল গণেশ। পাঠাইলা কাশীপুরী আপনে মহেশ।। পিছ আফা শিরে ধরি তবে লয়েদির। চলিলেন কাশী পুরী করি মহেশর।। अधिकानियांनी नीकानांच वक् मात्र। क्षांनीचंख ভाषाटक तिका माना-छाव ।। खकानश्च गर्माभदम खकानसम्बर्ग। शक्षशक जनादिए गर्मा ख कत्रक ।।

अप शटनदस्त काली सात्रमा।

পরার। কার্ত্তিক করেন শুন স্থনি ভপোধন। কছিব অপুর্বে কথা कहर अवन । सुरिक बाइटम अटब एन श्रकामन । प्राक्ति देशा अटब कहिन शमन । कामीह निकटि यहिंगा एन श्रन्थि। मानाट स्टेन, हुक खाका कारूकि।। श्रीकत्क नम एक पति कुनकाता। अवक्स मस्योगत मूर्णांचन गात्र । मुक्तम् वस्त्र वात्र भावा (भावा शाह्य)। शक्रकण मणीन युष्पिय्ना कति एकाँछ।।। अन्यकत आत्र प्रदक्ष शक्षिका सुरेता। कश्रादेहण कामी भूती अरवन कतिन ॥ वस्तिन करक कामी कहिया पर्नन । असीसहर গণপতি করিয়া ভ্রমণ।। তার পর নগর মধ্যেতে ভিক্র যায়। গৃহত্তের বাট্টি गव करमट्ड (वस्त्राप्त ।। क्लान मिम नश्रतमत्थाट्ड ब्रिक यहिता। एडाएड कट्ट कर कलाल स्विता।। किथि एव शक्षिका लिथि शुगमा करता। कार्य वा करहन उर अज्याद हन्।। करित वा करहन धार मृत्य अविभन्न। धाकतः মঞ্জ শনি শুক্র যে আছম।। শনিপ্রহ অবিচারে বক্র যে আছেন। গণনা कतिया चिक नकटल कट्टन।। भूषिक बाहरन दिन नामा मात्रा जाता। इस् নীতে সকলেরে দেখায় স্থপনে।। পরদিন গৃহত্তের বালী ছিজ যায়। খড়ি-পাতি স্বপ্ন কথা প্রতাক জানার।। গুরুদের কর্তারে করেন ভিতরে। শ্বেদ ताटब अञ्च जूमि (एथ क्षांत्रक्त ।। मीर्थ महत्तान्दत जूमि कांत्रशा शम्ब । জলমধ্যে বার বার হৈয়াছে প্রতন।। বার বার কুলে উঠ প্রযন্ত ক্রিয়া। णात शत श्रथमाधा शत्म हरेगा। **समक्**य यथ और खन महामिति। লোভিষেতে দেখিয়াহি আমি খড়ি পাভি।। সভা মিখা ভূমি সব কান व्यस्तद्रक । जामात्र व्यत्यरक कृषि कहिरद निकिरक ॥ अकारकरक वसनीत **७**नि यश्च कथा। मत्न मत्न अगञ्चन **जारन भूरकर्छ।। विज**नत्त एत्न जिल् क्टेन चित्रमा । नाना सिक् कृति नरव विभाग कृतन ।। शूत्रवानी चासः शृतः গিয়া ছিলবরে। মার মেই সলোমীত কংখন সহরে। মায়া করি বভিপাত্তি स्मिम्बाद्ध अम् । खूक खिक्का वर्षमान विक करा। अना शृहत्यत तामि করিয়া প্রমন। পুরু রাজের ইশ্ব কথা করে আলাপন।। তুমি কলা রক্ষ-नीटक (मर्विट्स स्थान । किंगांत शृद्दक धवा देशांटक शवन ।। थेकीशांकि दिनिकाम चन्न छान नम् । अकिमन अभवन कर्डा शकि दश।। **এই** मेड **ष्ट्रांत प्रश्न कथा।** नभन्न वानीटक कारम बानाय नर्कथा॥ कान गृहत्त्वत वाणि गृहिद्वा अञ्चादकः। नकरमद्र छाकि विकरत वर्णीभादकाः।

কাহাকে কহেন ভুমি কলা রক্ষীতে। যত স্থানে থিয়াছ কহিব সাক্ষাতে শেষ রাত্রে এক কন্যা হয় মুক্ত কেশ। বস্ত্র হীম অলক্ষার মুর্ত্তিভ বিশেষ।। কার্শীপুর হৈতে কন্যা রোদন করিতে। করিল গমন কালী প্রান্তর ভাগেতে। ইহাতে কুম্বপ্ন হয় কি কব ভোমার। লক্ষ্মীদেবী কাশী ছাড়ি স্থানাম্বরে যার।। আরু কোন গৃহস্কের বাটীতে যাইরা। স্বপ্লের যে কথা करह পश्चिका (मधिया ।। जुमि केला तजनीएक (मटबेह अभन । (मर मिन-রের চূড়া হৈয়াছে পতন। ইহা অতি অসকল রাজাঞ্জি হয়। রাজা ভঙ্গ इंटेरिक कहिन्नु निक्तन्त । ज्ञाननीर्क क्याबानी स्नन्न स्व स्वित्रा। अस्नक বসিল সবে একত্র হইরা।। ভারপরে ভিকরে ডাকিয়া জানিল। প্রণাম कतित्र। चिटक विनिवाद फिला। चिटक कटर कामाटमत खनर वहन। कर দেখি কেবা কোন দেখেছি স্থপন।। পঞ্জিকা দেখিয়া দ্বিক্ষ সৰাব গোচরে चार्यान (र कथा जारम कर्ट्सम मच्दर । किरान करह जुमि चरश मुख्य कम रेह्सा। द्वानर्न[®] कटत्र इं त्रक्षवेख एर शतित्रा।। काद्य वा क्रटहम ख**टश** एन स अंगलुव। शुकिनी शृषिनी हिल शृदश रैसरे नवन। कारत वा करहन जूमि শুনহ বচন। রজনীতে দেখিয়াছ স্থায়ে গ্রহণ।। তুমি দেখিয়াছ অপ্ল षिष्ठवत्र क्या भूक्षिण इहै एक अ्वी शक्तिक छेएत्र।। जना लाक श्रिक শ্বপ্ন কহে দ্বিজবর। ভূমি দেখিয়াই চন্দ্র ভূমির উপর।। মুই কেতু রজনী-তে হইয়া উদয়। ছুইজনৈ হোরতর যুদ্ধ ই পর্য়। বানরের ক্ষে কেহ कृषि व्याद्राहर । मिक्स भिट्राट एमहे कहुद्र समम्बा काद वा कटहन चार्त (मर्थ (चात्रकतः) लवग ममुस्य भटन कार्नाए। नगत्। व मकन चन्न দেখা কভু ভাল নয়।। ভান তাগে করিতে উচ্ছি বুক্ত হয়।। রজনীর স্বপ্ন कथा विज यूटन जानि। जिंह हमें कांत्र गर्द जमस्य मानि। बेहिक्टन क्रिजन मनदन दिए। श्रुक्ति क्रिजन क्रिजन क्रिजन क्रिजन क्रिजन मन्त्र निद्यारी हो श्रुक्ष एंड का । अधिमंत्र चेने देवें कि कब कथने ॥ नाम ক্ততি ভক্তিতে প্রণতি সবে করে। অন্তঃপুরে যায় ছিল আবারিত ভারে।। যত লোক করিতেছে কাশীপুরী বাস। **ভিতৰরে অভিশন্ন হইল বিশ্বাস।**। काक अवस्था ज्ञान विरामत वहरता। जना श्रीत साम्र देव देवना किहानेता । इন্তার্তি প্রকার বছ লোক ছাড়ে কালী। উত্তাত হইল রাজ্য হেন মনে বালি।। তার পর গণপতি চিত্ত উচাউনে। ছাল অভঃপুরে আমি যাইব ক্ষেত্রনা) সারা করি জিজবর চলিল সম্বরে। **সম্ভঃপুরে যাইতে কেহ** নিষেধ না করে।। অন্তঃপুরে গিয়া খিল ছইল উপনীত। রাণীগণ ভাকাণ

मिश्रिम हमकिए।। इके य उक्तान कर करिय किना एकि करि अनि করিল সর্বজন । বসিতে আসন দিল করিছা বতন। আশীর্বাদ अहि ভিল বসিল তৎক্ষণ।। আগমন কথা জানাইল দ্বিস্বরে। তার পর বিল বর ক্রহেন র্ম্বরে।। মনোগত কথা আমি পারি যে কহিতে। যে হৈছেছি गहा हत करित प्रतिष्ठ ॥ এত छनि हानीगा महस्राय दहेता अपने दे बि बचत कहिएक मानिन।। तागीनन सरपा अक हम भाषे तानी। कृति अवि খড়ীপাতি কহে দ্বিক বাণী।। ডুমিড মুখাপা বট রাজার অগ্রেডে। জীয়া टेश्टक भूर्व रमथ निम औं मारक ॥ ताका विक धीवा टेश्टक थूलि कर्र शह যতন করিয়া দিল গলাতে তোমার ।। জন্য এক রাণী প্রতি দ্বিলবর কয় 🕏 সপ্ত কম একণত পুত্র তব হয়।। ভার মধ্যে এক পুত্র সম্ব আব্রোহণে। ছুই মাস অঞ্জে পুজ হৈয়াছে নিধনে।। জন্ম কোন রাণী প্রতি ক্রেন সম্বরে কন্যা আহে শুন শুন ভোমার উদরে 🎼 আর এক রাণী প্রতি দ্বিক্রর বলে। পুর্বেতে সুভাগা ভূমি রাজার আছিলে।। পুনর্বার দিন কত গত হৈয়া পরে। ভূমি বড় প্রিয় হবে রাজার গোচরে।। অস্তঃশুর নিবানী যডেক नांतीश्व । विक्रवंद्र मकरमञ्ज मरनांशक करा। मंकरमध्क पूर्ण वर्ष देशम দিকবরে। বছধন আনি দিল দিজের গোচরে।। রুদ্ধ বিক্স বলে শুন আ মারি বচন। প্রতিপ্রত্ন আমি নাহি করিত কথন।। ভোমাদের মঙ্গল ইউক गर्जनाम । आगोर्जाम कति विम ७थ। इट्ट योग्ना उपशद्त नात्रीक्त मिलि मकदलटा विकरत मान खन कदश्म मही है। लीलावकी मार्ट्सिक রাজার প্রিয় রাণী। রাজ অত্যে কহে ছিলবরের কাহিনী। রুদ্ধ যে আফাণ णांनि हिन असः भूरत्। প্রভাতে অরুণ क्रिनि द्विन करलवरत्।। कर्ण छए। বর্ষমতে রুজ বেই হয়। বিশেষ করিয়া রাণী রাজা এতি কয়।। এত শুনি রাজা আজা করিল ভৎকণ। আনার জয়োতে দ্বিল আন এইক্রণ।। পরি-চার এক अभ নিকটে আছিল। ভাজণে আদিতে আঞা রাজা যে করিল।। নগরমধ্যেতে যায় আত্মা অনুসারে। লইয়া চলিল ছিলে রাজার গোচরে।। पृद्रति क्विता तांका विकास कार्य। तक्क रहेन वर्ष माम देवता सूची ॥ कटमं कटमं विवयंत्र निक्र हे होता । हुई होति शम नृश अधारामी शब्द ॥ मध नात देशा शद्छ शुथिनी फेश्रद्ध। अगम कतिया ताक किएक छन करत । किकदत द्वमताका खेळाति वहन । ताका अकि जामीकाम करत रुष्टे मन । मधुशक इंड्यानिट्ड बिटबटत श्रुबिल । दिनग्र कतित तांका কহিতে লাগিল।। তোমার যে ৰূপ গুণ যতেক শুনির। তভোধিক হৈতে

আদি সাক্ষাতে দেখিলু। ভূতভবিষ্যৎ বৰ্ত্তমান মত কথা। কহিবারে শক্তি क्ष्य आहरत मर्स्था। दिव बर्ग छन नृश कति निर्देशन। दिनारिय ण्डद्र कानि **एष्ट्र** विवतन । हिन्द्रशांन ताका वटल बिट्यत शाह्द्र । कान ক্র করিয়াছি কহত সামারে।। একণেবা কোন কুর্ম করিতেছি आप्रि। कृषा कवि अत कथा कहिरत ए जूमि॥, अञ अनि विकरत ভূমে খড়ী পাতি। বিশেষিয়া সৰ কথা কছে নৃপ প্রতি॥ শুন निवनाम दोका व्यामात वहन। कामात मनान दोका ना (मधि कथन।। যত রাজা হইয়াছে পৃথিবী মণ্ডলে। তব সম রাজা নাহি হয় কোনকালে।। भन्म भाग्राम् कृषि एक स्मा नम। निरुद्धेत भानन कर क्रिके अकि यम।। চন্দ্র অনি মুখ জবু অমৃত বচন। তব বাকা বোধ হয় অমৃত সেচন। পালন করিছ প্রজা পুজারিক জানি। তোমার বংশতে রাজা পুর্নিত অবনি। ইত্রের ঐথবা জিনি ভোমার বাখ্যা। তব গৃহহ ক্মুলা আপুনি অধিষ্ঠান। मान क्षान भुग कथा छत् बुखुरंब्रस्थ । देश विश्वना अथी नाहि खर हिट्छ ॥ রাকরাণীর যত পুঞ্জ কন্যা যত ছিল। প্রভয়ক্ষতে বিস্তারিত সুকলি কহিল।। ভুত ভবিষাৎ, জার বলে বর্ত্তমানে। বছতর কহে ছিল রাজা সরিধানে।। শুনিরা যে নৃপবর বিশাম হইস। ভক্তি করি দ্বিদ্ধরে প্রস্তাব করিল।। প্রন দ্বিক্ষ আমি এক করি নিবেদন। নানা সুখভোগ আমি করি অনুক্ষণ।। ভথাপিছ চিত্ত মোর সৰা উৎক্ষিত। কহ দ্বিজ্বর তুমি একি বিপরীত।। পঞ্জিক। দেখিরা দ্বিজ কহেন সম্বর। অন্ত দিন হৈতে প্রফীদশের ভিতর।। উত্তর ছইতে এক ও জুল আসিবে। সেই সৰ বিৰরণ ভোমারে কহিবে।। ्य कहिरत जूमि जाश कदिरत् गर्सथा। कमाहिक जुङ्गारक मा कदिरत क्रमाथा । जिन्हां न दाका जिक् चाका नित्तर्यति। जिल्लाहे नित्तम धन तक यञ्च कति।। ताबा-ताभी मटर प्राल ध्राभा कतिल्। जाभीसी ए कति जिल विनात्र रहेन ॥ काशीवात्री नज़द्दर क्यक लाक्षिन। त्रमापत कति चिक्रस्त ব্যাইল। তার পর গণপতি আনন্দিত মন। পিছু আন্তা রুত কার্য্য হইল नाथम ।। पिरमान ताला माहि हिट्लम यगटन । शहरदम्ब अविमूर्खि हिल व्य (यन्त्रात्म।। त्महे नद न्यादन त्मव हहेगा के किए। कामी श्रेती बहिद्दनन दिस्त वज्ञीकः। पिरान्त बाजा विदेश स्ट्रेन िक्कि। अञ्चीपम जिन कदा स्दर উপস্থিত।। ফাশীপুরে মারা প্রকাশির রন্ধানন। হর্তপঞ্চ অধ্যার কথা टेक्न ममालम ।।

পায়ার। অগত্য ক্রেন শুল দেব বভানন। কোনহ মূর্ত্তি ধরে সুবিক बाह्म।। कि कातरन चिनि इंटरणन बङ्कान । कानी भूवी थाकि जिल्लिक কার্য্য করম। কোমং নাম ধরি রহে কাশীপুরে। বিভারিত করি ক্রেব কহিবে আমারে।। কার্ডিক কর্ছেন পরে মুনিবর প্রক্রি। বিস্তারিরা ক্রি শুনহ মহামতি।। ষষ্ঠ পঞ্চাশত মূর্ত্তি কাশীতে আছিব। গেই নব স্থানে दनव छेनम् इट्टेल ।। **अथरमण्ड नमानिव**्यानि कानीनुद्रम् । मकन करनद्री স্তৰ করে বছতরে। গণেশের স্তবে উপস্থিত প্রসঙ্গেরে। কাশীপুর অবি भन कथा पूक्तारथ।। भक्तत हरेटक विदेशाक गटक्यत। कानी भूरो गर्मे নেতে হইল ডৎপর।। দিবদাস হইরাছে কাশী উপভূক। সে সকল বারে वान नर्ट छेलबुक म कांगीनाथ विश्वकर्या श्रांक वाका करत । वाकि नीव করি তুমি যাহ কাশীপুরে।। যে সকল সন্দির আহমে স্থানে স্থান। ভাইন ভার্কি পুনর্কার করহ নির্মাণ।। এছঙ্খনি বিশ্বকর্মা করিক গমন। কাশীতে याहेशा नव कतिल ७३ मा भूमति नव भूती मिर्माण कतिले । भूम देशक कामी भूती खेळ्ळूल कतिला। विश्वकर्मा विश्वमार्थ भव निर्देशिया। वर्ष्यस्य প্রস্থান করে হর্যবুক্ত হৈয়া।। আনন্দ কাননে আইসে দেব পঞ্চানন। ভূগ वरी विकू बन्ना जानि स्वतंत्र।। हेस वस द्वा शामि कूरवंत वजन । माहे লেন নন্দীভূক্তি যত ক্লব্ৰগণ।। সমকাদি সৰ্ব্য ঋষি মুণিগণ যত 🔻 ফণীক্লাদি সিদ্ধাচর আর যার কড।। গল্পক অপ্সরাগণ বিদ্যাধর জাদ। বড়েক **छिलन मटक माहिक भविष्ठि। मक्टलटत मटक कित्रिक कि प्राही । किम्ही** পूती जामि ज्ञात शर्भरमं गाति ॥ छन करत बिधिमरक भरकछ देरिकरत । **छत मम श्रिष्ठ भूख मारिक मश्माद्य ॥ अविद्युट्क आनि आमि मा हिन**् উপান্ন। তব যোগে সর্ক বিশ্ব নাশন্নে নিশ্চর ॥ যেই পুঁজে পিতৃকার্ব্য করেন উদ্ধার। ভাহার সমান পুঞ্জ নাহিক সংসার। বিধি বিষ্ণু দেবগণ कररे मृज्यक्षत्र । शर्रात्मत जूना नाहि कहिन निन्छत्।। विद्यमीर्भ मेर्टीन्व করি আলিক্ষ। পরে গণেশেরে প্রথমিল স্র্রিক্ষ।। তদন্তরে জগমাখ कटरून मचत्र। हु श्री क्षत नाम देश्य विजनाम कत्र।। वातागरी कामित्यक नत्र (य गकन । **कार्या कर शूका विद्य गकन विक्रम ।। मिस्रे नाष्ट्र शूक्य** माना স্পঞ্জি হল্পন। পুজিবেক ভক্তি করি অত্তৈ তব স্থান।। ভার পর বিশ্বেষর श्रुकिरतक आणि। विश्वनारेण श्रुका विना नव मिथा मामि॥ छमशदत पृष्टी प्राप्त निय करत छन। यक्षे तर्गना करत (प्राप्त खरनगर।।

্ৰতিপদী। 🖰 জুমি সৰ্ক্ষ হিম্ম কৰ্জা, সকলের স্থূল বাৰ্ডা, সকল মঙ্গলকর 🚁 ার্কেশ্বর হও তুমি, জগতের বট সামী, ওগাতীত ওগ বুক্ত ময়।। জার কতি তব তত্ত্ব পঞ্চল অন্তরে ব্যক্ত, যোগীগুণে ধারিন নাহি পার। অফীক ্ধানের দার, অনব আত্মক পর, সৃষ্টি সিংহার করর। তবাজায় বিশু ার ঠান জ্রন্ধা হয় বেদ বিভা, আমি তব মতে নাশ করি। পার্বভী হৃদয়ানলঃ मर्न कीरत जात्स वृष्णे, मर्क विश्व विमाणक छति ।। धर्वेक्ट्रा श्वव श्व कृत, श्वव ফরে **ইভ**ক্ত, বর্ণনে **পুস্তক র**িদ্ধ হয়। কাশীপুর মাঝে বাস, যথাৎ বিস্ন নাশ, গণগতি আছেন উদয়।। অবিমুক্ত অন্ত দিগে, পঞ্চকোশী সর্ব ভালে, ফানের গণেশ বিভার। গণপতি পাশ পাণি, উত্তরে বিরাজ জানি, বিকট দত্ত গণপতি আর ॥ তদন্তরে বিশ্বরাজ, দণ্ডহন্ত মুবরাজ, গজ বিনা য়ক আর হয়। স্থুল জন্ন গণপতি, জান বিনায়ক গতি, উত্তরেতে ক্রমে সপ্ত রয় ।। নৈপ্রতিত বরুণা গঙ্গা, ক্রমে গঙ্গা স্কুতরঙ্গা, কার্ত্তিক বলেন অভঃপর। ভতি ্থার্ক অঞ্রগন্ত, গণপতি রাজসূত্র, বরদ গণেশ তার পর।। পিচিণ্ডিল গঞ্জানন,কাল বিশ্ব বিনাশন,মঞ্চল গণেশ বিবরণ। বিশ্বেশ আখ্যান ছারে, ্পুর্বেষ মম বলেয়।রে,প্রথমেতে সিদ্ধি গজানন।। প্রণব গণেশ পরে,মোদক ্রিরর অন্তরে,আরবাজনুত্তরেগণেশ। মাগেশ গণেশরার,মারিক্রি বিশ্বকার অবিমুক্তগণেশবিংশব।। **অগ্নিকো**ণেক্রমাগভ,অসীগঙ্গাবিরাজিভ,সন্মুত্থতে ভাক বিনারক। লখে। পর পর ভার, বক্রভুগু সর্বব সার, অভয়দ গণেশ নায়ক।। স্থল দক্ত গজপতি, আশা বিনায়ক স্থিতি, মোদক গণেশ চনৎ-বিষয়। দক্ষিণেতে ছুর্গ বিষয়, কুটদন্ত অভি তীক্ল, একদন্ত গণেশ সন্থর।। সিংহতুও বিমনাশ, কলিপ্রিয় পার ভাষ, চুপ্তীদেব বড়ই সুন্দর। প্রমন गरनम **७७, रेन ५ ट्रंट छोम ५७, मानक हे** गरनम मचत्।। जिसूथ गरनम रफ, क्लिकाक लासामन, हर्कुक्छ यक विमानक। लाखामन शार्वाचन, পশ্চিমে ভাহার ঘর, দেহলিশ নাম সর্বাক্ষক॥ কুক্ষাপ্ত গণেশ জার, পঞ্ स्रवं वृष्ठ सात, भारत किथ अनम शर्मस । चित्रु श्र सर्गम दम्, शक्क ने माम কর, শেষ সাক্ষী গ্রহণশ বিশেষ॥ বায়ুকোণে পরে ভার, উর্ত্তও গ্রেশ সার, গুও গণপতি সুপ্রকাশ। হেরম গণেশ মৃত্তি, চিন্তা মুনিবর শক্তি, জার্চ श्वापित अखनाम ।। किछ मुख नाम धन्न, निक्ति शटपश्चन वन्न, व सर्ट्याट वर्षे शक्षानक कानी मर्या विवासम, गर्स वित्र विनामम, कक्क नारम शराम সভত। ভগীরথ সংপ্রজভ, হরিশ্লম্র প্রভিতিত, কপোন্ধীর বেই গণপতি। कामीत्कत्व वितासम्, पर्वतिष विश्व कम्, ए श्रीतीय माराया विश्व शिवा

মঙ্গলে চতুর্থী ভিষি, যেবা পুজে গণপতি, তার ফল সর্ক বিশ্বনাপ্রে। চতুর্থীতে পুজে যেবা, তার ফল কহে কেবা, সদা স্থাই হয় অবশেষে। নামে শুক্র চতুর্থীতে, ত্রতী থাকে নক্ত ত্রতে, বার্নীকাদি যাত্রা আর করে। শুক্র তিল লাড় দেয়, শুকু ভিলে হোম হয়, দুণ্ডী রাজ ক্তর পাঠ করে। সপ্র জন্ম পাপ যত, ন শ হয় বিশেষতঃ, দর্ব সিন্ধী অনায়াদে হয়। আরি কহি শুন মুনি, বিশ্বনাশ পুজে যিনি, তার মুক্তি অক্তেতে নিশ্চয়। মক্ত পঞ্চাশ অধ্যায়, গণেশ সাহাত্মা তার, সমাগু হইল সমুদয়। পাঠ কিমা যেবা শুনে, রিশ্বনাশ বিষরণে, নক্ষ কর্মা নিদ্ধি তার হয়। গণেশের ক্বত কার্যা, আনি শিব কাশী রাজ্যা, গণেশ বন্দনা অগ্রে করি। পরে বিষ্ণু আহি মুক্তা, আনিবেন শিব উক্তা, দিবদাস রাজ্য হরে হরি। অবশেষে হর-গোরী, মন্দর হৈতে সন্থিন, কালীপুরে আনিবেন পরে। সীতানাথ বস্কুলাসে, তাক্ষ পদ আশে, ভাষায়ভাষিল নিরস্তরে।।

--31816--

অথ কাশীভে বিষ্ণুর জাগমন।

পরার। তাগন্তা কহেন শুন দেব ঘড়ানন। তবপদে আমি যাহা ক্রি নিবেদন।। তব মুখ বাণী হর অমৃত সেচন। শুনিকে সভত ইফা হয় মম্ মন।। দেব গজানন রহিলেন কাশীপুরে। কি করিল গঞানন পাকি অভি দুরে।। কার্ত্তিক কহেন শুন মুন তপোধন। মন্দরেতে সদাশিব উৎক্ষিত্ত্ মন।। গণপতি কথা শিব জানিয়া অন্তরে। সলাথে ছিলেন বিফ্ দৃষ্টি হয় তাঁরে।। সন্মানেতে বিফু প্রতি কহেন শক্ষর। সকল নৃত্তীন্ত তব আছয়ে গোচর।। ঘোগনী প্রভৃতি গণেশেরে গাঠাইল। কেই ফিরে না আসিল কাশীতে রহিল।। তুমি যদি মম কার্য্য করহ সাধন। তবে দেখি হৈতে পারে তাপ বিমোচন।। এত শুনি নারায়ণ সন্মুখে দান্তার। তব কার্য্য সাধনের করিব উপার।। আর শুন জগলাথ করি নিবেদন। সকলের মূলপ্রত্ম আপনি ঘেহন।। কর্ম যারে কহে গতি শক্তি নাহি কভু। কর্মকর্ত্তি। কেহ নাহি ভোমা বিনে প্রভু। করণ কারণ তুমি হও ভুতনাথ। সৃষ্টি ভিতি প্রলম্বেতে তুমি সর্কা নাথ।। আমাকে করিলে কর কর্মের সাধন। তব রূপা না ইইলে কে হর ভাজন।। যে জন ভোমারে স্মরি যে যেন্ডানে যায়। গর্মক্র্যা

गंबरफ्टफ चार्रताहर कतिया बीहति ।। नवीवर्षक नमानत्म देहता करी यन । पूँगः भूमः ध्वेनाम कतिल नावाम्। छव कति नाताम् जुडनाट्य कम। ভব কার্য্য সিদ্ধি যেন আমা হৈছে ইয়। আর নিবেদন করি ভন ত্রিলো-চন । কাশী যাইবার দিন দেখা আপন।। পুনর্কার নারায়ণে কছেন মহেশ कार्यो पाइवात जिन करित्व विरामवा। यि पितन भगन करत तम पिन छेखम । জাল মন্দ দিন দেখা মানদের ভ্রম।। তদপরে নারায়ণ গমন ছুরিত। কাশীপুরি মধ্যে এড় হৈল উপ্নীত ॥ আসি বরুণাতে গঙ্গা মিলিভ যথায় শেই স্থানে চক্রপাণি হইল উদয় ।। তথা হস্ত পদ বিষু ধৌত যে করিল। अम्बनि शादनानक छीर्य मांग देश्य ॥ शादनानक छीदर्थ व्यवा साम श्रुका করি। তর্পণ করুয়ে তিল মিজিত যে বারি।। ভজিভাবে পিগুদান যে জন করম। তাহার ত্রিগপ্ত কুল সমুদ্ধার হয়।। পাদোদক ভীর্থ জল গণ্ডধেক খায়। শালগ্রামামৃত পান কলাধিক পায়। খরা বাাধি নাহি ভার হয় কোনকালে। নানাসুখভোগী হৈয়া থাকেন কুশলে॥ পরে মণিকর্ণি ভবে সলক্ষীক স্থান। পাষাণেতে নিজ মূর্ত্তি করিল নির্মাণ । বরুণা পশ্চিমভাগে কপিল স্থাপন। খ্রীঅ'দি কেশব আখ্যা হইল তথন।। শ্বেডমীপ খাত তথা করি ভগবান। ক্ষীরোদসমুদ্রে কৈল বিয়াবিত স্থান।। সেই স্থানে যেই জনে প্রজাদি করর। পিতৃলোক সহ তার স্বর্গে বাস হর। কীরোদা দক্ষিণে শস্ত তীর্থ যে উত্তম। করবে তর্পণ যেবা করিয়া নিয়ম।। পিতৃ-লোকে অনায়ানে বিকুলোকে পায়। তাহার দক্ষিণে চক্রতীর্থ বিরাজয়॥ কাশীপুরি বছ ভীর্ণ আছে এ প্রকারে। বলিয়া বৈষ্ণব ভীর্ব যোজন সং-হারে।। সেই সর ভীর্থে ক্রেমে অংশে নারারণ। কেশব নামেতে মূর্তি করিল স্থাপন ॥ প্রভোকে তাহার সব বর্ণনা করিব। বিস্তার করিয়া ভাহা পরেতে কহিব।।

অথ বৌদ্ধনত প্রচার।

পরার। ধর্মকেত্রে বিষ্ণু লীলা প্রচার করিলা। বৌশ্ব অবভার হৈরা প্রেকাশ হইলা।। কাশীপুরে এক পুরী করিরা তৎক্ষণে। লক্ষী সহ নারারণ রহে সেই ভাবে।। পুণা কীন্তি নাম দেব ধারণ করিল। বিজ্ঞানকৌমুদী নাম লক্ষীর হইল।। গলভের হৈল তথা বিনর্কীন্তি নাম। শিখাকপে গলভ সন্মুখে অধিষ্ঠান।। পুণা কীন্তি গ্রন্থ হৈল স্বয়ং নারারণ। গল সন্মু

र्थर्ड निया थारक नर्सकत ।। श्रद्धत निकटी भाञ्च जाराम्न कट्टा । श्रूनकन् थ्यकारत इहेल घरत घरत।। अस्तक इहेल भिषा भाग अधायता। <u>विक्रिय</u>क শাস্ত্র কথা সদা আলাপনে।। জিজ্ঞাসে, বিনয় কীন্তি পুণ্যকীন্তি স্থারে। ষে রূপেতে ধর্ম হয় সংসার মোচনে ॥ পুণাকীতি বলে শিষ্য শুনহ ৰছন। বিশেষ করিয়া আমি কহি বিবরণ।। সংসার অনান্দি সিদ্ধি উপস্থিত হয়। আপনি মিলর যোগ জপেক। না হয়।। বিধি আদি যত জীব একাও মধ্যেতে। আত্মা এক ছুইনহে আছে বিচারেতে । ব্রন্ধা আদি কোটি সর काटल लग्न इस। विष्ठादस्य दम्हि किष्टू अधिक ना इस।। आधार देमशुन নিত্রা ভয় সর্বক্ষণ। দেহ মাত্র ধরে জীব ন্মান কারণ।। কর্ম মানে कोवहिश्मा अकात्र इत। अहिश्मा भूतम धर्म भाजमहरू कम्।। यनि कर्म বলে লোক হিংসা আচরয়। ভোগাভোগ দেহ বন্ধ মোচন না হয়। আশ্চর্য্য দেখহ এক অতি চমৎকার। ব্রহ্মার মুখেতে বিপ্র ক্ষত্র ভুকে আর।। উকুতে বৈভোৱ জন্ম পদে খুদ্রে হর। গারি পুক্ত ভিন্নং ক্রমে হীন কায়।। এমত উত্তম নহে দেখ বিচারেতে। একোন্তব চারি জন মূান কোন্মতে।। ছোট বড় সব দেখ সৰ্বত্ৰ সমান । ইহা ভিন্ন ভাব নহে শাস্ত্ৰের প্রমাণ।। একপে অনেক মতে কহেদ গ্রুত্ত। বৌদ্ধমত সভত যে আলাপন করে।। यक भिया এই भाज करत भागाभन। नकरमत रवीक्रमक देशन भागतन।। মহানায়া লক্ষ্মী দেবী উদ্বোগ কারিণী। ভগবান কর্মকর্ত্তী হয়েন আপনি লক্ষ্মীদেরী কাশীপুরে মায়া প্রকাশর। নারীগণ স্থাসি স্ব যথাতে মিল্য ॥ विकान को मुनी विकारिक कति क्या नातीयरा वोद्याप नीकि निका इस न्नानमान कीर्थ (यदा करत भर्याक्रेन। दृशा कान त्म मक्ल पूर्ध्यंत्र कात्र ।। এক ধর্ম আছে এই সর্ব্ধ সারৎসার। তেবল জানিবে মাত্র পর উপতার ।। যে যাহা যাচিক। করয়ে যার প্রতি। করিবেক উপকার যার যে শক্তি ॥ यमि दक्ष भारीत याहिका कति नम्र। छोशादि अवश्य मिटन अहे धर्म इम्र म বিজ্ঞানকোমুদী আকর্ষণ করি সব। বৌদ্ধমত কাশীতে করিল সমুছব। কাশীপুরী নিবাসী যতেক লোক ছিল। পূর্ব হৈতে সকলের মডিজ্রতী হৈল कामीश्रुती निवामीत अनीजि (मर्थित । शदत मिबमान हिन्त भनिन रहेन। রাজ্যভোগ কিবা কুখ সভত চিন্তিত। কিব্রপেকে রাজ্যভাগি স্ইবে प्रतिष्ठ ॥ श्राटक क्रियाहिल अधीरण पित्न । श्रृष्ट्रक खोक्ता अक प्रामित्व জুৰনে।। দেখি তালা গত হয় ভাবিত রাজন। কডু মিথ্যা নহে সেই ব্রাক্ষণ

বচ্ছ। হাত্রগানী ভগবান সকলি গোচর।রাক্সভ্যাগ দিবদাসের হইয়াছে অন্তর

ष्यर्थ पिराटन्त्र निकीन ।

পদার। বৃদ্ধ যে ভালাণ কপ হৈয়া নারায়ণ। দিবদাস পুরী প্রতি कतिल शमन।। इक विकासिश ताका आनिष्मिक देशल। शामा अर्घा मित्रा ্রা**জা বসিবারে** দিল।। **অফাজে** প্রকাম করে বুড়ি ছাই করে। গলাতে বসন দিয়া স্তব করে পরে। তব মূর্ত্তি দিখি জিজ ইবে নারায়ণ। আমার মনের বাঞ্ছা করহ পুরণ।। শরীরাদি সুখত্বংখ সকল মারার। পুত্ত পৌত্র কগতাদি রাজ্য ভোগ অরি। তাবত ছায়ার ন্যায় যায় পুনঃ হয়। অতএব নিবেদন করি মহাশঃ। যাহাতে নির্ত্ত দেহ হয় ছিজবর। হেন মোরে উপদেশ করহ সম্বর । পুর্বেতে গণক মুখে শুনেছি বচন। রুদ্ধ ভিজ আদিয়া কহিবে বিবরণ।। অতথা প্রস্কু তব হৈল অধিষ্ঠান। কিব্রপে নিস্তার হবে কহ বিজ্ঞমান।। ছিজবর কংহ কথা রাজার গোচরে। তব সম পুণাশীল নাহিক সংগারে। যে প্রকারে রাজ্যভোগ করিলে আপনি। তব তুল্য অন্য রাজা माहि Ce वि एकि।। व्युनाथ गम एक अकात शालन। तांकर्षि शान मरधा তে নার গণন।। আমি কিবা উপদেশ দিব তব স্থানে। সকল কহিলে ভূমি শুনি বিদ্যমানে।। পণ্ডিত জনের যার জ্ঞান উপচয়। আপনে আপন। कारन जकन विवस ।। शास श्विषवत करन् खन क्रिकाम। धन्ताविध मशुक्रिय জানিবে নির্যাস ॥ তব তরপানলে ভূষ্ট জাছে ভগবান । স্বশরীরে বিশ্বনাথে হইবে নিকাণ। হেন বাক্য শুনি দিবদাস মহামতি। অফীঙ্গে প্রণান করে দ্বিজ্বর প্রতি।। বাঞ্জা যাহা ছিল মোর সংসার ভিতরে। কুতার্থ হইলাম প্রভু তব রূপাবরে।। অমুল্য যে বছু রক্ত ছিল্পবরে দিল। বিদায় করিয়া নুপ চিক্তিত হইল।। পুরসাসী আত্মগণ আছিল যতেক। পঞ্চশত পুত্র আর शक्री (य अपनक।। मकरलार्य एकि। हेम्रा कानिन वास्त्रन। मश्रुपिन वृद्धांख কহিল ততক্ষণ।। ভদ্পরে যত ধন ছিল ভাঙারেতে। কম্পাত্র হৈয়া দান করিন জরিতে।। দিবধাস রাজা পুত্র পত্নীগণ লৈয়া। **দাক্ষায়ন রাজগৃ**হে উপ্রবিল ভিরা।। জ্যেষ্ঠ পুজে সেই দেশে রাজস্ব করিল। আর সব পুজ্বগণ उथां के ताथित।। श्रांत कित्रमाय हाका नातांगती स्वामि। निवस मित्रम मिन्दिनिकां एक वित्रि। विव्कु छिन्दिन् निवनात्र मिक्सान। अन्दिम्ब

শিবলিক্ষ করিল স্থাপন।। শুদপরে দিবদান মহাযোগ ধরি। বিশেশর ধান করে চিত্ত শুদ্ধ করি। হেনকালে সেই স্থানে দিবা রথ আইনে। ক্ষত্রগণ শিবমুন্তি ধরির। বিশেশে।। দেবকলা শতং চামর হস্তেতে। শতি শীঘ্র আদি দিবদাসের সাক্ষাতে॥ শ্বশরীরে দিবদাসের রথে জুলি লয়। তদন্তরে দিবদাস শিবমূন্তি হয়॥ এইকপে দিবদাস নির্দাণ হইল। শতংপরে মুনি শুন বৌদ্ধ যে করিল।। দিবদাস রক্তান্ত যে শিব সন্ধিদানে। গরুত্বের কহি সব পাঠায় মারায়ণে।। পরে পঞ্চনদ তীর্থে বাস্কদের ঘার। সর্বতীর্থ সার জানি বিরাজে তথায়।। কাশীখণ্ড দিবদাস আখ্যাম বিস্তারে সমুত্র সদৃশ কেবা বর্ণবারে গারে। সীতানাথ বস্থু দীন আন দীন অতি। ইহার বর্ণনা কৈল আছমে যে শক্তি। প্রস্কানন্দ অনুকূল দীনপ্রতি হৈল। কিঞ্চিৎ রচনা তবে ভাষাতে করিল।। এই অধ্যায় পাঠ যেবা করমে প্রবণ। জনায়াসে মুক্ত হয় বেদের বচন।। অইপঞ্চাশ অধ্যায় যে সমান্য হইল। এমতে সপ্তম সর্গ বর্ণনা করিল।।

ইতি জ্বীকাশীগুণ্ডে দিবদাস রাজার বিবরণ অন্ত প্রধাশ অধ্যায় ও সপ্তম দর্গ নামঃ সমাপ্তঃ।

चाय शक्षमञ्जी छीर्र कथन जवर सूरलांहमा छेशांचान ।

পরার। কার্ত্তিকের প্রতি কছে মুনিভপোধন। পঞ্চনদী ভীর্থেভে রহিল নারারণ।। বিশেষ করিয়া কহ প্রভূ বড়ানন। অসত অধিক স্বান্ত ভোষার বছন।। গুহ কছে শুন কুন্তু সুভ মুনিবর। পঞ্চনদী সমভীর্থ না দেখি সন্থর ।। ভীর্থাক্র প্রয়াসেতে কার্ত্তিক মাসেতে । স্লান করে যেই নরে विवि विधानिए।। मर्क्सभार्य पूछ इत्र कानिह निन्छत् । छीर्थताका चामि शक्षन दम सुक्क इत्र ॥ कीटहाटनत कटछे द्वनियत सुनिवत । नमापि त्यादगटक তপ করে ছোরতর ।। একদিন সেই পথে স্থতিরে অপ্সর। ভ্রমণ করেন দেবী অভি মনোহরা॥ মুনির নিকটে দেবী ছলে উপস্থিত। অপ্নর। দেখিয়া মুনি চিন্ত বিচলিত।। দৈবাধীন মুনি শুক্র হইল পতন। ভাষা দেখি অপ্সরা ভাষিত হৈল মন।। যোভ্তত করি মুনি সমূবে দাণ্ডার। **অপরাধ ক্**যা কর মুনি মহাকায়।। অপ্ররা করুণা শুনি মুনি তপোধন। অপরাধ নাহি তব শুনহ বচন।। উদ্যোগ করিয়া যেবা তপ ভঙ্গ করে। ভাষাকে আমর। শাপি জানহ সম্বরে॥ অনারাসে যোগস্থানে যদি কেহ थ। हैरम । स्वान जरक भाभ नाहि अन्द विरमस्य ।। किन्न अक कथा कहि শুনহ নিশ্র। তপস্বীর অমোঘ ডেজ বার্থ নাহি হয়।। এই তেজ তুমি শীও করহ গ্রহণ। কদাচ ইহাতে নাহি কর অন্য মন।। মুনি বাক্য অপুসরা যে করিখা গ্রহণ। যে আজা বলিয়া তেজ করিল ধারন।। দশমাস দশদিনে कना। अविविध । जाश्यक्ष सुनित शास्त्र । यह कना। पिल ॥ श्रश्नात ज्ञश्नात শেষে করিল গমন। মুনিবর কন্যা প্রাইয়া অতি হৃষ্ট মন।। হরিণীর তুষ দিয়া পালন কর্য। দিনে দিনে বাড়ে কন্যা মুনির আলয়।। নাম রাখি सूरमाठना करतन आएत्। तक्षः क्रम देश्य जात्र अक्षेम वर्गत ॥ सूनि पिथि विवादश्त काल छेशिष्ट्ठ। कारत कना। पिव विका मर्खमा हिस्किछ।। अकपिन क्नारिक कटरन मूनियत। काशांक कांत्र मान कर्ष मच्च ॥ कना। यटन শুন পিতা করি নিবেদন। সকলের শ্রেষ্ঠ হবে ধর্মা পরায়ণ।। এমত বরেরে দান করিবে জাপনে। এইত প্রার্থনা পিতা কহি তব স্থানে।। জন্যা বাকা শুনি মুনি ধ্যান যে করয়। খানেতে জানিল মুনি ধর্মবর হয়।। ভদপরে कमा अधि करह छरशाधन। यह वरत हैका छव रेहतारह मनन॥ नरश এণে এই বর নাহি পাওয়া যায়। এমত মনোঞ্চ বর পাইবে কোথার।। তপস্তা থাকিলে ইহা মিলয়ে সত্তর। ইহা শুনি পরে কন্যা চিত্তিত অন্তর।

পরে সুলোচমা পিতৃ আঞা যে লইয়া। তপদ্য করয়ে জন্মা কাশীতে ষাইয়া।। অভিশয় ঘোর তপ আরম্ভ করিল। পঞ্চতপা করি কনা স্বকর্ম সাধিল।। ভদপরে কন্যা প্রতি ব্রহ্মা আসি কর। প্রার্থনা করহ বর যাই। है छा इत्र ॥ कना। वल अन अष्ट्रं कति निरवसन । जमा वत आर्थनार अस्ति ह মোর মন।। ধর্ম পরায়ণ ছবে সকলের শ্রেষ্ঠ। এই ববে বিভা হয় এই মনো ভিষ্ঠ।। পর উপকারী হবে কাশীপুরে বাস । ইহাত হইলে ছন্ন মানস উল্লাস।। তথাস্ত বলিয়া ব্ৰহ্মা বিদায় হইল। ক্ৰমা আসি পিতা স্থানে প্রণাম করিল।। কত দিন পরে ধর্ম কন্যা স্থানে আসি। আমাকে বরছ ভূমি শুনহ ৰূপসী।। ভদপরে সুলোচনা কহিল দত্মর। পিডা হানে ৰলে जरव **উচ্চিত ই**হার।। शूमर्थर्याताच वटल छन्छ वहन । शक्षर्य विवास चारहं মনের মিলন।। হেন বাকা শুনি কনা। কোপাবিষ্ট হৈল। অক্সেণ কথা কেন পুনঃ হবল।। কন্যা দান করিবেন মানদ পিতার। ইহাতে অন্তাথ। कता मिक प्राटहकात ॥ श्रेनकीत धर्म करह खनह वहन । शक्कर्स विवाह মত কর আচরণ।। এত শুনি কন্যার হইল ক্রোধ মন। ধর্মরাজ প্রতি শাপ দিলেন তৎক্ষণ। জল হৈয়া সদা কাল করহ যাপন্। কন্যা শাপ শুনি ধর্ম ब्हु ब देश्य मन। धर्महाब कमा श्रिक कालिक चन्नुत। मोना श्रव कमा ভূমি থাকিবে সন্থর।। শাপ গুনি কন্যা চবে পিতা ভানে যার। রোদন করিয়া সব রুত্তান্ত জানায়।। বেদশিরা মুনিপরে গ্রানেতে জানিকা-ধর্ম্ম মহাশর তথা স্থাপনি আদিল।। তদপরে কন্যাকে কহেন মুনিবর। চিস্কা নাহি চন্দ্রকান্ত হবে শিলাপর।। চন্দ্রের রুলিতে দ্রুব হইবে যে ভূমি। কাশী ক্ষেত্রে ধর্ম সহ মিলিবে আপুনি । তব মনোনীত বর ধর্শরাজ হন চ ছলনাতে তব সক্ষে হইবে দৰ্শন।। অভএব বলি আমি শুনহ সম্বর। ছুই करन भूर्तमञ्च हरव करलवत् ॥ धर्मा गर निक बर्ल इहेरव मिलन। हेरारक না হবে জান শাপের মোচন। শাণের নিমিত্ত দ্রব হবে পুনর্কার। ক্লপা করি করিলাম নিয়ম ইহার।। বেদলিরা পুনঃক্তে কন্যার সাক্ষাভে। ধৌত পাপা কাশীক্ষেত্রে হইবে আখ্যাতে।। অগস্ত্যাকে কান্তি ক কহেন মহামছি। ধর্মরাক্স দ্রব হৈয়া কাশীপুরী স্থিতি।। ভাহাতে মিলন ধৌত পাপা সুলো চনী। সরস্ততী বয়ুনা জাহুরী ভর্মিণী।। ক্রমেতে জামিয়া স্ব্যিকিল ज्यात्र। ज्ञज्जन अक्षनमी महाकीर्थ इत्र।। कामीटकटङ अक्षनमी कीर्थ সারাৎসার। জলম্পর্ম মাত্র জীব হয়ত উদ্ধার।। অবস্থিত হইল তথায় माताम् । ज्यात्मत्र मांश्राका किया कहित कथन ॥ शक्ष्ममी छोर्थ (यता साम्

দান করে। তাহার পুণ্যের কথা কে কহিছ পারে। সর্ব পাণে যুক্ত হয় সেই সব জীব। অভ্যন্তরে মুক্তি পদ দেন তারে শিব।। কান্তি কি মাসেতে প্রাতঃ স্নান যেবাকরে। স্থানাস্তরে মরিলেহ যুক্তি তার পরে।। উনব্যী অধ্যায় কাশীখণ্ড মনোহর। শুনিলে সকল পাণে মুক্ত হয় নর।।

অথ বিন্দমাধৰ উপাখ্যান।

া প্রার। কার্ত্তিক কহেন শুন মুনি তপোধন। শুনিলে যে পঞ্চনদী উৎপত্তি কারণ।। মাধবের আবির্ভাব অপুর্ব্ধ কথন। কহি তবে সর্ব্বমতে শুন দিয়া মন।। মন্দর হইতে কাশী আসি নারায়ণ। পাদোদক তীর্থে করিলেন প্রকাশন। দিবদাস রাজাকে যে উচ্চাটন করি। কাশীর মাহাত্ম্য সব ক্ষহিল বিস্তারি।। যত তীর্থ পৃথিবীতে আছে স্থানেং। সকল হইতে জ্রেষ্ঠ কাশীর আখ্যানে।। এপ্রকার কাশীপুরী প্রশংসা করিরা। পঞ্চনদী छोटर्य जिल स्थिषि देश।। शक्ष्ममी पिथि सूथी देशल नातासन। शक्ष्ममी প্রতি কহে করিয়া যতন।। ত্রিজগৎ মধ্যে তুমি দর্ব দারাৎদার। কি কব বর্ণনা তব মহিমা অপার ।। জীবের পাতক তীর্থে করিয়া গ্রহণ। পঞ্চনদী স্থানে করে পাপের মোচন।। পঞ্চনদী ভীর্থেতে থাকিয়া নারায়ণ। গরুতে ভাকিয়া পরে কহেন বচন। শুনহ গরুত ভূমি বড় বিচক্ষণ। মন্দ্র পর্বতে শীঘ্র কর্ছ গ্রন্ত সন্দ্র হইতে আমি আগ্রমন করি।যে যে কর্ম সাধন করিল কাশীপুরী।। দিবদাস রাজারে করিল উচ্চাটন। কহিবে তাহার সব নির্বাণ কথন।। বিস্তারিত করিয়া কহিবে ত্রিলোচনে। এত শুনি পক্ষীরাজ করিল গমনে॥ পঞ্চ নদী তীথে अधिदृष्प अरुपायन्। मनाकाल जुशकत्त्र देश्या क्रियम्। जुमुण्यत् अधिदृष्प দেখি নারায়ণে। দণ্ডন্যায় ভূমে পড়ি করয়ে প্রণামে।। গলেতে বসন দিয়া অত্যে দাণ্ডাইল। বহু বিধিমতে মুনি স্তব যে করিল।। সকলের আত্মা - জুমি প্রভু জগনাথ। সৃষ্টিস্থিতি প্রলয় নকল তব হাত।। ব্রহ্মা আদি দেব যত তব আঞ্চাকারী। তোমাছাড়া কিছুনহেশুনহে মুরারি॥ স্থলসুক্ম ডুমি প্রাভূ চিস্তামণি ময়। করণ কারণ ভূমি সববেদে কর।। চন্দ্র সূর্ব্য তব তেজ আহে যে মির্যাস। বেদ অগোচর তব মহিমা প্রকাশ।। তোমাতে উৎপত্তি প্রভু তোমাতে মিলয়। নিশ্বাদেতে সৃষ্টি তব নিশ্বাদে প্রলয়।। দীন হীন আমি তব কিলানি সহিমা। পঞ্চয়ুখ চতুর্মুখ দিতেনারে সীমা॥ নাভী

পদ্ম হইতে তব ত্রন্দার জনম। সকলের গ্রেষ্ঠ প্রভু সার কহিলাম। ছরিহর এক আত্মা সর্ব শাস্ত্রে কয়। ইহার অন্যথা ভাবে নরকে পড়য়। তুমি ব্রহ্মা ত্মি বিষ্ণু তুমি মহেশ্বর। তুমিত অনন্ত প্রভু সর্ব্ব চরাচর।। চক্রপাণি চতুতু জি প্রভূ জগল্লাথ। সর্বতো ব্যাপিত দেব হও ক্লপানার্থ। ক্লফ বিশু নারায়ণ ঐত্যাত আর। জীরাঘর জনার্দ্ধন ত্রিবিক্রম সার। হংস হারীকৈশ সতা অনন্ত এইরি । যতু ভোষ্ঠ বরাহ সামন যে মুরারি।। শীধর গরুড্থেজ নুসিংহ যাধব। সধুস্থদন প্রমাত জার যে রাঘব।। ইত্যাদি নামেতে স্তব করে তপোধন। ভূষী হৈয়া মান প্রতি কহে নারায়ণ।। ভোমা প্রতি আমি অতি হইলাম তুষ্ট। বরের প্রার্থনা কর তব মনোভিষ্ট।। মুনি বলে শুন প্রভু কার নিবেদন। অনাবর পার্থনাতে নাহি ময় মন । পঞ্চনদী ভীর্থে প্রভু থাক চিরদিনে। করিবে পাতকী মুক্ত যত পুলহীনে।। তথাস্ত 'বলিয়া প্রভু করিলা স্বীকার। দৃঢ় ভক্ত বলি বর দিল পুনর্কার ॥ শুন অ্রী বিশ্ত তুমি প্রিয় ভক্ত মম। তব নাম থর্চেক হইবে মোর নাম। শ্রীবিন্দু মাধ্ব নাম করিল গ্রহণ। ত্রিজগৎ মধ্যে সবে করিবে ঘেবিণ ।। তদন্তরে নারায়ণ কচে নুনি প্রতি। এইস্থানে থাকিবেক মম প্রতিমৃর্ক্তি।। এইড পরম তীর্থ ভাতিপুণাস্থান। পঞ্চনদী জলেতে করিয়া লান দান।।যে জীব ভোমার পুজা করিবে নাদরে। গুপা মাল্য ধূপ দীপ আব উপাহারে॥ দছ অন্মাজিইত পাপ্রবাস হয় ছার। ইহাতে অনাথা নাহি কহিলাম দরে।। **এখানে তর্প**ন आक्ष य बात कत्य। छोत श्रुक्त शुक्तयोनि अएका क्षा कोर्डिक्टड প্রাত্যক্ষান গে জনে করয়। ভাষার কলের কণা বর্ণনা না হয়। ব্রহ্মা আদি হন্দ্র স্বর্যা যত দেবগণ। কার্ত্তিক নামেতে করি নিয়ম ধারণ।। পঞ্চনদী প্রাতঃস্থান করি দক্ষেতে। আপনারে ধন্য জ্ঞান ভাবেন মনেতে।। কার্ত্তিক মাসেতে জীব করিয়া নিয়য। ব্রত আদি করিবেক আরি অনশন।। পঞ্চরাত্র ত্রিরাত্র সপ্তায় একবির।। পক্ষরত মাস্ত্রত স্ক্রিন করা।। এ সকল নিয়ম যেই করে একচিতে ! তাছার পুণোর কথা কে পারে বর্ণিতে কার্ত্তিকেতে কাংস্য পাত্রে ভোজনত্যাগিবে। মৎস্য মাংস ইত্যাদির নিকটে না যাবে।। কাংশ্যপাত্রেভাগিপুনঃ কাংসা দিবেদান। মৎসামাংস কুয়াগুস্য ত দানের বিধান।। ইত্যাদি নিয়ম সব আছে বছ ত্র। ভাষাতে বর্ণনা করা বড়ই ছুজ্র।। গৃত দীপ্রমালারজনীতে মস স্থানে। যেইজন

নরকৈতে পড়ে অভিশয় ঘোরতরে।। যেই হরি সেই হর এইত ভাষনা।
ইহাতে অনাথা হৈলে নরকে যন্ত্রণা ॥ রুদ্র পিশাচ হয় ত্রিশহাজার বৎসর।
কাল ভৈরবের দণ্ডে থাকে নিরস্তর ॥ অগ্নিবিন্দ্র বিন্দ্রমাধব অপুর্ব্ধ কথন।
ভক্তিভাবে পঠে কিমা করমে আবণ ॥ ভাহার পুণ্যের কথা কহিতে না পারি। তার প্রতি রুপাদৃষ্ট হর হরহরি।। মাধব আবিভাব অগ্নিবিন্দ্র বিবরণ। ষ্ঠি অধ্যায় কথা হৈল সমাপন।।

-

व्यथं कांनिटक भवानि छीर्थं कथन।

পন্নার। অগন্ত্য বলেন শুন দেব ষড়ানন। মাধবের উপাখ্যান করি-লাম আহবণ।। পঞ্চনদী মহিমা শুনিলাম চমৎকার। সম্প্রতি বলহ বিফু ভীর্থের বিস্তার।। ক্ষন্স বলে শুন মুনি বলি সেই কথা। অগ্নি বিন্তু প্রতি विक विकार यथा।। अथमण्ड भारमानक जीर्य मुक्ति धाम। जामि जानि-কেশব নামেতে দেই স্থান।। সঙ্গদেশ মহালিক করিয়া স্থাপন। সতত তখাতে মুক্তি করি সমর্পণ।। শেতছীপ তীর্থ পাদোদকের দক্ষিণে। আমি জ্ঞান কেশব নামেতে সেই স্থানে।। তাক তীর্থে আমি তাক্ষ কেশব না-মেতে। নারদ কেশব নাম নারদ তীর্থেতে।। প্রহলাদ কেশব নাম ঐ তীর্থে শুন। আদিতা কেশব অম্বরীশ তীর্থে পুনঃ॥ দন্তাত্রমেশ দক্ষিণেতে আদি গদাধর। ভার্গব ভীর্থেতে ভৃগু কেশ্ব সুন্দর।। বামন কেশব নাম বামন তীথেঁতে। নর নারায়ণ নর নারায়ণ খ্যাতে ।। যুক্তবরাছ তীর্থেতে ষঞ্ বরাহক । বিদারনুসিংহ তীর্থে বিশ্ব নিবারক।। বিদার নুসিংহ নাম আমিসেই স্থানে। আমাকে সেবিয়া মুক্তপায় ভক্তজনে।। গোপী গোবিন্দ **कीर्ट्य शाणी शाविक नाम। लक्की न**विजिश्ह लक्की नविज्ञ थाम।। भिष कीर्थ व्याप्ति कीर्थ **माधव व्याधान। मश्यकीर्थ व्या**प्ति मश्य माधव প্রধান।। হরপ্রীবে হরপ্রীব কেশব সংক্ষক। বৃদ্ধকালে আমি বৃদ্ধ কেশব নামক।। নির্বাণ কেশব আমি কেশব লোলার্কস্তরে। ত্রিভূবনে কেশব চণ্ডীর দক্ষভরে ।। ভানবাপী পুর্বে জ্ঞান মাধব নামক। বিশালাক্ষ্ ছলে শেত মাধব সংক্রক।। প্রয়াগ মাধব জামি প্রয়াগ তীর্থেতে। মাঘমাসে ব্রতদান করি নিয়মেতে।। সকল পাতকে মুক্তি পায় সেইজন। ইহকালে সুধী পরে সংসারে মোচন।। প্রসাগে সকল তীর্থে মাঘে আগমন। পঞ্চ-न म कार्डिक्ट अखार जानन।। मधाइ नमर मनिकर्निका जीर्थ (छ। সর্বাভীর্থ আগ্রমন প্রতি দিবসেতে।। কাশীতে যতেক তীর্থ কেই নহে নান। কিন্তু মণিকর্ণিকার শ্রেষ্ঠ সর্বস্তিগ। কাশীতে যতেক তীর্থ মধ্যাই সময় মণিকর্ণি স্লান করি নিতা শুদ্ধ হয়। বিশ্বেশ্বর অমপুর্ণা নিতা করে স্লান। লক্ষীর সহিতে আমি আছি সেই স্থান।। সভালোক হৈতে প্রন্ধা প্রকাণী সহিতে। স্লান করে নিতা আসি মণিকর্ণিকাতে।। ইন্তু আদি যত দেব মরিচ্যাদি শ্বাহি। মধ্যাই সময়ে নিত্য স্লান করে আসি।। মণিকর্ণি কার শুণ কে বর্ণিতে পারে। মণিকর্ণি সম তীর্থ নাহিক সংসারে।। পুনঃ ভারিবিন্তু বলে শুন ভগবান। বিস্তারিয়া কহ মণিকর্ণির প্রমাণ।। বিষ্ণু বলে শুন অগ্নিবিন্তু ছিক্সবর। মণিক্ণিকার পরিমাণ মুবিস্তার।।

-*********

অথ মণিকর্ণিকা কথন। 🔩

ুপ্রার । হরিশ্চ**ন্দ্র লন্টপ উত্তর সীমাহয়। দক্ষিণ সীমাতে গঙ্গা কেশ্র** আলয়। ভাগীরথী মধ্য পুর্ব সীমা হয় তার। পশ্চিমেতে সীমা তার আন স্থানার । মণিকনিকার এই তুল পরিমাণ। স্থল্ম পরিমাণ কহি কর **লবখান** ছরিশ্চন্ত্র তীর্থে হরিশ্চন্ত্র বিনায়ক। সীমা বিনায়ক তথা বি**লের নাশকু**। আছরে পর্বত তীর্থ ভাহার দক্ষিণে। তটেতে পর্বতেশ্র লি**ঙ্গ অধিষ্ঠানে।** তাহার দক্ষিণে তীর্থ কমলাশ্ব তর। কমলাশ্ব তরে স্বালিক মনোহর। চক্র পুঞ্জিনী তথা তীথের প্রবর। স্থান করি তরে নরে সংসার সাগর। চক্র পুরুরিণী জীরে আমি বহুকাল। পাইল ঐশ্বর্যা তপ করিয়া বিশাল। নেই চক্র পুরুরিণী মণিকর্নি নাম। মুনির পতনে হৈল খ্যাত অনুপাম। खव क्र পরিহরি নারীক্রপা হৈল। প্রতাক্ষরপিণী মণিকর্নিকা দেখিল।। প্রত্যক্ষ যেরপ মোর হইল দর্শন। দেইরপ বলি শুন তার নিরপণ। চতুভুজা বিশালাক্ষী ভালে ত্রিলোচনা। পশ্চিমাভিমুখি করপুট নিবন্ধনা। ইন্দীবর মালা দক্ষ করে ধরে বর। মাভুলাঙ্গ ফল বাম করেতে সুন্দর।। चामम तरमत तामा कुमाती तिरिशी। निर्माल कारिक करा नील कुछलिनी।। প্রবাল জিনিয়া ওর্চ অধর নির্মাণ। কেশ পাশে কেন্তকী কুমুম রাজমান।। সর্ব শরীরেতে মুক্তাফল আভরণ। চন্দ্রকান্তি জিনি শোভা স্কুদর বরণ।। শ্বেত প্রমালা দোলে গলে মনোহর। এই ৰূপ ধ্যান করিবেক নিরস্তর।। পঞ্চদশ চতুদিশ অক্ষরেতে মন্ত্র। নিরস্তর জপে মুক্তি হরে ভবনম্র।। অপ गरशा मभारमं (श्रामंत जरशा इस्। एवं छश्च वृष्ट मधु मर्कती मिळस ।।

তিনলক অপ পুরশ্চরণে বিধান। করি পুরশ্চরণ লভয়ে পরিত্রাণ।। ধ্যান অনুন:রে স্বর্ণ মূর্ত্তি নির্মাইরা। পুজিবেক সদানিজ গৃহেতে রাখিরা।। অথবা করিবে মণিকর্ণিতে ক্ষেপ্র। দুরদর্শী জনেরে উপায় এই কন।। আমার স্থাপিত লিঙ্গ মণিকর্ণীশ্বর। মণিকর্ণি স্নান করি পুজিবে সত্বর।। কণিকর্ণীশ্বর অন্ত গ্রহে পূর্ব্ব ছারে। সেবিয়া সেবক ভরে এঘোর সংসারে । পাশুপত তীর্থ মনি চর্নির দক্ষিণে। পশুপতীশ্বর লিঙ্গ আছরে সে স্থানে॥ পাশুপত যোগ তথা করি উপদেশ। মহামোক্ষ দান করে আপনি মহেশ চৈত্র শুক্ল চভূদিশী রাম জাগরণ। মহাপুদ্ধা করিবেক করিয়া স্তবন। করিবে বার্ষিক যাতা সে স্থানে যে দিনে। পশুপাশ নাশে আসাবস্যাতে পারণে।। তাহার নিকটে জন্ত্রাবাস ভীর্থবর। পুজিবেক তথা লিঙ্গ রুদ্র বাদেশ্বর । বিশ্ব তীথ ক্রজাবঃদেশবের দক্ষিণে। বিশ্বনাথ বিশ্বগোরী পুজা गেই স্থানে॥ তাহার নিডটে নৃক্তি ভীর্মনোহর। স্লান করি পুজিব্রেক লিঙ্গ মোক্ষেত্র। অবিষ্যুক্তেশ্বর বিজ্য তাহার নিকটে। অবিষুক্তেশ্বর লিজ পুজা তার তটে। নিকটে ত্রিক তীথ যথা বিশেশর। তারকের উপদৈশে নিস্তার যে নর । পুজিয়া তারকেশ্বর লিঙ্গ সেই স্থানে। কন্দ ভীথ ক্ষন্দ মূর্দ্তি ভাষার দক্ষিণে।। সেই স্থানে দুখী ভীর্থ দুগুী গণপতি। শব্দিণে ভবানী তীর্থ শঙ্কর নঙ্গতি !! ভবানী শঙ্কর চুই পুজা সেই স্থানে। মহাযাতা চৈত্রমানে অক্টমীর দিনে।। অকীধিক শতবার প্রদক্ষিণ করি। অইবার প্রদক্ষিণ অংলা দাদরি।। ভক্তি লবে প্রণমিয়া ভবানী শঙ্কর। প্রার্থনা করিবে যাহা গাইবে সে বর ।। গৃহবাসী বিশ্বেশ্বর গৃহিণী ভবানী মেক্রিজা কাশীপুরে দিতেছে আপনি।। মহার্যমী দিনে ত্রতী করি উপাদন। ভবানী শঙ্কর পুঞ্জিকরে জাগরণ।। ভবানী শঙ্কর দদা জপিয়া কদ্য়। আবশ্যক মনোগত সিদ্ধি ভার লয়।। নিকটে ঈশান তীথ আছে সেই স্থানে। পুজিয়া ঈশান তীর্থ লভে দিবাজ্ঞানে ॥ জ্ঞানতীথ সেই স্থানৈ লিঙ্গ ঞানেশ্রর। সম্ভত সেবিয়া দিব্যজ্ঞান পাবে নর।। নন্দি তীথে নন্দীশ্বর প্রম পাবন। জ্ঞান ব্রাপী উত্তরাংশে পুজিবেক জন।। তাহার দক্ষিণ বিষ্ণু তীথ ননোহব। বিশ্বেশ্বর দক্ষিণে মূর্ত্তি আমার সুন্দর।। প্রতি একা-দশী আর শয়ন বোধন। উপবাদ করি করে রাজ জাগরণ।। প্রভাতে আমার পুজা আক্ষা ভোজন। করাইয়া দান করে গো ভুমি কাঞ্চন॥ যথাশক্তি করি তথা ত্রত উজ্জাপন। লাজরে যথোক্ত ফল সেই ত্রতীজন।। পিভাসহ তীর্ঘ বিষ্ণু তীথের দক্ষিণে। লিভার্মহেশ্বর লিক্স আছে সেইস্থানে

নাভীতীথ সেই জগতের নাভী হয়। যাহা হৈতে ত্রন্দাণ্ড উদয় যাতে লয় बिलांक विशां छीथ ८१३ बन्तानल। स्नान मान टेकल बुटा **खंडेंब्र** সকল। ভাগীরথী তীথ ব্রহ্মানলের দক্ষিণে। ভাগীরথীশ্বর লিক আ**হে** দেই স্থানে।। ক্ষরকভুরিকা ভীথ ভাষারদক্ষিণে। গোমাভা গোলোকটেট্র আদি কুরেখনে।। কুরকর্ত্রীশ লিস পুজিবে সে স্থানে। মার্কণ্ডের তীর্থ भूतकर्त्ततो मन्मिट्।। रमहे म्हादम आहा निम मार्कएश्वराश्वत। **भूसिश** ভাহাকে দীর্ঘজীবী হবে নর।। তথাতে বশিষ্ঠ ভীথ লিক্স বশিষ্ঠেশ। অরু-ক্ষতী তীর্থ তথা আছেন বিশেষ।। স্থাবশ্যক স্থান তথা করিবেক নারী 🕈 নির্মাল হইবে সক্রেদায় পরিহরি॥ অরুদ্ধতীবশিষ্ঠের মুর্তি সেই স্থার্ফে পুজিলে বৈধব্য দোষ হয় নিবারণে।। দক্ষিণে নর্মদা তীথ অভি মনোহরী। পুর্বিয়া নর্মাদেশ্বর মুক্ত হবে নর।। তথাতে ত্রিসক্ষ্যে তীথ পর্ম পাবন পুৰিষা ত্ৰিসন্ধেশের কাটয়ে বন্ধন।। তদত্ব যোগিনী ভাঁথ জগত বিখ্যাত। পুর্জিবা যোগিনী পীঠ যোগ হস্তগত।। পুর্জিবে অগুড়ে। শার্ম অগন্ডা তী-থেতে। লোগানুলা অগস্ত্যের স্বরূপ তথাতে।। তাহারদক্ষিণেরসা কেশব সংজ্ঞক। মহাতীথ স্থান করি নাশর পাতক।। নামে গঙ্গা কেশব আমার মূর্ত্তি তথা। পুজিয়া পাইবে মুক্তিনাহিক অন্যথা।। মনিকর্ণি পরি**মাণ** कृश्लि विरम्म। सुनइ देवस्व छीथ चार्ट अवरम्म। नीमा विमात्रस्यत पक्तित्व अञ्चल । देवदत्राहत्मश्रेत्र श्रुदर्ख देवकुष्ठे भाषत् । वीत्र माधव मश्यक বিজ্ঞাশ পশ্চিমে। নিয়মেপুজিলে তাকে নাহি দেখে ৰবম।। কালতৈরকের নিকটেতে মৃত্তিমান। দেখি কাল গাধৰ পাইবে দিবা জান। মার্গ শুক্লুঙ একাদশী করি উপাসন। রাত্রি জাগরণ কৈল না দেখি শমন।। নির্<u>কা</u>গ नृतिः इ श्रूनश्चीद्यतः मिक्करन । लाउरत निर्कान सुक्ति छोहात मर्गरन । गिहान काल नर्जिश्ह क्षेपत श्रुट्सिट्छ। यम पूछ नाहि एएट्स छाहाँद (मवाट्डा। প্রচণ্ড নুসিংহ চিণ্ড ভৈরবের পর্ব। তাহাকে সেবিল যুচে শমনের গর্বন। দেহলি গণেশ পুর্বে মূত্তি চমৎকার। গিরী নরসিংহ দেখি যুচে অশ্বকার ম মহাতর হরনরদিংহ মূর্ত্তিমান। পিতমহেশ্বর পশ্চিনেতে অধিষ্ঠান । অভ্যুক্ত নুসিংহ কলসেশ্বর পশ্চিমে। তাহাকে পুজিলেনাহি দেখেউগ্র খমে।। খলা মুখি সন্মুখে নৃসিংহ আলামালি। তাহাকে পুজিয়া জয় করে কালকলি।। কোসাহল নৃসিংহ আছেন সেই স্থানে। কংকাল ভৈরব যথা আছেন বিদ্য মান।। বিটফ নৃসিংহ নীলকপ্তেশ্বর কাছে। অনস্ত বামন অনত্তে শ্বরেছত त्य आहर ।। उथा मिनियान आहर निमार्गान । जिल्लाहन छेखरहर छ जिति

ক্রম স্থান । বলি বামন পশ্চিমেতে বলভদ্রেশ্বর। যে পুর্ক্তে তাহার বল ক্রমি নিরস্তর॥ ভবতীথ দক্ষে ভাশ্র বরাহের স্থান। ধরণি বরাহ প্রয়াগেশ সমিধান।। ধিন্টীশ্বর পাশে কেকো বরাহ লোখ্যান। পুর্জিলে তাহাকে চিস্কিতাথ করে দান।। নারায়ণ মৃত্তি পঞ্চশত কাশীপুরে: জলশায়ী শত মৃত্তি আছেন সন্ধরে॥ ত্রিংশত কমঠ রূপ বিংশ মীন রূপ। সহস্র সহস্র আছে বৌদ্ধের স্বরূপ॥ গোপালের শত মৃত্তি ত্রিশত পরশুরাম। একোত্তর শত্ত মৃত্তি আছরে জ্রীরাম।। বিফুর্জপ আমি এক বিষ্ণু মণ্ডপেতে। বিশ্বে-শ্বর আজিত হৈয়াছে ভাল মতে॥ নারায়ণ রূপে চক্র গদা করে ধরে। বৃদ্ধি ভেদ কহ প্রস্কু যুক্তেক তোমার।। অগ্রিবিন্দ্র তবে কিছু কহে ক্ষমী কেশে। কেশবাদি চতুর্বিংশ মৃত্তির বিশেষে।।

-318H-

অর্থ কেশবের চডুবিংশতি মূর্ন্তি কথন !

পরার। উদ্ধ দক্ষকর হৈতে সৃষ্টি ক্রমে জান। শঙ্খচক্র গদা গল কেশব ধারণ।। শঙ্খ পদ্ম গদাচক্র শ্রীমধুস্থান। শঙ্খ পদ্ম চক্রগদাধারী मक्कर्षन ।। मञ्जा नामाठक शच्च थाती मारमानत । वामरनत ठक मञ्जा शच्च नामा কর। পাঞ্জন্য গদাপন্ম চিত্র স্কুদর্শন। জানিবা প্রজ্যে মূর্ত্তিযাহার ধারণ। 😘 বাম করাবধি সৃষ্টি ক্রমে জান। শঙ্খ চক্র গদাপদা বিঞুর লক্ষণ।। চক্র শত্যা গদাপত্ম মাধ্বে ধারর। শত্যা প্রফ চক্রগদা অনিরুদ্ধে হয়। শত্যা शमाहकः शरबारङभूकः (योद्यम । अरथाकः अ अध्याद्य हकः शमोकम ॥ अध्यातमा চক্রপশ্মধরেজনার্দন। অধোবামকরাবধিসৃষ্টিতেধা গ।। শংখ গদাপত্ম চক্র নোরিক ধারম। শঙ্খচক গদাপত্ম ত্রিবিক্র ন হয়।। শঙ্খপত্ম চক্রগদা ধরেণ শ্রীমাধর। হ্রনীকেশ শঙ্খাগদা চক্র পাল্ল কর।। নরসিংহ শঙ্খা চক্র পাল্লগদা ু**ধরে। শঙ্খাদা পদ্মচক্র অচ্যুতে**র করে॥ দক্ষকর অবধি যে ধারণ সৃষ্টিতে বাসুদের শঙ্খাচক্রগদাপঅহাতে।। শঙ্খপত্মগদাচক্রনারারণেধরে। শঙ্খপত্ম हक्तामा श्रामा अकटत ॥ भष्यां महिक्श्या छेटशस्त्रक्त । भष्यहक्तश्रामा ্ছরির্ব্বধারণ।: শঙ্খাগদাপত্ম চক্র ক্রয়ঃ ধরেকরে। নিজ মূর্ত্তিভেদ মোরকহিব ছোমারে।। হেনকথা অবসানেগরুড় আসিল। বিশেষরশুভাগমমাধবে ক-ছিল। সম্ভুমে বলেবিষ্ণু কোথা ত্রিলোচন। গরুভবলেন দেধর্যভ কেতন আছের অনুভারত মণি মুজের প্রকাশ। দেখিয়া উঠিল প্রণমিয়া জীনিবাস।

ভারার হইরা চলিল নারারণ। ভারিবিন্দু ব্রাহ্মণেরে বলিল তথকা।
মার স্থাননি চক্র করে স্পর্ণকিব। স্থাননি স্পর্ণ করিলেক মুনিবর।। চক্রণরাশারা মুনি হৈল জ্যোভির্দার। নারারণ পরতেজ সহজে মিলর।। বিশ্ব মাধবের পাদপার ভক্তি করে। ভারিবিন্দু সম সেইঅনারাসে তরে।। কালী বাস তার বিন্দু মাধব দরশন। ভক্তিভাবে করিবে যে অধ্যার প্রবণ।। ভারিবিন্দু স্তিতি পাঠ মাধবের আগে। যে করিবে সে জন হইবে মহাভাগে দালাহিকালে পাঠে পিতৃলোক ভৃপ্ত হয়। পঞ্চনদ পাঠ করি নির্মাণ লভর।। একাদশী উপবাস রাত্র জাগরণ। অধ্যার প্রবণে লভে বৈকুপ্তে গমন।। অধ্যার নিবাসী মল্লিকাখ্য সীতানাথে। কাশীখণ্ড ভাষা করি রিচিল ভাষাতে।। ব্রহ্মানন্দ ভাবে ব্রহ্মানন্দের উপার। একষ্টি অধ্যার সমান্ত ভাবে হয়।

-

অথ মহাদেব কাশী আগমন !

পরার। বিনয়ে অগস্তা বলে ষ্ডানন প্রতি। যোডকরে বছ ভক্তি করিয়া যে স্ততি।। একে কাশীখণ্ডামৃত তব মুখে শুনি। স্বমৃত স্বধিক প্রভো তব মুখ বাণী।। গরুড়ের মূখে শুনি শিব আগমন। তদপরে কি করিল প্রভু নারায়ণ।। কার্দ্তিক কছেন শুন মুনি তপোধন। শিব আগমন শুনি সুখী নায়ায়ণ।। গরুড়কে গোবিদ্দ করিল আশীকাদ।। তৃষ্ট ্হৈয়। পক্ষী প্রতি করিল প্রসাম।। কাশীবাসী সকলেরে প্রভু গদাধর। শিব্ আগমন বার্ত্তা কহিল সম্বর।। ত্রহ্মা যে গণেশ স্থর্যা আরকো থযোগিনী। সকল লইয়া অগ্রগামী চক্রপাণি।। কাশীবাসী নগরেতে যত লোক হিল। বিশ্বনাথে দেখিবারে সকলে চলিল। কাশীর প্রান্তর ভারে সবে শীঘ্র যায়। অভিদূরে সদানন্দে দেখিবাবে পার।। ইন্দ্র আদি দেবুগণ হইয়া বেষ্ট্রিভ। ত্রাশীপুরে যান শিব হৈয়া হর্ষিত।। নাগলোক প্রভৃতি করিরা সর্বজন। অপুসরা কিন্নর আদি সব সিদ্ধগণ।। দেবর্ষি ত্রদ্ধবিস্ব মুনিগণ আদি। 🕈 ষতেক চলিছে সঙ্গে নাহিক অবধি।। চামর দুলার বিভাধরী গণ মিলে। নৃত্য গীত বাদ্য করে বেভিয়া সকলে।।ঘোরতর নানাবিধ বাদ্যোদ্যম হয়। नमूख करल्लान राम इहेन अनम् ॥ नन्ती कृषी आपिकृष्ठ यक शिदश्रा । तथ বম স্বরে তারা করিছে গমন।। গালবাদা করি সবে শিবং বলি। ভালেং नाहिया अमिन यात्र हिला। द्रम् अस्तिक्ष्ण निव आह् आह्वाइन । द्रम्

গিরির আভা অতি মুশোভন।। মস্তকেতে জটার দৌন্দর্য্য কিবা কব। ক্ষটার উপুরে গঙ্গা কল কল রব।। চত্র যে জিনিয়া মুখ পদ্ম ব্রাক্ষতায়। কপালেতে অদ্ধিসমূ অতি শোভা পায়। কণ্ঠ নীলবৰ্ণ তাহে গলে হাড় স্থাল। ব্যায় চর্মে পরিধান দেখিতে বিশাল।। সর্পোর বলয়া অঙ্গে অভি ্চমএকার L বামভাবে শৈল**মুভা আ**ছেন তাহার ॥ ভাঁহার **র**পের তুলা নাহি থিছুবনে। বিহাতের ছেটা জিনি অঙ্গের শোভনে॥ রজত গিরিতে হয় পূর্ণচন্দ্র শোভা। অলঙ্কার নানাঅঙ্গে কিবাতার আভা।। ,দারিদ্র লোকেতে যেন বছধন পায়। হর্ষচিত্র হৈলে অঙ্গ পুলকিত তায়।। ুদৌন্দর্য্য সাধুর্য। তার কোথা হৈতে আমে। কাশীপুরী লাভে হর্ষ চিত্ত যে সংহেশে। পুর হৈতে দেঁতা ৰূপ অতি সুশোভন। কাশীলাভ হইবেক शानिष्ण मन।। श्रिष्ठ कोलाइल भक्त वाटमामाभ इत्र। कर्ल किছू শুনে নাহি শব্দ অতিশয়। রুষভ উপরে আছে দেব ত্রিলোচন। নিকটেতে উপনীত দের নারায়ণ। আত্ব তণ্ডুল তুর্বা পুপাযাল্য আদি। মঞ্লা-চরণ করে আছে যথাবিধি।। সমাুখে ধরিল প্রভু দেব নারায়ণ।। যেমতে ্ আছরে নীতি সঞ্চলতিরণ।। পরস্পর দর্শনেতে অতি সুখী হৈল।। মহা-एएटव नाजाञ्चण व्यक्षाम कतिला। एव जिल्लाहम एटव मधान एय कटता হস্তে; ধরি সম্বেড করিল বদিবারে।। তদন্তরে নারারণ কহে ভুডনাথে। , অঞ্জাপ্ত যে কাশী বস্তু পাইল ভোষা হৈতে।। চতুর্মুখ বেদবেস্ত। নিক-্টেতে যার। হরে প্রবঁমির বলি ক্তি ন্যুতার।। হস্তেধরি ত্রিপুরারী এক্ষে নিষেধিল। চতুর্মানুথে জিলোচন সমান করিল।। ব্রহ্মা যে কংহল শুন দেব ্জগৎপতি। ভুমিত কারণ কর্ত্তা সকলের গতি।। তব কর্ম্ম দিল্প লাগি আসি কাশীপুরে। শক্তি মোর নাহি প্রভু কার্য্য সাবিবারে॥ অতিশয় লজ্জান্বিত হুইল অশুরে। কি বলিয়া দেখা দিব প্রভুর গোচরে।। প্রভুর নিকটে নাহি ফাই তেকারণে। তব ধ্যান করি থ কি অবিমুক্ত স্থানে॥ আর এক ্মিবেদন, আছমে আসার। কাশীবাস হইতেছে সর্বাসরাৎসার।। কাশী ্লাভ হৈলে কেবা যায় অন্য স্থানে। বিশেষতঃ এক আঞা দিয়াছ আপনে। িদিবদানে পাপাচার যথনে দেখিবে। রাজা হৈতে তৎক্ষণেতে অন্যথা করিবে।। কাশীতে আসিয়া তার অধর্ম না দেখি। কিব্রপেতে রাজ্য হৈতে ভাহাকে উপেকি। বিশেষতঃ দিবদাস হয়ত ত্রাহ্মণ। কিমতে করিব षांचि बाका दिश्यन ।। जुडेनाथ कर्ट् बका अनद बहन । मरनामस्या कृश्य ক্রা ত্র অকারণ।। দিবদাস রাজা সেই অতি তেজোমান। কাশীমধ্যে

দেবতাকে নাহি দেয় স্থান।। কোনদেব না রাখিল জাপন রাজ্যেতে। স্বঞ্জ জল বায়ু সূজে জাপন তেজেতে।। তাহার রাজ্যেতে বাস করি নির্**ত্ত**র দশ অশ্বমেধ ভুগি করিলা সত্ত্র।। বিশেষতঃ শিব**লিক্স** করিয়া স্থাপনে। কাশীপুরে ছিলে তৃমি ধ্যানেতে মননে।। তোমার পুণ্যের কলে কাশী পাই আমি। ইহাতে যে মনোছঃখ না ভাবিহ ভুমি॥ একা প্রতি পঞ্চান্ত কহে বসিবারে। চত্মুখ বসিলেন ছরিষ অস্তরে।। তদপরে গলনিন করিয়া গমন। পিতার চরণ ধূলি করিল ধারণ।। প্রণাম করিয়া দেব সন্মুখে দাণ্ডার। গাত্রোত্মান করি শিব আলিঙ্গন ভার।। আশীর্কাদ করেন মস্তকে হাত দিয়া। শির্ঘাণ লইল শিব সম্ভূষ্ট হইয়া।। গ**জানন প্রতি শিব কছেন** বচন। তোমা হৈতে লাভ হৈল কাশী হারাপন।। পিতার কার্য্য যে তুরি:-করিলে উদ্ধার। তোমা সম মম প্রিয় নাহিদেখি আর।। **তদপরে সুর্য্য** দেব আসি প্রণমিল। বছবিধ ভূতনাথে স্তৃতি যে করিল। ম**ন্দর ইইতে** প্রভো আসি কাশীপুরে। প্রভু কার্য্য বাধন না পারি কবিবারে।। দ্বাদশ যে মূর্ত্তি ধরিয়াছি কাশী পুরে। দিবদান অধর্ম্ম না পাই দেখিবারে। শিব কহে আমি ভুষ্ট আছি যে তোমারে। কি কারণে ছঃখ ভুমি করহ জ্**ড়**ঞো-গণের। প্রভৃতি আর যভেক যোগিনী। শিবে প্রণমিল সবে িক্তেডে মলিনী। বর্বেশ্বর বে নকলে কুপাদুটো চায়। চকে হেরি মহাদেব বৃদি বারে কয়। শঙ্করের বামদিগে বিঞ্ বসাইল। বেদবেন্তা চতুমাুখ দক্ষিত্র বিদিল। কাশীপুরে গজানন আর নারায়ণ। বছবিধ করিয়াছে মায়া প্রকা শন।। এসকল কথা পুর্বে পক্ষী মুখে শুনি। বিষ্ণু গলানন বড় ভূষী শূল পাণি।। হেনকালে গোলোক হইতে আচ্মিতে। পঞ্চ যে কলিলা ধেনু জাসিল স্বরিতে।।

अथ किश्नि ठीर्थ कथन।।

পরার। স্থনন্দা স্থানা যে স্থানীলা ধেনু আরে। স্রভি কলিলা খেনু স্থ লের সার।। পঞ্চন কপিলা শিব অত্যেতে দাণ্ডার। দুই করে মহাদেব বছত কুপার।। পঞ্চ কপিলার ছান্ধ ধারা পাত হয়। ক্রন্মে ক্রন্থে বারা বৃদ্ধি অভিশয়। সকলে দেখিয়া অভি মনোহর হৈল। পরিসার সহ শিবি দর্শন করিল।। কপিলাধেমুর ছুন্ধে হয় সরোবর। শিব কহে এই তীর্থ অভি

পুণ্য কর।। কপিলা ধারেতে ভীর্থ করিল আখ্যান। শিব আঞ্চা ক্রমে সবে করিলেন মান।। একা বিষ্ণু মহেশ্বর আদি যে দেবতা। মান আদি ক্রিয়া সবে করিলেন ভথা।। হেনকালে পিতৃলোক আসিল ভথায়। অগ্নিস্বস্তা आंपि कति नश्चक्रम इम्र ।। छाहा एमथि एमयगरन दर्भगामि करत । जुल टेहना পিভূলোক বলে মহেশ্বরে।। এই তীর্থে আমা সবার বড় তথ্য হয়। সদা বিরাজয় ভীর্থ শুন দয়াময়।। তথাস্ত বলিয়া শিবকৈল অক্ষীকার। বিধি বিষ্ণু সম্মোধিয়া বলে পুনৰ্কার।। শুন ত্রদ্ধা শুন বিষ্ণু শুনহ বচন। এইত किनिना थाता वर्ष कीर्थ इस।। यह कीर्थ आक वामि राजन कत्र। जात পিতৃলোকের জন্মর ভৃত্তি ইয়।। অমাবক্সা লোমবার বুক্ত যে দিবলে। তর্প भौषि खोटक कम श्राष्ट्रम विश्वास ।। श्रामश कारतर प्रकटन कम इस । অক্ষয়তে আনাদির ফল নাহি কয়।। গয়া পুত্রাদি তীর্থে পিগুদান করে। ভার শতগুণে কল এই তীর্থেবরে।। বিধি বিফু আদি দেব আমি সর্বদার : ফর্ড আদি ভার্য নত উদিত তথায়॥ পৃথিবীর মধ্যে দেখ তার্থ আছে যত। এই ভীর্থে জক্ষাতে স্ইবে মিলিত।। আআঘাতি গাট্টবানে মরে মেই অন। অপমৃত্য নানা রূপে হয়ত নিধন ।। উদ্দেশতে সে সবের পিগুদান করে। অক্ষয় যে স্বর্গ হয় কহিল ভোমারে।। গোভূস্বর্ণ আদি দান যে জন করর। কপিল্ধারা ভীর্থে অক্ষয় স্ব হয়। এই ভীর্থ নাম যাহা হৈল বিস্তারিত। বিধি বিষ্ণু আদি দেব শুনহ নিশ্চিত।। মধুশ্রবা ঘৃত প্রধা পিড় ভীর্থ আর । গদাধর তীর্থ আর ত্রক্ষভীর্থ সার ॥ র্যধ্যক্ষ ফ্ষীর নীর ধারা সুবী জণি। কণিলধারা শিব গয়া এইত বাধানি।। এই নাম শ্রব ণাদি করে যেই জন। তাহার পুণ্যের কথা হয় অগণন।। বরুণার উত্তরেতে কাশীর প্রান্তর। যে স্থানেতে অবস্থিত হৈল দিগমর।। সেই স্থানে কপিল ধারা তীর্থ যে হইল। কলিলেশ শিবলিঞ্স স্থাপন করিল।। বিজয় নামেতে র্থ ক্রিয়া সক্ষন। র্থ লইয়া নন্দী তথাক্রিল গমন।। দেখিতে সুন্দর রুধ অতি সুশোভন। মণি মুক্তা প্রবালেতে রথের সাজন। সিংহ অতী রুষ অন্ত হন্তী অন্ত আর। অশ্ব অন্ত বলবন্ত অত্যন্ত চুর্নার।। এই সব হইয়াছে बर्धरक स्थाबन। विद्यारकत मात्रि तथ इस सूमर्गन।। शिव करता तथि तथ নক্ষী যোজহাতে।। বিনয় করিয়া রহে হরের সাক্ষেতে।। রথ দেখি ভুকী ভাতি হইল শক্ষর। নারায়ণ হচ্ছে ধরি উঠিল সন্মর।। বিধি বিশু লইয়া भिव तृत्थटर छेठिन। वामिरिक मात्राहरण सङ्घ वनाइल।। मक्तिरणटक अकारक वर्गान मदर्थत । काणी भूदत हटल भिव श्रयुक्त व्यस्तत ॥ अत्रिज्ञ भ

কোটি দের চলিল সক্ষেতে। মুষিক বাছনে ছলে দেব গণপড়েছ।। সপ্তকোঞ্জ গবেশ মুখিক আরোহণ । দিবা ক্লাম সমোদর পরও ধারণ।। কুমার বল্লেস व्यक्तिकारि वर्षान्तन । हिन्दलक शिव मदक मग्रद्ध वाश्रम ॥ ८मवश्रर प्रकारन হইয়া বেফিত। শোভার নাহিক সীমা কহনে পডুত।। রাদ্য কোলাহনে তথা কিছু নাহি শুনি। বধির হইল কর্ণ চেন অসুমানি॥ শত শভ বিদ্যা ধরি চামর চুলায়। অপ্ররীরা নৃষ্ঠা করে কিন্নরে গীত গান। কাশীপুর নিবাসী আছেন যত জন। স্থানেস্থানে করে সবে মঙ্গলাচরণ।। নাঞ্চর নাপ बीटक मञ्जन ध्वनिकद्व । द्वनकाटन भिवत्य अत्वर्भामगदत् ॥ कालीलाटक অতি মুখী দেব পঞ্চানন। বৰ্থ গতি খৰ্কস্থল করেন জ্রমণ।। কাশীপুরবারী ख्यी शुक्रव नर्वकत। रक्षमिन कारस शाम्न मिरवह मर्भन।। वानत्य रहेन यश्र स्रुर्थत मांगरत । गर्स कर्छ। गर्स बरन कुलारनम करत ।। कामी भूरत स्थारनर যতেক ব্রাহ্মণ। সকলে করিয়াছিল নিয়ম ধারণ । শুনিতে পাইল জাধির্মান विष्यम् । मिरवत मर्भरन मरव ६ निन मद्र ॥ दू इवर्ष व्यथारम् व वाभूक् कथन। मन्द्रत इटेटल मिटवर काची व्यक्तमन॥ क्रिमावारा छीटर्धत ख्रारू भुग कथा। भर्छ किया खावन य करास मर्कथा।। छाहात भूत्यात कथा कहत्न ना यात्र । कातमाहै त्महें सर्भ क्रस्टकाटन शांस ॥

--318/15---

ज्यथ (यांशी मर्स्सभत कथन।

পরার। অগস্তা বলেন শুন পর্বিতী নদন। কাশী আসি কি কর্ম করিল ব্রিলোচন।। কন্দ বলে শুন লোপায়তা প্রাণেশর। অমিরা সকল পূরী দেখিল শস্তর।। যোগী সব্য শুনি শুহা মধ্যে ধান করে। অকন্দাং ভাছাকে দেখিল মহেশরে।। যে দিবসে মহেশের মন্দরে গমন। সে দিবসে করিলেক নিরম গ্রহণ।। যে দিবসে কাশীনাথ কাশীতে জাসিবে। দেখিরা সাক্ষাতে জল গ্রহণ করিবে।। সে বৃত্তান্ত শিব বিনে জন্য নাহি জানে। অভগ্রব প্রথমে আইল সেই স্থানে।। জ্যৈষ্ঠ মাণে শুক্রপ্তেক ভিথি চতুর্দ্ধনী। সোমবারে অনুরাধা যোগে পর্ব ভাষি।। সেই পর্বে মহাযাগ্রা করিবে তথার। জ্যৈষ্ঠ স্থান বলি ভাকে জাত্রব গার। জ্যেষ্ঠার নাম লিক্ষ্ স্বন্ধ ভথাতে। আবিভুক্ত ছইলেক জাত্রব গার। জ্যেষ্ঠার নাম লিক্ষ্ স্বন্ধ ভথাতে। আবিভুক্ত ছইলেক জাত্রব গার। ইল্যেন্ট্রাপী জীর্ম তথা হইল উন্নর। স্নান তর্লণেতে পিতৃলোক সৃপ্ত হয়। ইল্যান্ট্রাপী জীর্ম তথা হইল উন্নর। স্নান তর্লণেতে পিতৃলোক সৃপ্ত হয়। ইল্যান্ট্রাপী জীর্ম তথা বাহাণ ভারম। স্নান তর্লণেতে পিতৃলোক সৃপ্ত হয়। ইল্যান্ট্রাপী জার্মি

িবিফিসী রাত্র জাগরণ। জৈষ্ঠা গৌরী পুজা করি দৌভাগ্য ভাজন।। নিবাস করিল তথা জগতি নিবাস। ছইল নিবাসেশার লিজের প্রকাশ।। পুজিয়া নিবাসেশ্বর সম্পত্তি স্থার । কভ্য ভোগ্য হতে পরে হইবে নিস্তার জ্যৈক স্থানে মৃত মধু দিয়া শ্রাদ্ধ করে। ভবের যন্ত্রণা হৈতে পিতৃপণ ভরে॥ প্রথানে কাশীতে পুজিবে জৈচেষ্ঠার। বৈচার্চা গৌরী বৃদ্ধি জনা পুজে তার পর । निकटक ए। किहा छथ। বলে বিশেশর। গুহাসখো প্রবেশ করহ নক্ষী-বর।। গুরুমধ্যে ভক্ত মোর যোগী দ্রানাম। বির্কাল তথ্যা করুরে অনুপাম।। যে দিবদে হৈল মোর মক্ষরে গমন। ভদবণি নিরাহার আছেন खाका।। ध्रव लीला क्यल लहेश। याद कथा। এहकल न्मर्का कात प्रित्क वाथा ।। कमल लहेंब्रा करत सन्ही करें। क्षण । धानि कृदत रघाशीयवा (मिरिटक भाहेत। कमत स्भूदर्भक जाउ । केत (एकर) करा देशक व्यक्तिदाक गर्थ। ক্রিলোচন। জাঝি খেলি একে দুনি সাক্ষাতে স্বন্ধর। শক্ষরী হসিষ্ট বাসে অতি মনোজানে জুলিতে পড়িয়া ধনি করে নমস্কার ৷ পরে নানামতে স্তব করে চমনকার । উদ্ধানাত শিব শিব বলি মৃত্য করে। ভাবেতে হইয়া ছুই বর দিল ভারত। যোগী সংশিক্ষার লিঙ্গ তোমার স্থাপিত। মতত থাকিব আমি ভার সাংটেক। নির্বাণ সাধক যোগশাল্ল ভোষায় দিল। সকল स्याभीत भट्या कांकारी कतिला। स्याम विना तक्या का नित्त नित्मय। **व्यामात अगरम प्र**क्ति आहेरतक स्थय ।। नक्ती मम ककी कृष्टि स्यान व्या-মার। অম্নি হইবে জুমি পুজা দেনভার। তপোদান এত আদি আছে नाना भक्त का देश्टक कहिटल कृषि निष्ठय निष्ठक । कामादक ना प्रिथ অল গ্রহণ ন। হয়। স্কল নিয়ম হৈতে এট অভিশয়।। অভএব থাক মোর চরণের গণলে। ঘটিবে নিকাণ মাজি যোগের অভ্যানে।। যোগী সর্কেশ্বর লিঞ্জুছভি কাশীতে। মেৰিলে বংসরতায় বেগি দিন্ধি ভাতে।। যোগী नवा क्रांटक कतिया व्याभाषान । वर्षमादन व्याभिक्ति रहेदव अवान ॥ যোগী সর্ক্ষেত্রলিঞ্ ক্রিত দেবিবে। যোগী সহা গুলাপরে দর্শন করিবে **জ্যৈষ্ঠক্ষে**ত্রে করাইয়া যে!গীর ভোষন। কোটি জোফাফল ঘটে প্রতি এক क्रमा। योशीमदर्शभेत श्रेश्च देश्दव कलिकादम । महिषि थाकिन छथा छव তপোবলে। ভূমি যে করিলা স্তৃতি যোগসিদ্ধকর। পাঠ করে যেই জনে নিস্তার সম্বর।। তেন বর দিয়া শিব দেখিবারে পায়। ক্ষেত্রবাসী দ্বিন্ধ সব আনিছে ভথায়।। ভক্তিভাবে এবণ করিয়া বে আখান। নিপাপী হইয়া ্ৰর লভেন নির্বাণ।। অধিকানিতাসী সীজানাথ বসু দাস। কাশীখণ্ড ভাষা করে অতি সুপ্রকাশ।। ত্রন্ধানশ্বে ভাবে ত্রন্ধানন্দের ভাষায় সেমাগু চ্ইন ভাতে ত্রিষ্ঠ অধ্যায়।।

-#81E--

দণ্ডখাত উপাখ্যান।

প্রার। অগস্তা কহেন শুন দেব ষ্ডানন। শিব স্মিধানে গেল সকল ত্রাজা। ভিজ্ঞগণে কি বলিল দেব মহেশ্বরে। ভিজ্ঞগণে কি কহিল প্রভূব গোচরে।। কিব্রপেতে ছিজ সব ছিল নিয়মেতে। রূপা করি কছ দেব শুনি বিস্তারিতে।। কার্ত্তিক কংহন শুন মুনি জপোধন। কাশী হৈতে গেল হর মন্দরে যথন ।। মহেশ্বর গমন শুনিয়া দ্বিজ্ঞাণ। নানামতে খেদ করে অরি পঞ্চানন।। শিবের বিচ্ছেদে সবে নিয়ম করিল। ভাষ ফল জল আদি ভক্ষণ ত্যজিল।। যে দিবস কাশীপুরে হর আগমন। সে দিবস ক্রিবেক জন্নাদি গ্রহণ। কাশীবাসী যতেক আছিল দ্বিজগণ। এইড নিয়ম ত্রত করিল ধারণ।। মৃত্তিকা খনন করি সকল ত্রাহ্মণ। তারমধ্যে কন্দ্রাদি করিয়া গ্রহণ।। তাহারে ভক্ষণ করি প্রাণ রক্ষাকরে। সদাকাল ধ্যান त्यार्ग शटक मरस्थरत !! मर्खामेश मृखिका त्य थनन कविन । करम करम দীর্ঘ এক সরোবর হৈল।। সেই সরোবরে হৈল অতি পুণ্যকর। দণ্ডখ্যাত **छीर्य नाम इहेल मजुरू॥ महाछीर्थ देशल मख्याजि म**द्धानन । सान मात्न रक कल चारक नित्रखत्।। त्यहे मरतावत हजुम्भारनी विकास । सनारमहरू শিবলিঞ্চ করিল স্থাপন।। শিবলিঞ্চ পূজা শত রুদ্রী জপ আর। পক্ল ব্রাহ্মণে ছিল এই ব্যবহার।। মহাদেব আগমন শুনি ছিজগণ। বরুল ব্রা**ক্ষাণ হর্ষে করিছে গ্রমন।। চক্রকুপ্ত হৈতে পঞ্চ সহত্রে ত্রাক্ষণ। শি**বের निकटि मद्य कवित अभन।। अगुष्ठ खाका कीर्यभन्माकिनेः देश्टक। निव সন্নিধানে গেল শীঘ হর্ষ চিতে।। ইংসভীর্থ হৈতে গেল অযুত দিজবর। তুর্মাসাতীর্থের একশত যে সত্তর।। মৎস্যতীর্থের যে পঞ্চশত ছিজ্পণ। কপাল মোচন হৈতে স্থ্য শতজন।। শুন মোচনের ছিজ পঞ্চশত হয়। বৈতরণী ভীথে পঞ্সহত্র যে রয়।। পৃথুদক কুণ্ডে ত্রয়োদশ শত জন। অপ্সর। কুণ্ড হৈতে দ্বিশত যে আদাণ।। দ্বিশত যে মেনকাকুণ্ডের স্বিগগণ। উর্বাদী কুণ্ডেব দ্বাদশ শত ব্রাহ্মণ।। বৈবস্বত কুণ্ড হৈতে পঞ্চ সহস্রেক গন্ধকুণ্ডের উনত্রিংশত তপস্থীক।। রুষতীর্থ হৈতে আইনে দ্বিঞ্জ ষ্ট্রশত

হয়। পিশাচ মোচন ভীংগ সগুশত যায়।। পিতৃকুখের একগত একচর্ষ্য আসি। ধুবতীর্থ হৈতে ষ্টশত তেজোরাশি।। এরাব্ত ভীর্ব হৈতে ত্রিশত যে দ্বিজ। মান্স ভীর্থ হৈছে দ্বিশত মহা তেজ।। বাসুকী তীর্থের শত সহস্র ব্রাহ্মণ। জানকীকুণ্ডের একশত বিজ্ঞাণ।। গৌতম কুণ্ডের মুনিবর নবশত। তুর্গুসংহার তীর্গের আইনে দশশত।। অসীগঙ্গাতীর্থ ষে পর্যান্ত ভিজ্ঞাণ। অন্তাদেশ সহত্র পঞ্চণত পঞ্চলন।। এই সব তীর্থ হৈতে অনেক ব্রাহ্মণ। শুদ্ধকলেবর স্থ করিস গমন।। বিরূপাক্ষ সন্নিধানে ভিজ্পণ মিলি। মঞ্লাচরণ করে জ্য় শিব বলি।। আতব তণ্ড,ল দুর্কা। शुष्टा रुक्त कति। श्रक्ति श्रक्ति वटन गर्व महारमस्य स्पति॥ विमान অব্যাসিয়া সদানক্ষ কর। তেমির্ভ এই স্বানে কুশলৈ আছয়।। ভিজ্ঞান প্রণাম করিয়। নিবেদয়। তব জাদর্শনে সবে মৃত্যু প্রায় ইম্ন।। কাশীবাস বলি প্রাণ আছেন ধারণ। মতত যে চিস্তা করি তব আগমন।। ভূমি প্রভো সর্ব্ধ কর্ত্ত। তিজ্ঞপত পাঁত। তোমা বিনে আমা সবার অন্য মাহি গতি এই ৰূপে বছুক্তি দিলগণ করে। দিলগণ প্রতি তৃষ্ট হইল শন্ধরে।। দিল সব যে নিয়ম করিল ধারণ। অন্তর্যামী সর্ব-ভত্ত ছোভ পঞ্চানৰ।। इं देश्त अमानक यव विद्य करा मत्नांगक यत वह याहा है का इसा দ্বিদ্বাণ বলে শুন পের মহেশ্র। এইবর চাহিমোরা প্রভুর গোচর।। কাশী পুরী স্থান প্রস্তু নাড়াভিবে। অলপুর্ণা বহু সদা বিরাজ করিবে।। কাশীতে ব্রাহ্মণ শাপ ন। হইবে কন্তু। রূপাকরি এইবর দিজে দেহ প্রস্তু। ভব পাদিপ্রেম সদাকাল রহেমন। ভব্দিযোগ বিচলিত নছে কদাচন।। हिल वाः शिक कर्षे देश्लमदश्यदतः मदनामील वत्रमाम कटत विलवदत् ॥ ভদপরে সহাদেবকুহে দ্বিজগুণে। ভাশীরমাহাত্ম্য সকেশুন সান্ধানে a ফাশী হয় পাপ নাশী স্থানে সর্ক্ষার। কাশীপুরে নাহিক যমের অধিকার।। অবি মুক্তে সদা বাস যেই নর করে। গর্ত্তবাস ছঃখ ভার যায় নিরস্তরে। বারা-থসী সর্বান করে যেই জীব। গহুত্র **জন্মের পাপক্ষর করে** শিব।। জাদক্ষ कामरम पुड़ा (यह कोरित्र इस् । मुखाक्षत्र इस रमहे नाहिक मध्यत्र ॥ कात्र কহি দ্বিজগণ শুন দর্মসারে। অবিমুক্তে শিবলিফ স্থাপিত যে করে।। ভাহার অনস্ত ফল কথন না হায়। সেই নর গব্ধ বাস কলাচ না পায়।। অবিমৃক্ত वारम जीव यनि शांश करत । शिभांक स्थानीटक आंख धारक कांभीशृदत्त । বছ ক্ষ পাইয়া ভারা পরে মুক্ত হয়। কহিলান সর্বসার শুনহ মিশ্চয়।। ষ্ণভাষ্ট ভীথ যেই মাহাজা শুনম। তার সর্ব পাপ ক্ষম হয়ত নিশ্চর।। প্রদ্ধাক্রমে সদা পাঠ যেই জনে করয়। অবিষ্ঠুক্তে ভার বাস খণ্ডন না হয়।। চতুঃ যক্তি অধ্যা কথা চমৎকার অভি। সমাপ্ত হইল সব শুন শুদ্ধ মতি।।

পায়ার। জিজ্ঞানে অগস্ত্যা মুনি পার্মিতী নম্মনে। জ্যৈতেশির শিবলিঙ্গ আছে কোন স্থানে।। বিশেষ শুনিতে ইচ্ছা হৈয়াছে আমার। ক্লপাকবি কহু দেব করিয়া বিস্তার ।। কার্ত্তিক কহেন শুস মুনি তপোধন। বিস্তারিত করি কহি শুন বিবরণ।। জৈতেওঁশ্বর শিবলিক্স না হয় দির্ণয়। তার মধ্যেতে পঞ্চসহত্র প্রকাশর। পরাসর লিজ জৈতে খর উত্তরেতে। দর্শননির্মালচিত্ত হয় অচিরাতে।। মার্কণ্ডেশ্বরের পূজা করে যেই নরে। মহাদেব ভার এতি সদম অন্তরে ॥ ভূঞ নারায়ণ শিবলিজ্ঞ চমৎকার। পুজিলে সকল সিব্ধি কহি লাম সার।। জাবালেশ্ব লিঙ্গ আছেন তথায়। তাহার দর্শনেতে তুর্গতি नाहि इम्र।। आफिरछाश्वत लिक्न (यवा श्रुका करत। कुर्छ वाधि देहर इक्न সেই সব নরে।। ভৈরবী ভীষণ নামে বড়ভয়স্করী। কেত্রের ভীষণ সব শীস্ত नाम कति।। भक्कत ज्यात्र ज्यार ज्या नन्धी थत्। पर्भारत प्रति कर्मार सन কুকর।। ভরদ্বাজেশ্বর লিক লিক নন্দীশ্বর। অরুণী সুস্থির লিক দেখিতে সুন্দর।। লিজ রাজেশ্বর তথা অভি মনোহর। তাছার দর্শনে রাজ্যেশ্বর হয় নর । কণ্ঠেশ্বর লিক্ষকাত্যায়নেশ্বর আরে। বামদেবে শ্বর লিক্ষ মৈত্তেশ্বর गात्।। हाटतच्यत निक स्य चाट्टम विवाक्षि**छ। देवधा**नद्वचात्र निक তথাতে স্থাপিত।। ক্লুচা লিকেশ্বর আরু অগ্নি বাসেশ্বর। প্রবেশ্বর বৎ সেশ্বর সর্বাসিদ্ধি তর ।। প্রহলাদেশ্বর শিবলিক কুশোভন। শত্র প্রয়েশ্বর লিঙ্গ ভার সন্ধিধান। মাঞ্জুকেশ্বর লিঙ্গ র্তীশ্বর হয়। চাবনেশ্বর লিঙ্গ সুদার অভিশয়।। কলিন্দমেশ্বর লিজ মুক্ত ধনেশ্বর। এরপেতে মহালিজ प्यादहन विश्वत्र ॥

অথ বিছাত কপাল উপাখ্যান।

পরার। আর এক ইতিহাস শুন তপোধন। বিদ্যুত কপাল নাম দৈত্য বিবরণ। প্রহলাদ মাতুল সেইদৈতা দুরাচার। মহাবলবস্ত হর বড়ই দুর্বার।। মনে মনে চিন্তা করে:রাজ্য করিবে। দেবতার নাশ বিনে সম্ভব না হবে।। দেবতা অসুরে বুদ্ধ উত্তর পক্ষেতে। কখন দেবতা হারে কখন সমস্যোজক বা জিলা বজে কোজারা হয়ক জিধন। এমত উপার দৈকা করিয়ে

চিত্তম।। দেবতার বল হয়্যত দ্বিজ্ঞাণ। তাহার বিনাশ সদা করেন চিত্তন।। তদপরে বিচার করেন চুক্তমন্তি। কোথা দিলগণ বন্ধু আছে অবস্থিতি।। কাশীপুরে খাদ করে হিজ বছতর। সন্ধান পাইয়া দৈত্য চলিল সত্ত্ব।। কাশীতে যাইয়া দৈত। সায়া প্রকাশয়। দিনে দিনে অনেক ত্রাহ্মণ ধরি খাষ।। গোপনে থাকেন দৈত্য ফিজ নাহি **জানে। দৃষ্টি**মাত্র দ্বিজ ধরি করয়ে উক্ষণে । শিবরাঞ্জ দিনে এক শিবের মন্দিরে। ধ্যান করি শিবপুজা করে ছিক্তবরে। সাহা দেখি মুষ্ট দৈছে। মায়া প্রকাশিল। বিকট দশন এক বাজে যে হইল।। বিজবরে ভক্ষিবারে যায় মন্দিরেতে। অন্তর্যামী সদানন্দ জানিল ছরিতে ৷ ভক্ত বংগল শিব অতি দয়াময় ৷ শিবলিক হৈতে এক কল্লকপ হয়। মায়া বাছি ধরিষা যে চাপুরে কক্ষেতে। শঙ্কটে পভিরা भक्त करत विश्वीरण।। भक्तक्षिति विष्याग भाव एन के कारत। मन्मिरत एक्सरत আছে দেব ত্রিলোচনে।। স্তব করেসদাশিবে সব ভিন্সবর। সদয় হইয়া দ্বিজে ক্রেন শক্ষর।। মম ধ্যান গেইজন ক্রে নিরস্তর। ভাকে রক্ষা করি আমি শুনহ সহব !। তদপরে মহাদেব ব্যাঘ্র প্রাণে মারি। শুক্র মিত্র পক্ষে শিব সমাদুর। করি। রূপা করি বাাত্রেশর হৈয়া দর্যানয়। জৈতেখর নিক টেতে লিক্ষরপে রয়।। যেই জনে ব্যাছেশ্বর লিক্ষার্চন করে। অনায়াশে সেই জন সর্ব্ধ পাপে তরে ॥ তদস্তরে মহাদেব অন্তর্ধ্যান হৈল। ভিজ্ঞগণ আগনার আলমেতে গেল।। কাশীখণ্ডামূত কথা অপুর্ব আখাান। ভক্তি ভাবে শুনে যেই সেই পুণ্যবান।। শঞ্চষ্টি অধ্যায় কথা হইল সমাপ্ত। শুদ্ধ। खक तूर्यक्रम मा ভाविश हिछ।।

পরার। অগত্য বলেন শুন গিরিজা নক্ষন। জৈতেখারে কি করিল দেব পঞ্চানন । বজানন কংগুন শুনহ মুনিবর। জৈতেখারে কাশীনাথ থাকে নির স্তর।। আর এক কথা বলি শুন তপোধন। হিমালয় রাজার যে অপুর্বি কথন ।।

--

অথ হিমালর প্রতি মেনকার কথন শৈলেশ্বর উপাধ্যান।

ত্রিপদী। একদিন হিমালয়,মেনকা ছঃবিভাশয়,রোদন করেন বহুতর বছদিন গত হৈল, গৌরী তত্ম না পাইল, কি হইল ভাবেন জন্তর ॥ জা-মাত! ভিক্ষুক হয়, গৌরীকে লইয়া যাম, গৌরী মোর জাছেন কিমতে।

कामीथ्छ।

জামভামোর ধেমন,পুতুরা ভাক ভক্ষণ,সদা কাল বাহন হবেতে।। পরিধান বায়ি ছাল, গলেতে হাড়ের মাল, জাঁথি সদা চুল চুল করে। ভন্ম সব মাথে অঙ্গে, ভুতগণ সদা সঙ্গে,শাশানেতে বাস নিরস্তরে । ভিক্ষা বাুলি ক্ষকেরি, ভিক্ষাকরে ত্রিপুরারী, ভাহাতে বে[®] দর পোন্। শুনিরাহি लाक मूट्य, मना भोती थादक फुःट्य, मन मट्य कि कति जयन।। निहि রাবে ডাকি রাণী, সকরণে কহে বাণী, পাষ্থি ভোমার ভরু মর। কছ श्रुगा श्रुक्त करन, तोही धन शाह कारन, जुनि कारन देशह बिलिया। यञ्चिम गठ देवल, भोती उद्य मा शारेल, मश्याम विरुद्ध आग यात्र। भौती cक विमाध मिटल, श्रूनऋखु मा कतिरल, शांघारगट्छ बाह्मिरल सम्बद्ध H নোণার কমল গৌরী, ভার ভত্ত্ব নাহি করি, কিমতে ধৈরজ ধরে মার। ভূমি ত কটিন অভি, স্বভাবে পাধাণ মূর্ত্তি, কি করিব না দেখি উপায়। পূচ কর্ম যত করি, উমা না দেখিয়া মরি, সংবাদ পাইব কিন্ধপেতে। একপো মেনক। কান্দে, কেশ পাশ নাহি বান্ধে, চিত্ত ছির নছে কোন মতে।। শুন ৬ ছে গিরিরাজ, ক্ষণেক না সহৈ ব্যাহ্ম, নিজে তুমি কর্ছ গ্যন। কাশীপুরে আছে হর, ভথাতে চল সম্বদ্ধ উমার করিতে অস্কেদ্ধ ।। রাণী বাকা শুনি দৈল, অভিশয় ছুঃধী হৈল, কাহে গিরি মেনকার প্রক্রি। হিমালয় কতে বাণী, ছঃখ না ভাবিহ রাণী, আমি তথা চলি শীঘ্রণতি।। कम्भारत रेनानताक, करगरू ना करत ताका, जांखारतरक कतिन नमसे। नीलकान चानि यछ, अवीलानि नानायछ, लईल बाका विवित् विप्रात्ता। ভারে ভারে রত্ন লয়, শৈলরাজ অগ্রে যায়, ফাশীর নিকটে উপনীতা तुष्ट्रापि निर्मिष्ठ भूती, नम् त्थर्ष्ट मार्थ शिति, अस्तत्य देश्म वमक्रिय। ছাট্টালিক। শত শত, মণি মুক্তা বিরাকিত, মানারত্রে গ্রন্থিত নকল। ধ্ব**ল** পতাকা নিশান, হৈতেছে উত্তীয়মান, নানা **শব্দে** বাদ্য কোলাহল। দেখে সৰ বিপরীত, শৈলরাজা মনে ভীত, না জানি কাগাব পুরী হবে। সন্ধান করিয়া ভার, ভবে হবে অগ্রসার, তদপরে পুরে এবেশিবে॥

श्री कात हत् । रमकार्क अवि देश हिमालय । कारत बिकामित अहे भूती कात हत् ।। रमकारक अक बिक कशरहेत वर्ष । जैनेनेक देशत यथा रेमल ताल देवरम ।। विकासदा अगाम कतिया गिति कया मम्मुर्थरक भूती कात मत्रमंग हत्र ।। विकास करह कर हिन्न मिनितामा गामि । काम কালে তুমি নাহি আইন হেথায়।। একি জনন্তুৰ কথা তব মুখে শুনি। এই পুরী শিবের যে হয় রাজধানী।। কাশীপুরী এই হয় শুন মতিমান। क्टेन्डाटन महाटम्य नमा व्यथिता। हिमालव कना। छात्र नाम त्य शास्त्रको। সদা বিরাক্ষিত শিব ভাহার সংহতি॥ জামাতা বৈতব দেখি শুনি হিমালর ছুঃখ দূর গেল অঞ্চ পুলকিত ময়। ইন্দের ঐত্বর্য তার তুলা নাহি হব। দেখির। যে কাশীপুরী জুংখ গেল সব।। ধন কিছু আনিছিলাম করি বছ যত্ত্ব। কুল্যা জামাভার প্রতি দিব কিবা রত্ন।। যে ঐশ্বর্য্য ছইরাছে দেখিবারে शाहै। जल्म तुषु कि अकृदित मित मित ठां खि।। अठवनि रेशन शक्षममे ভীবে যার। স্লান দান সব কর্ম করিয়া তথায়।। ভিমালয়ে যে সকল রভ ক্ষানিছিল। দণ্ডেশ্বর শিৰলিক নিকটে রাখিল।। তদস্তরে শৈলরাকা গিয়া निकालम् । कामाका देवज्य गव स्मनकादक कम् ॥ शक्तं व्यागीतक ताका ডাকিয়া আনিল। মহাবলবস্ত তারা রাজ অথ্রে আইল।। শত শত লোক লইয়া শৈল যে চলিল। পুনর্কার কাশীপুরে উপনীত হৈল। একরাত্র মধ্যে বুজুপুরী যে নির্মিল। তার মধ্যে নানারত্তে মন্দির করিল।। মণিযুক্তা প্রবালেতে করিল নিশ্মাণ। কুন্দর হইল পুরী অতি শোভমান।। অতি রম্য স্থান হৈল দেখিতে সুন্দর। তাহার নিকটে করে এক সরোবর।। সরোবর চতুপান্ধে নামাবিধ মণি। বিরাজিত নানা পক্ষী করে মহা ধানি॥ রত্তের मिलात निवित्तिक एए अभिता देगालकत महिलक नाथान कतिन। একবাত মধ্যে সব ক্রিল সমাপন। নিজ পুরে শৈলরাল করিল গমন।। ব্রজনী প্রভাতে দেখি নবা রতুপুরী। কাশীর রক্ষক গেল শিবের সন্ধরি।। भीध कृति त्रःवान (यशिद बानाहैन। तबनीए अक शूती दकवा निर्माहैन রুত্বেতে নির্মিত পুরী অতি সুশোভন। তার মধ্যে মন্দিরেতে শিবের क्वालन।। मीलकास स्वाकास मिल्ड मांधन। भूती पार्थ हमरकात एत খলপাণি।। অন্তর্বামী সদানন্দ সকল জানেন। দুত মুখে শুনি অরপুর্ণাকে বলেন।। শুন প্রিয়ে কিবা শুনি হুত মুখে বার্তা। হুইজনে শীস্ত্র করি চলি-लन कार्डा ।। এতবলি হরগৌরী সম্বরে চলিল। পুরীর নিকটে গিয়া छिश्चिक देश्त । अफ्रेनिका स्मिथे श्वरतोती हमध्यात । श्रुतीत मस्यादक शिल (मश्रिट्ड विस्तात ।। अन्नश्रुनी गरक कहि (मंब अश्रुताती । जन्दम जन्म ভ্রমণ করিয়া দেখে পুরী।। চিত্তেতে বিচিত্ত দণি সাণিকা প্রবালে। হর-शोदी दावित्रा इटेल कूजूटल।। मिलदारक टेमलम्बत निरमत छाना। भागताज नाम जारह मिलाद निधन।। शार्सकी करहन अकु कति निरंतरन কে করিল এই পুরী-অভি সুলোভন। যদবিধি দেবিরাহি রক্তমর পুরী।
ভানা স্থানে মন নহে শুন ব্রিপুরারা।। ভূতনাথ ভবিষ্যতি ভূত বর্ত্তমার্ম।
ভাতর্থানি সদানন্দ সব হৈল জান।। তত্ত্বাপিই মন্দিরের লিখন পঠিয়া।
পার্কতীকে বলে হর হর্ষমুক্ত হৈয়।। তব পিতা শৈলরাজ পুরী এই হয়।
শৈলেশ্বর শিবলিক স্থাপিত করয়।। শুনি তৃষ্ঠ হৈল বভু পর্বত-নন্দিনী।
ভাতি রম্য স্থান এই শুন পূলপাণি।। শিব কহে মম বাক্য শুন বরাননে।
পুরী দেখি বভু ভূষ্ট হইয়াছি মনে।। ভক্তিভাবে করে শৈল লিক্সের
স্থাপন। এই লিক আমার হবে সদা বিরাক্ষন।। অমপুর্ণা সম্বোধিয়া কহে
পঞ্চাননে। তব পিতা শৈলরাজ বভু পুণাবানে। শৈলেশ্বর শিবলিক অতি
মনোহর। এই স্থানে হইলেক অতি পুণাকর।। শৈলেশ্বর শিবলিক পুন্তে
যেই জন। অনায়াসে মুক্তি তার নাহিক খণ্ডন।। শৈলেশ্বর শিবলিক পুন্তে
দেব পঞ্চানন। অমপুর্ণা সহ প্রভু করিছে ভ্রমণ।। ভ্রমণ করিতে উপনীত
দণ্ডেশ্বরে। তদপরে শুন মুনি প্রসক্ত অন্তরে।। ছয় বন্ধী অধ্যার যে অপুর্বক

অধ রত্নেশ্বর উপাখ্যান।

প্রার। যড়ানন কছেন অগন্তা মূনিবরে। আশ্রা আধান কছি তোমার গোচরে।। পূর্বে গিরিরাজ যত রত্ন আনি ছিল। অলপ রত্ন বলি শিব অত্যে নাহি দিল।। সেই দবা রত্ন দগুপাণির অত্যেকে। রাখিলেন শৈলরাজ পরম ভক্তিতে।। শিবলিস হৈল সেই সকল রত্নেতে। দেখিতে সুন্দর বড় অতি প্রথালিতে।। শৈলেশ্বর হৈতে শিব গৌরীর সহিত। ভামিতে ভামিতে দোঁহে তথা উপস্থিত।। অতি মনোহর লিক প্রকাশিত হয়। পাতাল পর্যান্ত লিক মণি জ্যোতির্মার।। শৈল মুতা ভক্তিশ্বরি জিঞ্জানে শক্ষরে। কি কপেতে রত্নলিক কহিবে আমারে। শুনিরা পৌরীর বাক্য দেব ত্রিপুরারী। মুখে হাসি মৃত্যভাষী কছেন বিস্তারি।। তব পিতা হিমালয় ভোমার লাগিয়া। বন্ধ কিছু আনি ছিল বন্ধ যে করিয়া।। কাশীর সম্পান্তি সব দেখিয়া নয়নে। জাপনে আনিত রত্ন করি অশ্য জানে।। তোমাকে না দিয়া রত্ন ও স্থানে রাখিল। সে সব রত্নেতে দেখা শিবলিক হৈল।। শুনিরা সম্ভর্মী বড় হইল পার্ক্তী। শক্ষরী কাহ্ন পারে শক্ষরের

বে করন্ধ। তদপরে ভূতনাথ পার্কভীকে কন। তব পিতা হিমালর শুদ্ধ
মন হল। তাহার পুণোতে শিবলিঞ্জ বে উদিত। সন্তুষ্ঠ হই সৃত্যামি দেথিরা নির্মিত। ভূমি এক কর্ম কর শুন বরাননে। রত্বের মন্দির এক দেহ
এই স্থানে। মনিমার মন্দির যে বিস্তার হইবে। হিমালর কীর্ত্তি সব জগতে
পুযিবে।। শুনিরা শঙ্করী চিত্তে অভি হর্ষ হৈল। মন্দির করিতে বিশ্বকর্মের
আজা দিল। আভা মাতা বিশ্বকর্মা করিল নির্মিত। মনি মুক্তা প্রবালেতে
মন্দির রচিত।। দেখি পুরী হয়-গৌরী হর্ষ চিত্ত হৈল। রত্বেশ্বর সেই লিঙ্গ
আখান ফরিল।। পরেতে পার্কভী প্রতি বলেন শঙ্করে। সদাকাল আমি
বিরাজিব রত্বেশ্বরে।। ভক্তিভাবে রত্বেশ্বরে যে জন পুজর। মনোরথ সিদ্ধি
ভার জক্তে মুক্তি হয়।। হর-গৌরী স্থানান্তরে করেন ভ্রমণ। ইতিহাস কথা
কহি শুন বিবরণ।।

-3/3/4-

অথ কলাবতী কন্যার উপাখ্যান।

পরার। কলাবতী নামে কন্যা পরম সুক্ষরী। ভক্তিভাবে রড়েশ্বর লিক্স পুরুষা করি।। এইমত প্রতি দিন করে গতায়াত। একদিন গৃহে গিয়া মৃত্যু অক্সাং॥

পিত্রদী। পুণাবভী কলাবভী, ভক্তি ছিল শিব প্রতি, বসুভ্তি নামেতে গদ্ধনি। ভারগৃহে জন্মাইল, রত্নাবভী নাম কৈল, সুন্দর যে হইল অপুর্বা। দিনে দিনে বৃদ্ধি কনা।, কপে গুণে ইলে ধনা।, পূর্ণ চক্ত জিনি মুথ শোভা বিল্লুতে যে বর্ণ জিনি, পজরাজ গানিধনী, দেখি হয় মুনি মনলোভা।। তিন জন স্থী সঙ্গে, ভাছেন প্রম রক্ষে, এক স্থী নাম শশীলেখা। চিত্র-রেখা গুণবভী, সর্বা কর্মে শুল্পমতি, ভূতীয় স্থী যে চক্তবেখা।। পূর্ব জন্ম পুণাকলে, রত্নাবভী কুভূহলে, তিন স্থী সঙ্গেতে লইয়া। প্রভাতে উঠিয়া নিতি, কাশী যায় শীল্পতি, রক্তেশ্বর পুত্রু হর্ম হর্ম ইহ্য়া।। সুনির্মাল গঙ্গাজল, জাতে দিয়া বিল্লুল, সুপদ্ধি চন্দন পুল্প আর। মাল্য পুল্প বন্ধ ক্রপ, আর দিল দীল-ধুণ, নৈবিদ্যাদি নানা উপহার।। ভক্তি ভাবেরশ্বাবভী, রক্ষেবের পুঞ্জে নিতি, ভক্তিযোগ সর্বাদা ক্রম। ভুক্তি হৈয়া দ্যাময়, রহাবভী প্রতি ক্রয়, বর শহ যথা ইচ্ছা হয়।। তব সনগত যাহা, আমিত জানি যে ভাহা,

রুষ্টুড় হবে তব পদ্মি। নাগলোক বাস তার, শিবপুজা যাত্র সায়, সদা करत जामारक मिन्छि॥ द्रश्रवणी छप्त्रभाद्र, श्राम क्तिया इट्टा, मधी मटक शृत्हरक शयन । उपहृत्क यमा **ভाবে, कि श्रका**रत रमथा इतत, भानगी क किसा অনুক্র। রক্ষনী প্রভাত কালে, রভাতে প্রশ্ন ছলে, দেখি প্রাতে রহে মৌন ভাবে। মথী সকলেতে মেলি, প্রস্পুর বলাবলি, একি একি দেখি অসম্ভব।। শুন রহাবভী বাণী, কি কারণে মৌন ভূমি, বলহ উপায় করি তারি। রখাবতী বলে দথী, নিশিবোরে সপ্প দেখি, তাহাকে দেখাছ শীত্র করি।। সথী সদের গুণবতী, অসম্ভব কথা অতি, কি প্রকারে নিশ্চয় জানিব। শিবপুজা বেলা হৈল, শীঘ্রগতি কাশী চল্ল, সেই স্থানে বিস্থার करिव।। भिवश्रका नाम एक्ति, अपनि छेठिल धनी, नथी मदक काला कामी-পুরে ৷ আসনাদি যোড়লেতে, নানা উপহার ভাচে, ভক্তি করি পু**লে** রঙে-শ্বরে।। দখী সহ কলাবতী, প্রণাম করিয়া স্তুতি, শণিদারতে প্রদক্ষিণ করে शांद्रभाषक कृति शांन, देश्य हिन्दु देशवामान, व्यवस्थि वनिय मन्द्रत ॥ রহাবতী ভদপরে, স্থীগণে মৃত্র স্বরে, করু-পতে কছেন বচন। স্বপ্ন কথ। देश्य মনে, ধৈর্য্য নাছি গরে প্রাণে উপ্যে করহ স্থীলন । শুনি-বালী সব স্থী, উপায় নাচিক দেখি। স্থির কিছু করিতে না পারে। চিল্ললেখা অলো তাসি, কহিতেছে মৃত্যু সাধি, রতাবতী শুনমু গড়রে । পট্টিত্র করি আমি, স্বৰ্গ মন্ত্য আদি ভূমি, পাভালাদি যক অভুবনে : ভূমি সৰ জনে करम, शहि धन्य विमामात्म, गांदत जुमि धनियेटन द्वशदम।। शहि यमि দেখ তারে, কছিবে সন্থরে সোরে, উপায় করিব তদন্তরে। এতশুনি রত্মাবতী, আনন্দ হইল অভি, চিত্রলেখা চিত্রপট করে ॥ ত্রিতুরনে যত স্থান প্রটেতে করে লিখন, রন্ধারতী দকল দেখিল। স্বর্গ মন্ট্য দেখি ধনী, প্রমাদ य मत्म ग्रामि, जलदार्क त्यांकिक इहेल ।। शहारक शाकालश्रुती, कुक्तरी সম্বনে হেরি, ক্রামে ক্রমে স্কলি দেখিল। মণিময় একপুর ভার মধ্যে রত্ন-ছক, মনোহর বলে যে হেরিল।। ভাহাকে দেখিয়া রাম্য,স্বপ্ন ভাষ মনকাষা, लिष्किष्ठ इरेल प्रवननी। नथी नव किष्कितिना, वृक्षि कर्मि निश्चि देवल, র মাবতী পরে করে বাণী।। এই দেখ চিষ্টোর, পুরুষ মনোজ মেন্ত, ভোমরা যে দেখাহ সকলে। ভদপরে সব স্থা, বছচ্চুছে দেখি স্থাী, নিজা-লয় যায় কুতুহলে।। মুবাছ নামেতে দৈত্য, অক্সাৎ আদি মন্ত্যু হরণ कतिल कमाशिन। कमाशिन एमशि देनद्या, हमदकात देशल हिट्छ, भिव मिव করিছে স্মরণ।। নিজ পরী পাতালেকে, ক্রতগতি চলে পথে, কনাগণ

রোদন করর। শিরে করাঘাত হানি, বলে রক্ষ খূলপাণি, রাক্ষসের হস্তে প্রাণ যায়।। রম্চুড় শুনি শব্দ, হইল মনেতে ক্ষুর্ন, ধনুর্বাণ লইয়া চলিল एपथि देव**ा स्वोद्ध**दत, कनाश्यः क्टमधरत, निव्यश्वती शमन कतिल।। রছচ্ছ কোধ করি, দানবেরে অস্ত্রমারি, তৎক্ষণেতে সংহার করিল। তদ-পরে কন্যাগণে, করি ভয় নিবারণে, বিশেষ করিয়া জিজাসিল ॥ ছুই দান বের ভর, চিত্রের পুর্ত্তলী ন্যায়, দাগুটিয়া আছে কন্যাগণ। রহচ্ছ বলে বাণী, চিত্তে ভর তাজ ধনী, দানবেরে করেছি নিধন।। শুনি তাহার বচন, সবে হৈল সচেতন, রহচুড়ে চিত্রলেখা বলে। শুন ওছে মহাশয়, দেহ নিজ পরিচয়, সমূহ যে বিপদে তারিলে। আপনার পরিচয়, রছচ্ছ সব কয়, শুনি সলভিজ্ন তা রামাবতী। শুন সবসূবদনী, রত্নচূড়কবে বাণী, ভোমরা কে কহ শীঘ্রগতি।। চিত্র লেখা স্থির মতি, সবিনয় কহে অতি, মৃত্ত ভাবে মধুর বচন। গদ্ধ বি যে বসু ভৃতি, তার র্জাবতি, সঙ্গে দখী মোরা ভিনজন । নিতা ঘাই কাশী পুরে, শিবপুঞ্জি রত্নেশ্বরে, গৃহে মোরা করিব গমন। হেনকালে অককাৎ, অদ্য হৈল বান্ধু-घाड, मानत्वत इटल्डट्ड পভन।। मानत्व लहेन इति, लानिन পाडानश्रुती, তুমি সবার বাঁচাইলে প্রাণ। আমরা অবলা বালা, নাহি আনি ছু:খ ভালা, বিপদেতে ভুগি কৈলে ত্রাণ।। তব হৈতে পাই রক্ষা, মোরা চাহি এই खिका, त्रश्चित कि काल लाहेत। ताका खनि कनाजिए, हु:थ नाहि खाति মনে, রলে শীন্ত কাশী পুরে যাব ।৷ অনায়াদে তদন্তর, যথা শিব রত্নেশ্বর, ক্রনাগণে অানিল স্থারিত। দেখি রভ্রেশ্বর লিস্ক, হৈল সবে মৌনভঙ্গ্রভ্রেশ্বর দেখি আনন্দিত।।

পরার। কন্যা সব না দেখি গন্ধর্ম রমুভূতি। স্থীস্থ কোথা গেল কন্যারত্বতী।। গন্ধর্ম রাজন হৈল বড়ই চিন্তিত। হেনকালে তথাতে নারদ উপস্থিত।। রত্বাবতী হৃত্তাস্ত যে সকল কহিল। অতি শীস্ত্র বমুভূতি কাশীতে চলিল।। পরেতে গন্ধর্ম রাজ গিয়া রত্বেশ্বরে। রত্বাবতী কন্যা দেখি প্রকুল অন্তরে। স্থীগণ সহ তথা বসি রত্বাবতি। রত্বচূড় নামে নাগ তথা অবস্থিত।। রত্বাবতী পিতা দেখি আনন্দিতা হৈল। আদ্য অন্ত বিবরণ পিতাকে বলিল।। সকল হৃত্তান্ত শুনি হর্ম বমুভূতি। রত্বচূড়ে কন্যা দিল করি শাস্ত্রনীতি। রত্বাবতী সঙ্গেছিল স্থা তিন জন। তাবতের পিতা আনে গন্ধর্ম রাজন।। সে সকল কন্যাদান দিল র্মচূড়ে। স্থীস্থ

রত্রবিতী প্রমোদ অন্তরে।। তদপরে চারি কন্যা লইয়া রহচ্ছ। পাতা লেতে গেল শীন্ত আপনার পুর।। বহাবতী আখ্যান যে করেন প্রবণ। ধন থান্য সর্বকাল সুখী দেই জন।। সর্ব পাপক্ষয় তার শুল্প কলেবর। অন্তে মুক্ত হয় তার কহিল বিস্তার।। কাশীখণ্ড পুণাকথা অমৃত ভাষণ। সপ্তম্ফি অধ্যায় যে হইল সমাপণ।।

ইতি ঐকাশীপত্তে পঞ্চনদ পাদোদক বৈশ্বব তীর্থ

মন্দার হইতে মহাদেবের কাশী আগমন

জৈতি দিওখাত তীর্থ শৈলেশরে

রক্ষের শিবলিক স্থাপনা
রগাবতী ৷ আখ্যান

ভাইমঃসূর্বঃ।

-3454-

অথ গজাসুরের উপাথ্যাব 🕼

পরার। অগস্তের কছেন শুন পার্ব্বতী নন্দন। ওদপরে কি করিল দেয পঞ্চানন।। কার্ত্তিক কহেন শুন মুদি মহাশয়। হরগৌরী কাশীপুরে জমণ করম।। হেন কালে কোলাহল কাশীর উত্তরে। ব্যস্ত হৈয়া তথার চলিল মহেশ্বরে। মহিষামুরের পুঞ্জ হয় গলাসুর। প্রচণ্ড শরীর তার অভিভয়স্কর নব সহস্র যোজন শরীর ভাহার। কেশজাল মেঘ তুল্য অতি সুবিস্তার।। निश्वारम्ब नमू य करङ्गाल श्टेल । अमाविध क्लिनिधि सूच्छित ना श्टेल ॥ কাশীপুরী ত্রাদে বীর বভ়ই ছুর্কার। ছুই হস্তে জীব সব করেন আহার॥ সর্বলোক ভীত হৈয়া কোলাহল করে। ডাহা দেখি মহাদেব কুপিত তাস্তরে। ত্রিপুল মারিল শিব অস্তুরের বুকে। মুখে তার রক্ত পড়ে ঝলকে ঝলকে।। ত্রিশূলে গাঁথিয়া গজাস্কুরের শ্রারে। মহাদেব বাম হস্তে উদ্ধ্ করি ধরে। মস্তকেতে ছত্র যেন ধরে বামহাতে। অসুর গাঁথিয়া শূলে ধরে সেই মতে।। গজামুর জানিলা যে নিজ মুক্ত হয়। তদপরে মহাদেব স্তব করি কয়।। অপ্যর যোনিতে প্রভো উত্তব আমার। নব সহত্র যোজন শরীর বিস্তার।। আনার শরীর তুমি গাঁথিয়া **ত্রিগুলে। আপন মন্তক হৈতে** উর্জ্বে করিলে।। জামা সন ভাগ্যবান নাহি ত্রিভুবন। প্রভুর হস্তেতে হৈল আমার মরণ।। এফগত কর্ত্তা ভার এই ৰূপে দয়া। জোধবর সমভাব ঈশ্বরের মারা।। দেব পঞ্চানন তুমি সকলের মূল। চরাচর পর্বভাদি ভূমি সুক্ষা সুল।। তোনার মহিমা প্রভো আমি কিবা জানি। কিঞ্ছিৎ জানেন দামোদর পদ্মানে।। এইরূপ বস্তু স্তব করিল অস্কুরে। আশুভোষ ভোলা নাথ তৃষ্ট হৈল তারে।। বর লহ গজাসুর যথা ইচ্ছা হয়। অসুর কহিল প্রভু শুন দয়াময়।। যদি বর দিবে প্রভোকরি নিবেদন। আমার শরীর চর্ম করিবে বসন।। প্রসন্ন হইরা শিব বর দিল তারে। তব চর্ম্ম ধারণ করিব কলেবরে ।। তদপরে গজামুর হইলা নিধন। অমুরের চর্মা প্রভু করিল ধারণ ভক্ত বলি অসুর শরীরে বিরাজিল। কীর্দ্তিবাসেশ্বর <mark>লিঙ্গ উদিত হই</mark>ল।। कीर्छिवाँन माश्रामा य महिमा जलात। अविमुक्त नर्सनिक देश्ट देशन সার।। চৈত্র পূর্ণিমাতে বাল্চি যাত্রা যেবা করে। কাশীকৃত পাপনাশী জ্ঞান প্রান্তি পরে।। মাঘমাসে কুফার্চদশী তিথি হয়। তাতে উপবাসী হৈয়া যেব। জনে রয়।। রাত্র জাগরণ করি পুজে কীর্ত্তিবাস। পরম সুগতি লাভ कहिल निर्मात !!

কাশীখণ্ড।

ष्मथ इश्मजीर्थ कथन।

প্রার। কীর্ত্তিবাস সন্মুখেতে দেব ত্রিপুরারী। নিজহত্তে মৃত্তিকা খননে কুণ্ড করি।। এই স্থানে কুণ্ড হইল অতি পুণ্য কর। তাহার মাহাস্ক্র কথা শুন মুনিবর ।। অললোভে কাক বব করমে বিবাদ। পরস্পর বিবা-দেতে পড়িল প্রমাদ।। মৃত এক কাক সেই কুণ্ডেতে পড়িল। দর্কপাপে মুক্ত হৈরা হংসক্রপ হৈল।। তদবধি হংসভীর্থ নাম হৈল তার। স্লান দানে সহাপুণা মহিমা অপার।। হংসভীর্থে চতুর্দিণে যত থাবিগণ। প্রত্যেকে করিল দবে লিক্ষের স্থাপন। ত্রয়োদশ শত আছে চতুর্দিণে তার। কীর্ত্তিবাদেশর আদি চাবনেশ আর।। কীর্ত্তি ত্রাদ পশ্চিমেতে আছে লোমেপুর। ঈভ্রাপ্**শে মালভীশ্বর আ**ছে সর্বধ্র।। ঈশান কোণেতে অন্তকেশ্বর নিশ্চিত। তার পাশেতে জনকেশ্বর বিরাজিত।। অশিতাঙ্গ ভৈরব আছে কার উত্তরে**ছে,। সদাক**্ল <mark>অবস্থিতি দেবীর সাক্ষাতে।।</mark> শুজোদরী দেবী বিরাজিত জিহ্মতাল ৷ দেবীর নৈথত কোণে কুও আছে ভাল।। এই কুণ্ডে স্নান যেই সব নর করে। সর্ববাপে যুক্ত হয় সেই সব নরে।। বিভুজ চতুপ্সদ পঞ্চমুগুনিন। তাহার উত্তরে আছে ভয় বিবর্ষান্।[চতুঃশৃক্ষ র্যাকার ত্রিপদ ভাষার। ত্রয় শীর্ষ সপ্ত হস্ত ত্রিধাবদ্ধ ভার।। নাদ্ধতায় পেচহয় প্রণব আকার। কাশী পাপচ্ছেদ হৈছু হস্তেতে কুঠার। র্ধ রুদ্র নাম ভার অতি দীগুমান। দর্শন মাত্রেতে সর্ব্ব পাপ নাশ পান।। মণির প্রদীপ নাগ তথাতে আছেন। ততুত্তরে মণিকুণ্ড সদা বিরাজেন 🏨 যে সকলে স্লান করে মণিকুগু জলে। মহৈশর্য্য প্রাপ্ত হয় মুক্তি অন্ত কালে। বমাপ্ত হইল যে অষ্ট ষষ্ঠ অধ্যায়। শুনিলে সকল পাপ শীঘ্ৰ নাশ পায়।

--***\$**!E**---

অথ অউশস্থী তীর্থের আগ্রমন !

পরার। ক্ষন্দ বলে শুন মুনি কাশী বিবরণ। যে সকল শিবলিক মুখাতে স্থাপন।। গজচর্ম পরিধান করিল যে স্থানে। রুদ্রাবাস নাম তার হইল স্থানে।। শিবা সঙ্গে শিব তথা বিষয়া কৌভুকে। নন্দী আসি সেই স্থানে মিলিল সমা খো। প্রণাম করিয়া নন্দী করে নিবেদন। অইঘটি প্রসাদের শুভ জাগমন।। স্থগ মর্তা পাতালে যতেক পুঞ্জান। কাশীপুরে সে সকল

হৈল অধিষ্ঠান।। স্থান নাম মহালিক কুকুকেত্রে হৈতে। কণামাত্র তথা রাখি আসিল কোশীতে।। সমিহিত নাম বাপী মহা পুণ্য জম। লোলাক পশ্চিমভাগে কুরুক্তেত স্থান।। সেইস্থানে স্লান আদি যত কর্ম করে। কুরুক্তেত হৈতে কোটিগুণ ফল ধরে।। নৈমিষ হইতে দেব দেব আগমন। हु खि ता**क छेख**ाउट निमियांथा वन ॥ एमव एमविक्य खक्कांवर्ख महतांवत । স্থান পুজনৈতে কোটিপ্রণ ফলকর।। মহাবল নাম লিঙ্গ গোষণ হইতে। नंद्धां पिठा निकटि इटेन छेशस्टिष्ठ ॥ निक्र मनी जूबन প্রাভাগ তীর্থ হৈতে ঋণ মোচনের পূর্ব্ব হৈল প্রতিষ্ঠিতে ॥ উর্জ্জনী হৈতে লিক মামে মহাকাল প্রণবেশ্বরের পূর্বে আসিল বিশাল।। পুত্তর হইতে লিক্স আযো গন্ধেশ্বর আবিভূতি মৎস্যোদরী উদ্ভবে সম্বর।। অউহাস হৈতে লিঞ্জ মহানাদেশ্বর। ত্তিলোচন উত্তরে হইল স্থিতিকর । মহোৎকটেশ্বর লিঙ্গ মক্সৎকেট হৈতে আবিভূতি কামেশ্বর উত্তর ভাগেতে॥ আসিল বিমলেশ্বর বিশ্বস্থান হৈতে সর্নিন পশ্চিমভাগে হৈল প্রতিষ্ঠিতে।। মাহেক্র হইতে লিজ নামে মহাবত ক্ষেশ্বর সমীমে স্ইল উপস্থিত।। সত্য কালে স্তব করে দেবঋষিগণ পৃথিবী ভেদিয়া লিঙ্গ উঠিল তখন।। মহাদেব নাম লিঙ্গ অতি চমৎকার। मुक्जिक्क देश्य कांगी अधिकीत जात ॥ हित्रगुगार्खेत अण्डिमाश्या गिव-ছান। মহাদেব লিজ কাশীপুরীর প্রধান।। পিতামহেশর লিজ গরাতীর্থ হৈতে। ধর্মেশ্বর নিকটে হইল উপস্থিতে । প্রায়াগ হইতে শূলটক্ষ মহেশ্বর নির্বাণ মণ্টক দক্ষিণা শে মনোহর। মহাতেজো নাম লিঞ্হ শস্কুকর্ণ হৈতে। বিনায়কেখন পুর্বে আসিল স্বরিতে।। ক্লক্তকোটি ভীর্থ হৈতে মহাযোগীশ্বর। পার্কভীশ্বরের পাশে অধিষ্ঠিত কর।। কাশীপুরে রুদ্রন্থলি খ্যাভি সেই স্থান। সেই স্থানে মৃত্যু হৈলে লভয়ে নির্বাণ।। একার হইতে কীর্ত্তিবাস আগমন। কীর্ত্তিবাসে রহিলেন হইয়া মিলন।। চণ্ডীশ্বর আসিল মরুকাঙ্গল হৈতে। পাশপাণি গণেশ্বর স্থিতি নিকটেতে ।। কালাঞ্চর হৈতে নীলকণ্ঠ আগমন। কুটদন্ত গণেশ নিকটে সংস্থাপন।। কাশ্মীর হইতে বিজয়েশ্বর উদয়। শালক টক্ষট পুর্বভাগে স্থিতি হয়।। ত্রিদণ্ডা হইতে উর্ব্বেডা লিক নাম। কুয়াও গণেশ পালে করিল বিজ্ঞাম।। একও नार्गरङ লিঙ্গ মণ্ডলেশ হৈছে। নংস্থাপিত মুণ্ড বিনারক উত্তরেছে॥ · ছাগকুণ্ড হৈতে কপদীশর আসিল। পিশাচ মোচন ভীর্থে প্রতিষ্ঠিত হৈল আত্রতিকপর ক্ষেত্র হৈতে সুক্ষেপর। আসিল বিকটণত গণেশ উত্তর।। আনিল অমন্তীশ্বর মধুকেশ হৈতে। সংস্থাপিত লখোদর গণেশ সাক্ষাতে ।

আসি ত্রিপুরাস্ত কেশ এইশব ক্টছে। শ্রুধিক্টিছ বিশ্বেশর পরিচমতারেছে আসিল কুকুটেশ্বর সৌমক্ষেত্র হৈতে। বক্তু ভূপ্ত গণেশ নিকটে অবস্থিতে 🖡 बालियत रेट्र विक विभूती बामित । कृष्टेनस गर्भम मांकार व्हिक रेह्न বামেশ্বর হৈতে ধজ্জটি লিঙ্গ আগত। একদন্ত গণেশের উত্তরে সংশিক্ষ আনিল ত্রায়কেশ্বর ত্রিসন্ধ্যা হইতে। ত্রিমুখ গণেশ পুর্বভাগে প্রভিত্তিত 🛊 ভবিশ্চন্দ্র ক্ষেত্র হৈতে লিক হরেশ্বর। হরিশ্চন্দ্রেম্বর সাক্ষাতে স্থিতি কর।। সর্বব নাম লিক মধ্যমেশ্র ইইতে। সংস্থাপিত চতুর্কেদেশ্রের সাক্ষাতে।। স্থলেশ্বর হৈতে মহালিক আগমন। য**েশ্ব**র নিকটেতে হইল স্থাপন। নুবর্ণাখ্যক্ষেত্র হৈতে সহস্রাক্ষেশ্বর। বৈলেশ্বর দক্ষিণেতে হৈলে স্থিতিকর कांत्रिल इर्षिएक्यत इर्यकीर्थ देहरू । मरस्यत निकंदिएक इट्टेन द्वांत्रिएक ।। ক্রতীর্থ হৈতে লিক আসি ক্রডেশর। ত্রিপুরেশ সমীপে স্থাপিত মনো-इत । त्रयक्षक देशक त्रयश्वत आश्वमन। वार्ष्यत मभीत्य इहेन मः खाना। আসিল উশানেশ্বর কেদার হইতে। সংস্থাপিত প্রহলাদকেশ্বর পশ্চি মেতে।। সংহার ভৈরব আইনে ভৈরব সহিতে। খব বিনায়ক পূর্ব-ভাগে অবস্থিতে। কন থল হৈতে উগ্র লিম্ম আগমন। অর্ক বিনায়ক পুর্বস্থানে সংস্থাপন। বস্ত্রাপথ হৈতে ভবেশ্বর আগমন। ভীমচণ্ডী নিকটে ्रहेल मःश्वाशन ।। (स्वमाक वन देहरू लिक मश्वीश्वत । मरमहाल विनांत्रक পুর্বে স্থিতি কর।। ভদ্রকর্ণ হুদ হৈতে লিক শির নাম। উদ্ধৃপ্ত গণেশ পুর্বেক করিল বিজ্ঞাম।। শঙ্কর নামেতে লিক হরিশ্চন্দ্র পাশে। তাঁহাকে श्रुकित्न नाहि रेवरम भर्जुवारम।। यम छोर्थ रेहरू कामनिक व्यक्तिम। চন্দ্রেশ পশ্চিমে কলনেশ্বর আখ্যান।। কুজবারে চতুর্দ শী ভিথি মদি হয়। প্রস্থান করিলে ছাভে হয় পাপকর।। নেপাল হইছে লিঞ্পশুপতীশ্বর। পাশুপত ক্ষেত্রে অবৃত্তিতি নিরস্কর।। করবীর হৈতে কলাপীশ আগমন। कशाल स्मान्न छीटर्थ इहेन मः दाशन ॥ दमवीका स्ट्रेट सामि निक छेमा-পতি। পশুপতিখর পুর্বেকরিল সংস্থিতি।। নহেশ্ব ক্ষেত্র হৈছে লিঞ দীল্লেশ্বর। উমাপতিশ্বর শাশেক্ষিত নিরস্তর। কেয়ারোহণ চইতে আদ্দর্য্য আসিল। শশীশন কুলত্ত্ব জতি তুনির্মল।। মহাদেব দক্তিণে তাহার জিধিন্তান। দর্শন করিলে নরে প্রাপ্ত হয় **জান। অমরেশ জা**সি গঙ্গাসাগর হইতে। সেই স্থানে অধিষ্ঠাত পাতক নাশিতে। সপ্ত গোদাবর তীর্থ হৈতে ভীমেশর। নুকুলীশ সাক্ষাতে সংস্থিতি নিরস্তর॥ ভূতেশর হৈতে ভস্ম গাত্র

আখ্যান। প্রকট হইল মহালক্ষীখর স্থান।। ধরণী বরাহ বিক্লপ্রক্ত হইছে। কাশীতে আদিল ভক্ত আপদ নাশিতে।। কৰিকার হৈতে কৰি-কার গণপতি। ধরণী বরাহ পশ্চিমেতে অবস্থিত।। ছেমকুট হৈছে লিফ বিৰূপাক নাম। সংহশ্বর দক্ষিণেতে করিল বিশ্রাম।। পঞ্চাদার হৈতে হিমন্তেশ আগমন। জন্মনালী পশ্চিমাংশে হইল ভাপন।। সপ্ত কোটি গণসক্তে আপ্তন গণেশ। কৈলাস হইতে কাশীনগবে প্রবেশ।। সপ্ত ছুর্গ নিশাত যে সপ্তস্থা সম। ছার যত্ত্র কণাট প্রভৃতি অনুপম।। প্রতি দুর্গে নিরূপিত কোটি কোটগণ। চতুন্দি গৈ পরিখতে করিল খনন। গঙ্গা বিপথ গার মৎগোদরী যায়। মৎস্যোদরী ভীর্থ অভি পুণাবলে পায়।। চন্দু সুর্ব্য গ্রহ কোটি গুণ ফল হয়। গঙ্গাঞ্চাসি মৎস্যোদর তীর্থেতে মিলয়।। গঁসাজলে শ্বিমুক্ত ভাসে মৎস্যোকার। অতি পুণাবলে দুষ্ট হয় চমৎকার।। কৈলাস হইতে কাশী আসি গণপতি। মৎস্যোদরী ভীবের করিল অবশ্বিভি।। ভুঞ্বিং সঞ্চক লিক্ষ গন্ধমাদন হৈতে। গণপতি পুর্বভাগে হৈল আবিত তে।। আফিল হাটকেশ্বর পাতাল হইতে। ঈশা-নেশ্বরের পুর্ন্দে আছে নিয়মিতে॥ আসিল তারকেশ্বর আকাশ হইতে ভারস্থিতি হৈল জ্ঞানবাপির ভাগ্নেতে 😥 আসিল কিরাতেখর কিরাত হইতে অবস্থিত ভারভূতেশ্বর নিকটেতে।। লক্ষাপুর হইতে মরুকেশ্বর আসিল। भौजप्य वाघव भिकारमण्ड किछ रेहन ॥ यह रेहण जन निक्र रेहन অধিষ্ঠান। গঞাজল মধ্যে তার মন্দির নিশাণ। অন্তাপি কখন কেহ দেথে পুণ্যবার্টন। ভাগির্থী অল মধ্যে আছেন মজ্জনে।। কোটাশ্বর হৈতে ত্রেষ্ঠ লিঙ্গ আগমন। জোষ্টেশ্বর পশ্চিমাংদে ইইল স্থাপন।। আদিল জনবেশ্র বয়বাস্য হৈতে। অবস্থিত হৈল নলেশ্বরের বাক্ষাতে।। আনিল বিরজা ভীর্য হৈতে ত্রিলোচন। ত্রিপিষ্টপ লিঙ্গে তার ইইল স্থাপন।। অমীর क्लेंक रेट्राड लिक अनुरक्ता। शिलिश्निला डीर्स खिड इट्टेन विरम्स। স্বৰ্দেত্ৰ কলা মাত্ৰ রাখি অবশেষ। সর্বভাবে কাশীপুরে করিল প্রবেশ সকল আনিয়া আমি কাশীতে রাখিল। অইম্বটি আয়তন আগত ইইল।। এখন করিব কিবা করছ আচেশ। সাবিধ প্রা**ভুর কার্য্য করিরা বিশেষ** গুনিরা নন্দির বাকা দেব মহেশর। প্রসন্ন হইরা তাকে বলিল বিস্তর।। সাধু কর্মা করিয়াছে আনি আধতন। নবকোটি চণ্ডী পুনঃ কর আনরন।। ৈভর ৰ বে াল ভূত ানবভা সহিত। প্রতি ছুর্গে ছুর্গা আনি করছ স্থাপিত। মন্দিকে তা দেশ করি দেব ভগবান। পার্কি**তা সহিতে গেল ত্রিপিউপ** স্থান।। নীনাদ তনর শিব আজ্ঞা মাথে করি। আন্থান করিরং চুগে আনে কাশীপুরী।। প্রতি চুগে চুগা মূর্ত্তি করিল স্থাপন। উত্তর অধ্যয়ে তার বিস্তর কথন।। পুণা আয়তন গর্ত্ত এইত অধ্যায়। ভক্তিভাবে শুনি স্বর্গ অপবর্গ পার।। অইঘর্চ আয়তন কথা সুশোভন। শুনিলে পাতক নাশে গর্ত্তি বিমোচন।। অমিকা নিবাস কাশীভক্ত অতিশয়। সীতানাথ বস্তু কাশীপপ্ত ভাষা কয়।। ব্রহ্মানন্দ সঙ্গে ব্রহ্মানন্দের উদয়। এক উনতিতম অধ্যায় ভাষায়।।

--

ভাথ শক্তিভান কথন।

পরার। অগস্তা বলেন শুন দেব বড়ানন। ঈশ্বর আচেশে নিন্দ আনি দেবগণ।। যে স্থানে যাহাকে নন্দি করিল স্থাপন। প্রশন্ন হইয়া কহ তার বিবরণ।) অগস্ত্যের হেন কম্প শুনি যজানন। যে স্থানে যে দেবী তার কহে নিৰপণ।। ক্ষন্দ বলে শুন মুনি বলি তব তরে। কাশীপুরে বিশালাক্ষী ক্ষেত্র রক্ষা করে ।। গঙ্গাতে বিশাল তীর্থ রাখি পুষ্ঠভাগে। বসিয়াছে বিশালক্ষী নিজ অনুরাগে।। ভাত্র ক্লফাড়ভীয়াতে করি উপায়ণ। বিশা-লাক্ষী নিকটে করিবে জাগরণ।। চতুদ্দশ কুমারী প্রভাতে পুঞ্চা করি। বস্ত্র মাল্য অলস্কার দিবেক বিস্তারি॥ পশ্চাতে কুটুর সঙ্গে করিরে পারণ। कामीवान कल भूग क्षांख तिहे जन ॥ कामीवानी जत्न याजा कविटव स्म দিন। পাইবে নিৰ্কাণ মুক্তি উপদৰ্গ হীন। ললীতা ভার্থেতে গলা কেশব নিকটে। আছেন ললীতা গৌরী কেত্র বিয় তটে।। আশ্বিনের রুঞ্পকে দ্বিভীয়া দিবলে। করিলে বার্ষিক যাত্রা মহাপাপ নাশে।। বিশ্ব ছুজা গৌরী विभावको मेंत्रिधारमा भद्रश्रकारम सर्व ताल याला स्मर्थ थारम । स्वयंत्रहारस्त পার্লে বারাহী আছেন। শিবতভী সেই খানে বসতি করেন।। বজ্ঞহন্তা ঐন্দ্রী ইল্রেশ্বের দক্ষিণে। কৌমারী আছেন কন্দেশ্বর নলিধানে॥ মহাশ্ব-ती बाट्ड गर्दश्यतिह पक्तिता । मात्रमिश्य निर्वाप सृगिश्य गतिवादन ॥ खटका म शम्हित्य खायो बाट्ह विषायात्म ॥ श्रिकी शावित्यव शम्हिमाश्तम मा-রারণী। বিৰূপাক্ষী দেবজানি উর্ভুরেতে পুথি।। গৈলেশ্বর নিকটে আছেন শৈলেশ্বরী। চিত্রকোপে চিত্র**ঘন্টা আছেন সুন্দরী।। ১**চৈত্র শুক্ল তৃতীয়াজে यांजात विधान। कांगीवान कतिरंवक यांजा अनुकीन ॥ विजायरमधत श्रुटर्स

ভদ্র নাগপানে। সিদ্ধি বিনায়ক পূর্কে হর সিদ্ধি ষণে।। বিধীশ্বর সমীপে- एक एनवी विधि नाम। निगृष्ठ कश्चनि एनवी श्वत्रांशांक देशम । चनछेक कत्र। ছীর্থরাজের নিকটে। বসতী অমূতেশ্বরী কামপাশ কাটে।। পিভামহ লিজ পাখে বিদ্ধি লক্ষীধান। নল কুবের নিকটে দেবী কুজা নাম।। কুজামরে-श्रुत नन कूटवत शिक्टिम। जिल्लाक सूत्राती (पती आट्ड त्रहे श्राटम । मिश्रानाम महामिक चार्मिष्ठात शारम। बीक्षे निकटि महा लक्षीत महालक्षी भीठे नम अना भीठे नम। अखेबीएक महा-লক্ষী যাত্রা তাতে হয়।। মহালক্ষী উভরেতে হয় কণ্ঠিনাম। মহালক্ষী দক্ষিণাংশে কৌর্মিশক্তি ধাম।। থিথি চঙীদেবী মহালক্ষী বায়ুকোণে। जीम म्खीरमयी जीरमयत निवधारन ।। त्रयसंख मक्तिगारम हानवरक मती। महारो मी मिटन यां क्रां क्रिटन नामती । काल क्रांक्यती नक्रमध्र मंकित। यम मः के। छेन्द्रान दक्यत मन्निशास्त ।। हर्म्म खा स्मरी नाकृतकथत निकटि । লোলার্ক উত্তরে নহা ৰুখা প প কাটে ॥ চর্মমুখা মহারুখা উভর মধ্যে তে। **পাহেন চামুগুা**দেবী পানপাত্র হাতে।। মহারুগুাপেন্চিমেতে দেবী স্বপ্নেমরী। স্থণ্ডিলে শহন রাত্তে উপবাস করি।। দেখিৰে স্বপ্রেডে ঘাছা कदित्व मानम । जनगंति প্রভার তথা আছেন সরস।। অইমী নবমী চতু र्फानी विवासिनि । एरश्रयती भूका कति लटन खानतानि ॥ एरश्रयती शन्छ মাংশে ছুর্গানেবী স্থান। উত্তর অধ্যায় তার করিবে ব্যাখ্যান।। সুধাভাগু কাশীখণ্ড ভাষাতে উচয়। সপ্তম অধ্যায় তাতে সমাপন হয়।।

অথ ছুর্গাস্থরের উপাধ্যান।

ত্রিপদী। কহিছের বড়ানন, শুন মুনি তপোধন, দশভুলা তুর্গার বর্ণন। বারাণসী অবস্থিতি, মুর্গা সুরম্ব মতি, ডাহারে করিরা সংহারণ । সংখ্যারী পশ্চিমেতে, মুর্গাদেবী বিশেষেতে, অবস্থিতা চুর্গতি নাশিনী। মিত্রা বরুণ ভনর, জিঞ্জাসেকার্তিকে কর, বিস্তার করিয়া সব বাণি॥ দুর্গা দেবী কি প্রকারে, চুর্গাস্থরে নইকরে, শুনিব যে বিশেষ করিয়া। শুহ করে ভনপরে, মুর্গামান ভরস্করে, তপাসা করিছে বনে গিয়া॥ ব্রক্ষারে ভপাসা করে, বার্ভোজি মিরাহারে,ভূত হৈল পশ্বযোনি ভারে। ব্রক্ষা জন্দি দয়া ময়, অসুরের ক্ষপ্রেকর, বরুলাই ইচ্ছিড় ক্ষর্তরে।। শুনিয়া অসুরেরাজ, চিন্তা করি ক্ষিমাক, কর চাহে করিয়া বিনয়া। পুরুষের বধ্য প্রভু, আমি না হট্ব কড়ু, এই বর দিবেন নিশ্চর।। শুনিয়া চতুরানন, ধর দিল তওকাণ, भूकृत्वत ना इहेरव विथा।। खन्ता शतन निक द्वारम, प्रशीसूत सर्थेमरन, निक মৃত্যু জামিল অসাধ্য। ভদপরে ছুর্গাসুরে, দেব সহ যুদ্ধ করে, দেবপদ श्रांकिक देश्ल । छुर्शासूत महावीत, त्मरव देक्ल अञ्चित, द्म बुक्क क्छू ना (मिथिल II कमखदत कूर्नामूटत ताका टेश्ल कर्नभूदत, हे**स्ट एक टेश्न** ताका ভ্রক। সর্ববেদৰ প্রলায়ণ, স্থান নাছিনিরুপণ, অতি গোপনেতে উপবিফী॥ স্থৰ্গভাগী দেবগণ, মত্তে কৈল আগমন, ভয়েছে কম্পিত কলেবর। যদি কারে বাটা পার, ভরে তথা নাহি যার, ভাবে দৈত্য আসিবে সম্বর ।। ছেন মতে দেবগণ,সর্বদা কাত হন উপার নাহিক দেখে আর। নিজ মূর্ত্তি দেব , গণ, সর্ছেতে করি গোপন, ভ্রমে ভ্রমে সব বনস্তার।। দেখি তুর্গাস্থর চর, কাতর হয় অন্তর, কুত্রাপি মা পারে স্থিতি হৈতে। মিক্ষউকে ছুর্গাস্থর, রাজা হৈয়া ভিনপুর, অভিশয় করিল শাসিতে।। অগ্নি যম চক্র সুর্য্য, ধরি আনে মহাবীর্ব্য, বরুণ প্রবনে আনে ধরি। রাজার নিকটে যুখন যেমতে কয়, সেইমত সর্বদ। আচরি।। চন্দ্র নিত্য, মন্দ্রভেক্ষ তথা দিজ্য, আঞ্চাক্রমে তথাতে চলয়! প্রন থে আঞাক:রী, সদানক্ষ গতি করি, মলয়। প্রন মিত্যাবর ।। তুর্গ অসুর রাজন এমত করি শাসন, তার ভুলা কভু মাহি হবে। বিনা জলে পৃথিবীতে, শুসা হয় নানামতে, সভোষ খাকেন নিজগর্কে। সভাষুগে রাম যথা, গ্রহা পালনেতে তথা, ছুষ্টগণ সর্বন্ধা সংহারে। ত্রন্ধার বরেতে দৈত্য, জহ স্কারে মহা মন্ত, নিজ বলে ভয় নাহি করে। বিধি বিষ্ণু দুইজনে, চিস্তাধুক্ত नमा भरन, किरन इरव मान कुशीसूत। विना (मव भरहश्वरत, अ विभरम কেবা তারে, চল সবে যাই হরপুর।। বিধি বিষ্ণু দেবগণে, গেল শিব সৃত্তি-थारन, जकरलएड अनाम कतिल। इंशीसूत विवतन, भिरव करह रमवनन, जे कल रय बृङ्कांख करिल ॥ स्थान मव श्रक्षानन, रमरव रेकल आधामन, विमरक करिन नकटनदा। शदा कट्ट जिलाईम, स्था विधि मात्राप्त्रण, महा वनवस्र ছুর্গাস্থরে।। পুরুষের নহে বধ্য, হইতে হৈল অসাধ্য, উপায় নাহিক শক্তি विदन । खन ह (प्रवर्ष) मृद्य, खण्य किदम क्ल्म याद्य, खात क्रु:श ना जिल्ह মলে ॥ এত শুনি দেবগণ, তথা হৈতে হর্ষ মন, বিধি বিষ্ণু নিজপুরে যান। তদপরে ত্রিপুরারী, ভগবতী ছুর্গা মরি, মহামারা আবিভাব পান।। ত্রি-लांग्न करू वानी, अन श्रिट्स जिल्लाग्नी, प्रश्नासूत अठि अनिवात । श्रृक-

ভোমা বিনে, কে করিবে পরিত্রাণে, শীপ্ত কর ইহার উপায়। রক্ষাম্বরী রক্ষা কর, দেব ছাথ পরিহর, বাহাতে দেবতা ভয় বার ।। শুনিরা যে ভগ্ন-বতী, চলিলেন শীশ্রগতি, তুর্গাস্ত্র যথাতে আছেন। তাহার নিকটে গিরী, অতি রুমায়ান ুহরি, মহামারা তথা বসিলেন। ভগবতী ইচ্ছামতে, এক কন্যা আচ্মিতে, বাহিত্র হুইল অক্স হৈতে। কাল্বপা নাম ভার, ৰূপ অভি চনৎকার, প্রজ্জলিত যেমত বিজ্ঞাতে ॥ তুর্গাস্কর সন্নিহিত, হৈল তথা উপ-নীত, নিভ'য়ে অসুর প্রতি কয়। শুন ওহে মহাশয়, তবেচিত কর্ম নয়, কি कातरन देहरन छुत्रानम्। स्वयनरन श्रीकृत्वरत्, त्राका देशरन चर्मश्रुरत्, तुनि মৃত্যু জাসিল নিকটে। চিত্তে ত্নি হৈয়া ধৈর্য্য, তাগি কর দেবরাজ্য, নতুবা ষে পাড়িলে সঙ্কটে ।। মহামায়া আদ্যা শক্তি, তাঁর আমি আভ্রাবরী, আ-য়িলাম তোমা বুঝাইতে। কহিলাম বাক্য হিত, নাহি ভাব বিপরীত, বি-চারিয়া দেখা হিত্তেতে। কালৰুপা দেখি ৰূপ, মনঃকুৰা হৈল ভুপ, তার ৰূপে যোহিত হইল। ছুৰ্গাসুর ভাবে চিত্তে, অদ্য হৈল সুপ্ৰভাতে, ৰূপবতী क्वा आनि मिल्।। (य गुक्त कथा कट्ट, अधिएक भौतत मट्ट, मुट्ट आ-**জাদিল ধরিবাবে ্কালক্রপা মায়**্রকরি, ভগবতী সহচরী, মৃত্ভাবে কহে তুর্গাসুরে। শুন ভূমি মহারাজা, হও বলবস্ত ভেজা, আমাকে ধরিলে কিবা হবে। যার দাসী হই আমি, তার যোগ্য বট তুমি, চল সঙ্গে তাহারে দেখিবে।। দুভ কর্মা করে যেবা, তারে বা ধরেণ কেবা, বল নাছি দুভের পীড়তে। কাল্ড্রপা কথা শুনি, তুর্গামুর মনে গণি, কছে কথা মধুর বচনে শুন বাক্য ৰূপবভী,ভূমি দেখ মম শক্তি, আমার সদৃশ্ নহে কেহ। অজী-কার মোরে করি, যাহ ভূমি অন্তঃপুরী, সুখে সদা বিরাজ করছ।। অন্তঃপু-র রক্ষাকারী, তাহাদিলে বলে হৈরি, অপবতী ধরহ যতেতে। যথা কন্যা বিরাজয়, শত শত বীর ধায়, কালৰূপা কন্যারে ধরিতে।। মায়াশক্তি ভা-রপর, বিচার করি অন্তর, স্বর্গ মার্মে গমন করিল। বীর পাছে চলে, তুরস্ক যে মহাবলে, কালৰূপ। চৌদিগে ঘেরিল।। কালৰূপ। তদপ্র, বিচার করি **अक्ष**त निःश्वीरमरक वीत खन्म करत। अर्कक्षन खन्म रेश्न, अक्**क्ष**न ना. त्रिन, মায়াশক্তি প্রফুল অন্তবে॥ মায়াশক্তি নিজ স্থানে, চলিলেন ছত্রুবে, ছুগ প্রিতি সব নিবেদিল। ভগদুত মুখে বাণী, ছুগ ভুর সৰ শুনি, সহ। জোধে কম্পিত হইল ॥ সৈন্যে কংগ্ সাজ সাজ, ক্ষণেক না কর ব্যাজ, শক্ত ধরি আনহ সত্ত্ব। নানাৰূপা সূত্ৰ ধান, বিকট দশন কান্ন, আকান্ত দেখিতে **चत्रक्रत । मर्च्य १७ मण्ड १७**, थर्स लीच मर्गम व्यक्त, थारक थारक १८न वर्छ-

कत्। छत्रवर्षी त्यि रेतमा, ज्ञ ज्ञा करत् भना, क्या रेक्स निःश्वरित त्रवत् জ্ঞানে ক্রমে যত যার, দকল সংহার পার, বাছজিরা নাছি আইলে ঘরে 🖁 ছুর্গাসুর ভদপরে, কোপাবিষ্ট মান ভরে, শহকোটি সৈন্য সাজে পরে ৪ पूर्तासूत करत मन्क, शृथिवी इहेन कन्त्र, मिन इस्त्री इहेन काफरत। खनस কণার পর, কম্পে পৃথী থরে থর, অমস্ত যে কাতর অন্তরে ॥ বছতর দৈন্য नाटक, मानाविथ योगा बाटक, कटर्न किছू छन। नाहि योत्र। अनम्र इटेन ষেন, অস্কৃত্ব হর ভেন, পৃথী রসাতল অভিপ্রায়।। দৈন্য মধ্যে ছুর্গাস্কুর, ভেজঃপুঞ্জ অভি ক্র, বৃদ্ধ সজো গমন করিল।। প্রথম শরীর তার, দেখি লাগে চমৎকার, আকাশেতে মুকুট ঠেলিল। মহানারা ভারপরে, ছুর্সুত্রর पृक्षिकदत्र, गर्क रेगना कति नित्रक्रण। इशीरमवी महावरन, रमह रेहरू ज्वव হেলে, নবকোটি শক্তি প্রকাশন।। শক্তি সব ছছস্কারে, ঘোরতর শব্দ करत, अनी वर्ष धातन कतिया। कालाखक यम आय, त्यानिनी धारेश यात्र, ছুর্গান্তুরে নিংশস্কা হইয়া।। ছুই দৈন্য এক স্থানে, যুদ্ধ করে জোধ মনে, পরাজয় কেহ নাহি হয়। নবকোটি মায়াশক্তি, অতি বিপর্জন্ম মূর্ত্তি, অন্তরে ধরিয়া আকর্ষয়।। বদন বিস্তার করি, পভক্তে অনলে পড়ি, অনায়াশে সংসার করর। মার মার ঘোর রব, করিছে যোগিনী সব, মহা ভয়স্কর যুদ্ধ হয়।। তুর্গাস্থর সৈন্য ধরি, বদন যে উদ্ধৃ করি, মন্ত হৈয়া রক্ত করে পান। শংখ घाँछ। आদि काँनि, मृषक स्माठक वाँनी, त्राकारन इम्र वाना शान। পরিপুর্ণ তমোগুণে, নৃত্য করে শক্তি গণে, ছ্ডাশন করিছে নয়নে। অকালে প্রলয় প্রায়, ধরা রমান্তল যার, চমৎকার লাগে ত্রিস্কুবনে 🗓 তুর্গা-সুর দৈন্য সব, পতিত যে জ্বসম্ভব, ছুর্গাসুর দেখি ক্রে:বে ছলে। হস্তে ধরি थञ्चनान, हिला मात्य पित्रा भाग, लकः छूर्गाञ्चि कित्ता। छूर्गाञ्चत कञ्च যত, অর্দ্ধ পথে হয় হত, বাণে বাণ কাটিরা পাড়েন। মহামায়। বাণ ছাতে তুর্গাস্থুর কাটি পাভে, অনায়াদে করে নিবারণ।। উভয়েতে ছাড়ে বাণ, वार्ष निवात्र वान, अहेबार्श युक्त छात्रकत । रकह नरह शतांक्व, निस्न ? শক্তি সব, প্রকাশ করেন পরস্পর।। নবকোটি শক্তিগণ, যুদ্ধ করে অনুক্ষন त्रश्चादन मना इर्वमदन । दनवी युक्त विवत्रन, नाहि इत्र ममाशन, अक मश्चकि अधात्र कथरम्॥

भग्नात्। जनस्या कर्ट्न **एन** भार्सकी नम्मन। किंद्रत्भाटक जनवजी সরকোটি হন। প্রগাসুর দৈন।সব মারে কি রূপেতে। বিস্তার করিয়া কহ আমার সাক্ষতে। কার্ত্তিক কছেন শুন মুনি তপোধন। যেরপেতে মহা-মায়া শক্তি একাশন।। ত্রিলোক বিজয়ী ভারা ত্রিলোক সমরী। ত্রিপুরা ত্রিজগন্ধাতা ধৃতি ক্ষমাধারি।। ত্রিপুরা ভৈরবী ভীমা ক্মলাক্ষী রূপা। कांगाका ए जिथे जाका आतं विश्वका।। अता अत्रही गारमणी विकत्र। মঞ্জা। গজবজা পরাভীতা শংখিনী সকলা।। মহিষাদ্রী রণপ্রিয়া বড়া-নন্দ সারা। কেটিবান্দী বিছাৎ জিল্পা শব শিবা পরা।। জিনেতা বিজ্ঞা ছোরা পানপাত্র ধরা। দর্ক তেওঁ। দর্কময়ী তপাদ্যা সুন্দরা।। সিদ্ধি বৃদ্ধি মহানিতা স্বাসনা আর। পাশপাণি খোর মুধি বঞ্জারা সার।। যজ্ননা मेंब्रुजीना। मना गर्सभाता। उद्धवन अधि मिनी नना करत मता॥ काकी পুকী ভাষী আর হয় পন্নাবভী। ত্বিপন্ন বাসিনী পদ্মাশ্যা পন্ন কেশমতি। আক্ষরান্ত্রাক্ষরানন্তাভন্তপ্রধানেশী। শরাক্ষিকাত্তিবর্গাসবর্গহীনাশশী। অজপা যশো খারিণী অপ সিদ্ধি জার। ধান সিদ্ধি যোগসিছি পরামৃত সার।। দৈতাকুত মিত্র নেত্রা দলুক দলনী। স্তান্ত্রিনী মোহিনী মারা বছ মায়া পনি খলোৎকটা উচ্চাটনি নৃসিংহ ৰূপিণী। দমুম্বেজ্ কয় করি কেসম্বরী বাণী निद्धिकाती हिन्नमञ्जा रचती एखानना। भाकसुती महालक्षी पर्क कल्छना । बिवर्ग कलमाधिनी वर्ष्, लामस्तिनी। खगाफीला खगगग्री मक् विनानिनी। ক্লীব অখাৰ্ডা কলামুখী সুরেশ্বরী। এইশ্বপে নবকোটি শক্তি মূর্ণ্ডিধরি।। মভান্তবে নবকোটি নামেতে বিস্তার। কুমারী তন্ত্রেতে তার আছেন প্রচার।। প্রতি নাম মন্ত্র স্কব কবচ আছয়। তুর্গাসুর সহ আদ্যাশক্তি যুদ্ধ হর।। প্রগাসুর নানামভ বুদ্ধ যে করিল ⊧ভাবহেলে মায়াবলে মেঘে প্রবে-শিল। ভগবভী দেখি মারা অমুরের গতি। বাণে কাটি মেঘজাল ফেলিল দম্প্রতি।। তার পর হস্তীরূপ হয় মহান্তর। হস্তীগৃগু কাটাগেল বাণেতে প্রচুর। পরেতে মহীয় রূপ ধরি মহাধীর। আক্ষালনে পৃথিবী যে বিদারে অভিত ॥ ত্রিপুলেতে মহামায়। তারে সিদ্ধ করি। অবশেষে মহাস্থর দিবা মূর্ত্তিবরি । দশ শত ভুক বীর মারাতে করিল। ভগবতী থড়া লৈয়া **র্ভ**-াছার কৈল।। ছুর্গাসুর পৃথিবীতে পজিল সম্বর। দেখিয়া দেবভাসুর প্রসম অন্তর। পুষ্পার্টি করে আর ছন্ধবি বাজন। স্তবকরেছর্গাপ্রতি যত দেবগণ ভূমি আলা সর্বশক্তি পরাৎপর তারা। পরম প্রকৃতি ভূমি মাতা **সৃষ্টি**ধরা ত্রিগুণাধার তুমি ত্রিশ্রণাতীত হয়। গুণের আধার তুমি কারণ আশস্ত।।

ব্রন্ধা বিষ্ণু শিব আদি যত দেব আর। সকলের মূল তুমি দেব শাস্ত্র ।। এইৰপে বছ স্তব করে দেবগণ। পঞ্চাঙ্গ কবচ জার করেন বর্ণন ।। মস্তক भर्गास भागरून स्य जानम्। ऋटिम भाग्नेटमयी नितास कत्रमः। एनयञात स्व কৰচেতে মহামায়। দেবভার প্রতি কহে বড় তৃষ্ট হৈয়।। এই স্তব কৰচ পঠেন ঘেই মরে। সকল আপদে মুক্ত হইবে সম্বরে॥ ভক্তি করি সমুক্ত সর যেবা পাঠ করে। তাহার নির্মাণ যুক্তি কে খণ্ডিতে পারে।। অরশ करंत्रम रचता (जह मुक्त इत । छात्र मर्स्त शाशकात्र व्यक्तिक निम्हत्र । धृहमरस অধ্যার যে রাখে যত্ন করি। অচলা প্রমালক্ষী গৃচ্ছতে তাহারি।। জার আর ফলশুতি আছেন জনেক। ভাষাতে বর্ণন তাহা করিব কতেক। व्यानमात नरमर्ख रमरलन रमक्त्रन। निक्षानम देवल रवस व्यानमिक मन।। वक्रमान शरत गव शृद्दरक कार्तिन । मृका शीक वारमामाम महीश क्रिमान इत ॥ व्यानरप्पत नीमा नाइ स्वयंश्वित्त । जनवंदी व्याइत्यम व्यानमः कानम হরগৌরী এক স্থানে বসিল সম্বর। দ্বিশত অধ্যায় সাঙ্গ হইল আন্তর ধ ব্রকানদের পদ ভাবি বসু সীতানাধ। ভাষাতে রচিল প্র ছন্দ সলোরখ । যেবা শুনে যেবা পাঠ করে ভক্তি করি। শ্রনারাসে দর্শন: ছইবে कामीश्रवी॥

> ইতি জীকাশীখণ্ডে কার্ত্তিকাগন্ত্য সংবাদে মহাদেবের কাশী প্রবেশ অবিমৃক্ত বর্ণন সবমঃ সর্গ্য সমাপ্তঃ।

ज्यथं भिवलित्वत वर्गमा

পরার। অগন্তা ববেদ শুন দেব বড়ানন। ত্রিলোচনে বনি কি করিল जिल्लाहम ॥ ऋष वटन खन सूनि कत व्यवधान । याश विकातित कूनि खारांत्र वहाशान ॥ वित्रका मात्म एक शीर्व मरानिक्ति कत्र । मर्गरन एक बारांत्र বিরক্ষা হয় নয়।। কাশীতে যে ভানে আছে লিক্সব্রিলোচন। পিলিম্পিলা ভীর্ষ যথ। গঙ্গাতে মিলন । সর্ব ভীর্ষময় তীর্থ কাশীতে বিখ্যাত। ত্রিজগতে ষক্তভাতে গৰ অতুগত ।। অতএব ত্ৰিপিষ্টপ নাম দেই স্থানে। ত্ৰিপিষ্টপ नाम त्रहे विद्वत ध्रधाता । त्र विद्वत महिमा प्रवीदक वर्ल प्रदा। य कर्ल ता करण विक अम गर्सकारत।। (मर्वी वर्ष्ट अन स्मव कवि निरंद-মনণ প্রিন্ন পুরী বারাণসী তব অমুক্ষণ।। যাহার ধূলির তুল্য ত্রিলোকি নঃ হয়। অপার মহিমা সার কেছ না জানর।। কাশীতে যতেক লিক নির্বাণ কারণ। তথাপি বিশেষভারকহ ত্রিলোচন। কাশীতে অনাদি কোনং লিঞ্ হর। প্রবার সমর দেব যাহাতে থাকর।। সে সকল লিঙ্গ হৈতে কাশী मुक्ति शूरी। याद्यांत जातरा शाश मकल मध्दाति॥ पर्मन न्शर्भरन चर्म অপবর্গময়। থাহাতে পুজাতে সর্ব্ধ লিঙ্গ পুজা হয়। রূপাকরি কহ প্রভো খরি তব পার। কহিলেক মহাদেব দেবী জিঞাসয়।। মহাদেব বলে দেবী কর অবধান। লিম্পের বিশেষ কথা বলি ছব স্থান।। কলিকাল সিদ্ধলিক হইবে গোপন। মহিমা সহিবে স্থান সাত্র স্থান্তারণ।। নাস্তিক দুবিত বঠে ना कानित्व भान । रचनाम खनिया लां उर्दर निवधाम ॥ अथरम अगत्यस्य লিঙ্গ অনুস্তম। দ্বিতীয়ে গণিতালিঞ্জ ত্রিলোচন সম।। তৃতীরেতে সহাদেব ह्यूर्थ कीर्डिवाम। तर्डम शक्षरम भर्छ **हर्म्यम्।। किम्**ति म्हास निक्र धरमान कक्षेत्र। नवस्तरक वीत्त्रश्चत कारमन मनम।। अकानस्न विश्वक-র্মেশ্বর লিঙ্গগণে। মণিকর্ণিশ্বর লিঞ্জ ভাষ্পো জাখানে।। অবিমুক্তেশ্বর লিক হয়। চতুদ্দশ লিকৰিখেখুৱনমার্ভন্ন।। এই চতুদ্দশ লিক মুক্তির কারণ। ইহাতে জন্যথা লাহি জান নিরপণ।। ক্ষেত্র অধিষ্ঠাত্তি अहे नक्त (पवछा। निकांत अमान करत इ**हेश श्रृक्तिण ॥ हक्किण याजा** চতুদিশ লিকে হয়। প্রতি মাসে শুক্লপক্ষে করিবে নিশ্চয়।। প্রতিপদাবধি यत्य डिथि हर्जुक्तभी । हर्जुक्तभ याखा कतिरतक काभीवात्री ॥ धरे तत लिक्न আরাধনা না করিয়া। কেছ না পাইবে মুক্তি কাশীতে থাকিয়া। কাশী-পুরে মুক্তি ইচ্ছা যাহার আছর। এই সব লিঙ্গ পূজা আবশাক হয়।।

জগন্তা বলেন গুন সহেশ ভনর। এই লিক্ষ কাশীপুরে কি আছর।।
ক্রণ্য বলে শুন মিনিক বিবরণ। কলিকালে মহালিক হাইবে পোশন।।
বিশ্বেখরে সদা ভক্তি ঘাহার আছর। সেই সে কানিবে সহালিকের কিন্দ্র জানুর্রেশতার কেশ জার জ্ঞানেশ্বর। বরুবেশ্বর মোক্ষ জারেশ লিক্ষর।।
স্বর্গছারেশ্বর রজেশ্বর লাকু জীশ। ইন্ধ কালেশ্বর হ্বেশ্বর কে চণ্ডীশ। নিন্ধি
কেশ মহেশ্বর জ্যোভি রুপেশ্বর। এই চতুর্দ্ধণ লিক্ষ কাশীন্তে জপর।।
এই চতুর্দ্ধণ লিক্ষ কাশীর হানর। একৈকল জ্বনের সার এক হয়।। ক্ষশ্বর বলে শুন জন্য লিক্ষ জার। কৈলেশ্বর সক্ষেশ্ব মহিলা জাণার।।
স্বর্ণিন মধ্যমেশ্বর পিভামহেশ্বর। ইশান গোপ্তেশ্বর বৃদ্ধাক লিক্ষর প্রবর ।।
ব্যাজেশ্বর জন্বকেশ লিক্ষ চতুর্দ্ধণ। সেবিলে এ বন লিক্ষ হয় মুক্তিবশ।।
কৈলেশ্বর জন্বকেশ লিক্ষ চতুর্দ্ধণ। সেবিলে এ বন লিক্ষ হয় মুক্তিবশ।।
বৈরু ক্রন্তা প্রতিপানে জারন্ত করিয়া। চতুর্দ্ধ শ যালা চতুর্দ্ধ শী দীমা দিয়।।
বা সকল লিক্ষ ভান্তা জন্ত বিশ্বর্জিত। যথার্থত জ্ঞান ক্ষোর আহমে
নিশ্চিত।।

ज्य अन्दिष्टतत कथन।

পরার। হেন শুনি দেবী কছে দেব প্রণমিয়া। প্রত্যেক লিজের কথা কহ বিস্তারিলা।। অতি পুণ্য অমর কণ্টক ক্ষেত্রি হৈতে। কি রূপে প্রণবেশর আসিল কাশীতে।। ইহার সহিন্না কিবা কেবা আরাধিল। আরাধিজ হৈরা সে কাহাকে কিবা দিল।। হেন কথা পার্কতীর শুনি মহেশ্রর। বলিছে প্রণবেশর সমাদ বিস্তার।। পুর্ককালে জ্বল্লা কাশীপুরে ধ্যান করে। সম্পূর্ব সহস্র মুগ হইল ভাহারে।। উঠিল পাভাল হৈতে লিজ জ্যোভির্মর। জ্বলার মানস মধ্যে যাহার উদয়।। ভূমিজেল হৈয়া চট চট শব্দ হয়। ভ্রন্মার সমাধি জঙ্গ সে শব্দে করের। ধ্যান ভঙ্গ হৈলে জ্বল্লা দেলিলে নয়ন। ক্ষমর মালিকা মাত্র হইল দর্শন।। আকার সাজিক প্রগবেদের নিবান। সৃষ্টিরক্ষা কর নারামণ অভিধান।। রাজবাপ আকার যজুর ক্ষেত্র হয়। নিরূপম বিশ্ব ধন বিধাতা উদয়।। নীল আক করে যেন সামদেব স্থান। সংহারক ভন্ম মূর্জি ক্ষম্র অভিধান।। ভাহার অগ্রেজে জ্বল্লা হেখিল নম্বন। বিশ্বরূপ প্রাণ্য যে স্বন্ধ নিজ্ঞান।। ভাহার অগ্রেজে জ্বল্লা হেখিল নম্বন। বিশ্বরূপ প্রাণ্য যে প্রণ নিজ্ঞান।। ভাহার অগ্রেজে জ্বল্লা হেখিল নম্বন। বিশ্বরূপ প্রাণ্য যে স্বন্ধ নিজ্ঞান।। ভাহার অগ্রেজে জ্বল্লা হেখিল নম্বন। বিশ্বরূপ প্রাণ্য যে স্বন্ধ নিজ্ঞান।। ভাহার আগ্রেজে জ্বল্লা হেখিল নম্বন। শিক্ষ জ্বন্ধ হাাত্য

न अवस्मत रमया केंद्र ।। व्यक्तभे संकाभ यस विश्वविधारमधिन । मश्मात जातक ভাতে ভার খ্যাভি হৈল । প্রকৃষ্ট করেন মুক্তি নির্মাণ কামুকে। প্রণব হই ল খ্যাত সকল অধিকে।। জন্মমন তৃরীন যে সুর্যোর অভীত। অধিমাতা मान विन्छ क्ल मिनिष्ठ ॥ याहा देह एक महन्य (प्रव एकेन क्षेत्र । विमानि প্রাণব ব্রব্ধা সাক্ষাতে দেখার।। ত্রিধাবদ্ধ রুব তরে অভিরব করে। সেইড পরম ব্রহ্ম দেখিল সেটিরে। ইন্তাস যাহার সন্তুল্ক চতুকীর। ছিলিরা ত্রি-পাদদেব বিধাতা দেখন । যার মধ্যে লীন ভূত ভাবি বর্ত্তমান। সেই বীজ বীজহীন দেখ দিবামান।। আত্রদা ভড়ের পাত্র অশলীল যার। সেই লিঙ্গ বিধাতা দেখিল চমৎকার।। পঞ্চ অর্থ ভাষে যাতে পঞ্চ একাঃ ময়। আমি পঞ্জ স্বৰূপেতে বিধাতা দেখন।। লিক্সৰপী পঞ্চাকন পর্ম জন্মরা। দেখি স্তৃতি করে বিধি প্রপঞ্চের পর। নানা বাক্যে वर्ग रखर खें कि जगरमस्य। प्रश्नवर अगाम कवित्र अगरवरमा। मिव কহে পার্বতী ত্রন্ধার স্তবে আমি। ভুক্ত হৈরা বিক্স হৈতে সূর্ত্তিমন্ত পুনি।। বিধাতা করহ তুমি বরের প্রার্থন। বলিল ব্রহ্মাকে পরে উঠিল আপন।। জর জয় শব্দ করি পুনঃ প্রণমিল। গদ গদ স্বরে ব্রহ্মা বলিতে লাগিল। বর যোগ্য আদি ভূমি যদি দেহ বর। এই মহালিকে স্থিতি কর नित्रखत्।। এই মাত্র বর মোর জন্য নাহি চাই। এ লিছ প্রণবেশ্বর নাম ছউক তাই।। ভ্রদ্ধার প্রার্থনা ছেন শুনি ত্রিনয়ন। তথাক্ত বলিয়া বর কৈল क्मर्ज्य ॥ कुर्ये देश्या व्यमा व्यमा वर्ष्ट् वत किन । मकल व्यामाप्त निधि खब्तादक ৰবিল।। সৃষ্টির কায়ণে শক্তি হৈতে দিল বর। সকলের পিতামহ হইবে প্রস্তুর।। তব তপস্যাতে প্রশ্বেশ্বর উদিত। এই লিস আরাধনে পাইবে বা-প্রিভা অকার উকার জার মকার জকর। নাদ বিল্ফু পঞ্চ আরতন পরাৎ-পর।। মহমোদরী জলে সাম করে যেই মর। দেখিলে প্রণবেশ্বর মা দেখে छेषत्र ॥ मध्यत्माषती छोटत धहे लिक मारमधत । मर्गरन न्मर्गरन महासूकि লক্ষে নর । দেবত কপিল বর্ণ লিকেতে উদর। ভাতাতে কপিলেখর নামে খ্যাত হর।। যে কাবে কপিলেশ্বরে গঙ্গা জাগমন। মংস্যোদরী যোগ সেই कारेल निक्षणेगा। यक्रमा शकात क्रमा विकास इरेता। नारमधत काल्टम কাশীংবর্তন করিয়া বা ংগেই কলে স্থান-করি দেধে নাদেশর ৮ এক হত্যা कान देशा स्क रम नक म क्किमी कार्ककी विधीटक मर कार्मको । वंकि-क्यां जिल्ला कोर्द्र कथिकाती । श्वान मान स्रश होम (मर्वेक शूक्रन। মৎস্যোৰরীয়ত কর্ম জন্মন প্রনা। তথাতব পুণাকলে লিছের উদয়।

ই হার প্রভাবে সব জানিবে নিশ্রন। চরাটর বত ইকি করছ নির্মাণ। হেন বলি মহাদেব হৈল অন্তর্ধান।। ক্ষম বলে শুন মুনিসর তপোধন। তদর্ধি বিধি করে সে লিক ভজন।। ত্রিকালে ক্রমার স্থাতি বে করে পঠন। শুন্তে জ্ঞান লভে তব বস্ত্বন প্রভান। অধিকা নিবাসী সীতানাথ রস্কু দাস। প্রভান বাতে কাশীথপ্র করেন প্রকাশ।। ত্রন্ধানন্দে ভাবে ক্রন্ধানন্দের উদর। ত্রিসপ্রতি অধ্যায় সমাধ্য ভাতে হয়।।

অথ দম নামক দ্বিকের উপাখ্যান।

পরার। কার্ত্তিক করেন শুন কলস নন্দন। কাশীর মাহাত্মা আর কহি ভপোধন। ভরত্রাজ তনম দমন ভিজবর। বহু বিদ্যা অভ্যাদ করেন নির-खत्।। সংসারেতে বছ ত্রুপ্র জানিরা সম্বর। গৃহ হৈতে গমন করিল স্থানান স্তুর।। ভীর্থ আদি যত আছে পৃথিবী মণ্ডলে। সকল ভ্রমণ করে বিজ নিব বলে।। কুত্রাপি ভাহার মন স্থির নাহি হয়। তদন্তরে রেবাতটে গমন ক্রয় অপর কন্টক তীর্থ দর্শন করিয়া। মুনস্থির হৈল তথা খাঘি সব পাইয়া।। সকলেতে পশুপতি ভক্তি আচরয়। তাহামধ্যে গর্মনি সর্বত্যেঠ হয়।। বুল্লভেন তপে জীর্ণ শরীর বিশাল। শিবলিঙ্গ অর্চ্চনাতে গত হৈল। কাল। গর্গমূলি দেখিয়া দমন প্রণমিল। বোড়করে মুনি করের দাঁড়াইয়া রহিল।। मर्हार्ग किकाना करत अन विश्ववत । वरत्रम नवीन मिथ काथा विकि कर् है কি নাম কোথায় হৈছে আসিলে সন্থর। দমন কহেন প্রভা শুনহ বিস্তার কোন তীর্থে মনজ্বি না হৈল আমার। তব দর্শনেতে গেল চিত্তের বিকার नागांतिक कुःश याना मन्त्राद्युटक इन । यगतीद्य मुक्क इस वनह काइन । कम्भारत अर्थ्यम् बर्लम वष्टम । ७८६ न्द्य खन मात्र विरमय क्षम ॥ कवि-মুক্ত মহাক্ষেত্ৰ সৰ্ব্ব সিদ্ধি হয়। ধর্ম অর্থ কাম ঘোক্ষ সে স্থানে আছয়।! स्व नक्ल कीटव्ः वादानमी ःस्वनाः क्टतः। क्षत्र क्षणाख्यतः भाभ देश्टल राष्ट्रे कदतः। कामीतं माराया क्वा वर्तिवादत भारतः। अता अना ग्रञ छीर्श आ-ছেন্ত্র সংসারেন। স্থানন্দকাননে স্থানি ছীর্থ সে সকল। কামা শুছা করি ক্সন্ত্র করেন সফল।। বারাণসী বাস দেবা করে নিরস্কর। ভাহার ফলের কথা अन्द्र मच्छा। कीर संरम मधुष्टीर तुकामि मश्मात। विकास कृष्टीदर अरस कदबन मरश्राम भृथिबीएक मर्स मूक्क एकक्ष्मा क्रम । क्रामीएकवरामी वश्र

বীজ নাহি রয় ।। কাশীকেত্রে ক্ষমি জাদি প্রাণ তাগে এরে। তার সম পুণ্য বান নাহিক সংসারে।। বারণিসী পুর্বভাগে মণিকণি হয়। দক্ষিণ ভাগেতে তার এক্ষেশ্বর রয় ।। পশ্চিম গোকণ তার তুত উত্তরেতে। অবিমৃক্ত তীর্থ আছে তাহার মধ্যেতে।। যেই নর মণিকণি স্লান করি পরে। বিশ্বেশ্বর শিবলিক প্রদক্ষিণ করে।। ক্ষেত্র প্রদক্ষিণ করি ভ্রমণ করয়। রাজসুর যজ্ঞাক কল জনারাশে হয় ॥ অবিমৃক্তে প্রাশ্ধ যেবা বিধিমতে করে। মাতৃ পিতৃক্ত তার জনারাশে ভরে।। কাশীক্ষেত্র সম তীর্থ নাহি প্রজাণ্ডেতে। সভ্য গভা বাকা জানিহ নিশ্চিতে।। ভাবিমুক্ত রক্ষাকরে সর্ব্ব রুজ্ঞগণ। হস্তে জাসী সর্ববাপে করেন ছেদন ॥ মহাভয়্বয়র মূর্ত্তি ভ্রমণ করেন। কাশীবাসী জীব সব নির্ভরে রাখেন।। কগঙ্গাকী দেবী যে দক্ষিণে রক্ষা করে। গোকর্ণ গণকোটি পশ্চিমের জারে।। উত্তর ভারেতে জাহে ঘণ্টাকর্ণ গণ। এই রূপ চতুর্দ্দিণে জাছেন রক্ষণ ॥ ক্ষেত্রমধ্যে প্রণব লিক সর্ব্বসিদ্ধি কর। এই স্থানে যোগসিদ্ধ হৈল বভ্তর।। কপিল জাবালি যে জ্ঞীকণ্ঠ পশুপতে। এই সব মৃনি সিদ্ধ হইল ভথাতে।।

অথ ভেকির উপাধ্যান।

भन्नात । आत अक जिल्वत कि उत्र उत्र । अक जिल्व तर अनित्न मिन्नात । निज नित माना अर्थ उ छुन उक्रन । अहेन भि तह ना रहन याभन ।। निर्माना उक्रन मान अने विवत । कर्मानिक कामीत्करण ना रहन मत । कर्णात उत्र विवत । कर्मानिक कामीत्करण ना रहन मत । कर्णात उत्र विवत । कर्मानिक कामीत्करण ना रहन अत । कर्णात विव अने जान जान जिल्ल मत । मान्य जानात विव अने विवत । मिर्न जिल्ला आणि जानि द्यान कर्माने । मिर्न निर्माना आणि द्यान कर्माने । कर्माने । स्व अप रहन । मून जानात विव अने विवत । मून जानात विव अने विवत । मान्य जानात विव अने विव अ

কলাভীত এমী মৃত্তি হয়।। আক্ষম প্রম রূপ বিশ্বরূপ সায়। শ্রেষ্ঠ হন কর্ম বীজ বর্কল আধার।। নির্কিশেব নিরাকার নিরঞ্জন আর । জনত প্রকাশ আত্মা সর্ব্ব সারোদ্ধার । সৃষ্টিস্থিতি সংহারক বেদ অগোচর। এই ৰূপ সমা धान करत नित्रस्त ॥ अकिमन माधवीत छनक विरम्य । देवभाश्रमात्र छङ्ग हकू দশীর দিবস। উপবাস করে রাত্র জ্ঞাগরণ করি। প্রাতঃকালে প্রাতঃস্থান করিরা সুন্দরী। প্রণব লিকের পুজা বিধিমতে করে। অভীক্র প্রণাম করি-লেক ভার পরে।। গলে বস্ত্র যোজহন্ত চক্ষে বহু বারী। মহাযদ্তে গামকরে ভক্তিতে তুম্দরী। প্রণবেশ প্রসর হইয়া দরাময়। লিক্সরপ জ্যোতির্ময় अकान करा । काहादा अटवन देकन माधवी एवं कना। अनही देव निर्सान পাইল মহাধনা।। বৈশাখের শুক্লপক চতুর্দ শী ভিথি। যেইজন স্নান করে देश्या ऋषेमिछ।। अन्दिम निल्लिक श्रुका त्यश करतः। निर्मान त्य मुक्ति পায় সেই সব নরে।। কর্মবশে যদি মৃত্যু হানান্তরে হয়। তাহার পরম গতি শুনহ নিশ্চর ।। আরু কৃষ্টি শুন দমন দ্বিক্ষরে। সর্বাতীর্থ ঐদিনে আ-ইনেন সম্বর।। প্রণবেশ লিক্ষে সব করেন বস্তি। তার অগ্রভাগেতে শ্রীয়ু-খি ভীর্থ খ্যাতি।। গুহার মধ্যেতে ভীর্থ দিদ্ধিগণ স্থাম। অভি পুণাকর হয় অতি শোভাবান।। পঞ্জাত বাস সেই ছানে বেব। করে। নাগকন্যা মনোরমা দেখেন অন্তরে।। ও ভাওত বলে সব গুন ছিজবর । সদক নামে-তে তীর্থ তাহার উত্তর । সেই কুণ্ড জল যদি করেন ভক্ষণ। স্বরা ব্যাধি মন্ত क्ष मित्वरक शमन ।। कांत्र निकटकेरक भारमध्य लिक्न कहा। मर्भन कहिन्ने। জীবে মুক্ত হয়ে যায় ৷ মৎসোদরী কুপে স্লান করে ঘেই নর ৷ শোক দ্রঃখ সর্বি পাপ নাশর সম্বর।। অবিমুক্ত ক্ষেত্র যে একাণ্ড শ্রেষ্ঠ ভর। ভার সধ্যে প্রণবেশ লিক্স পরাৎপর।। দ্বিক্ষরর গর্গমুনি সর বাক্য শুনি। প্রণাম করি-রা পরে বলিলেন বাণী।। বাহাতে আমার মুক্তি রয় সুনিবর। ভাহার উ-পার মুনি বলছ সন্থর ॥ তদপরে পর্মনুনি দ্বিক্ষের সহিত। অবিযুক্ত কেত্রে যে ত্রনাও প্রেষ্ঠ তর। তার মধ্যে প্রণবেশ লিক পরাৎপর।। ছিলাবর গর্গ-মুনি সব বাক্য শুনি। প্রণাম করিয়া পাছে বলিলেন বাণী।। বাহাতে আ-মার মুক্তি হয় মুনিবর। তাহার উপায় মুনিবলহ সন্ধা। ভদপরে গর্গমুনি দ্বিজের সহিত। অবিমুক্ত ক্ষেত্রে শীদ্র হৈল উপনীত।। প্রণবেশ সিবলিঙ্গ कतिता मर्गेन । प्रवेजन निदम्लय व्हेल ७८ करा। ठणुःमश्च व्यथा कथा व्यक्ति

मत्नांहत । समाश्च हरेंग कथा छन्न सम्बत्त ॥ अमृष्ठ अधिक कथा शटन शटन स्रोम ! अनिता मख्दत मुख्ति समात्त आस्त्राम ॥

অথ ত্রিপিফ পীঠ কথন।

পরাব। কার্তিকের স্থানেতে অগস্ত্যা মুনিবর। পুনরপি জিল্পাসিল যোড় করি কর।। প্রণবেশ্বর মাহাত্মা শুনিরা মম চিত। অপর শুনিতে ইচ্ছা হৈল উপস্থিত।। এত শুনি বড়ানন কহে পুনর্কার। ত্রিপিউপ পীঠকথা মাহাত্মা যে সার।। মন্দাকিনী দল্লিধানে ত্রিপিউপ ধাম। তথাতে বিরাজে লিঙ্গ ত্রিলোচন নাম।। সরস্থতী যমুনা নর্মানা তীর্থ মিলে। স্বস্থনামে শিবলিঙ্গ স্থাপিল সকলে।। এই স্থান মাহাত্মা যে শুনহ বিস্তার। ইম্পান কহেন ভগবতীরে সম্বর।। ত্রিপিউপ হুদে স্নান করে যেই নর। উদ্পারে পিতৃত্মান্ধ করয়ে সম্বর।। গরাত্রান্ধ কোটি অংশে তৃলা ফল হয়। যেবা ত্রিলোচনেশ্বর অর্চনা করয়।। যমুনেশ্বরাদি লিঙ্গ দর্শন যে করি। সর্বাপাপে মুক্তি হৈয়া লভে হরপুরী।। বৈশাথেতে শীতপক তৃতীয়া যে তিথি। ত্রিপিউপ হুদে যেবা করে স্নান নিতি।। ত্রিলোচনেশ্বর লিঙ্গ পুন্জয়ে তথাতে। ভাছার ফলের কথা কে পারে বর্ণিতে।। কাশীপাপ হৈলে ক্রম্ন পিশাচ যে হয়। ত্রিলোচন দর্শনেতে তাছা সব ক্ষয়।।

णथ जिल्ला एटन श्रुत एथन।

রিপদী। একদিন ভগবতী, কহিলেন শিব প্রতি, ত্রিলোচন কিমতে উদয়। শস্তু, কহে শুন দেবী, এই স্থানে যোগ সেবি, যোগে মোর বহুকাল যায়॥ তৎকালে পাতাল হৈতে, মহালিক্ষ প্রজ্ঞালতে, উদয় হইল এই স্থানে। লিক্ষ তেজপুঞ্জ হেরি, ভোমাকে স্মরণ করি, ভূমি আসি দিলে দরশনে।। তব চক্ষুদ্মর ছিল, তৃতীর নরন হৈল, শিবলিক্ষ দৃষ্টির কারণ। প্রজ্ঞালিত লিক্ষ দেখি, আপনে হইল সুখী, একারণে নাম ত্রিলোচন।। মহালিক্ষ অবিমৃক্ত, তদবধি হৈল ব্যক্ত, কারণ শুনহ ভগবতী। এই ত্রিলোচনেশ্বর, আনস্ফ কানন বর,দর্শনেতে জীবে মুক্তি গতি॥ ত্রিলোচন দেখি নরে, ঘরে মরে স্থানান্তরে, তাহার নির্বাণ অচিরাত। ব্রক্ষহত্যা আদি পাপ্নারীরে দহিছে ভাপ, ত্রিলোচন ছেদেন বিঘাত।। শিব নিন্দা থেবা করে,

कीन द्वार पहें नरत, मूकि नांचि उद्यां श्व शांचर । जिनियेर कित सान, रमि जिलाइनाथान, भरत श्व अक्षनरम जानमारक।। मिनकिन सान करत, भूर प्रव तिर्ध्यरत, जांत मूकि जिलाइ रात शांत । यथा जिलाइ रात जांत, जथा निक जार शांत, विर्ध्यत जेनिक उथा ॥ जांचात भांचिम भांचात जांचात शांचर होत । पर्ण रात भांचर शांचर शांचर शांचर शांचर भांचर शांचर भांचर शांचर श

--31814--

অথ পারাবভাব্যান।

जिल्ली। कार्डिक करवन खन, अन्न ए विकासिन, जिल्लाहरन खेत বিবরণ। রথাগ্র কম্পনে কথা, ইতিহাসে উত্তমত। গুনিলে অপুর্মি হয় छान।। कुछ क वत्त्वन वांगी, मन्नांकति वत्त अनि, यङ्गिन छम्शदि कम्। ত্রিপিষ্টপ নঠ হয়, মণি রত্নে গ্রন্থিময়, বিশ্বকর্ম। নির্দাণ করম।। রত্নগণ জলে জতি, দেখিতে বিছাৎ জ্যোতি, কি কহিব তাহার বাখান। ধ্বজ পভাকা সুদার, উজিতেছে মনোহর, গগণেতে স্পর্ন যেন হন ॥ কোঠর যে মন্দিরেতে, আছে সব বছুমতে, চিত্রবিচিত্র রত্নময়। পারাবত পারাবতী, কোঠরে করেন স্থিতি, প্রতিদিন সন্দিরে থাক্র।। উজিয়া যাবার কালে, পাখার ব'তাদে হেলে, মন্দিরের ধুলি উভি যায়।। পক্ষীর স্বভাব ভায়, চক্রাকারে উদ্দিশাস, চক্রাকারে বৈশেন তথার। তাতে হয় প্রতি দিন, মন্দিরেতে প্রদক্ষিণ, হেনমতে নিতা যায় আনে। মন্দিরের আফিনার, कक्षन मिथिएक शाय, कृष्टे शकी जादा थुएंछे आहम ॥ उटके नादि छेटके घादा, পাখাতে উড়ার ভাহা, দেখিতে মুন্দর আসিনার দ নাহি পক্ষী জ্ঞানোদর, कित्म इत्व धर्मान्त्र, देववत्वात्म अहे नव छोत्र। खिल्लांचन शूटक योत्री, छूटे পক্ষী দেখে ভারা, ভগুলাদি খাইবারে দের 🛭 পক্ষীগণে শত্রু ধায়,কণোত দেখিতে পার, মনে ভাবে কিবপেতে নায়।। সচান যে সদাটিতে, নাহি शास्त्र कोनं भटक, गर्समा समन मिन्द्रिंटक ॥ छोहा स्मिथ शादावकी, छा-विक रहेल कार्क, शांतांवटक करिल खतिहरू।। महान खमन करत, आमा गरत धतिवादत, धति त्लाक मा इरवं मा हम। भक मिथ वनवाम, किरम तका

केरिक व सान का जिनादत । भूर्त देश्यक देश कादक, यति भव्य दत्र कादक, বলবান হর্ত সন্ত্রে !৷ ভবেত ছাড়িবে স্থান, ইথে নাহি অপুমান, ছেন বিধি আছে পুর্বাপর। শুনি পারাবতী কথা, পরাবত বলে তথা, অন্থির বে না হবে অন্তর ।। কোন ছার যে সচান, ধরিয়া বধিব প্রাণ, কেন ভূমি হৈয়াছ চিস্তিত।মোরা আছি যে কঠোরে, কার সাধ্য ধরিবারে, কি করিবে সচান দুরিত।। শুন প্রিয়ে কদাচিত, নাছি হবে মনে ভীত, রুথা তুঃখ কেন काव हिट्छ। श्रुमः धकनिम शद्य, महाम शक्कीटक छाद्य, शादावकी विलल স্বামীতে।। শুন স্বামী মোর কথা, পূর্বাপর আছি হেথ, উপস্থিত কণ্টক रहेल। निरंतमन कति आमि, शैष्ठ ठाहि मान जुमि, तुर्विल रमत्या विज्ञिल विश्राप्त नगरम् एक, हिस्ता करत विधिमत्क, जूमि मत्न, किছू नह छीछ। পারাবত বলে তবে, আপদেতে স্থির হবে, উচ্চাটিত না হবে নিশ্চিত॥ স্বামী বাক্য শুনি যব, মৌন ধরে অসম্ভব, নিরস্ত যে হৈল তভক্ষণ। সচান নাহিক যায়, স্বার বন্ধ করি ভায়, এইবুপে গত ভিনদিন।। কোঠরেতে দুই জন, রহিল ভাবিত মন, উড়িবার নাহি দেখে পথ। ধুর্ত্ত যে পক্ষী সচান, ক্রপোতেরে অপমান, করিতে লাগিল নানা মত।। শুন ওরে পারাবত, ক্রীবাক্যে হৃদর হত, বুঝি ভাবে তোমার হইলে। যদি শক্তি থাকে ভোর, সন্মুবেণ্ডে আইস মোর, লুকাইয়া দ্রীবাক্যে রহিলে।। যদি কার মান যায়, যেহ যান মৃত্যু প্রায়, হেন প্রাণ কি কারণে রাখ্য। সচানের বাক্য শুনি, পারাবন্ত, চিত্তে জানি, অপমানে হৈল ক্রোধ মুখ।। সাহস করিতে হয়, পলায়ন ভাল নয়, মৃত্যু থাকে হইবে নিশ্চয়। কণোভ माहम कति, वाहित देश्ल मध्ति, महात्माट अमनि धत्रा। नत्थ शाता-বত ধরি, পারাবতী মুখে করি, পুনাপথে বেগেতে উদ্ধিল। তৎ ক্ষণে-তে পারাবতী, বলে পারাবত প্রতি, এইক্সণে সচান ধরিল।। সচা-ब्बत शरम जुमि, जाघार कत्र श्वामी, हक्षु निम्ना कर शानश्रन। अरु **শুনি পারাবছ, বুঝি বাক্য অভিনত, সচানের পদেতে তৎক্ষণ।৷** मन्द्रापत् काल कार्ति, हिटल क्य नाहि गानि, आंग्श्रान कट्न कामक्ति। কপোতি ভাজির। পরে, বিপরীত শব্দ করে, মরি মরি দেহত ছাত্মি।।। কপোত কামড়ে ভীত, মুখে ছাড়ে পারাবত, সচান যে হইল অন্থির। পারাবতী পারাবত, দৈববোদে বধ মুক্ত, হৈরা নেল সমুদ্রের ভীর ।। তথা জলপান করি, পুনর্কার বেগ ধরি, চলিতেক দেশ দেশান্তরে। পুর্বারুত্ম कृत देश्टक, वित्र यात्र अत्याधारक, तत्रवृदक त्त्रत्तन नव्दत् ॥ कथा थादक

कृरेकन, नत्यू वाति अक्नन, वस्कान बात कथा देशन। शद्य क्रेकन मद्य, সন্ধিৰি সরযু ভীরে, মুক্তি পুরী ভন্নভাগ কৈল।। পারাবত মহাভাগঃ মুক্তিপুরী ভত্নতাগ, কম হৈল বিজ্ঞাধর ঘরে। পারাবভী নাগকনাা, বংগ ঞ্বে বড় ধন্যা, রত্বাবতী নাম সেই ধরে॥ এক নথী প্রভাবতী, বিতীয় যে গুণ বভী, এই ভিন একল যে খাকে। প্রধানেতে রাজাবভী, ছুই সখী শিষ্টমতী, এই ভিন অভিশন্ন সুখে।। বাল্যক্রীড়া ভিনজনে, সুদা থাকে এক স্থানে, বাল্যকাল করিল যাপন। একদিন রত্বাবতী, সহচরী সঙ্গে গতি, कांगीशृद्ध क्रिल भगन।। डिनकन अक्कारन, जिल्लाहन शृद्ध क्राल, टेनिविमामि नाना छेशहादत्र। निर्माण (य शक्रांबल, फार्फ मिश्रा विज्ञम्ल, सूर्वाक्ष भूष्ट्राटा भूषा करत्।। जिन कन धरकवारत, गानवमा नृका करत्। প্রণাম করিল বিধিমতে। পুলা সাকে ভিনজনে, যায় নিজ নিকেন্ডনে, প্রতিদিন করে গভায়ত।। মেধে শুক্ল ভৃতীয়ার, বার্যিকীর যাত্রা পার্যু, ত্রিলোচনেশ্বরের অত্যেতে। বহু লোক তথা আইসে, পুজুন করে বিশেবে, উপহার দিয়া নানা মতে।। প্রাতে উঠি রহাবতী, চুই সধী শুল্পমতি, সঙ্গে করি কাশীতে চলিল। তিন জন এককালে, পিশিসলা তীর্থের জলে, হানুন করি পুজাতে বসিল।। পুজাকরে হর্ষমনে, প্রদক্ষিণ ত্রিলোচনে, গাল্ড্র্য कतिल ज्थार्फ। भानवाना सूमधूत, नक भान वज्रुत, इत इत व्रात् সুস্থরেতে। ত্রিলোচনেশার কিরে, তিন জনে নৃত্য করে, লান ধরে কো-কীল রবেতে। শুনিরা সকল জন, মোহিত হইল মন, প্রশংসা করিল বছমতে ॥ তিন জন ভদপরে, প্রণমিল বছভরে, করি কৈল পুঞা সুমূর্ণা। নিনে উপবাস করি, রাজ জাগরণ করি, পত্তরে ভাবিষা বিলোচনু,॥ প্রাতঃকালে তিন জন, পিলিম্পিলা করি গ্রান, পরে কৈল মন্দির মার্জন। পুর্বের নিয়ম মত, পুজা সারি মনোগত, তদন্তরে করিল পারণ।। মণ্ডপে জাঞ্চল ফেলি, তিন জনে গলাগলি, শয়ন করিল তার পরে। নিত্রা উপ্স্থিত হয়, ছেনকালে দয়াময়, লিক হৈতে আসিল কুছরে।। নিজা দেখি কিন ছনে, গঙ্গাধর ভাবে মনে, চেতন করিল তার পরে। নিদ্রা ভাঞ্জি ছিন खन, कतिल निव मर्गन, अवाम कतिया खन् करता। कम्परत जिल्लाहन, ভিনকরা। প্রতি কন, বর লহ যথা মনোনীত। রত্বাবতী হেন শুনি, বিনয়ে কহিছে বাণী, বর যদি দিবেন নিশ্চিত 🗓 পূর্বজন্মের কথন, শুনিবারে ইচ্ছা মন, কুপাকরি কহ ভগৰান। তার পর পশুপতি, শুন বলি রহাবভী, ভোষার পুর্বজন্মের কথন।। পারাবতী ছিলে ভূমি, পারাবত তব

यामी, जिल्लाहन मन्द्रित जीहिला। नहाम शकी देश्ए, श्रांग तका किन মতে, সরযুতে প্রাণ ত্যাগ কৈলে।। ভুমি সেই পুণাফলে, রন্ধাবতী কন্যা হৈলে, পারাবত হৈল বিদ্যাধর। ছুই স্থী তব সক্ষে আছুরে পর্ম রক্ষে বিবরণ শুনহ সত্মর ।। ভবানী গৌতনী নামে, দ্বিজ গৃহে পু পদ্ধার, নারায়ণ चिटक विजा देवल। मर्नचाटक शिंह देमल, क्रूटे श्री मांख देवल, य्यदर्माटक রুছে বক্তকাল । সর্ক্ষাত্তে এই কয়, স্ত্রীলোকের নাম হয়, দেবনদী নামেতে गइता । जातत विज्ञा कता मन्न, कतित्व आश्रेष रुन्न, निरंषप चाहि नर्व প্রকারে।। নারায়ণ বিজ্ঞবর, মা ভাবিল পুর্ব্বাপ্ত, শান্তের অনীত কর্মা করে। উপযুক্ত কাল হৈল, সর্পাছাতে প্রাণ গেল. উচিত যে পাইল সন্থরে **प्रहे कना कान पितन, पूनि श्रृका कल आ**तन, कोर्या कति खकन कितल। এই মাত্র পাপ ভার, ইহা বিনা নাহি ভার. এই পাপে বাদরী হইল।। নারায়ণ মুনি ছিল, পারাবত জন্ম হৈল, চারি জন্ম শুন বিবরণ। বানরী **জম্মের পর, তব মুখ অভ্যান্তর, একত্রমে বিরাজে তথন।। দ্বিজ নারায়ণ** ছিল, বিদ্যাধর রূপ হৈল, এথা সেই অবশ্য আসিবে। তুমি আর সখী তুই, বিষাহ করিবে সেই, ইথে নাহি অন্যথা হইবে।। বিভাপরে চারিজনে, निर्स्तां एय जिल्लाहरन, अहे वत फिल मरहश्रदत । वत पित्रा जिल्लाहन, অন্তর্ধ্যান ততক্ষণ, পরেতে আসিল বিদ্যাধর । করি দিন শুভক্ষণে, বিবাহ যে তিন জনে, বিদ্যাধর হর্ষেতে করিল। পুর্বজন্ম পুণ্যফলে, ভাতে শিব कुभावतन, हाति चरन निर्वाण भारत।। अभातीरत मुक्क रूप्त, जिल्लाहरन পার লয়, অমুভ অধিক বিবরণ। কাশীখণ্ডামুত শর, ইহা ভিন্ন নাহি আর, यर्कमश्च व्यथा भगालम् ॥

পরার। পার্বতী মন্দন বলে অগন্তা মুনিবর। কহিব অপুর্ব কথা শুনহ সন্থা। বলির্চ নামেতে খ্যাত এক দ্বিজ্ঞবরে। ব্রহ্ম চর্বা আচরণ সদাকাল করে। ব্রহ্ম চর্বা আচরণ ভঙ্গ- মাহি হয়। তদন্তরে তীর্থবাত্রা সভত করয়। বারাণদী আদি দ্বিজ্ঞ হৈল উপনীত। মণিকনি মান করি হৈল আনন্দিত। তদপরে ভ্রমণ করেন কাশীপুরে। পশুপতি লিজগণে দর্শন যে করে। গ্রহ্মাযুক্ত হৈয়া দ্বিজ্ঞ প্রণাম কলি। দ্বিজ্ঞবর চিত্ত মধ্যে এই স্থির কৈল। পাশুপতি সিদ্ধিসক্তে ভ্রমণ করিব। সাধু সঙ্গে মনোরঙ্গে স্বন্ধিত পদ্ব পাব। পাশুপতি সিদ্ধিসপে ভ্রমণ করিব। সাধু সঙ্গে মনোরঙ্গে স্বন্ধিত পদ্ব পাব। পাশুপতি সিদ্ধিসপে ক্রেন মহাজনে। আচার্য্য করিয়া দ্বিজ্ঞ করেন সাধনে। পাশুপত সিদ্ধিসণ-বছ্ছিন পর। মহালয় পর্বত্তিত

চলিল সত্তর।। তথাতে ভাছেন শিব কেদার ঈশ্বর। কি কব মাহাত্ম। তাঁর অভ্যস্ত বিস্তার । চৈত্রমান শুক্লপকে চতুদর্শী ভিথি। সেই দিন সেই স্থানে শিব্যাতা ভাতি।। তেকারণে দকলেতে করেন গমন। পথমধ্যে দ্বিত্র গুরু হুইল নিধন।। দিবা রথ আসি শীঘ্র তর্থাতে মিলন। পাশুপত দিবামূর্ত্তি করিল ধারণ। সঙ্গে লইয়া শিবগণ কৈলাসে চলিল। পাশুপতি যে,গসিন্ধি করি মুক্তি হৈল।। ইহা দেখি বশিষ্ঠ দ্বিজের ভক্তি হয়। পাশুপতি জাগ্র-মেতে কভ দিন রয়।। একাস্ত চিত্তেতে ছিল গেল কেদারেছে। নিয়ম করিয়া যাত্রা করিল তথাতে। পুনরপি পাশুপতি সঙ্গে ঘিজবর। কাশীভে আবিয়া ভবেদ কেদার উদ্ধর।। হিমালয়ে কেদারেশ্ব গর মাহাল্যা। দর্শ-নেতে পুনর্জনা না হয় নিভাস্ত। প্রভিবৎসর কেদারে <mark>যায়েন বশির্ক।</mark> এইকপে গ্রু হৈল বংশর শতশর্ষ।। অতি রুদ্ধ হয়ে ছিল গমন ৰজিছ छ। হেনকালে কেদারেতে যাত্রা উপস্থিত।। **অশক্ত তথাচ ছিল নিরস্ত না হয়** বাৰ্ষিক যাত্ৰতিভ যাব ভবনে কদয়।। সেই রাত্রে **ত্তিজ** প্রতি **প্রসন্ন শর্ম।** নিশি শেষে স্বপ্নাদেশে শুন দ্বিজ্বর 🏿 অশক্ত দৈয়াছ তুমি ঘাইতে কেদার কাশীপুরে আছে কেদারেশ জনিবার।। কেদার **হই**ভে কা**শী নাহি ২য়** ন্যান। কাশীতে হইবে সিন্ধি ফল কোটিগুণ। খনি স্বপ্ন বোধ করি মিখ্যা। त्रत स्थान । जन्महादत चक्क मिन्ना भारता अमान ॥ अकाक पर्भन कतः কেদার ঈশর। ত*্*পরে দ্বিজ্ञবর চেতন অন্তর। কেদার ঈশর শিব **প্রত্ম**ে দেখিল। ভক্তিভাবে প্রণাম করিয়া স্তৃতি কৈল।। কেদারেশ দর্শন করিয়া দ্বিজ্বর। কুতার্য হইল দ্বিজ শুন্ত সম্বর ।। গৌরী স্থানে গ্র**াদেব শুনিয়া** : বচন। কেদার মহিত্যা দেবী না বর্ণন।। একবার দরশন করে যে সকলে। পুন জ্বা নাহি ভার ভূবন মণ্ডলে। তব নামে গৌরীকুণ্ড আছেন জ্পার। ছংসতীর্থ আর গঙ্গা এক স্থানে পায়।। সে সকলে স্থান করে মিলিভ ভীর্থেতে। কোটশভদ্মপাপ ক্ষয়ংয় তাতে। পুর্বকালে ছইকাক বিবাদ করিয়া। মিলিত তীর্থেতে হইল প্রতন আদিয়া।। কাক সংহ হৈয়া তথ্য চলিল সম্বর ! গৌরীতীর্থ সম নাহি ভুবন ভিতর ।। মহাতীর্থ গঙ্গাদেবী তথা বিলাজিত। মহামোহ অন্ধকার নাশেন নিশ্চিত।। দেখানে মানস তীর্থ আছেন নির্মান। ভাতে স্নাম মাজ মুক্তি জান ভার ফল।।

ज्य क्लारत्यरत्राभागान।

পয়ার। কেশার কুণ্ডেভে স্নান যেই জীব করে। তমুভ্যাগে তার মুক্তি **रुट्सम म ब्रद्ध ।। क्लिमां त्रकृ एक एक को क्लिक रहत । एक मांक कूल का त्र** इतः निञ्चात्रगः। व्यागांवना। ट्रिमवादत युकायनि इतः। क्लात्रकीरथेटक আন্ধি করিবে নিশ্চর।। তাহার কলের কথা কি কহিব আর । গরাক্ত আন্ধ देश्टफ कार्षि कल जात्र।। देऽज क्रुक ज्वारत्रामभी जिथि य जेमन ॥ जेकि कति কেলারেশ পুজা থে করয়। ক্ষাক্ষান্তর পাপ ভার হয় ক্ষয়। অন্তেভে निर्काल् मुख्ति जानिक निष्ठम्। यक्षाकाटन क्यमाद्रम यटन जिनदात्। অন্তকালে যুক্তি কল জানিহ তাহার।। বিশেষতঃ কলিকালে কেদার মহিমা कल भूटल भूकिटन ना इस कल नौमा । अक्तिकति रमहे नित्र भूटक (यहे नद्र। च्दर्भ दिवताक देश्या नाला सूच कद्रत ।। वर्ष मामाविध यावा शुक्रदम কেমার। ত্রিকাল নিয়ম করি করে সমস্কার।। লোকপাল বমরাজ ভারে পুজা করে। জান্ত সেই যমালয়ে শিব রূপ ধরে।। একবার কেদা-রেশ দৃষ্টি করেবেবা। মমঅসুচর হৈয়া করেমমসেবা ॥ ভক্তিতেকেদারেশ্বর পুঞ্জিবে কাশীতে। ভিত্রাঙ্গনেখর লিঞ্জার উদ্ভরেতে॥ তাহার দক্ষিণে নীলকণ্ঠ বিরাজিত। বায়ুকোণে অম্বরীশ আছেন নিশ্চিত।। সম্বুখেতে ইক্সন্থারে বার লিজ লার। দক্ষিণে আছেন লিঞ্চ কালপ্রারেশ্বর।। ক্ষেমেশ্বর शिष्ट प्रथा विदा्कि**ड ए**व। এই সৰ লিঞ্চ দেখি হর <mark>শিবম</mark>য়।। সেই স্থানে শিক্ষিক্ষ যে করে ক্ষণন। সংসার যাতনা ভার নাহিক ভাবন**। সপ্ত** मे मुख्यामें क्रमा अंडि महनां हेत्र । मीठानाथ क्रट्ट **मित** खार्कि निवस्त ।। **टक्सिट्सम श्राशान (र प्रयाश इहेटा। उद्धिटक म्युनिटन शांश नामरम्** मक्ल ॥

অথ যমের তপ্তা।

প্রার। কার্ত্তিক কছেন শুন যুনি তপোধন। অতিশয় পুণাকথা বলি । এতক্ষণ।। যে সকল মহামারা জিঞ্জানে শক্ষরে। তাহাতে সে উক্ত হৈল দেব মহেশ্বরে।। সেই গোপা কথা মুনি কহি যে তোমারে। ভক্তিভাব করি শুন একান্ত অন্তরে। এক দিন ভবানী কছেন ত্রিলোচনে। এক নিবেদ্ দন প্রভা তোমার চরণে।। সেই কথা যুনি মোরে কহ কুপা করি। তবেত

মানসে ছাথ হয় পরিহরি।। কাশীকেত্রে কোট কোট লিকের উদর। পরস্পর সর্ব্ধ লিঞ্চ পুণ্যকর হয়।। এক হৈতে আর ভ্রেষ্ঠ ক্রমেতে আছম। সকলি ভোমার ইচ্ছা শুন জগশ্বর। কোন লিঙ্গে প্রীত সদা আছরে ভোমার। যাহা দর্শনেতে জীব হয়ত নিস্তার।। ধর্ম তীর্থ কাম মোক প্রাপ্ত জনায়াসে। যার যেই মদক্ষাম পুরাণ বিশেষে।। যাহার জপনে যোগধর্ম দিদ্ধিহয়। সে সকল বল প্রভো হইয়া সদয় ।। শুনি প্রভু ত্রিলো-চন অতি আনন্দিত। কহিছেন, উমা প্রতি হৈয়া বড় প্রীত।। অতি গুষ্ কথা তুমি জি**জা**সা করিলে। এ সকল কেছ নাছি কছে কোনকালে।। ভূমিত জগৎকর্ত্রী দর্ব্ব পরাৎপরা। প্রিয় কথা জিঞাদিলা অতি গুছ ভরা । আনন্দ কানন মোর অতি প্রিয় স্থান। কৈলাস **ছইতে শ্রেষ্ঠ যাছাতে** নির্ফাণ।। কাশীমধ্যে শিবলিঞ্জাছে বছতর। সমুদ্ধ লিঞ্ছয় ভাজি পুণ্যকর ।। একচক্র রথ যার নামেন্ডে তপ্র । তাহার তনর যম ধর্ম পরারণ সভাবুগে যে স্থানেতে আমি যোগ করি। গ**জানন পুজাতে বধিল**াদেক বৈরী।। দারুণ ত্রিপুরাত্ত্র মহাবলবস্ত। গণপতি দেবি ভারে করিলাম ছন্ত । বেত্রাস্কুব বধি ইন্দ্র জন্ম বধ পায়। আমার তপস্যা স্থানে পাপক্ষয় যায়। সেই স্থানে বিশালাক্ষী এক মূর্ত্তি তব। মহাপীঠস্থান সেই মাহাজ্য কি কব। সেই স্থানে যম আসি তপস্যা করন্ন। উৎকট তগ্যসা অতি ছোর-ভর হয়।। আপন সমাুথে শিব লিকের স্থাপন। যমরাজ সদা করে যোগ আচরণ। যোগবলে সেই লিঙ্গ অভি প্রজালিত। চন্দ্র আভা যিনি শোভা রত্নেতে নির্দ্মিত। নানাবিধ পুপ্প মাল্য ধূপ গন্ধ জার। বছবিধ মোদকাদি বহু উপহার।। বহুকাল এইরূপে পুজন করিল। তদপরে মহান্বোর যোগ আরম্ভিল।। হেমস্ত শিশির কালে সদা জলে থাকে। জক্ষেপ মাহি করে নিঃশব্দ যে মুখে। বসস্ত গ্রীষ্মেতে অগ্নি জালি চারিদিনে। তার মধ্যে বনি যোগ করে মহাভাগে।। বর্ষা শরতে সদা থাকে নিরাঞায়। মহা ঘোরতর র্ষ্টি মস্তকে পড়য়।। নিরাহারে যোগ করে তপন-তনয়। তৃষ্ণা হৈংলে কুশাত্রেতে বারি যে ভক্ষয়।। বছকাল এইরূপে হইলেক গভ। তথাপি না হয় ভার চিত্ত যে নির্ভা। মস্তক অধোতে করি উর্জু পদে রয়। এডাদৃশ বহুকাল তাতে গত হয়।। এক পদে দাণ্ডাইয়া যোড করি হাত। অন্তরেতে সদা ধ্যান করে জগন্নথি।। পাদাঙ্গুর্চ্চে ভর করি দাগুইয়া রয়। মোর সদৃশ যোগ কেহ না করর।। অচল গিরির ন্যার বসিয়া যোগেতে। ভূগ আছি

গ্রতার হৈয়াছে অঙ্গ্রেত।। দেহের আকার তার জানা নাহি যায়। না-িকাত্রে বায়ু সাত্র কিঞ্ছিৎ আছম।। তার ধানে হৈয়া ভূষ্ট দেব ত্রিলোচন প্রাঞ্চাৎ হইয়া শিব মুম প্রতি কন।। বছ যতু করি ভার শব্দ নাহিং পান। ূদ্যাসয় অঙ্গে তাব কৈল হস্ত দান।। হস্ত স্পর্ণে সূর্যা-সুত্ত চেতন পাইয়া। গ্রহাম করিল ভূমে দণ্ডন্যাম হৈয়া। ভদপরে কর্যোভে সন্মর্থতে রয়। বছবিখ অতে যম স্তবন কর্ম। তুমি ব্রন্ধা তুমি বিফু তুমি মহেশ্ব। পর্বস্তৃত জামা প্রভোজগত ঈশর। নিরাকার সাকার সকল ইচ্ছা তব ত্রিগুণ ধারণ প্রভো অংগভীত সব।। সন্থ রঙ্গ স্তম এই তিন ঋণ হয়। ভূমিত সকল প্রভে: ভোমা ছাড়া নয়।। অবিদ্যা যে বিস্তা তুই শরীরে আবার। শুভাশুভ ধর্মা আর বেবা কিছু হয়।। করণের কারণ ভূমিত জগ-লুখি। সৃষ্টি স্থিতি প্রলম্ন সকল তব হাত।। চন্দ্র সূর্য্য তব তেজ করিয়া গার্ণ স্বৰ্গ মন্ত্ৰ। পৃথিবীতে তেজ প্ৰকাশন।। অগ্নিবায়ু বরুগাদি যত দেবগণ। সকল ভোমাতে জন্ম শুন প্রধানন।। বিধি বিষ্ণু তোমার মহিমা নাহি জানে। ছামি কি করিব ত্তব ভতি অত্য জানে।। এতাদুশ বহু স্তব শমন ক্ষরিল। গলে বাস দিবে অত্যে দাগুছের রাইল।। ভূট হৈয়া শিব তারে करहत मधुरु। यथा देखा परवानीक हादि वह बद्र ॥ धर्माभीव रक्ष स्त्रि मन। থার্ম মতি। ধর্মারাজ নাম তব হইল সম্প্রতি । লোক বর্মা অধিকার হইল ভোমার। বিচার করিবে ভূমি ধর্মাধর্ম আর ।। আর যাহা ইচ্ছা বর দিব এইক্ষুণ। শুনিয়া সুর্গেয়ে সুত কছেন বচন।। তুনি যারে সাক্ষাৎ হইলে বিলোচন। ইহাতে অধিক ববে কোন প্রয়োজন। ধর্ম অর্থ কাম মোক एत्रभट्न इत् , हेश्व अधिक कल श्रात कि श्राष्ट्रश्व ।। এই वत्र एक्नि कव्र श्वन দ্যান্য। তব পাদ্পয়ে মোর স্থির ভক্তি হয়।। এত কহি প্রধান করিল ধর্মারাজ। বস্তু শত প্রণামল নাহি করে ব্যাজ । শিবরূপ দেখিতে আ-কাজ্জা হৈল অভি। এক দুফে চাহিয়া রহিল শিব প্রভি।। নিঃশক্ত হইয়া रेतल सिव मिन्धारम । व्यक्तिस्थायात्र कथा अन मर्खक्रम ॥

ছাথ যমের বর গ্রাপ্ত ও পক্ষীর মুক্তি।

পরার। কাতিক ক্ষেম মুনি শুন তদপর। ধর্মরাজ বিবরণ প্রম স্থানর।। ধ্যরাজ আনম্পেতে বাক্য নাহি স্বরে। জনিমিষে সহাদেব মান্তাকার।। পিনাকী দেখিয়া ধর্মরাজের চরিত্র। হস্তে স্পূর্ণ করিলেন

यम गर्क शोज ॥ मित्रांमय न्शर्म यम क्लिन शिहेन। दश्रदमण्ड श्रम छन्न ভূমিতে পড়িল।। হস্তে ধরি সদাশিব ভূলি ধর্মরাজে। বর লছ যথা ইচ্ছা তাছে হৃদি মাঝে।। ধর্মরাজ কছে প্রভাে করি নিবেদন। তােমার ল্পা-র্শেতে মুক্ত হইল এখন।। অন্য বর নাহি চাহি শুন দয়াসয়। প্রামার নিকটে তুই পক্ষীর তনম।। অওহৈতে তার জন্ম হইয়া অন্তরে। দৈবল যোগে মাতা পিতা অপেকালে মরে।। অনাথ হইয়া পক্ষী থাকে মফ কাছে। ভূত ভাবি বর্ত্তমান অবগত আছে।। ছই পক্ষী নিস্কার করছ ভগ-বান। শুনি তুইট হৈল বড় দেব পঞ্চানন।। ধর্মারাজে প্রশংসা করিয়া বভতর। পক্ষী প্রতি কহে শিব চাহি লহ বর।। ব্রতার্থ হইয়া পক্ষী কহে भृक्ष्यदा। छान दीन शक्तीरमानी कि চाहित वरत।। वर्मताक निकटिएछी ব্রুকাল আছি। তাঁহার তপ্যা। বলে নিম্পাপ হৈয়াছি।। ভব পদ पर्भाति इहेन यात्। श्रुक्त को जिया कथा कहि विवत्।। (नवटनारक কতবার জন্ম যে হইল। গন্ধর্ক অপ্সর ঋষি বহু জন্ম গেল ॥ সিদ্ধবানপ্রস্ত জন্ম হৈল কত বার। ত্রেক্ষ্যারি দণ্ডধারী হৈল বারেবান।। সমুষ্য রাক্ষ্য-(यानी ज्ञमन कतिया। शक्ष शक्ती कीं है ज्ञानि जरनक इहेया।। यक उद्ध ভুত দেহ, হয় কতবার। কোন জমে নিবারণ না হয় সংখার।। ছুই পক্ষী এইক্রে কহি বিবৰণ। নানামতে স্তব করে নিস্তার কারণ। জুমি ব্রন্ধ পরাৎপর সকলের মূল। সৃষ্টি স্থিতি লয় কর তুমি স্থক্ষ স্থুল।। তদন্তরে, তুই পক্ষী কৰে হর প্রক্তি। এই বর বাঞ্চা মোর শুন পশুপতি।। যাহাতে সংসার মধ্যে জন্ম নাহি হয়। এই উপদেশ প্রভু শুন দয়াময়।। ইন্দ্র চন্দ্র আদি পদ বাঞ্ছা নাহি করি। অনায়াদে তমু ত্যাগ হয় কাশীপুরী।। ধর্মের নিকটে যেবা করেন বসতি। সেই জ্ঞান প্রাপ্ত হয় শুন পশুপতি।। যেমত চন্দন গুণ প্রকাশ করয়। অসার সকল রুক্ষ হয় গন্ধময়।। দেহ পরি জাগ তব আনন্দ কাননে। সংসার নিবর্ত্ত হয় এই দেহ জ্ঞানে।। এন্ধা মুখে এই বাক্য হয়ত প্রমাণ। অবিমুক্তে প্রাণ ত্যাগ দেবের বচন।। কাশীতে কৈবলা মুনি অষ্টাবক্র কয়। বিষ্ণু উক্তি মূনি পদ কাশীতে নিশ্চয়। যাজবনকঃ মুনি বলে কাশী মৃত্যু সার। কাশী মৃত্যু মুক্তি লাভ আৰু। বে ছোমার।। কুষ্ণ দ্বৈপায়ন কহে এইত বচন। কাশীতে জীবের মুক্তি করে পঞ্চানন।। যে স্থানে সাক্ষাৎকার সর্বজ ঈশ্বর। তাহাতে জীবের মুক্তি হয় নিরস্তর ।। লোমসাদিয়নিআরত্ন্য যেবিশেষে । কাশীযে নিকাণকে এ সর্ক্ষতে ভালে শুক পক্ষী বলে প্রভু আমরাহ জানি। ভূচ ভবিষাতি বর্ত্তমান যে আপনি।

কাশীৰ্যন্ত ৷

व्यविमुक्त मर्शाक्ति निर्मारित स्थान । धेर यह एमर व्यक्ति गाँक रम स्थान । পক্ষীর বচন শুনি শস্তর বিশায়। পক্ষী হৈয়া জতীতাদি অবহেলে কয়।। त्रक्र नाथ दर्भ वर्ष शीर्छत्र माश्या। साम खर्ग शकी देश्य मुख्यिक नमर्थ সুষ্য সুত সংখ্যবিষ্য কন পঞ্চানন। রাজগৃতে কাশীকেত্রে সমবাস স্থান।। মোক লক্ষী বিসাল মন্দির্গম হয়। তাহাতে আমার বাস আছরে নিশ্চয় এ মন্দির প্রদক্ষিণ যেই জীব করে। অনায়াসে মুক্তি পদ কে খণ্ডিতে পারে মন্দির দকল আর ধ্রজ যে দেধর! সুখভোগ করি অন্তে কাশী প্রাপ্ত হয় নির্মাণ মণ্ডল আছে ইহার দক্ষিণে। নিমিষেকে বাস ফল শুন তপোধনে। व्यमान्हाटन वेष्प्रदेशक (यांश यक्ति कट्यू) निमिष्यदेक यात्र कल शास ताहे नद्य ষদি একবারজপকরেসেই স্থানে। স্থানাস্তরে কোটিওণ নাহয়সমানে।। এই ৰূপে বছু স্থান রাজগৃতে আছে। দর্শনেজে মুক্তি লাভ কহি তব কাছে।। পর্মরাজ জাতঃপর শুনহ বচন। যে২ স্থান মম প্রিয় তাহার কথন।। চক্র-कीर्य मिकर्नि कवियुक्तकथन। शक्ष्यम विभावाकी लोही शोर्रभन।। প্রেণবেশ্বর লিঙ্গ আর কীর্ত্তিবাস। সদত তথাতে মোর হয় অভিলাষ।। লৈতিক্ষর ত্রিলোচন ত্রিপিষ্টপ আর । যয়ুনা নর্মদা গঙ্গা সরস্বতী সার ॥ একত্র মিলিত হয় পিলিন্সিলা নাম। বিন্যুগুবা যথা পিতৃলোকের নির্দ্ধাণ রড়েশ্বর কেদারেশ অভি চমৎকার। এই যে সকল হয় নির্বাণের সার।। অবিমুক্ত পঞ্চক্রোলি নির্কাণের ভূমি। ভনুভ্যাগ যেবা করে নিস্তারি সে আমি।। ধর্ম স্থান মাহাত্মা দেখহ ধর্মারাজ। শুকপক্ষী স্থর্ণরথে হইয়া বিরাজ। দিব।মূর্ত্তি ধারণ করিয়া ততক্ষণে। চলিলেক কৈলাসেতে দেখহ নয়নে।। হেনকালে বিমানে চড়িয়া বিদ্যাধরী। শুক্পক্ষী নিকটে আইসে শীজ করি॥ ছুই পক্ষী দিবামূর্ত্তি ধারণ করিল। ধর্মারাজ সন্মুখেতে বছ প্রণমিল।। ভদপরে দেবনাথে ছুই পক্ষী কর। স্থার যেন মহাপ্রভো জন্ম नाहि इत्र ॥ पुटे शक्ती अठि ए करहन शक्तानन । श्रनकीत कानी जानि পাইরে নির্বাণ।। ধর্মক্ষেত্রে মাহাত্ম যে না হয় বর্ণনে। সদাকাল হেথা আমি আছি অধিষ্ঠানে।। যেবা এই অধায় প্রত্যহ পাঠ করে। কাশীকেত প্রাপ্ত ভার অনায়াসে পারে।। উনাশি অধ্যায় কাশীখণ্ড মনোহর। বেদ-ব্যাস উক্ত এই সব প্রথাকর।।

কাশীখণ্ড।

অথ ধর্মপীঠ উপাধ্যান।

क्षन्न करह कुछ**न ख**नह निरुवनन। धर्माशीठ कथा (नदी शक्षांनरन कन।। शीर्फत माधाजा (नव जारूमी कथन। शकी चरर्भ भंत রুখে করি আরোহণ।। এই পীঠস্থানে আমি সতত রহিব। ধর্মপীঠ মম প্রিয় আর কি কহিব।। ভগবতী হেন বাক্য শুনিয়া শঙ্কর। প্রসংশা করিয়ী পরে কহেন সন্থর । ধর্মপীঠ ন্ম স্থান নাহিক ভগবতী। তব অধিষ্ঠান হৈলে মাহাত্ম যে অভি।। শুনহ আশ্চর্যা স্থান মাহাত্ম যে আর। চৈত্র শুক্ল তৃতীয়াতে ব্রতের বিস্তার।। এই দিনে পুরুষ যে কিমা নারী হয়। মনোরশ ত্রত থেবা ভক্তিতে কর**র**। তার মনোর্থ সি**দ্ধি জানিহ মাহেশী। আচি-** ' রাতে মুক্তি হয় সর্বাপাপ রাশি॥ মহামায়। জিল্লাসেন দেব জগনাথে কিৰুপেতে কেবা আচরিবে মনোরথে।। ভগবভী প্রতি তবে শঙ্কর কহিল শচীদেবী এই ব্রত পুর্বের আচরিল।। তাহার বিশেষ ক**হি শুন ভগ্রবডী।** আমার তথ্যা। শহীদেবীকরে অতি।। তথ্যার বলে আমি হইয়া সাক্ষান্ত বরলহ যথা ইচ্ছা দিব অভিরাত।। তদপরে শচীদেবী বলেন বচন। এই বর দেহ প্রভো করি নিবেদন।। সর্কদেব প্রেঠ প্রভো মোর স্বামী হয়। স্থিরতর যৌবণী আমি তার নাহি কর।। স্তীত্র স্বধর্ম মোর কন্তু নাহি যার এই বর দেহ প্রভো বলি তব পায় !! শতীবাকা শুনে যেন রহিলাম পরে নিয়ম করিয়া মনোরথ এত করে॥ টেঅ শুক্ল দিতীয়াতে সংযম করিবে। পরেতে তৃতীয়া দিনে গৌরীকে পুলিবে।। বিংশ ভুকা মূর্ত্তি তব এই পুজাকালে। অশোক পুজোর সহ নৈবিদ্যাদি জলে। চণ্ডী বিনায়ক পুজা कतिरव लाफ फूटक। शरत विश्मकूका रमवी शुक्रिय खिक्टक ।। शुक्र मांमा মত আর সুগন্ধি চন্দন। প্রতি মাসে শুকু পক্ষে তৃতীয়া পুজন। কাশুণ পর্যান্ত ব্রত করিবেক ব্রতী। বিধান আছেন গ্রন্থে অবগভ মাত।। এই ব্রত শচীদেবী করিয়া আচার। মনোরথ সিধি হৈল সকল ভাহার।। ভদপরে প্রুশ্বতি এত আচরিল। সুনীতি সুগন্ধ দ্রব্য বিধিমতে দিল।। শঙ্করী कट्टन প্রভোকর অবধান। এই স্থান বিনে এত নহে জন্যস্থান।। ধৃত্র্যটি वर्णन श्रिरत्र अन्य वहन। म्हानास्टर्त अरे खंड य करत रावन।। विश्मांक যে পুরুষা আর গণেশ স্বর্গেতে। যথা সাধ্য পরিমাণ করিবে নির্শিতে।। পুজাবিধি পুর্ব্বমন্ত সব আচরিত। ভক্তিতে সেবিলে ফল পায় মনোনীত। ব্রতের ফলের কথা শুনহ শক্ষরী। ব্রত ক্রিবেক নারী হৈয়া সদাচারী।।

শচী সম হয় তার সৌভাগ্য অপার। পুজ্ঞহীনা পুজ্ঞ পায় শুন কহি আর ॥
বিধবাতে যদি ব্রত আচরণ করে। অবৈধবা পায় সে নিশ্চয় জন্মান্তরে
জন্য ফল ব্রতের যে আছয়ে অনেক। আহ্বাবতী হৈয়া ব্রতী ব্রত করিবেক
ধর্মা পীঠ স্থান আর ভোমার বসতি। এই স্থানে ব্রত ফল মাহাত্মা যে অভি
ব্রত্সেরা করে যেবা সেই বুদ্ধিমতি। অস্তে কাশী প্রাপ্ত তার নাহি জন্যগতি॥ জমৃত সমান কথা অসীতি অধ্যায়। শুনিশে সকল পাপ নফ্ট
হৈয়া যায়॥

--###--

অথ ধর্মপীঠ মাহাত্য।

প্রার। অগন্তঃ বলেন প্রভো শুন মড়ানন। ধর্মাণীট মার্ডি যে হইল প্রবণ। এ অতি আশ্চর্য্য প্রভো হৈল পঠি কথা। প্রফী বলে ভূত ভাবি বর্ত্তমান যথা।। ধর্মেশ্বর লিঙ্গ আরু পীঠ বিবরণ। শুনিয়া বিস্মৃত প্রভো হৈল ভতক্ষণ।। ধর্মাপীঠ কুপ যে আছরে বড়ানন। ভাহার মাহা-আ প্রতোকরিব অবণ। প্রশ্ন শুনি কার্ত্তিকেয় অতি ভূফী হৈল। কুন্তযোনী প্রতি ক্ষম্ম বলিতে লানিল।। মনোরমা কথা তমি কৈলে জালাপন। জড়ি গুরুতর কথা শুনদিরা নন।। বেই কথা মহামারা জিল্ডাসে শস্করে। জা-হাতে যে উক্ত হৈল দেব মহেশবে।। কেই কথা তোমার নিকটে আমি কর। ধর্ম ভীর্থ মাহাজ্যের ইতিহাস সব।। ধর্মজীর্থে স্নান দান যেই নর করে। অন্যত্র ২উতে কেটি গুণফল ধরে।। সর্বর পাপে মুক্ত সেই না আ ইলে সংসার। আর কভু নাহি দেখে জননী জঠর।। ধর্ম ভীথে যেবা করে ঞাদ্ধানি তর্পা। গয়াঞাদ্ধ করা তার কিবা প্রয়োজন।। কুরুক্ষেত্র হরিছার প্রভাষ পুষ্কর। ইত্যাদি শ্রাদ্ধেতে তীর্থ ফল বস্থতর 🖰 ধর্মাতীর্থে পিগুদান করে যেবা জন। ধর্মতীর্থ সমান যে নহেত কথন।। গয়। পিগুদান ফল ধক্ষকুপে হয়। পিতৃ মাতৃ তুল মুক্তি নাহিক সংশয়।। সভা যুগে এক রুথা ত্মন ভলে। বন্দ্ৰরাজ কৈল বেত্রাস্কুর**কে নিধন**।। ব্রহ্মতে**জে জন্ম বেত্রা** সুরের আছিল। তাহার নিধনে ভ্রন্মবার্ধ ইন্দু হৈল।। অকমাৎ হৈল রুষ্ণ-বৰ্ণ কলেবর। শরীরেতে ছুগঞ্জ ছাড়য়ে নিরন্তর । মহাত্রুখী ইন্দ্রদেব হইল সত্ব । কি করিব কোথা ঘাব ভাবে নিরন্তর ॥ বুদ্ধের সাগর দেব গুরু রুহ ম্পতি। ভাঁহার নিকটে ইন্দ্রেল শীঘ্রগতি।। নিবেদন করি গুরো শুনহ নিশ্চর। বেলাস্কুর সর্বেতে এক্ষর্থ হয়।। শ্রীরেতে বছ কর্ম সহিতে ন্

পারি। কহ দেখি গুরুদেব উপায় কি করি।। গুরুদেব কহে বাণী শুন ইন্দ্রাজ। কাশীতে গমন কর না করহ ব্যাজ।। পুর্বের কালভৈরব যে একা-মুগু ছেদি। ত্রহ্মহত্যা মুগু হল্জে ভ্রমে নিরবধি।। কোন তীর্থে হস্ত হৈতে মুগু নাহি পড়ে। ভ্রমিতে ভ্রমিতে গেল কাশীপুরী পরে।। কাশীপুরে একা বধ পাপে মুক্ত হৈল। হচ্ছে হৈতে ব্রহ্মমুগু সহসা পড়িল। কাশীর মাহা-আ নাহি জানে কোন জন। শীঘ্রগতি কাশী তুমি করহ গমন।। এই উপ-দেশ যদি ইক্রদেব পাইল। অতি ত্রান্থিত কাশী ভংক্ষণে চলিল। কাশীপুরে ইন্দ্রদেব উপস্থিত হৈয়া। উত্তরবাহিনী গঙ্গা স্থানাদি করিয়া।। নিকটেতে ধর্মেশ্বর লিঙ্গের স্থাপন। তথাতে বসিল ইন্দ্র হৈয়া ক্ষমন।। ধর্মেশ্বর লিঙ্গ দেখি চমৎকুত হৈল। তাহার সদ্মুখে ইন্দু শিব ধ্যান কৈল ইন্দ্রদেব ভক্তি দেখি অভি তুই হর। লিঙ্গ হৈতে বহিভূতি হৈল মহেশ্বর। বজ্ঞপাণি প্রতি তবে কহে পঞ্চানন। বর লহ ইন্দ্র তব যথা ইচ্ছা সম।। ইন্দুদেব কহে প্রভো শুন ত্রিপুরারে। সকল আপনে জান যা আছে অন্ত-রে। তব অত্যে কহিব শুনহ জগনাথ। মনোগত যত কিছু সব তব হাতা कश्लिन हेन्स क्षेत्रि जिन्नगर कर्छा। दिजासूत वर्ध खन्मवर्ध भांभ वार्छा।। ধর্মতীর্থে স্নান ইন্দ্র কর শীঘ্রগতি। ব্রহ্মহত্যা পাপ হৈতে পাবে অব্যাহতি শুনি ভূষ্ট অতিশয় হৈল দেবরাজ। ধন্মকুণ্ডে স্নান কৈল না করিল ব্যাজ।। ব্রহ্মহতা। পাপ তার নব দূরে গেল। পুর্কবিৎ শরীরাভা ইচ্ছের হইল।। শরীরের সুগন্ধি যে হইল তৎক্ষণ। অতি হর্ষে ইন্দ্র করে হরের স্তবন।। তাহা দেখি নারদাদি মুনির বিম্ময়। ধর্মাতীর্থ স্থান করি ভর্পণ করেয়॥ পিতৃত্রাদ্ধ করিলেক হৈয়া হর্ষ চিত্ত। মনে ভাবে সব মুনি হইল পবিত্র।। কোটিশত কলস করিয়া তীর্থে দেখা। ধর্মেশ্বর সম্ভকেতে দিল অসজ্ঞাক।। তদপরে ইন্দ্রদেব গেল স্বর্গপুরে। দেবের স্বভাবে সবে প্রশংসা যে করে।। কাশীক্ষেত্রে ধর্মেশ্বর লিঙ্গের বিস্মৃত। ধর্ম পীঠ ধর্মকুণ্ড জতি চমৎকৃত। ধর্মকুণ্ডে মান করি এক্ষহতা। গেল। এইমত কৃছি ইন্দ্র বছ প্রশংসিল।। ভদপরে কভদিনে দেব বজ্ঞপাণি। দেবগণ বহু কাশী চলিল আপনি॥ স্বনানেতে শিবলিক করিয়া স্থাপন। পুজা দ্রব্য নানাবিধ স্থানিল তথ্য।। নানারত দিয়া শিবলিঙ্গ পুজা করে। ইন্দ্রপ্রতি অতি ভুষ্ট হইল শঙ্করে।। थटमांचेदत अमक्ति। प्रतिशासिक श्रेत एक नह राज वक्षपाती।। ষ্ডুবিন কহেন জগস্তা মুদিবরে। ধর্মতীর্থ হৈতে ইন্দ্র ব্রহ্মবধে তরে।।

কাশীখণ্ড।

ष्यथ पन ताकात छेलाशाना

প্রার। স্থার এক ইতিহাস স্থতি গুরুত্র। ভোমার সাঞ্চাতে কহি 😎 মুনিবর।। বিশ্বুগিরি নিকটেতে কদম্ব শিখব। দম নামে রাজা ছিল অতি পুণাতর ॥ ছদিন তাহার পুত্র বড়ই ছকেন। পুত্রে রাজা দিয়া দমে হইল মরণ।। কদম শিথরে রাজা ত্রন্ত ম হইল। বড়ই তুর্নিত কর্ম করিতে লাগিল।। ব্রেক্ষণের কর গ্রহ হল্ডে দেয় দান। পীড়েন সাধুরে বড় ছর্জ্জনে সন্মান।। যেই জনে পাপ করে ছাড়ি দেয় তারে। অপাপ জনেরে ধরি বছ শান্তি করে। নিজ দারা পরিত্যাগ পরদারে রভ। প্রজা পত্নী হরণেতে বর্মদা সন্মত।। জীবহিংলা সতত মুগরা করি ফিরে। ব্রোক্ষণ বৈষ্ণব হিংলা অবিরত করে। সদালাপ ত্যাগ করি সতত কুসঙ্গ। কুপথ গমনে সদা রহে রাগ রঙ্গ ।। শ্রীনাগ শ্রীকণ্ঠ নাম কন্তু নীহি লয়। যোগীগণ তপদ্যাতে সূদত পীভ্র।। একদিন সঙ্গে করি বছু সৈন্যগণ। মুগরা করিতে গেল ঘোরতর বন।। অব্যে চড়ি চলিল চুদ্র ম নরপতি। সকলের অত্যে গেল অভি শীঘ্র-গতি।। তার সঙ্গে কেছ নাহি ঘাইতে পারিল। সৈনা ত্যাগি একাকী অর-भा अदयमिन । देमदर छेशश्चिष्ठ देश्य श्रामन्त्र कानदन । सूभीष्ठन श्वान प्रिय व्यक्ति और मरन ।। महारमव हेक्का कांत्र ऋरिनत माश्वा । क्रक म नुश्रि তথা হৈল শুদ্ধচিত।। শ্রম দূর করিল বসিয়া রৃক্ষ তলে।। তথা এক মন্দির দেখিল হেনকালে।। রত্মাদি নির্দ্ধিত হয় অতি উচ্চঃতর। মন্দির উপরে রত্বে ধ্রক্ত থরে থর। মনোহর সে মন্দির দেখিয়া রাজন। অতি শীঘ্র সেই স্থানে করিল গমন।। ধর্মেশ্বর লিঙ্গের মন্দির সেই হয়। নুপতি নন্দন দেখি হইল বিমায়।। ভানের উদয় তার অকমাৎ হয়। ভাষাকে নিন্দা করি বল্পতে কয়।। সংসারেতে আমা সম নাহিক পাতকী। পাপেতে হইরা মগ্ন চিরকাল সুখী।। আখ্যা বন্ধবর্গ সব হিংসি চিরদিন। ভাবাণ অপস্থীগণে হৈয়া দয়া হীন।। প্রদার প্রদ্রুব্য করিছে হরণ। কোনকালে দেব নাম না করি স্মরণ । সংগারেতে রুখা জন্ম হইল আমার। কেবল ক-রেছি আমি পৃথিবীর ভার।। ধর্মপীঠে যে সকল লোক আসিছিল। তাহা-র মুখেতে পীঠ মাহান্দ্য গুনিল।। মাহান্দ্য গুনিয়া তথা হুর্ড ম নুপতি। অশ্ব আরোহণে গৃতহ চলে শীঘ্রগতি।। আত্মা বন্ধুগণ আর কুটুর ভাকিল। ব্রাহ্মণ ভপস্বীগণ তাবৎ আনিল।। সকলের প্রতি কছে করিরা বিনর। তো মাস্তব আমা প্রতি হইবে সদয় ॥ না বুর্ঝিরা ভোমা সবে ছিংসেছি সর্বদা প্রাক্ষণ বৈষ্ণবগণে দান নাহি কদা।। বছস্ত কি করি সবে করিল সন্ধান।। প্রাক্ষণাদি গৃহিতাকে দিল বহুদান।। প্রাক্ষণ দকল কুপণ গামী ছিল।
সকল শাসন করি স্থার্মে আনিল।। নগর মধ্যেকে ছিল যতেক ছুজ্জন।
বিধিমতে সকলেরে করিল শাসন।। দীনহীন অকিঞ্চনে নগুধন দিল।
রাজা ভাগি করি রাজা পুজ্রে রাজা কৈল।। রাজ্যধন নারী আদি সব ভাগি
করি। সমর্পণ সকল করিল পুজ্ঞপরি।। অতি ভুক্ত হৈয়া রাজা চলিল স্বরিভ
ধর্মেশ্বর লিক্স যথা তথা উপস্থিত।। ধর্মতীর্থে মান করি থানেতে বসিল।
ধর্মেশ্বর লিক্স যথা তথা উপস্থিত।। ধর্মতীর্থে মান করি থানেতে বসিল।
ধর্মেশ্বর লিক্স সদা কদরে ভাবিল।। এইকপ তপস্যাতে বহুদিন যায়।
ভেজ্পপুঞ্জ হৈয়া লিক্স মধ্যে লয় পায়।। ধর্মতীর্থ মাহাস্মা যে অতি চলৎকার। ইহার বর্ণনে শক্তি আছ্যেকাহার॥ বিধি বিষ্ণু আদি দেব না পারে
বর্ণিতে। একাশীত অধ্যায় কথা হটল সমান্তেঃ

ইতি জ্রীকাশীখণ্ডে পিলিন্সিতাভীর্থ গর্গমূলি দম ত্বিজের মুক্তি মাধবীকন্যার নির্কাণ কেদারেশ্বর ধর্মোশ্বর আখ্যাতি দশমসর্গ নামে। সমাধ্যঃ।

व्यथं वीदतश्रदताशाशान।

शशांत। कार्षिक वटलम खन सूनि इटिशाधन। य गकन भन्नद्राप्तवत्वी প্রতি কন ।। ভগৰতী জিঞাসেন শুন পঞ্চানন ॥ তোমার নিকটে প্রভু করি নিবেদন।। বীরেশ্বর মাহাত্ম যে শুনি চমৎকার। কি রূপেতে হৈল প্রভূ উম্ভব ভাহার । মহাদেব বলেন শুনহ বরাননে। বীরেশ্বর প্রসঙ্গ যে অপুর্ত্ত আখানে।। মিত্রজিত নামে রাজা ছিল কাশীপুরে। ক্লঞ্চ ভক্তি সদাকাল कांडांत व्यख्टत ॥ क्रक विदन मिहे तांका जना नाहि कादन । निवानिनि क्रुक নাম আছে যে বদনে।। বাছদ্বয় বক্ষে তার ক্কাঞ্চ নামান্তিত। ক্লাঞ্চ ধ্যান হ্রক জ্ঞান রুক্ত মনোনী হ।। তাহার রাজ্যের প্রজা সব রুক্ত ভক্ত। সকলে। স্কাঙ্গে করে ক্লফ নাম যুক্ত।। একাৰশী দিনেতে সকলে উপবাস। হস্তী তাশ্ব আদি সবে নাহি ভোগে ঘান।। বালকের জন্ম যদি হরির বাদরে। হইলেহ স্তন ছম্ম নাহি দেয় ভারে।। প্রস্কার পালন রাজা করে পুজুবত। সদাকাল এইরপ নাভি অন্যমত।। অধর্মের লেশ নাহি পুরেতে তাহার। শিষ্ঠের পালন করে ছফের সংহার। ভাল্পণের সন্মান সন্তোবে দিয়া ধন। দেব তুলা এ। দ্বাণকে করেন পুজন।। মানি ব্যক্তি মান ভঙ্গ কভু নাহি করে পর উপকার তার সক্ষা অন্তরে।। তীর্থে স্লান আচরণে সদা কেশে জল। পরম পবিত্র রাজা শরীর নির্মাল।। পরম সুখেতে সদা করে রাজাভোগ। কুবের জিনিয়া ধন ভাগুরেতে যোগ।। এক দিন দেবঋষি আসিল ভথায়। वीना इटल मना मूट्य क्रवा खन भागा। मूत देश्टक नातरमदत करिया मर्भन। অগ্রসার নরপতি করিল গনন।। নারদেরে আনিয়া বসায় সিংহাসনে। করিল পুজন মধুপদ্ধ আচমনে।। দণ্ডেলার পড়ি ভূমে প্রণাম করিল। রাজা প্রতি তপোধন কহিতে লাগিল।। ওহে নৃপবর শুন আমার বচনে। कर मम भूगामील ना एक थि नश्रता। आमात अमन तांका मर्क मिन्नधारन। তব সম নাহি দেখি ত্রিভুবন স্থানে।। ক্লম্ব্ড ভক্ত অতিশয় সদা ক্লম্ব্ড ধ্যান। স্বৰ্গ মতা পাভালেতে ভোমার বাধান।। মোর ইচ্ছা হয় কিছু হিত করি ভব। পাতাল পুরীর এক র্ডান্ত যে কব।। হাট কেশ শিব লিঞ্চ পাতাল পুরিতে। দর্শন করিতে আমি গেলাম তথাতে। তথা হৈতে শিব লিঞ্জ ক-রিয়া দর্শন। আসিবার কালে যাই দানব ভুবন। কলাপ কেভুর পুক্ত দানব কল্পাল। মহাবলী হয় সে দ্বিতীয় দিক্পাল।। হস্তেতে ত্রিখুল করি সদা-কাল ফিরে। দেবতা ত্রাহ্মণে দদাকাল ছিংসা করে। স্বর্গেতে দেবতাপুরী

व्यवटरत्व शिहा । नानांत्रकु धन वटन व्यानरत्र रुद्धिश्चा ।। प्रुब्ध्वं न नार्रिक एमधि তাহার সমান। তাহাকে দেখিয়া সর ভয়ে কম্প্রমান। ব্যর্জ ভীত তার ত্ত্রিপুল দেখিয়া। সদ্য মাংদে সদা কাল থাকে মন্ত হৈয়া।। তাহার পুরেতে আমি উপস্থিত হৈলু। বিদ্যাধরী এক কন্যা কথাতে দেখিলু।। ভাহার ৰূপের কথা নাহিক ভলনা। চন্দ্র জিনি মুখ শশী কি কর বর্ণনা।। আমাহে দেখিয়া কন্যা প্রণাম করিয়া ! আপন রুক্তান্ত কতে কাতর হইয়া।। বিদ্যা ধর কন্যা আমি শুন মহাশয়। পশ্বমাদনেতে মোর পিতার আলয় 🛚 বাল্য कोष्ण यात्रि छथा कति मर्कक्षा (इनकाटन मानव स्व कतिन ध्राम स्तर করিয়া আনে আপন পুরেতে। বিবাহ করিবে মোরে ভৃতীয় দিনেতে ।। এই স্থির করিয়াছে দানব ছুর্জ্জন। বিপদেতে রক্ষা কর খুনি তদেশধন।। পুর্বকালে মহামায়া বর দেন মোকে। বিষ্ণু পরায়ণ বিভাকরিবে ভো মাকে।। মিখা। না হইতে পারে গৌরীবাকা কভু। উপায় কি করি আমি শীস্ত্র বল প্রভু । সানবের মৃত্যু এক নিয়মিত আছে। যে ত্রিশূল হস্তে সেই ধারণ করেছে। ত্রিশূল আঘাতে বিনে মৃত্যু নাহি তার। ত্রিশূল হস্তেতে ভার আছে অনিবার। ভাগে নাহি করে পুল শহরেনর কালে। নিদ্রাতে থা-কম্নে ভাহা ধরি কক্ষত্বলে । যদি হেডা বিষ্ণুভক্ত করেন গমন। ঞিপুল আ-নিতে পারি শুন তপোধন।। জন্যাকে আশ্বাস করি আসিলাম হেথা। শীস্ত করি নরপতি ভূমি চল তথা।। পাছালেছে গিয়া ভূমি নানবে বধিবে। মোর বাক্য মিখ্যা নুপ কছু না করিবে।। পাছাল গমন পথ শুনহ সহর। ভাহার সক্ষান কহি তোমার গোচর।। সমুদ্র মধ্যতে রভুর্থ মনোছর। রত্বেতে নির্মিত রথ তাহার উপর।। তাতে উপবিষ্ট এক পরম সুন্দরী। সমুদ্রেতে আসিয়া প্রভাহ ক্রীড়া করি। পুনর্জার সমুদ্রের কলে স্থা হয়। পাতাল পুরেতে যায় ভাপন ভালয়।। প্রতিদিন এই ৰূপ করে ব্যবহার। অতি শীব্ৰ ভুমি চল নিকটে তাহার।। যে কালেতে সেই কন্যা জলে মগ্ন হন। তুমিহ তাহার সঙ্গে করিবে গমন॥ তাহাতে তুমিহ ভীত কতু নাহি रत। **खररिटल পাতালেতে গমন করিবে।।** এতেক শুনিয়া রাজা মুনির বচন। অতি শীক্ষ সমুদ্রেতে করিল গমন।। সমুদ্র মধ্যেতে রবরথের উপরি বিরাজিত কন্যা দেখে পরম সুক্রেরী। রাজাকে দেখিয়া কন্যা সমুদ্রে ম-वर्জन। পৃষ্ঠদেশে নরপতি সমুদ্রে পতন। অবহেলে পাতালে গেলেন নর-পতি। উপস্থিত হৈল যথা দানবের স্থিতি।। তৎক্ষণে দানব নাহি ছিল নিকেডনে। ছেনকালে উপনীত হইত রাগনে। রাজাকে দেখিয়া কন্য

মলয়াগিদ্ধিনী। কুষ্ণ ভক্ত উপস্থিত চিত্তে হেন মানি।। কুষ্ণ নামাদ্ধিত অঙ্গ দেখিল তাহার। রুফানাম সদা জপ এই ব্যবহার।। ভাহা দেখি কন্যা অতি বিস্মৃতা হইল। তদপরে রাজা প্রতি বলিতে লাগিল।। হুজ্জন কঙ্কা-ল নাম ভার পুরী হয়। হেথা কেন মরিতে আইলা মহাশয়।। নরপতি भारतपत्र द्रव्यास करिल। मलश्रांशिक्षानी श्वीन खिंछ दर्स देवल।। छम्भदर কন্যা কহে নরপতি প্রতি। সন্ধ্যাকালে দানব আসিবে শীঘ্রগতি॥ সন্ধু-ষ্যের রক্ত মাংস করিয়া ভক্ষণ। মৃত্ত হৈয়া দানব জাসিবে নিকেতন।। স্মাসিয়া কন্ধাল দৈত্য শর্ম করিবে॥ মরণ ত্রিশূল কক্ষে চাপিয়া ধরিবে॥ শুন রাজা আমি যাহা করি নিবেদন। অস্ত্রাগারে তুমি শীপ্ত করহ গমন। এক গর্ত্ত অন্ত্রাগারে আছে গোপনেতে। লুকাইয়া নরপতি থাকহ তথাতে ভার মৃত্যু খূল আনি দিব তব স্থানে। কডু নাহি ভার মৃত্যু খূলাঘাত বিনে এত শুনি নরপতিগোপনে রহিল। সন্ধ্যাকালে দানব যেপুরীতে আইল।। বছরের আনি ছিল কন্যা স্থানে দিল। কন্যাবতী দানব যে কহিতে লাগিল। এই সব রহ আনি দেবগণে মারি। আনিয়া দিলাম সব নিকটে তোমারি। ভাণ্ডারেতে আছে দেখ বছ রত্নধন। সকল তোমার জান শুনহ বচন।। কল্য আনি দিব হৈ সহত্র দাসীগণ। অহর্নি শি ভারা ভব করিবে সেবন।। পরশ্র দিবদে বিভা করিব কোমারে। বিভা হৈলে সর্ব্ব ছুঃখ যাইবেক দ্বুরে। ইত্যাদি অনেক কথা কন্যাকে কহিল। ত্রিশূল কক্ষেতে ধরি শয়ন করিল।। অসুরের নিদ্রা হৈলঅতি ঘোরতর। হেনকালে কন্যা তথা গেলে-ন সন্তর । লানবের কক্ষে হৈতে ত্রিখুল আনিল। নুপতির নিকটেতে অতি ক্ষত গেল। এভাত হইল তবু দানব শরনে। ত্রিশূল লইয়ারাজা গেল সেই স্থানে। দেখিল দানব আছে নিদ্রাতে বিভোর। বামপদাঘাত করে তা-ছার উপর । পদাঘাতে দানবের নিদ্রা দূর যায়। সম্মুখে পুরুষ এক দেখি বারে পায়। ভাহাকে দানব কহে অভি দম্ভ করি। মরিবারে আইলে কেন ভুমি সম পূরী। কে ভুমি কোথার বাস কহ সভ্য করি। প্রাণ নিয়া পলাইয়া যাহ নিজ পুরী।। রাজা বলে তব সহ যুদ্ধ যে করিব। জয় পরা-জয় জানি তবে দে যাইব। শুনিয়া দানব অতি কুপিত হইল। রাজার ক-ক্ষেতে মুখ্টি প্রহার করিল।। রাজার জদয়ে আছে ক্লম্ড নামান্ধিত। বিশে ষতঃ অন্তরেতে ক্লম্ড বিচিঞ্চিত। দানবের মুষ্টাঘাতে কি করিতে পারে। কিঞ্ছিৎ বেদনা নাহি পাইল শরীরে॥ তদপরে নরপতি অতি ক্রোধ হন। দানবেরে কৈন এক চলেউ: ঘাতন ।। চলেটাঘাতেতে দৈতা নোহ অতি

হৈল। অবনীতে পজি দৈতা অচেতন রৈল।। তদপরে চেতন পাইল কভ-**कटा। काकि मर्भ करत देनका द्वांध देश्या महन्। मल युद्ध छे अहम दे रहे** ঘোরতর। পরাভব দানবেত হইল সত্ত্র।। ত্রিগুল আঘাতে রাজা দানবে সংহারে। ভাহাদেখি কন্যা হৈল প্রফুল অন্তরে।। রাজার অত্যেতে কন্যা হৈয়া উপস্থিত। সমাুখে দাঙায়ে রহে হইয়ালজ্ঞিত।। মৃত্সরে কৰে কথা শুন মহাশয়। ঘোরতর বিপদেতে মোর রক্ষা হয়।। হেনকালে তথা-তে নারদ মুনি গেল। উভরেতে উভরের পরিচয় দিল।। অতি ভৃষ্ট তদ-পরে হৈল ছুই জনে। বিবাহের দিন ধার্য্য কর তপোধনে।। গন্ধর্ক বিবাহ मुनि हुई करन निया। कांभीटिक शमरनत পथ (मन (नथाईया।। तिह श्राय ছুই জনে গমন করিল। অতিশীঘ্র কাশীপুরে উপন্নীত হইল। আপনপুরী-তে রাজা করিলগমন। পুরবাদী দবে কৈল মঙ্গলাচরণ।। তদন্তরে মরপতি ছর্য কলেবরে। মলমাগন্ধিনী সহ নানাভোগ করে॥ স্বামীপ্রতি ভক্তি অতি मलद्राशिक्तिने। मन्छ स्वामीटक दानी तनत जुला मानि ॥ এक निन दानी কছে রাজার গোচরে। এক নিবেদন প্রভো বলেছি ভোমারে। পুত্র ক্ষমে এই চিত্তে হয়েছে বাঞ্জিত। অপ্তিসাব্য তাহা নহে ঈশ্বর নিশ্চিত।। কিন্তু এক নিবেদন শুন মহাশয়। অভীষ্ট ভূতীয় ব্ৰভ উত্তম আছয়।; পুর্বের এই ত্রত করি কুবেরের নারী। অনেকেতে সেই ত্রত আচরণ করি।। চিত্তে হয় সেই ব্রত করি জাচরণ। তব আজা বিনে প্রভো না পারি কখন এত শুনি অতি তুই হৈল নরপতি। ব্রত্তাচরণে রাজা হইল সম্মতি।। কোন দেব পুজা ভাতে করিতে হইবে। ভাহার বিধান সব আগাকে বলি-द्य ॥ तांकातानी अहे मव कर्याशकथरक । हा मिक कथा म कथा देश्ल ममा-भट्न ।।

ভাগ মলয় গিন্ধিনীর ভূতীয়া ব্রন্ত।

পরার। কার্ত্তিকেয় বলেন জগস্তঃ মুনিবরে। রাজপত্নী যে প্রকারে ব্রভাচার করে।। বিশেষতঃ বলি শুন মুনি তপোধন। অভীষ্ট তৃতীয় ব্রত অপুর্ব্ব কথন।। কুল পুরোহিত রাজা ডাকাইয়া আনে। কহিল ব্রতের কথা তার বিদ্যমানে।। পুরোহিত বিধান যে সকলি কহিল। সেই মত নরপতি বমস্ত করিল।। মাঘ শুক্ল তৃতীয়'য় আরম্ভন হয়। রাজারাণী পূর্ব দিনে সং যম করর।। পূর্ণ কুন্ত স্থাপন করির। ত্রত দিলে। তছপরি তারপাত্র রাখিল যতনে।। আত্তব তণ্ড,ল তাত্র পাত্র উপরেতে। আচ্ছাদন করিলেন হরিতা বস্ত্রেতে।। চারি ভোলা স্বর্ণে পরিমিত ব্রহ্মা করি। ভাছার স্থাপন কৈল ভাত্রপাত্রপরি।; পুজাতে বসিল দ্বিজ হইয়া ভৎপর। কায়মন বাক্যে শুদ্ধ নির্মাণ অন্তর ।। আশনাকুরী মধুপকু বিদ্র আর । সুগন্ধি চন্দন পুষ্প নানা উপহার । যোড়পোপচারে পুঞা যেমত বিধান। সহস্র বিকাশ পদ্মে ছোম নমাধান।। দক্ষিণান্তে ভোষণ আচার্য্য দ্বিজবরে। এত দিনে রাজ त्रांभी खनभन करत्।। श्रतिमन बांकवाभी कृति প्रांकःसान । महत्स्यक खांकर्ष যে করিল আহ্বান।। নানাবিধ উপহার আনিল ভডক্ষ। ভক্তি করি করা ইল ভ্রাহ্মণ ভ্রোহ্মন।। ভ্রাহ্মণে দক্ষিণা দিয়া সন্তোধ করিল। ভোজনাব-শিষ্ট বৃতি প্রদাদ লইল।। বিধিমতে বৃত দাক্ষ করিয়া যত্নেতে। মলয়।-গ্রন্থিনী রাণী হর্ষ হৈল চিত্তে। তদপরে রাজরাণী ক্লভাঞ্জলি হয়। গৌরীকে অন্তরে ছাবি প্রার্থনা করর।। বুত সাক্ষ হৈল মাতা ভোমার প্রসাদে। মম मरनांगक वाक चारह कर शरम।। अहे वह रमह मांडा कहि निरंत्रमा। मत्र शुक्क रहा भिव विकू शताह्र ।। क्या माद्ध अर्ग द्धान कतिरवनर्भन । वाएम বর্ষের শিশু হইবে ভতক্ষণ॥ ভোমার চরণে মাভা এই নিবেদন। রুপা ফরি কর মাভা মানস পুরণ। ছেমকালে দৈববাণী অকস্মাৎ হয়। তব মনোগত পুত হইবে নিশ্চয় । রাজা রাণী ছুই জনে পরম হর্ষিতে। নিতা নিতা ক্রীড়া করে নানাবিধিমতে।। কত দিন পরে রাণী গর্ত্ত रिय अतिल ॥ काल भूर्व देश्या तांनी भूख अमितल।। महासूची तांका छत्य গণকে ডাকিয়া। শুভাশুভ দেখে বৰ গণনা করিয়া। গণনা করিয়া পরে কয়। মূলাকেতে জম্মে শিশু ইহা ভাল নয়।। রাজার বিনাশ হয় পুজ্র না ত্যজিলে। রাজা ওনে হেন কথা রাণীকে কহি-লে।। ব্রতের সাধনে পুতা হইল সত্মর। বিশেষতঃ পুতা হৈলে হয় বংশধর॥ পুজ ত্যাগ করা নহে আপন কারণে। শ্রুম হৈলে মৃত্যু হয় আছেন নিয়মে মন্ত্রীগণ বলে রাজা শান্ত্রে যাহা কয়। তদতুসারেতে কর্ম্ম করিতে যে হয়।। ৰুদ্ধ মন্ত্ৰী সবে বলে গিয়া রাণী স্থানে। মনোযোগ কর মাতা করি নিবে-দনে। রাজার অনিষ্ট হয় গণকে কহিল। স্বত্ত্রব পুজ্র ত্যাগ উচিত ছইল স্থামী পরায়ণা অতি রাজ্যাণী হয়। দেবতা অধিক করি স্থামীকে জানয়। ব্লাঙ্গার অনিষ্ট যদি পুত্র হৈতে হবে। ইহাকে অবশ্য ত্যাগ এক্ষণে করি-व ॥ शाजीभन छाकि तानी करहम रहम। भूख लहेता मकरलटक कत्रह भमन কাশীক্ষেত্রে পঞ্চ মুদ্রা পীঠ আছে মাখা। পুত্র লৈয়া শীব্রগতি চলি যাহ ভথা।। তথাতে বিকটা দেবী প্রকাশিতা আছে। পুজকে রাথিবে সেই বিকটার কাছে।। পুঞ্জরিষ্টি যে ৰূপ শুনিলে বিবরণ। দেবী নিকটেতে সব कतिरव काश्रम।। एमश्रात थाजीशन शृख्यक लहेन। विकिंग प्रवीत श्रारम উপনীত হৈল ৷৷ ব্ৰাণী বাকা সকল কহিল দেবী স্থানে : পুজকে রাখিয়া বাত্রী আইল ভতক্ষণে।। তদপরে বিকটা যে যোগিনীকে বলে। স্বর্গেভে লইয়া যাহ মাতৃগণ হলে।। শিশুর রুহান্ত সর কহিলে বিস্তার। মাতৃগণ যথাবিধি করিবে ভাহার।। এই বাক্য শুনি ভবে ঘতেক যে গিনী। মাতৃগণ निक छिटक हिन्दा कथनि । उन्हीं मार्ट् भ्दी का नियक माक्ष्य । साधिनी-রে পুত্র লইয়া উপস্থিত হন।। পুজের রন্থান্ত সব করিয়া প্রবণ। তদপরে মাজুগণ কহিল বচন।। কাশীক্ষেত্রে পুদ্ধ লইয়া চলহ ছরিছে। বোড়শ বংশর পুঞ্ছ হবে গভ মাতে ॥ বীর নাম খ্যান্ত হবে শুনহ্বচন। এই পুঞ্ শিবভক্ত হবে প্রারণ।। ভদপ্তে যোগিনীরে কাশীতে আইল। গভমাতে থোড়শ বর্ষের পুজ্র হৈল।। শিলধানে শিবজান করিয়া সম্বর। ঘোরভর फ्रांगा कृतिन दीवत्व।। सञ्चारमत अभन्न इन्ना फ्रांगादः। तत्र लक्ष्या हैका चार्ष्ट करास्त्रता शीत करह छन श्रात्का कति निर्देशन। कर शीम-शासा विश्व तरह मर्कक्षा । अहे कथा भारत अक बाम्वर्धा हहेल। शास्त्राल ভেদিয়া শিবলিঙ্গ যে উঠিল।। তদন্তরে বীর প্রতি কছেন শস্তর। এই দেখ শিবলিক অতি মনোহর।। অখ্যান হইল লিক বিরেশ্বর নাম। ইংার সাহাত্ম কহি তব বিদ্যমান ।। বিনে মুক্তা বিনে পত্রে পুজে বীরেশ্বর । অনা য়াদে তার মুক্তি হইবে সত্তর।। কলিতে মাহাম তার না বুকিবে নরে। বুঝিলে তাঁহার তথ্ব ভবসিদ্ধ তরে। আর কাই শুন বীর স্থামার বচন। बाब राजी श्रुवः रहशा कतित्व भ्रमता समहीरत अहे विरम्भ शहित्व निका। ৰীর**প্রতি মহাদেব কৈল ব**্দান । তদন্তরে বীর ক্তে শুন প্ঞানম। কা-भीत माहाञ्च প্রভা করিব অবণ । কোন ভীর্থ কোন স্থানে ভারেন প্রকাশ ক্লপাকরি ভূতনাথ কহিবে নির্যাস।। বীর বাক্য শুনি শন্ত, অতি তুই হয়। তীর্থের बृङ्ख यन नीत প্রতি কয়।। नीत्त्रत अनम कथा अश्वर्त कथन। अन-भोडि अधात्र स इहेन नम्भाभा।

ज्यथ वीत् श्रक्ति महारम् दित् कीर्थ कथ्न!

পায়ার। শুনহ অগস্ভা মুনি কছে যজানন। বীর প্রতি তীর্থ কথা কছে जिट्लाहन ।। शका बक्रमा नमी मक्रमानि कान। य मकल छीर्थ **काटर** कटंम শুন নাম।। গজা বরুণা সঙ্গন এই প্রথমতঃ। তদপর পাদোদক তীর্থ চমৎ কত । মন্দ্র হইতে যথে দেব নারায়ণ। যাহাতে করিল আসি পাদ প্রকা-ল্লন। ভদবধি সেই তীর্থ সকলের সার। বর্ণনা না হয় তার মাহাত্ম অপার সেই স্থানে খেডদ্বীপ আছেন প্রকাশ। তদপরে করারি যে তীর্থের আ-ভাষ। ভাষার দক্ষিণে আছে শংখতীর্থ সার। চক্র গদাপদা ভীর্থ ক্রমাব্ধি আর । গ্রুডের তীর্থ আছে তাহার দক্ষিণে। নারদ প্রহলাদ তীর্থ আছেন সে ভানে।। তাহার দক্ষিণে অম্বরীশ ভীর্থ হয়। আদিতা কেশব ভীর্থ ভীর্থ माजाउत ।। शकांत निकटि जीर्थ क्रमभः मिक्टर । अभी मक्रम शर्याख आ ছেন নিয়মে।। অনেক আছেন ভীর্থ ইহার মধ্যেতে। পুর্কেভে বর্ণনা হয় ভীর্থ অধ্যায়েতে। এসকল ভীর্থ মধ্যে শ্রেষ্ঠ পঞ্চতীর্থ। প্রথমতঃ অসী গঙ্গা বড়ই মাহাআ।। দ্বিতীয় দশাশ্বমেধ নাম তীর্থ আর । ততীয়েতে পাদোদক ভীর্থ সারাৎ হার ॥ চতুর্থে পঞ্চনদ পঞ্চমে মণিকর্ণি। এই পঞ ভীর্থে স্নান পুরাণেতে বর্ণি।। পঞ্চভুতি দেকের ধারণ নাহি হয়। অন্য অন্য ফলতাণতি বহুত আছর । বীর প্রতি বরদান করি **দয়াময়। কহিলেন ভীর্থ** লব যথ য়ে আছুর। বীর আপেনার মনে যথা বাঞা ছিল। বিরেশরে পুজিষা সে সব বর পাইল।। বীর বছ স্তব করে দেব ভূতনাথে। অফাঙ্গে অধাম করে পভিয়া ভূমেতে । মহাদেব অন্তর্ধান হৈল তদপরে। গমন করিল বীর আপন নগরে। মাতা পিতা প্রতি বীর সকল কহিল। শুনিরা যে রাজা রাণী আনন্দ আইল। অভি ভূষ্ট হৈল রাজা বীরকে দেখিয়া। প্রাহ্মণকে দিল ধন প্রচুর করিয়া।। তার পরে বীরের যে বিবাহ হইল। স্বরাক্যে পুর্ভেরে রাজা অভিবিক্ত কৈল। পুত্রে রাজ্য দিয়া পরে রাজা গেল বন। তার সহ রাণী তবে করিল গমন।। রাজা হৈয়া বীর তবে পালে अस्रांशन। वीत्तत भागतन जुके देशन गर्सक्रन ॥ धर्म कीर्जि नानामण करत मिटन मिटन। वीव ब्रांका वाका वाकारक स्मय जूना मारन। मीन शीन जिक्शन আনে ডাক দিয়া। সে সকলে ধন দিয়া প্রচুর করিয়া।। বছকাল পর্যন্ত যে নানাভোগ কৈল। জ্বাপন পুজকে বীর রাজ্য ভাল দিল।। বিশেশর বিশেষর বচন যে হইল সার্গ। ও ভক্তরে করে রাজা কাশীতে গমন।।

কাশী গিয়া মণিকর্ণি লানাদি করিল। ক্রান ক্রমে করি ছানে প্রমণ করিল ভদপবে বীরেশ্বর আছেন যথায়। অতি শীঘ্র করি বীর গেলেন তথায়।। নানা উবহারে হর পুজন করিয়া। প্রণান করিল বল্ল ভূমেতে পজিয়া। তদপরে বীরেশ্বর অল্পেতে বলিল। কায়মন প্রকা করি ধ্যানেতে রহিল।। এইমত বীর তথা থাকে করি ধ্যানা স্থশরীরে বীরেশ্বর হইল নির্কাণ।। বীরেশ্বর আখ্যান যে অপুর্নি কথন। প্রযাণ পাঠেতে হয় পাপ বিমোচন।। বিশেশ্বর আখ্যানেতে প্রসঙ্গ তির্বের। প্রবংগতে দূরে যায় মালিনা চিত্তের যে সকলে ভল্লি ভাবে নিতা পাঠ করে। কাশী প্রাপ্ত হয় সবে ভবসিন্ধ হরে কামেশ্বর প্রান্ধভাব স্থাগামী অধ্যায়। সীতানাথ বস্তুদাস ভাবিল ভাষায়।। বীরেশ্বর প্রসঙ্গ যে অভি পুণা কর: চোরাশি অধ্যায় সাঞ্জ হইল সম্বর ।।

অথ কামেশ্বরোপাধ্যান।

প্রার। ক'র্দ্তিক কছেন যে অগন্তা তপোধন। কামেশ্বর শিবলিঙ্গ গুন বিবরণ।। জুর্কাসা মুনি যে বছু ভীর্থ যাত্রা করি। কোন কর্মো মন ভূষ্টি না হৈল ভাহারি। তদপরে কাশীপুরে আদি মুনিবর। তপ্রদার স্থান দেখি अनुकु अनुत् । अनुत्न **आत्म ज्ञान ज्ञान अत्या**क्ति। अर्ज्**टीर्थ मित**-जिञ्ज (प्रशिक काशिक । कान स्मारक सुनिवत १९१६ मह कर्र । मित्र विक्र का পিত করিতে চিত্তে ঘটে।। কুণ্ড করি তাহার গ্রন্থ তথে।ধন। বছকালা-विवि शोश कतुरम् श्विम ।। क्यान कर्स्य महार्टमर ध्वमन मा देश्य । कृष्णिक হুইয়া মুনি ভাবিতে লাগিল।। অদা অংমি কভিশাপ করিব কাশীতে। তী-থের মাহাল মব হইবে বাজেতি ।। এইজাপ প্রকাসার কোপানল হৈল। অতি প্রজ্ঞানত অন্নি কাশীতে ব্যাপিল । কাশীবাদী সকলেতে হৈল চমৎ-কার। অগ্নির উত্তরেশ কারো রক্ষা নাহি আর।। তমো অংশ মহাঝ্যি প্র-বল প্রতাপি। মনোবাঞ্জা দিদ্ধ নহে বড়ই উত্তাপি।। বিশেশর উৎক্ষিত তুর্বাসার কোপে। কি জানি তুর্বাসা যদি কাশী পুরী শাপে।। অতি শীস্ত করি শিব যথ। মুনিবরে। লিঙ্গ হৈতে বহিভুতি নিজ মূর্ত্তি ধরে।। নন্দী আদি করিয়া যে কোটি শিবগণ। মহাবল ভারা কাশী করেন রক্ষণ।। কা-শীর শাপের কথা শুনি শিবর্গণ। শরতের মেঘ যেন করয়ে গর্জন।। ছুর্জা-

সার শাপ ভরে দেবতা ভাবিত।। শিবগণ সিংহনাদে পৃথিবী কম্পিত।। মহা গ্রালয় কাল উপস্থিত হইল। আক্ষালনে শিবগণ বলিতে লাগিল।। সমুদ্র শোষণ করি পৃথী রসাভল। স্বর্গের উপরি করি পাতাল সকল।। একে চুঠ্বাসার অগ্নি হয় প্রস্থলিত। ত্বিহীয়েতে শিবগণ করিল কম্পিত।। ছুর্দ্ধাসংকে মহাদেব কংহন সন্থর। তব তপস্যাতে ভূষ্ট আমার অন্তর।। বর লহ মহাঝবি যথা ইচ্ছা হয়। হেনকালে তুর্বাসা যে স্তব করি কয়।। তব দর্শনেতে মুক্তি হইল আমার। ইহা টিগঙে অন্যবর দান্থি কিছু জার॥ ক্লপা করি এই বর দেহত শক্ষর। মম চিন্ত ভব পদে রহে নিরস্কর ॥ আর এক নিখেদন শুন পঞ্চানন। কাশী প্রতি হৈয়াছিল মমক্রোধ মন। আমার ध्य महनाशक मव कान खुमि। मकल विकिष्ठ किथा निष्यक्ति आणि॥ मम द्यारभ कामीवामी भावेल स्व जान। यह अभवाध मात्र क्रम कीर्खिवान। শুনিয়া যে জুলনাথ কংলন বচন। ভোমার সমান ওকে নাহি ত্রিজুবন।। তোমার স্থাপিত লিম্ম অতি পুণাকর। কানেখর খ্যাত লিম্ম হইল সম্বর।। কামকুপ বলি এই যুষিবে জগতে। কুপের মাহাত্ম কহি শুন মহামতে।। এই কাম কূপে যেবা স্নান কবি পরে। ভোমার স্থাপিত লিক্স পুলে নিব-স্তরে।। সর্ক কাম সিদ্ধি তার জানিহ সম্বর। অবশেষে নির্বাণ পাবেন সেই मत ॥ अहे दाका विल इत देवल अखर्गाटन। प्रकीमात व्यागिष्कि देवल কাশী স্থানে । কামেশ্বর প্রসঙ্গ যে অতি পুরাকর । পঞ্চশী**তি অ**ধ্যায় সমা**প্ত** অকংপর। বেবা পাট করে কি**য়া করেন আবণ। সকল পালেতে মুক্ত হয়** (महेकनः।

ভাগ বিশ্বকর্মেশ্বরোপাখ্যান।

পার্বার। বিশ্বকর্মেশ্বর লিফ যেমত প্রকাশ। পার্বতী নন্দন করে অগভ্যোর পাশ। ব্রটা একাপতি পুজ বিশ্বকর্মানাম। গুরু স্থানে বেদ-পঠে গুণে ভরুপাম। কিছুকাল গত হয় বেদ পাঠ করে। গুরু দেব বলিজেক বিশ্বকর্মা ববে।। পত্রের কুঠীর দেহ করিয়া নির্মাণ। তথাতে থাকিব আমি শুন মতিমান। বর্ধাকালে তথাতে যে নাহি পড়ে জল। বিচক্ষণ করিয়া যে নির্মাবে সকল।। গুরুপত্নী বিশ্বকর্মে বলেন বচন। ভাঙ্কের কাঁচলি বস্ত্র দেহ পুরাতন। কাচলির বস্ত্র করি দেহত আমারে। তদপরেগুরুকনা। বলেন সত্বে। গ্রুইকর্ণ ফুল্ম্বর্ণ গঠন করিয়া। চিত্র বিচিত্র করিদেহত

আনিয়া। গুরুপুত্র কহে শুন আমার বচন। পাছকা যুগল দেহ করিয়া जुबन । कर्मगांनि कटलट्ड পाङ्का शर्मिता। अनातारा जात मरधा ্যার যে চলিয়া। বিশ্বক্র্যা গুনিয়া সকল মনোনীত। স্বীকার হইরা চিন্তে ছইল ভাবিত।। এ সকল বস্তু আমি কভু নাহি করি। কি প্রকারে গুরু আঞা হৈতে আমি তার ।। বিনা সাধনেতে ইহা সিদ্ধি নাহি হব। অতথ্য বনে পিয়া ভপস্যা করিব ।। বনমধ্যে বিশ্বকর্মা প্রবেশ করিল। ভার মধ্যে धक मूनि मन्यन शांकेल ।। मुनित प्रतर्भ नव करत निरंतपन । कर श्रुरित कि জ্বপেতে করিব মাধন ।। মুনি কহে বিশ্বকর্মা শুনহ বচন। কাশীপুরে গিয়া ভূমি কর্ছ সাধন । এই উপদেশ বিশ্বকর্মা যে পাইয়া। কাশীপুরে অভি শীঘ্র গেলেন চলিয়া।। বিশ্বকর্মা শিবলিক করিয়া স্থাপন। অভিশয় তপ-স্যা করেন সর্বাক্ষণ।। পুপ্প আদি দিয়া পূজা করে নিরন্তর। সম্ভূষ্ট ছইয়া শিব দেন ভাবে বর ।। জন্ধা যথা সৃষ্টিকর্ত্তা মম আঞ্চাবত। নির্মাণেতে কর্ত্ত। তুমি হবে সেই মত। ধর্ক কর্ম পারকতা তোমাতে হইবে। সকলের মনোনীত নিৰ্মাণ করিবে।। রজত কাঞ্চন মণি মুক্তাৰি প্ৰবাল। স্থিপণ आफि कति य मकल जाल।। निर्माण कतिएक यादा मानम कतिएत। स्म সকলে পারকতা অবশ্য হইবে॥ ভবিষাতি আর এক কহি ভব হানে। কাশী পুরে বিবোদাস ভোগ অবসানে। সক্ষরেতে গিয়া আমি পুনঃ কাশী আসি। সেইকালে মন্দির নির্মাবে বারাণদী ॥ তোমার নির্মিত দেই হই: বে সুন্দর। উমাসহ মম বাস হবে নিরস্তর । তংকালেতে বিশ্বকর্ম। নির্কাণ পাইবে। স্বশরীরে শিবলিক্ষে প্রবেশ করিবে। তোগার স্থাপিত লিস বেবাজনে পুজে। সর্বকর্ম ক্ষম হৈয়া জিকে যমরাজে।। খাস্তে তার মুক্তি লাভ হইবে সত্তর। বর্ডাশীতি অধ্যা সাক্ষ হৈল মুনিবর।।

अथ एकरळ ७ एक्चरत्राशी गान।

जिल्मी। खनखा करहन श्रूनः, शार्वछी नम्मन खन, कामीत गांश्य हम्यकात । खनित्त ना यात्र एकाल, खिक वाज्यत लाल, वित्मय खिनव श्रुम्य खान । खनव क्रेश्वत खानि, खानम निक्न गमापि, खनिलाम क्र्यूमं क्थन। मत्कश्वत हर्जुन्म, भिवलिक य श्रुम्म, विख्वातिक क्ष्य विवत्न।। खात এक निर्वन्म, खन श्रुम् च्लानम, मक्काल निम्म। कति हरत। भिवन्म। करत यहे, कामीश्रूने खाशि सह, लिए द्याशा करत कि श्रुम्पता।

শুহ কছে তপোধন, করি শুন নিবেদন, দক্ষ প্রজাপতির প্রসঙ্গ। শুন মুনি षुषि धनाः शरतरङ कहिव ष्रमा, श्राहरूवि हर्जुमेश लिखा। এक निम नाता-मन, माल कति श्रमामन, हेला कानि यक (प्रवच्या। अकटा मकटन हटन, মহা রক্ষ কৃতৃহলে, কৈলাদেতে গমন করয়।। হর গৌরী দৃষ্টি করি, প্রণাম করিল হরি, ত্রক্ষামাদি পবে প্রণমিল। দেবতা সকলে হেরি, উঠিলেন बिश्ववाती, बच्चा विकृ श्रास्टाल धतिल ॥ अणि नमामत छाव, वमाहेला की-ঠিবান, ইন্সুজানি দেবে আধ্যাসিয়া। সকলে সম্বোধ মনে, মহেনের সন্ধি थाटन, क्रार्थ क्रार्थ विमल श्वास्थित । भश्राद्य तटल श्राद्य, नावात्रश मनवज्रद्व ভূমি দুর্ফী করিছ পালন। তাহার কুশল নহ, গোলোকের বার্ত্ত। কহু, কি মতে আছেন দৰ্কজন।। পাবে কছে নাবায়ণ, শুন দেব পঞ্চানন, কুশল যে তব ক্লুপাৰ্য। ভলপতে ত্ৰিলোচনে, কহিলেনা প্ৰয়াসনে, কহ ভুমি আপন মলল।। ভূমি আছ সৃষ্টিকর্তা, বিশেষতঃ বেদবেতা, ভাচে বিশ্ব আছে উপাসত। শুনিয়া চতুরানন, কর্যে'ড় করি কন, বিম্ন নাহি আছে क्षर्छे हिन्छ । कामा कामा रभनगरन, काक्षामिन खिरल्डिट्स, मलदमरव मरन्त्राच করেব। নানাবিধি মিষ্ট ভাবে, কথোপকথনে শেষে, বিফু জাদি বিদায় হলেন। পথ্যপ্রে দক্ষপতি, অভিনানী হৈয়া অভি, মনোমধ্যে বিচার ক্ষরর। জামাভা যে মহেশ্বরে, কিছু ন। জিলোসা করে, কের মধ্যে অপমাম হয়।। আমি তার নহি অনা, খাওর গুরুতে গণা, খামাকে সম্বাধ নাতি করে কৈবা দিব দোৰ ভারে, না ব্ঝিলা আপেনারে, কন্যা দান করেছি কুবরে।। বাস যার শ্বশ্রানেতে, চিতাভঙ্গ <mark>শরীরেতে, রূবে যার হর আরোহণ।</mark> ফণী ভূষ: इष्ट्रियाल, ভিক্ষা মাথে সদাকাল, नाना ऋटन कटतन खमन॥ **সহজে** পাগল শিবে, মোর মান কি জানিকে, দেব মধ্যে কেবা গণ্য করে। যথো-চিত ফল দিব, তবে ছুঃথ নিরারিব, ভাবি দক্ষ চলে নিজ ঘরে।। ভাবে দক্ষ প্রজাপতি, দেখিবে কি করি গতি, স্থির যে করিল মনে মন। যঞ এক সার্ভিব, শিবে মাহি নিমন্তিব, অপ্যান পাবে ত্রিলোচন।। দক্ষ্পতি ভূষ্ট মনে, বিশ্বকর্ষে ডাকি আনে, যঞ্জ স্থান আরম্ভ করিল। স্থানের এত্তন হয়, মরকত মণিময়, নানারত্নে নির্মিত হইল।। রত্নেতে নির্মিত ঘর, ধ্রেলা ভাতে থরেথর, নানাবিধ প্রতাকা উড়িছে। নীলখেত হক্তবর্ণ ভাহাতে জড়িত স্বৰ্ণ, সৰ্বদিগ আন্দোলিত হৈয়াছে।। তদপয়ে দক্ষপতি, যঞ্জ আর দ্বিল অভি, নারায়ণে অত্যে আনাইল। একা আদি যত দেবে, মুনি থাই-श्व महत्व, योष्कामि निमञ्जव देखन ॥ वर्श-मर्जा श्रीकाह्यहरू, निमञ्जित इर्य

हिएक, भिव विमा जकरन कहिन। (वंबक) मकरन वाब, याकरक वर्व शांबी চমৎকৃত য**ভ্রতার জিল।। যতেক দক্ষের কন্যা, ব্রপে গুণে অভি ধন্যা,** मक्क शकि नामदत आनाता। कामाणा नकटल आनि, मिल नदत शाबिराधी, মণি মুক্তা রত্নাদি যোগায় । দক্ষের জামাত্রগণ, সকলেতে হর্ষ মন, ভার মধ্যে চক্রের বাছলা। রূপের গৌরব বড়, মান্যমান অতি দৃঢ়, উপমাতে (कर नट् जुला।। नर्कानव जाभमन, गुनि श्विम नर्ककन, हर्जुमि (श एप-ধ্বনি ভাষ। যজ স্থানে নির্বাপণ, যার হয় যে আসন, বদিলেন আসিয়া ख्याद्र ।। क्वितन क्रेमानटकारण, मूना आ रह स्म ह खारन, सिरवत आमन তथा रुग्न। भरतरा पिंधि श्रायि मक्त्यरा रहा चानि, नर्क्ष्य न नर्मन कत्स एमरथ गर्क (मवशन, कतिशाह्य निमञ्जन, वित्न मित अ:शि मकरण ए । कू-পিত দ্বিচি মুনি, দক্ষ প্রতি কহে বাণী, বড় যজ্ঞ কর মহামতে !৷ দেখি-हार्ছि युक्क दुछ, दुश्न नाहि (एथि कडू, नाहि इस ना इहेंदि छात । युक्क खाने শোভা অতি, কি কহিব মহামতি, দেখিয়া হৈয়াছে চমৎকার।। যজেশ্বর नातात्रण, त्य यद्ञादक व्याणमन, उत जात्या नित्त हेहा अत्या। यक्त कथा কিবা কব, আমেদিত সর্বাদেব, প্রবর্ত আছেন সর্ব কর্মে। বেদধানি চত্ছিলে, করিতেছে ঋষিভাগে, ত্রদ্ধা করে বেদ অধ্যয়ন্। তাগ্লি প্রস্থানিত হয়, মৃত ঢালে অতিশয়, হস্তীপুণ্ড করিয়া প্রসাণ। মন্ত হৈয়া দেবগণ, সভত আনন্দ মন, আপন বিভাগ সবে লয় ৷ কিন্তু এক চমৎকার শুন দক্ষ কৃহি সার, ঈশ্বর বিহীন যক্ত হয়।। যে যক্তেতে ত্রিসোচন, নাহি करत जाशमन, यक कल नाहि इस शरत । जुलि मक अवाशिक, मर्स कर्स्य শুদ্ধ মতি, হেন বৃদ্ধি কে দিল তোমারে।। এই বাক্য দক্ষ শুনি, কোপচিজ্ঞ কহে বাণী, বুদ্ধিলোপ হইল ভোমার। চিতাতক্ষ মাথে অঙ্গে, ভূত প্রেড সদা সকে, শিব হয় পাগলের সার।। ভার জাসা এ যভেজে, যোগ্য নহে কোনমতে, ইহাতে ভোমার কিবা কতি। ঋষি শিবনিন্দা শুনি, গমৰ করেন মুনি, ক্ষণেক না রচ্ছে মহামতি।। ফুর্কাস। কুপিত মন, চলিবেন ভতক্ষণ, সজে করি যত শিষাগণ। শিবভক্ত যত ছিল, সকলেতে চলিসা পেল,ত্রন্ধা গেলত্রাপন জুবন। যজভঙ্গ উপস্থিত, দেখিদক্ষ বিপরীত,মান ৰিক অমুভ্ৰ করে। ব্ৰ.ক্ষা যতেক ছিল,গমনে উদ্যন্ত হৈল, ধনে ভূষিলেক। **অনেকেরে।। বছু মুনি গতি কৈল, কেহু কেহু তথা রৈল, দ্বিল** রহে ধনের লোভেতে। যজেতে নারদ ছিল, কৈলাশেতে গতি কৈল, কুফগুণ নীণাশ্ব গাইতে।। কাশীখণ্ডামৃত সার, পান করে অনিবার, এই আমি করি

निर्वतन। अवर्ष क्ष्मूय इरत, कामी श्रीख इस शरत, म्रामी कि व्यक्ता नमाश्रम।

अथ नहीत मक्तान्य गमन।

खिशनी। भश्रद्यत्व देकनाटमटङ, नही नटक वर्ष विदन्त शामाकी छ। কবেন কুজুগলে। ডগা নিয়া ভলোগন, প্রণনিয়া পঞ্চনন, কুডাঞ্জলি। করি মুনি বলে। নারদ দেখিয়া হব- করিলেন সমাদার, বনিবাবে দিলেন আসন कुमटलं चाहर मृति, सूबकल बार्छ। श्रमि, कर मृति वमन कांत्र ॥ कटर भूनि फट्यांसन, खन क्षर्छ। निरुप्तन, युषा कायि क्रूफ खन गारन । नात्र ह বলেন প্রভু, হেন নাচি শু'ন হড়ু, দক্ষজ হয় তব বিনে।। বভূ যঞ্জ আর-खिल, मन त्वन निमाञ्चित, एक छाल लग्न धर्य हिछ। एक कना। यह हिल, দক্ষপতি, যজে নিল, দেখিলাম সবে আনন্দিত । চন্দ্রানি জানাত। দেখি, দক্ষপতি অতি সুখী, দিল গতে মানা আভরণ। সর্বদেব পুজা করে, নানা-বিধ উপহারে, কত তাব কহিব কথন।। আমি গিয়াছিত্র তথা পাইলাম मन व था, जित्रनिष्मा कारनक कतिल। जित्र निष्मा ख्रमा श्रुनि, विश्रीक চিত্তে গুলি, স্বস্থানেতে স্করে চলিল।। চুর্বাসা দ্বিটি মুনি, শিবভক্ত শিরোমণি, আর যত চিল মুনিবর। যজ স্থান ত্যাগ করি, গেল কেহ নিজ-পুরী, জরু যজ হয় নিরস্তর ! যজ কথা শুনি সতী, চইলেন হর্ষ।তি, পিতৃ ষ্টা চমৎক্র হয় : কিন্তু মনে অভিমান, না করিল নিম্না, ননে অভি क्यांव खेलला। छाहा कति मन्त्रना, खित कतित्वन मन, लिहा भात एक প্রকাপতি: মঞ্জের যে আরোজনে, পিতা বিশ্ববিল মনে, একারণে হইল জনীতি।। হর্ষ মন হৈয়া সভী, কন কথা শিব প্রতি, পিতা স্থানে করহ বিদাব। কি রূপেতে যজ্ঞ করে, দেখিব পিভার ঘরে, বিলম্বের দাহিক जमन्न । मित कर्ड वहानरन, ना कहिल निमन्नर्श, छथा शिरल भान कि থাকিবে। তথা যাত্রা অনুচিত, ঘটিবেক বিপরীত, সতী বলে অব্দ্যা ষাইবে।। পর্বত শিথববাদী, নাহি মন প্রতিবাদী গীমন্তে সিন্তুর দিতে करहा निष शृंदर निवस्तव, याका नाहि कांत्र घव, वााख वृष प्रविध नना ইহ।। সভী অভি ক্রুপ মন, দেখি দেব ত্রিলোচন, অন্তরেতে ভাবিতে ्षित ॥ अमा मिन <mark>जान नरह, भूर्समित्र भनि ३८२, नऋखिर कार्का पाकि</mark>

इत । मक्षेप्रभ योजगत्र, नवभी ভिधिटक इत्र, भूटर्स लीन आल्वितनश्यक्र क যদি ত্মি যাত্রা কর, পুতঃ না আসিবে ঘর, অতথব যাত্রা মত নর। সভী কলে শুন ভব, পিছার গৃহেতে যাব, ইথে কিবা ভালমন্দ হয়।। ভালমন্দ ফলোদর, সকল কণালে হয়, অনুমতি কর পশুপতি। আমার বচন শুন, করি এই নিবেদন, পিতৃষক্ষে যাব শীত্রগতি ।। বুকি শিব সতী রী**ত**় চিল্তিলেন বিপরীত, সভী ভাগে হইবে কিশ্চয়। হর রহে মৌনভাবে, সভী প্রণমিয়া তবে, দক্ষগৃহে গমন কংয়।। এই স্থানে মত। তবে, বিভ্যান করি। हरत, मनगराविषा। इन मछी। कामीथश्वापुष्ठ अहे, जाहात विश्वात कहे, পিতা যজে গেল ভগবতী।। যক্ষয় নে দক্ষপতি, তথাতে গেলেন স্তী, প্রণমিল পিতার চরণে। শিবস্থান দেখি পূনা, নাহি হয় শিব মানা, বিপরীত ভাবিলেন মনে।। ক্রোধেতে কম্পিত হয়, প্রস্থলিত ভারিচর, স্থে বিয়া পিতাকে বলিল। শুন পিতা নিবেদন, একি দেখি ছ কারণ বুঝি তব মতি খুন্য হৈল।। শিবের পুজন বিনে, যজ্ঞ কব অকারণে, বিশে-ষতঃ নতে নিমন্ত্রণ। সম্পদে হউলে মন্ত, বিস্মারিলে ধর্মা ছজু, ভোমাকে বিধাতা বিভয়ন।। সভী দেখি দক্ষ বলে, দাখাইরা ফলস্থলে, বড় ছঃখ পাইরাছ তুমি। বিধাতার মনে যাহা, অবশা হইবে তাহা, বল সভী কি করিব আমি॥ দকল কপালে করে, ভিক্সুকের ছিলে ঘরে, ভোমার धुः त्थे छ दुःथी मन। विवाह मिय्राहि घात, शांशन बलाय छ। त, कशां-लाट य हिलं लिथन ॥ कादताइश इट्याशदि, शिक्रा य एमूत पति, ভক্ষ যার ধৃস্কুরার কল। সমিদাতে অভিলাষ, ভুজক্ষ উত্তরী বাস, ফণি ছার মালার কুণ্ডল।। গলেতে হাড়ের সাল, পরিধান ব্যা**ন্তছাল, চি**ভাতস্ম মাধে সদা অঙ্গে। শাশানে যাহার খ্লে, কেবা করে ভার মান, ভূত প্রেত সদা আছে সঙ্গে। শুনহ আখার বাণী, যদি যতে শিব আনি, যজ্ঞনাশ অবশ্য হইব। দেখিরা শিবের রীভ, সব দেব হবে ভীভ, ভারে यटक जानि कि कविव।। नहीं वटल अन शिहा, निव नक कनमाहा, ठाँत निका ना इत छेठिछ। किছू मट्ड भिव विदन, यक इत्र कान फिरन, এই উক্ত বেদের বিহিত।। ত্রন্ধা বিষ্ণু যত দেব, সকলের আদি শিব, ভাঁঙ্গ निष्मा कता नदर जाता। श्वनि एक अबाशिक, खित नारि इत मिछ, जाध टेश्ल (यम श्रृंबेक्शंल ।। भ्वरणात मिर्मिशात, प्रकामाहि किंदू मार्टम, मिवनिका व्यक्षिकं कविता। मठी श्रमि निवित्तित्वा, कृत्य त्यम त्यन वित्या, मदनामारधाः চিস্তিতে লাগিল।। শিবনিন্দা যেবা করে, অসশা শাসন ভারে, আর্মি

ডাকে হইনু বজিল্ল। পাতক যে অভিশয়, শক্ষট উভদ্ন হয়। প্রাণতাগ এই প্রারশ্চিত্র।। শিবনিন্দা করে পিতা, সেহ হন অপ্সন্ধতা, ভাকে আমি ফি করিতে পারি। পিতা হৈতে যে শরীর, রাখা নহে এই স্থিক পতিনিদ্দা न। श्वीनएर नाती । श्वित कतिरलम भट्टम, विश्वि एक्ट जिटलावरन, व भतीत क्ष ना ताथिक। यक्क प्राप्त दिन मुठी, मनाध्यत निवधिक, असद कार्यन ममानित । भिरुक्त काश्चिमानि, नकीटक निटमन ए। नि. निक मह नमानि করিল। কাছতি করিল অঙ্গ, নাহি হয় জাভল, মহামায়। শ্রীর তাজিল।। कांत तक। माहि खात, मर्द करत हाहाकात, मर्कक्षम इडेल कल्पिक। रम-বিয়া দেবতা গণ, ভয়েতে কম্পিত হন, অকশাৎ একি উপস্থিত।। মঞ্চল शाध्या मात्र, अमञ्जन कड इस, माहि इत छाडांत वर्गम। विना त्यद्य वक्काचाक, जना दश जेन्दाशाङ, अक्याद तुख एए वर्षन् ॥ एक्रिन वृधिनी উড়ে, যঞ্জানে আনি পড়ে, শিবাগণ করে মহারব। মহাবাত ঘোরতর, ৰহিতেচে নিরস্তর, অতি প্রয়ক্ষল হটে সৰ ৷ প্রলয়ের ফাল যেন, উপস্থিত हेरल (दन, मर्क्टमव अमान छाविन। दम्बिया नात्रम मृति, हिट्ड विश्वीक भागि, कार्ड मीख टेकनाटम हिनन।। अस्ट बनी कि खाराहि, मधारा इहेन धार, अनक रा बढि मत्तारत । एकस्क देश्य उक्र, गठी छाटक निक कक्र, खर्टन्ट्य खन्ड मध्द !!

व्यथ पक्षमञ्ज ध्वःम।

ত্রিপদী। কৈলাদে নারদ আসি, যদির নিকটে বসি, নতী বার্ত্তা
ক্রমে ক্রমে কর। শুনি নদ্দী রিবরণ, অভিশর চুঃগ্রমন, কাতরেতে রোদন
করর। কান্দে নদ্দী জুমে পড়ি, জননী গেলেন ছাড়ি, নানামত করি
বিলাপন। ক্রণেক হয় মুডিছত, একি হৈল বিপরীত, শোকসিলু উথলে
করন। শিব দেখি নারদেরে, কুশল জিজাসা করে, দ্বনি বলে করি নির্দেশন। ভব মারা পঞ্চানন, শ্রীরাদি অকারণ, কার্যার অনেক ভ্রমণ।।
শ্রীর তাজিলে শোক, নাহি করে সাধুলোক, এই জ্ঞান সর্ব জ্ঞেষ্ঠ হয়।
নকল উশ্বর ডুমি, আদি অস্ত অন্তর্যাসি, সকল জানহ দরাময়।। দক্ষয়জে
লেক্সে স্বতী, ভোমা নিদ্দে দক্ষপতি, শুনি নিদ্দা ভাজিলেন প্রাণ। যোগ
করি ছালি তথা। প্রস্থালিত হয় তথা। ভাতে অ্লুক করিল হুহন য় এই রাক্র
লিব শুনি, কি ক্রম্ লাব্রদ মুনি, প্রাণ ছালি করিলেন মতী। নার্ম্ব বিঃশব্দ

হয়, ভয়ে বাক্য নাহি কয়, কাত্র হইল শিব অতি।। ক্রোধে কিছু নাহি বলে, চক্ষু রক্তবর্ণ দলে, ক্রোধানল প্রদ্ধলিত হৈল। তাতে ক্ষমে এক রক্ত তার নাম বীরভত্ত, লিবের সমাথে দাখাইল।। অঙ্গ তার বিপরীত, पिथि गरव हमकिन्छ, जिप्तम पिक्किन करत धरत। **कारतः, कल्लामान इम्र एरतः, निवश्रकि निरंतमन करत्।।. कहं त्यस्** পঞ্চাননে, কি করিব এইক্ষণে, করি আমি আঞাকর মোরে ! তব আঞা यनि शारे, ममूज शर्धु त्व थारे, कर चर्त जानि मर्छा भूत ॥ एख स्वा जानि ধরি, কিমা যে পাতাল পুরী, উলটিয়া পৃথী করি তল। কিমা যে সুমের, ধরি, হস্তে তাহা চূর্ণ করি, যে কর্ম উচিত ছয় বল।। শিব কচে দক্ষারে, गर्तरप्त ভাগে, आमा ছाড़ा वहेमारह श्रुवा। नाहि हिश्म प्तवजात, कि पांच ভारात करत, अशत्राध करत मक्त्ताका ।। **एत करए एक अञ** निमित्य कतर ७, हैरथं यनि रकर युक्त करत । जसूहिल कल निरंद, हैरथ ना अनाशी হবে, সমুচিত করিবে তাহারে॥ বীরভদ্র বলে বার্ত্তা, আপনে যে সর্ববর্ত্তা, তোমার কুপাতে নব হয়। থীরভক্ত তার পরে, প্রদক্ষিণ করে হরে, বারে বারে প্রণাম করয়।। চলিলেন বীরভক্ত, কোপে যেন মহারুক্ত, দক্ষ যজে कतिल भगन। চলে वीत कति एकः, शमज्यत जूमिकण्यः, वासूकित रहेन কম্পন।। আপনার অঙ্গলভৈ, সৈনা হৈল শত শত, অত্যে তারা করিছ গমন। মহাঘোরতর রবে, প্রমাদ গণিল সবে, আনেতে কম্পিত দেবলুণ s नमी एकी एक गटक, घटका गव हत्वा तटक, उथाय इहेन छेशन्दिछ। यथा নানা উপহারে, দেবগণে যজ করে, অগ্নিমধ্যে দিতেছে আছতি॥ ছেন-करल मिवशन, ७थ। फिलम तमन, (भिश मव कन्निष्ठ क्रम्स । वीत्रक्रम ना যাইতে, যজ ভঙ্গ করে ভূতে, ছিন্ন ভিন্ন সকল করেয়।। নানামূর্জি শিবগণ, কেহ হয় বড়ানন, সপ্তমুখ দশমুখ আর। ছুই তিন একপ্দ, সদাই অপ্রিয়-ষদ, পঞ্চস্ত দশ হস্ত কার।। বিক্ট দশন তার, ক্লফবর্ণ দীঘ্রকার, भीय किं। मखक उभारत । तमि गर्वातिश्वात भारत भूत्रवामी सनः, किल्लिक হইল সবে ডরে।। যজ স্থানে ছিল করী, বিপরীত মূর্ত্তিধরি, তাহার শুণ্ডেতে কেহ ধরে। ওপ্তেধরি দিল পাক, যথা কুঞ্জার চাক, যুরাইয়া ফেলে পুনাপরে।। দক্ষের রক্ষক ধারা, ত্রানিত হইল তারা, চিত্রমূর্ত্তি হৈয়া যেন थाटक। यह भनाहें साम यात्र, फर्कानिया भटत छात्र, भटन भति स्मन्न चन পাকে। पित सुनियायि शन, पंतिथ इछतून्ति इन, यस छाति প्रालाहिस। यास

मीय अछि। कांत्र थटत, तृरंक वक्ष कींन माटत, मति मति भंक त्य कृत्य।। अधि दक्ष मुनिशद्य, किंदू भाव कति मत्न, आंत्रिक्षिण मत्कत पूर्यता। त्मारव दनिश्व विश्वतीक, देशन नदक वमिकक, शालाई हा यात्र निक शादन ॥ প্রকর্ম জটার ভার, এলাইয়া পড়ে কার, আরো তাহে অভিশন্ন দাড়ি। পাছি পানে নরক্ষীতে, কণ্টক লাগিল তাতে, প্রাণগণে টানাটানি পাছি। দৌবি দক্ষ প্রজাপতি, ত্রাসেতে কল্পিত জতি, লুকাইয়া রহে একপাশে यक हिल (परभार), विभर्तीक कार्ति मत्न, त्कर तकर भलाहेन जारन।! ধরির। যে ভুতগণ, কারে করে বিভূষন, চাপভেতে কার দন্ত ভাঙ্গে। শুভি নাশা ভালে কার, সবে করে হাছাকার, ভূতে নৃত্য করে মহারকে।। श्रुवेवात्री कानकरम, कूंछ नव काथमरन, शरम ध्रति श्रुनामार्ट्स करन । কার হস্ত ভঙ্গ করে, কারে পদাধাত করে, কার চক্ষু নথ দিয়া খোলে।। বীরভার ভদপরে, ষঞ্জন্বলে আসি ধরে, সুর্য্য দন্ত ভাঙ্গিলেক বীর। অগ্রি জিলা ছিন্তি কেলে,খানিগণ ধরি গলে, যজ যুত করেন বাছির।। মার মার वर्ष्ण महत्र, किटम खाण तका शहत, मिटन मिटन व्हार महत्र गांत्र। यत यत वरक शर्म, शिष्ट शिष्ट धावभारम, यत्न श्राम त्रक महाभन्न ॥ वीत्रज्ख অভিরক্ষ, মঞ্জাম দেখি ভক্ষ, অন্তঃপুরে প্রবেশ করয়। হেনকালে নারামণ আসি অগ্রসার হন, বিশ্বজ্ঞর মূর্ত্তি বিপজ্জার।। বীরভদ্র দেখি রুঞ্চ, চিত্তেতে হইল রুফী, ঘোরতর যুদ্ধ যে করিল। পরাত্ত হৈয়া হরি, গেলেন বৈকুণ্ঠ-श्रुती, वीतज्ञ पक्करक रेमिश्रेल । श्रिव निका करत्रिल, पक्क मुख रहम रेकल, বীরভান্ত অতি জেলাধ সন। জন্মা দেখে চমৎকার, করে রক্ষা নাহি আর, কৈলালেতে করিল গমন । প্রণাম করিরা হরে, সব নিবেদন করে, দক্ষ-যক ভক্ত বিবর্ণ। মহাবীর বীরভদ্র, কোপে অলে মহারুত্ত, দেখি হয় मंदींत कम्पान । वीतस्य स्वरहरन, मरकरत धरिया पूरन, ररस देवन মক্তক ছেমন। আর আর যত গণ, দেবখাৰি বিভয়ন, কতবা করিব নিবেদন সিংহ প্রায় হস্তী ধরি, গণ্ড শুণ্ড নম্ভ করি, সেইমত অনেক সংহার। বীরভন্ত অভি কোপ, বুঝি করে সৃষ্টি লোপ, দেব রক্ষা কর মহেশ্বর !! দক্ষপতি যে করিল, যথোচিত দণ্ড হৈল, অপেকা ভাষার কিছু নাই। ভূমি কর্ম ভূমি কন্তা, ভূমি কর্মকল বেন্ডা, তব ভিন্ন নহেভ গোসাঞি ॥ कर्तन कातन जुमि, विटम्स कि केव आमि, शृक्षित्माश इत्र तका करता निय আশুভোষ হন, ক্রোধ করি সম্বরণ, ত্রনার সঙ্গেতে গেল হর।। রুষপরী আরোহণ, করি প্রস্থ পঞ্চানন, উপনীত দক্ষের পুরেতে। বীরভদ্র দেখি

হর, সাক্ষাতে হৈল সম্বর, প্রণতি করিল করণেতে।। বীরভতে প্রপাণি, ভুষ্ট হৈয়া বলে বাণী, সৈন্যগণ কর নিবারণ। অবশেষ নাহি আর, উচিত্ত হৈয়াছে তার, ইথে ভূষ্ট হৈল ময় মন।। ভদত্তরে ্সভীমাতা, অভিশয় यनवाथा, बारु: भुत्त कति हा कानाना श्विमा बाहिन हर, गमन देवन मध्य, यथा आदि एमत जित्लाहम।। चल्ला एमचि मदश्चतः अञ्चिमत लाम्बाकतः অধোমুখে রছে পূলপাণি।। প্রস্তি বলেন শিব, স্থামি স্তব কি করিব, मात्रीकां कि कू नाहि कानि ॥ विश्व शिक्ष श्राप्ति करि, एमि नव जिश्रवादी, ভোমার মহিমা কেবা জানে। অহস্কার বুদ্ধি মন, ভূমি সব তিলোচন, मम यागी तकाकत आदम ॥ यागी उस निका देवन, यत्य हिन्छ कल देवन, রক্ষা এবে কর্ছ লপ্তর। শুনিয়া প্রস্থৃতি স্তব, সব ক্ষমাদিল ভব, দক্ষ দেহ আদিল সম্বর।। দেখি ভাকে মহাক্সতে, আজা করে বীরভটে, ছাগমুগ্র করছ অর্পণ। ইঙ্গিতে বুঝিয়া কথা, ছাগমুগু আনে তথা, সক্ষণে করিন (साज्ञ । প্রাণদান পাইল দক্ত, তদপরে বিরপাক্ষ, ধীরভত্তে কংখন বচন ৰক্ষপুরী ছিল যথা, ভুমি করি দেহ তথা, ইথে নাহি কর জনামন । শঙ্ক-রের আক্রামাত্র, দকল যে বীরভন্ত, আক্রা অনুসারে করে দব। দক্ষ পাদ্ধ প্রাণদান, মনে ভাবি অপমান, শিবে করে বছবিধ তান ॥ ভূমি অগতের পতি, তোমা বিনে নাহি গতি, ভূমি প্রভো সকল কারণ। যাহ। বলাইলে ভূমি, তাহাই বলিমু আমি, অপরাধ করহ মোচন।। দক্ষপতি তব শুনি, ব্ৰহ্মাকে কহেন বাণী, ৰুশৌপুৱে যাইতে যে বল। শিব আজা ব্ৰহ্মা শুনি, मक्राक करहन वानी,कामीएक याहिएक लाखा देशल ।। छथा। शतहरत हुन्त, वह যে শিবের উক্ত, অনায়াসে পাইবে নির্বাণ। দক্ষপতি একারাকা, চিত্তেডে করিয়া ঐক্য, কাশী পুরে করিল প্রস্থান ।। এখা শিব সভী বিনে, চিন্তিতেন **এই মনে, शृश्य मनामी ভাষ্যা বিদে। এই ভাবিলেন হর, যোগ ক**শি অভঃপর, তবে হবে মান্য পুরণে।। হইল আকাশবাণী, হিমালর নন্দিনী, ग्रेडीरनवी इंहेर्स्ट शक्तिहो। এই बांका श्रीन छर्ति, जशमा कर्यम जरह, পর্বত গুহার মধ্যে স্থিতি।। দক্ষপতি বিবরণ, যেবা গুনি শুদ্ধমন, স্কা পাপে হবে সে মোচন। সুধাহৈতে আসাদন, শুন সৰে অনুক্ষণ, উনন্দৈ क्या नमानन।।

অথ মেনকার গরে সভীর কল।

প্রার। অগস্তা কহেন শুন পার্ক্তী-নন্দর। দক্ষপতি কি করিল কহ বিবরণ।। কার্ত্তিক কছেন কুন্তজ যে ঋষি। দক্ষপতি করিল তপালা কাশী আসি।। শিবলিক স্থাপন করিয়া মহামতি। অচল চিত্তেতে আরাধিল পশুপতি।। এই রূপে বহুকাল গত হৈয়া গেল। তথাপিহ শস্তুনাথে দরা मा इहेल। (हथा एव समका गढ़ि एक जगवरी। शर्वरकत क्रमा इस्त জিমিলেন সভী। কন্যানাম পার্কভী রাখিল হিমালয়। দিনে দিনে যোগ-সায়া তেজো রুদ্ধি হয়।। ভাঁহার কপের কথা কে করে কর্ণন। অভসী পুপের জাভা হয় প্রকাশন।। মুখপ্রেণী কিবা শোভা অভি সুফোমল। কোটি চন্দ্র জিনি আভা করে ঝলমল।। পূর্কভাগে পড়ে ক্লফবর্ণ কেশজান নবমেৰে হয় যেন বিত্তাৎ উজ্জল।। ভাতে হিমালয় রাণী খানৰ হর্ষেতে। সিঁথিতে দিয়াছে হার অনেক রত্রেতে।। কপালে অলকা শোভা কুসুয ভাবন। চন্দনের বিন্দু তাতে অতি সুশোভন।। জবুগ ভঙ্গিমা রূপ না यात्र कथरन। ज्ञमदात्र (अनी दा जाकर्ग পরিমাণে।। পদ্মের মৃণাল जिनि হঞ্জের বলনি। অঞ্চশোভা নানামত কি কব কাহিনী।। পাদপত্ম শোভা সীমা নাহিক জগতে। পদেরক সুর্ব্য যেন প্রভাত কালেতে।। ততুপরি नव्हान नवत्व ध्यकारम्। जरमाखन जूख देश्या नथ मारव जारम्। जारक অপ্রপ পাসি অত্নীর বর্ণ। ত্রিগুণ মিলিত শক্তি সকলের মান্য।। প্র-ভাতে উটিল নিতা মেনকা যে রাণী। শীয়থেতে দেয় ক্ষীর সর যে নবনী সাহাইল গোকুলেতে ধশোদা ব্যক্ত। প্রত্যুহ মেনকা রাণী সাজান ভেনক। কোনদিন চূড়া বান্ধি ধড়া যে পরায়। গলাতে গুঞ্জের মালা অভি শোভা পার ।। রড়েব ভূপুর স্কুই চরণেতে দেয়। সুসপুর শব্দে শব কর্ন বে মুড়ায়।। বিবাহ যোগা পর্কতী দেখি হিমালয়। বিবাহ কাহাকে দিব खादिन क्षत्र !!

পার্বভীর বিবাহ।

পরার। অনামত বিবাহেকে নারদ গমন। তাহার বিশেষ কহি শুন স্থাজন। কত দিন পরেতে নারদ তপোধন। হিমালয় পর্বতেতে করিল গমন। গিরীরাজ পাতালঘ দিয়া বস্থিল। স্থাব স্তুতি করি অতি সমাদর देक्न।। कनाहि दुर्खास नव कटह सुनिवदत । अशिक्ष्ण महामाहा जानिनः অন্তরে।। ভত্তাপি নারদ মুনি করিয়া ছেলন। আন দেখি ভব কন্যা হ্রেরিব দর্শন।। অন্তর্গানী ভগবতী জানিয়া অন্তরে। প্রমন করিল অত্যে পিভার সত্বরে।। দেখিরা নারদ মুনি সভ্যোষ হইল। মানসেতে মুনিবর প্রণাম করিল। মানসিক স্তব বছ করে ছপোধন। অস্তা মোর সিদ্ধি ংইল যো-গের সাধন।। ভুমি ত্রিজগৎ মাতা শুন গো জননী। ত্রিঞা কপিণী ভুমি ত্রিশুণ ধারিণী।। বেদ অগোচর মাতা তোমার মহিমা। বিধি বিশু শিব দিতে নাহি পারে দীমা॥ এইমতে বছ স্তব করে তপোধন। কন্যার বিবাহ কথা হিমালয় কন। তদপরে নারদ কহেন গিরীরাকে। একলোক যাই আমি আসিব অব্যাকে। যোগ্যবর স্থির আমি করিয়াহি মনে। কন্যা উপযক্ত বর হবে ত্রিলোচনে।। গুনিরা সম্ভুষ্ট অভি হিমালর হৈল।। তথা হৈছে তপোধন ব্রহ্মলোকে গেল।। ব্রহ্মার নিকটে সব করেনিকেরন শুনিয়া যে চতুর্মার্থ হৈল ক্ষীমন ৷ দেবগণ দহ ব্রন্ধা বৈকুপ্তেতে গেল। বিবাহের বার্ত্ত। সব নারারণে কৈল ॥ মহা যোগে মহাদেব আছেন তৎপ্র छेहिछ एर इन्न श्राट्या कर्न भनाधन है जाना कान माधा नरह स्थान उक करता কিমতে বিবাহ হবে দেব মহেশরে॥ ভদপরে নারাহণ প্রথম করিয়া। ্থাগ ভঙ্গ করে কামদেব পাঠাইয়া। ভদত্তরে সর্বদেব সহ লক্ষ্মীপতি। হিমালয়ে শিব সহ গেল শীঘ্রগতি। শুভক্ষণ দিন দেখি দিল রহস্পতি। ক্ষীচিত্ত হইলেন পর্বতের পতি।। বিবাহের রাত্রে হয় প্রীলোক আচার। আছমে যেমত নীতি পূর্ব ব্যবহার।। সভাতে বসিল আসি সব দেবগ্র। ভারমধ্যে বরপাত্র আছে ত্রিলোচন।। সকলের শ্রেষ্ঠ শিব হয় সর্বমতে। অঙ্গের আভাতে। প্রস্থালিত রখা হৈতে।। তক্ত্তে জিনিয়া মুখ মৃদ্ধ হাস্য ভার। দেবভার মধ্যে শিব অভি শোভা পার।। ত্রিলোচন ঢুল ঢুল থেন পড়ে খনি। আকাশ হইতে যেন চক্ত ড়মে আনি!। দেখি সব নাবীগণ অভি মুখী হৈল। স্ত্রী আচার মধ্যে মহাদেব অনাইল। স্ত্রীগণ মধ্যেতে শিব দাখাইয়ারল। আসিয়া মেনকারাণী বরণ করয়॥ বরণের পাত্রেতে **ইশেরমূল ছিল। ইশেরমূলের গল্ধে দর্প পলাইল** দ শিবের যে ব্যাদ্র*চর্ম*র गर्ल खाँछ। इता। इत्मत्रमृत्वत्र श्रास्त्र गर्न ए यगिन । छेनक् रहेन भिर जीनन मर्पाटक। दश्नकाटन खन्ता कथा देशन डेशनीएल।। शताहेन निवादक शास्त्र (मय (मय । यक्ष भव्नेष्टिम खर्म धिक समस्य ।। विका करह ममानन **क्षत मन्नामन्न। विवादश्त काटन वञ्च शतिधान श्रः। एपशद्त शिमान्य कर्ति**

কন্যাদান। সকল দেবভাগণে করিল সম্মান।। বরকন্যা পারেতে গেলেম রাস্থরে। দেবগণ গেল সব যার যেই পুরে।। তদপরে নহাদেষ গৌরীর সহিত। গিরিরাজ গৃহহ সদা রহে আনম্মিত।। এইমত বছকাল গত হৈয়া যায়। কথোপকথনে কথা উপস্থিত হয়।।

অথ হর পার্কতীর কাশী যাত্রা।

পরার। একদিন কৌজুকে আছেন নারীগণ। হেনকালে গেনকা যে পার্কাতীকে কন।। গৌরী তব শব্দর জালয় কোথা হয়। বিশেষ জানিয়া জুমি কহিবে নিশ্চর। মাতা শ্বানে হেন বাক্য শুনিয়া পার্কাতী। মনোমধ্যে থেদ করি কহে শিরপ্রতি।। পিতৃগৃহে কন্যা যবি বছ দিন থাকে। ক্রমে ক্রমে অপমান পায় অবশ্যকে।। জামাভার উচিত না হয় সর্কাকণ। শ্বশুর গৃহেতে বাস নিশার কারণ।। পার্কাতীর হেন কথা শুনিয়া শক্ষর। কাশী-পুরে আ্যালেন শীপ্রগতি হয়।। গৌরী সঙ্গে সদানশ্দে আ্ননিত মন। কুতৃহলে জাগিলেন আ্রন্দ কানন। কাশীপুরী দেখি হয়িত মহামায়া। জানন্দের সীমা নাই কাশীপুরে গিয়া।। প্রতিদিন দ্রমণ করেন চইজন।। মহাদন্দে আ্রন্দ কাননে সর্বক্ষণ।। পিতার আ্লেয় গৌরী বিশ্বরণ হৈল।
তিপুরারী সঙ্গে সদা আ্রমাদে রহিল।।

अथ एक श्राष्ट्र द्रापान।

পরার। কাশীতে ভপসা করে দক্ষ মহাশর। শিব কুপা নহে একযুগ গভ হর। শীর্ণকার রক্ষনার দ্বির চিত্তে রর। দেখি গৌরী মহাদেবে
জিজ্ঞাসা করে ।। গৌরভর ধ্যান করে দেখি প্রশংসর। শিব বলে ভব
পিডা দক্ষপতি হর।। এই বাক্য শুনি উনা শক্ষরে কহিল। কুপারুর
দক্ষরাজে ভবানী বলিল।। তদপরে মহাদেব প্রসন্ন বদনে। বর লছ দক্ষপতি বলে পঞ্চাননে।। সমাধি ভাঙ্গিয়া দক্ষ দেখেন শক্ষর। বহুবিধ স্তব
দক্ষ করেন গড়র।। জন্য বর দাহি চাহি শুন রুপামর। সর্ব জপরাধ ক্ষমা
কর দরামর।। দক্ষের করুণা শুনি শিব ক্রউমতি। সম্ভর্ম হইরা ভারে
কহে পশুপতি।। নিজপুরে বাহ দক্ষ কর জবধান। দেহাস্তে ভোমার হবে
জবশা মির্কাণ।। জার কহি দক্ষপতি শুনহ সহর। ভোমার হাপিত লিঞ্জ

হর দক্ষেশ্বর।। ক্রী কিয়া পুরুষ ইদি দৃষ্টিমান্ত করে। সর্ক অপরাধ হৈছে মুক্ত কলেবরে।। তারিরাতে মুক্তি পদ সেই নরে পার। এতবলি মহাদেব নিজালয়ে যায়।। করিল গমন দক্ষণতি নিজালয়। সীজানাথ বসুদাস সদত চিন্তর।। কিসে ত্রাণ হব ভব ছরন্ত অলধি। রূপাকরি যদি কাশী লয় রূপানিবি॥ সর্কি শাস্ত্র মতে এই আছ্রে প্রচার। প্রাণভাগে কাশীপুরে হইলে নিজ্ঞার।। কোনমতে অবিমুক্তে যদি প্রাণ যায়। ভজন সাধন বিনে তাতে মুক্তি পার।। এই আশা করি ভাষা কাশীখণ্ড ভাবি। যদি তন্ত্র ত্যাগহয় সেই বারাণসী॥ নবভি অধ্যায় কথা সমাগ্র হইল। শুনিলে লভরে মুক্তি বাগি যে বলিল।।

ইতি শ্রীকাশীখণ্ডে অভীষ্টত্ততের প্রকরণ বিদ্যেশ্বর কামেশ্বর বিশ্বকর্মেরশ্বর দক্ষযক্ষ
ভক্ত দক্ষেশ্বর আদি লিক্সের
উদয় একদিশ সর্বা

অণ পাৰ্কতীশ্ববোপাখান।

-1124-

व्यथ शस्त्रभटतां भाषान।

প্রার। গঙ্গের শবলিঙ্গ যে প্রকারে হৈল। কার্ত্তিক বলেন ইহা
অগন্তা শুনিল।। যে কালেতে ভগীরথ গঙ্গাদেবী আনে। কাশীক্ষেত্রে
আনি গঙ্গা ভাবেন আপনে।। চক্রতীর্থে গঙ্গাদেবী গিয়া তদপরে।
শুপিত করিল শিবলিঙ্গ মনোহরে।। সদর হইয়া শিব কহেন গঙ্গাকে।
তব আগমনে ক্ষেত্র মাহাত্ম অধিকে।। চক্রতীর্থ আর মণিকর্ণি ফে
আখাতি। দর্শনেতে হইবেক সব জীব মুক্তি।। গঙ্গের যেই নর অর্চনা
করিবে। দশ অশ্বমেধ কল জনায়াসে পাবে।। অন্তে মুক্তি হৈয়া তারা
আনি বে কৈলাসে। ইহার জন্যথা নাহি কহিল নির্যাসে।। ইহা
শুনি গঙ্গেশ্বরে শিব প্রবেশিল। তদবধি গঙ্গেশ্বর প্রকাশ হইল।।
জিনবতী অধ্যায় হইল সমাপন। কাশীথণ্ড ভাষাতে শুনহ সর্বজন।।

चथ महीचदांशीयान।

->-

অধ অমৃতেশ্বরোপাধ্যান ও অনুদ্বিকের কথন।

পা।।। তাই কছে শুন মিত্রা বরুণ দ্বা। অমৃত্য শিববিক স্কা
থেজি হয়। যে প্রকারে শিববিজ্ঞ হটবা প্রকাশ। বিশোল শুনহ তার কাইব
নির্বাল।। সকুনানে এক জিল কাশীতে লালি। অতি রুল্ল নালেতে জারার
পুঞ্জ হৈলা। আচমিতে জিলপুঞ্জ সাল হাতে মরে। আশান বাটেতে পুঞ্জ
আনে জিলবরে।। বই। পঞ্চনদতীর্য আতে বিরাজিত। তাহার পশ্চিশে
ঘাট হর প্রকাশিত । জিলবর পুঞ্জে র থে খাশান ঘাটেতে। নক্তবিধ শোক
করে সন্থান নিমিত্তে। মতনামধে। বিদান করেন জিলবর। পুর্বাপরম্পরা
আহে এইত বিচার ।। সূর্গাঘাতে বেই জীবে দণ্ড হয প্রাণ। বিলম্ব করিবা
ভারে করিবে দাহন।। ইহা ভাবি জিলবর বিলম্ব করিবা। ভলপরে পুঞ্জ
ভার বাঁচিরা উটিল।। মৃতপুঞ্জ জীবকত্ত দেখিয়া জালেনে। আশার্যা চিত্তেতে
দৃষ্টি রাখেন সন্ধর।। হেনকালে এক পিলীলিকা গ্রাণানেতে।
দিশীলিকা মুখে করি আনে।। মুখুইহতে মৃত পিলীলিকা গ্রাণানেতের

ফেলিয়া রাখিল ভাষা দেখে আক্ষানেতে ।। মৃষ্ক পিণীলিকা বাঁচে অতি চমৎকার। স্থানের মাহাত্ম হবে করিল বিচার।। যে স্থানেতে ভিজপুত বাঁচিয়া উটিল। গেস্থানে মৃত্তিকা ছিল খনন করিল।। দেখে এক জ্যোতি স্থাপ লিক বিল্যাকার। দেখিয়া বিক্ষয় হৈল আনক্ষে অপার।। অমৃতেতে শিষলিক জ্যোভিৰ্ময় হয়। মৃত জন বাঁচে তথা আছমে নিশ্চয়ণ কাশীতে অন্তর্ভেশ্বর লিঙ্ক শ্রেষ্ঠ হয়। দর্শনেতে মুক্তিলাভ সর্বর পাপক্ষয়। কলিবুরো এই লিখ ধণ্ড যে হইবে। স্থানের মাহাত্ম কলে মুক্তিপদ পাবে।। অরিমুক্ত মনিকর্নি রান করি নহ। বরুণেশ্বর শিবলিক পুজিবে সম্বর। তার সম প্রণ্যবস্ত ন্যাহিক সংসারে। **মুক্তিলাভ অনাযা**সে ছবে সেই নরে । সোমবার ল্রন্থ বাদি স্থৎসর করে। ভাছার সানস সিদ্ধা হইবে সম্থার। স্বর্গেশ্বর জ্যোতীশ্বর আর মক্ত্রশির। সভীশ্বর পার্বভীশ্বর অমৃতেশ্বর পর। গক্ষেথ্র বরুণেশ্বর এই অর্থনিজ। না থাকে পালের লেশ শুনিলে প্রসঞ্চ। সর্ব-ইলিক পরাপর এই অফ হয়। দর্শনেতে মুক্তিপদ কানিহ নিশ্চয়॥ দক্ষে-भात रेमाटा भात ज्ञानि उद्काम। जात्रामम काछि लिक्न स्टब्न मरक्म।। अह স্ব লিক হয় কেরেতে তারক। ভত্তন জীবের হয় ছুর্গতি আশক্তা। ভাব-শেবে অনায়াসে মুক্তিলাভ হয়। শিবের বচন এই নাহিক সংশয়। মোক-ক্ষেত্র বারাণসী লিহ্ন সব মন্ন। দর্শনৈতে মুক্তি পদ অনাগালে হয়।। এই খাকা শিবউক্ত সভা জ্ঞান করি। সমত যে চিস্তা করে মৃক্তি কাশীপুরী।। চত্র্বতী অধ্যায় চইল সমাপ্ত। আবণেতে অনায়াসে কাশীপুরী প্রাপ্ত।।

অথ বেষকালের কাশী যায়। ও সুজ্ভত্ত।

পার। অগস্তাকে করে পরে পার্কতী মন্দন। বাাদের আঞ্চান শুল শুনি দণোধন। একদিন বাাগদেব অতি তুক্ত কৈয়া। নৈমিষারশ্যেতে গেল লিষানণ লৈয়া।। তথাতে আছিল যত মহাথাবিশা। বিধিয়তে বিচার করি-আ তপোধন।। তদপরে করে বাাস থাবির সাক্ষাতে। বাল্লদের জেওঁ কেছে আছিক শাত্রেকে।। নৈমিষারণোতে বাস করিছে বতের্কা। পাল্লপার সিদ্ধ বোদী আছেন অনেক।। সকলে বলেন রাাস বুজি নার্ছি হল্পা শুলের লার লিব এইত নির্বর।। তদপরে ব্যাসদেব বলেন বহদক লারাল্পার লেখ মুল ক্য নারারণ গ তদক্তরে জীর্জানী বোনীগণ কলে। গুন্ধানীয় ভূমি-

एक्टरं जूमि निष्ठत वनार ॥ फेट्रव वामि वैंट्यीलिजि; एक्टे नाइक्टिंग (दमराकर्ट वित वात्र हिन्द प्रश्वन । एम्बिइव्य निया मार्क विवि सुरोगार्का । नातान क्षन शांतांक्रन चारत नियानन it कोमी भूरत राज वान कावक समा : नासून त्वच क्वीरकम भवक विखन्न। वाजामनी मरधा वाम निधा मरण कति। অঙ্গুলি উপানে বলে বল হার হরি। **মুকুন্দ অচুতে বিকু দান্দেদ**র পার ট क्षेरिकन यहनार्च नर्ने नाञ्च नात् । (प्रवक्ष मट्याटक व्यर्क स्य मात्र।प्रकः। **क्षरे वाता दाल गाम उर्क, वांक एन ।। एमभद्रा मन्दी आफि कंश्वेद्धांक उद्दा ह** উन् वाङ् रेर्या तर्र मार्थ रख गरत । आगरमव अमाच स्वित ७०००। স্থানতে চিন্তির বলে রক্ষ মারারণ।। ছেনকালে নারারণ আনি সেই **ভারে** मुक्त रुद्रि वरण यात्र छन मावधारन । मक्ता मून मान रहत जिलाउन ई তাঁহার এরণ কর চইবে রক্ষুণ। এই উপদেশ শুনি মুনি ভপো্ধন। মনো र्यार्श वटल रक्षकित शक्षानम । जुमि कारजा नक्षकि (बरवत वहन । जन्म-त्राध करा कृति क्रत्र ह तक्का । शांगरमय रूप खन खनि मन्हर दर । मन्हरेल् নেরেল আজা ভুতনাথ তবে।। ব্যাসদেব সাক্ষাতে আছেব বার্রিণ। হস্ত কণ্ঠ ভূমি শীন্ত করছ মোত্ম।। তদপরে নন্দীবর শিব**ভান্ন** নিকার ব্যাস इन्ड कर**े** मिल रमाइन कतिया।। छनशरत वर्गन रेवल भित श्रद्धाद्वर । यासीन कर्ग इतम देक्त शामित का भाग भाग किया क्रिक क्रिक क्रांस करत दाहि नहा। नार् रमचंत्र भिविष्यक् काळमा अखत्। **कार्**।त करणत्र कथा निश्रदर मा ४।इ ६, অত্তে কাশীপ্রান্তি হয় শুনহ নিশ্চয় ॥ গঞ্চনবতি মধ্যায় সমাপ্ত হইন ই छिटिन व इस्य पूक्ति वात्र स्थलित।

बाग कर्कुर कीर्ज क्षणत्या है। साम्राम् खंड कथना

श्वात। जाला बर्गन सम (नव वण्डानत। भित छिल श्वमि क्रिक्ष रेक्शामन।। वृति श्वित ममाण कविन करश्यन। एक्टम प्रक्ष्म छाडा श्रद्धा य मर्गम।। ज्यानी व्यथान वृति वाजित्तर द्वा। एक रक्त काशी श्वित्व जोकिशांश विर्व ।। क्रिक्स मणी वाजिक कवित्र मन। विज्ञानित किल्स वाजित्तर व्यथा स्थान। क्थानि विराम वाजी । स्वयंति नामी वाजिक केल्स एका। एनवित नाम विराम वेत्र श्रित है किल्स । काशीरक कात्मक छोर्थ नित्र पद्धा। दीम। क्थानि एमविरव विराम क्रिक्स क्षित क्षित क्ष्मित । राजिक क्षात क्ष्मित क्ष्मित क्षित क्ष्मित क्ष्मित

वात्र आदश्चां किहि। निर्मा क्षेप्रभाग गित महिमा कार्या है। गिरसन আক্লাতে কাশী মাহাত্ম বৰ্ণন। করেন সতত ব্যাস শিব পরারণ।। এই কেত্রে কৃতক্র্য করা নাহি হয়। প্রতথ্য গুড় কর্ম সূর্বদাকরয়। ক্ষেত্র সিছ हैं छ। रचना करत राष्ट्रे नरत । यार्वच्छी वं मिनक निक्क माहि हारण ।। हेन्क-कीटर्स शकितन कतिरदक सामा श्वा भूका कन सन विषयद समा वर्शकीय दर्गन अर्थ ना कड़िटक जीन। किन्छ कोनी मोहान छनिएव महा-জাগু॥ বধাণজি দান দিবে অভি পুলোকিতে। করিবেক অন দান বিশ্ব বিনাশিতে। জনত করিবে ক্লেতে পর উপকার। পর্বেতে বিশেষ সান দানাদি বিস্তার ।। মহা মহোৎদর আর বিশেষ পুজন। করিবে বছল যাত্রা দেবতা অর্চন ।। না কহিবে ক্ষেত্রে কটুবাক্য কার প্রতি। পরদার পরক্রবো मा कतिद्व मिंहि। शतीश्रवीन शहेत ख्रम मा कतिहत । क्ष्यावद्धा मिथान कथा राष्ट्र मा कहिएक। लएव निया कहिरवंक आनत्का छत्त । देवलाका বুক্ষণ ফল এক বৃক্ষা করে।। কেন্তেতি সন্তাদ করি বাস কাশীপুরে। রুড-भूखि जीक्या क सामित्व छादाति ॥ त्म मकल समस्कार्या भूकनीत एत । त्य সব ভৃষ্টিতে বিশেষর ভূষ্ট হয়॥ ভূরে থাকি কাশীবাসীলন উপকার। ক্ষরিবেক কাশীপ্রান্তি ইচ্ছা থাকে যার।। ইচ্ছিরের প্রশারণ করিবে বারণ হ্মানস চাপলা দুরে করিবে তাজন।। না করিবে মরণ আকাজ্জা কদাচিত। মোক ইচ্ছা মা করিবে হবে বাবহিত।। না করিবে শরীর পোষণ সমুদায় করিবে শরীর পুর্ষ্টি চেফা নর্কদার। ব্রক লান লিছ হেতু শরীর সামর্থ। দীর্ঘ আরু চিন্তিবেক তপসার অর্থ।। আতা রক্ষা করিবেক ধর্মা রুদ্ধি তরে धकिन्दन त्येरे भूग लट्ड कामी भूदत ।। मंड वरमत्त्रत त्रेरे भूग जनायात्न खन्नीयम बनाज व्यारशद्ध खन्नागरम ॥ अरु अधान्नारम कामी सर्हे कन इत्र । हेहाट अमारा माहि केहिल निम्ह्य । य भूना आवश्य धीर्य साम केंत्रि हरू । अक सारत रुक्क डीट्रई रंग कम मजत । शुक्रिया गर्कत मित्र रन केन आहर्य। अकवात विरम्भाद श्रीम ताहे इत । अनाव नरुख बरुष ए शूरणाश्रीकान ভাছাতে অধিক জান বিশেষর দরশন। কোটি গোদানেতে যেই পুণারাভ इत । त्यहे भूग इत वित्थायत वर्ष प्रथम । यहा मान व्याप्रण क्तित द्रवे क्ल । विश्वयंत्र भूष्णणात्न तम भूषा मकल । अयटमध आणि वस कहि अस्टिन कल । शकाशृष्ट विध्ययसं सारम (गरे कन । वाजरंभस गरूट्यर के स्वत्वक क्त ।। विरम्दर देनविश्व प्रांटन तम भूगा घषेत्र । कक्काक्षश्र विषेत्र सर्वाति स्व र्भाता क्या व्या तामा कात शरेरत परेरंग महार्थना केनरात ता करन

धर्मन । गण्यकि मञ्जान छोरत मा होरक क्यान । गर्कमृष्ट्र कृष्ट्र स्थानिन स्टब्र रचरा। अन्तर्भक कार्यात कार्यर करव रगवी । क्रा दान करत व्यस्त्राहर ह माम करत। टेन्टम शिक्टलांक कीन मसुरखन को दक्ष निरम्भन सम्बद्धाः स्थ bिक्रलिभि करत । विभिन्न भिष्मत कांत्र देवनारमस्य भरत । स्वासी जासूत्र कां कि कर्रात्व (डाकर । अकलान कांकि कन कन एवं सम्बद्ध । विस्थाद्धः ত্তপ জপ দান কাদি যত। তার কোটি**ওণ ফল জানিবে বিহিত। প্রণব** किन्नरगर्भगुगरसम्बर्धा काहाय व्यवधि कामिन। कानि निष्ठमः केन्द्रस वारिनी ज्ञान क'भीवात्र निका। आशरणह ना शाखिरन सामी क्राहिक है সর্মাপদ হয়, বিশেষৰ প্রভু যাতে। বিষয় **লাপদ তথা নাহি থাকে ভালে** खान मान जानि रर्गेत अवाट्य करिटल । कांभी क्रफकर्य १८७ महावस वाट अह खक (लियान भारि भगरष्ट्र कदिएत । है लिया किकाब राधा गोरक मून हरत । ৰ'শীপুৰে ২য় যদি ই'ন্দ্ৰৰ বিকাশ। ভবে কাশীবাস সিদ্ধি ন'খটে ভাহাব फर्डक्टर नगराम शांक्रही सम्भग। ए.फ्र'श खालि अक शांग करशांवन । যে ৰূপ কহিবে তাহ। কহ লোগ প্ৰতি। ক্ষম্ম বলে শুনহ জগন্তা নঙানহি । र्य गर- खड १८६ (१९ मन्द्रि इस् । विष्ठा विक कृष्टि सब अकां क्र क्रम्य । अक किन अकाशत अविभिन्न नर्छ। अर्घ किन स्वित स्वाधिक प क किन छेश्यानं प्रविध्व मधुका श्रीक कृष नाम अहे भार खरा । किक ह नके शक महा नांन की। इक बिरन। अक किन खेख्यन शक खल्मार । अक्र निम कमन मत्त्व सन ४:८४। अक भिन कृ "अन भून कू रू ७८२ । १९८६कः । अधिक कक्क कहा मेळ्यू थाहा। अकिमन क्लेक्कम च तिरन लोगाना साधाः মৰো এক এক করি উপৰাস। সৌন, কুছু নাম এই বিশ্বির প্রানাশাপ ১१ প্রতিত বরিবেক হবির প্রশিল। অখা ৮ দিনত্রয় করিবে চেট ন হ করি-বেব ক্ষতি হৈয়। ত্রন উপবাস। পুরস্তমাননে খাবে এক এক প্রাণ। ৩৮-পরে দিনতাম করি উপেছেন। ভাতরছ, শাস্তেকে বনিছে নিক্রণা। धक विश्म पिरम ५.६। ८४ वन कतिरत । खोममार न्यलवांत्र नातक व्यक्तित्व क्षित्रक्षेत्र के अध्यक्ति । जिल्लाम क्षित्र क्षित्र क्षेत्र व भिन्नुत्र अयांक्क करित्व Colunt कार्ल एकाक्यम कानिद्व। **বিষয়ের বিশ্বাস আ**জি গতা হনঃ গেমুত্র গৌমর **ছক** দ্বি গুভ चाह (क्ट्रकाद्व क्र निन कड़िरव चावात। यक वांति, क्रेश्ववाय क्रष्ट्र चारु भारत । कार्या दिश्वाक स्थाद स्थमह वहन । भारतभन वर्ष सम्बद्धानितन शाटन ।

अम् अकाशत क्षेत्रिय जामानं व अकंश् कं मिनलेम थाहेत्व नामति। मिनलेम थाकिरवरु शरम थाँशक्ति । जनकीत अक शन शृष्टभग सप्त। अहे मॉर्स পাবে সগুত্বৰ্ছ ভাকে ক্ষ্ম।। গোসুত্ৰ সহিত অব অবান্ন ভক্ষণ। ঐকাহিক कृष्, अरे भरीतं (भाषन । इरेश छेवान इस वाग्र उक्क पिटन । अविद्यादन অলেতে থাকিকে সাবধানে। প্রাকাপতা ত্রত পুণ্য সম পুণ্য হয়। হেন দিরুপণ দেখ শান্তেতে নিশ্বর। কুঞ্পক্ষে এক এক গ্রাস হাস করে। 👣 পক্ষে এক এক গ্রাস বাড়ে পরে 🛭 উপস্প র্ণ করিবেক মিতা গ্রিসবন। বিশান করিল এই ভ্রত চাক্রায়ণ। ওক্লপক্ষে গ্রাস বৃদ্ধি ক্রুকপক্ষে দুর্বি। हास्तांत्ररंग क्यांवित्रा कित्न केशवात । हजूश्तक शिक्ष चीत्रः क्षाहःकारन ধাবে। শিশু চাঞ্রেণ নাম এত এই ্র।। নধা,⊋ সমযে থ'বে পিও ছবিষার। প্রতিদিম অই অই অতি চাক্রায়ণ। যে কোন ব্রণেতে পিশু আিরশীতি থার। একমান আহারেতে চক্রে লাক পার।। জলে দেহ শুদ্ধি সত্ত্ব চিত্ত শুন্দি কর। বিনা; তপাস্থাতে ভূত আ্মাতেক শোধর।। অঞানে-তে বৃদ্ধির শুদ্ধি হয় সেই জ্ঞান। কাশীবাদে ঘটে এই শান্তের প্রমাণ। विष्यंत्रक्रम्राः पत्र काणी त्रवि दश्र। कर्या निर्म्यू ल नक्ष्य लट्ड मर्टश्वत ॥ অতি যতে কাশীতে করিবে স্থান দান। তথ জপ এত আর শুনিবে পুরাণ। শৃষ্টাক্ত বর্ত্তের সদা করিবে সেবদ। অমুক্ষণ করিবেক বিশেব চিন্তুস।। किकारम श्रीकरत निक्र मिरक्त कांभन। माधु मरक मर्समा कतिरव श्रीमा-প্রম।। শিব শিব জম্পা মদা অভিথি সংকায়। ভীর্থবাসী সঙ্গে নৈ 🗆 করি। বে বিস্তার।। অভি বৃধি মানামানে সমান বোধর। অকামিতা অলৌ-কিতা সভত বিনয় । অবানিয়া অছিংদন অযুগ্রহ মতি। এতিগ্রহ পরা গ্রাখ অপত্তিতা অতি।। অযোচিত সমাগম মাশ্চর্ম্য বিহীন। অলোভিতা অমা-লস্য ব:রুষ্য অদীন। ক্ষেত্রবাসী এই নব পাধুরুদ্ভি বর্ষা। আচরণ করিবেক পদা সাহ্রকর্ম।। প্রভাছ ুশিবোর প্রতি সংশ্র কথন। ত্রসবন স্নান নিষ্ঠা ভিকা স্কুপাশন।। লিজ পুজা পর কাশীবাস করে ব্যাস। ভাছাতে জানিতে मर्ग देवन कीर्खियान ।।

অথ বাাসের ডিকা বরিণ।

পরার। অন্ধর্ণা প্রতি নাবেশিলা বিষেশ্বরে। শিল্পারে জিলা বন্দ কর জানী পুরে । তবে নিবর্বাকো শিধা করি আইনির ব্যান্ধিক। এনে বৃদ্ধিকের প্রতিষ্ঠার । শিধা শঙ্গ বাট্ন মতে বিশ্বস্থিত ক্রিক शृद्ध जिल्ला ना शाहेल उरशायन ॥ अना जिल्लाक जिल्ला अकि श्रुट् পার। সশিষা বসের ভিক্ষা না ঘটিল ভার ।। সারাজ্যের কর্মা করি শিখাক্ষেত্র कानि। दिवा तां उपवान तिहरलन स्नि।। शतकिन मधारूक योद्य नि র্নিয়া। ভিক্ষা হ্রটনা চলে হ্যাস শিষাগণ লৈয়া। জ্যালি সকল পুরী প্রক্রি खादा छात्र। क्लानबादन ना शाहेल नक्कान किकात्र। खिमित्रा रहेल खाक ব্যাস তপোধন। চিন্তিত ছইল জতি ভিক্ষার কারণ্যা শিষ্যগণ সংঘাধিয়া বলিতে লাগিল। বৃথি ভোষা সরে ভিকা প্রাপ্ত না ছুইল।। কি বৃত্যন্ত নগরে জানহ জিজাসিয়া। ছই দিন ভিকা কম কিবের লাগিয়া।। ছড়িক हरेल किया तालमंख देश्ल । क्रेबा कति क्रिक् किया जिल्ला वन्म देवला। खेश-प्रदर्भ कित्र। प्रष्क देशन श्रक्तांशंग। कामिया गक्त दाई। कारेंग अर्थने ।। कुरे তিন জন শিধ্য গুরু আঞ্চামতে। নগরে জানিরা বার্ত্তা কহিছে গুরুতে।। नियान्। यत्व रान राज अस्य महागत्। कामीशूद्र मा द्रिप्य हु जिक छेनत्।। যথাতে আছেন বিশেশর সুরধনী। তথাতে তোমার বাস করে ঝৰি মুনি।। নগরেতে দেখি ধন ধানোর সঞ্জা। ভোগ মোক প্রিপুণ হইল বিক্ষয়। ত্রিজগতে ছুল্ল'ভ যে সব বস্তু হয়। সুলভ কাশীতে সেহ দেখিল নিশ্চয়।। বিজ্ঞার সদন কাশী গক্ষীর আলয়। মুক্তিকেত্র কাশীপুরী কাশী ত্রহীমুর 🖁

-MCM

অথ কাশীতে বাদের শাপ ও অন্ন ভিকা।

পরার। কদেবলে জগন্তা শুনহ সাবধানে। শিষাকথা শুনি রাাস ক্রোধ হৈল মনে।। ক্র্যানলে জ্বলিত হইয়া তপোধন। কাশীপ্রতি জভি-শাপ করিল তৎক্ষণ।। কাশীপুরে ত্রৈপুরুষ বিদ্যানা হইবে। ত্রৈপুরুষ ক্রাক্সীর বস্তি না থাকিবে।। ত্রেপুরুরে মুক্তি না হইবে কাশীপুরে। কাশী-শ্রুতি হেন শাপ দিল মুনিবরে।। বিদ্যাধন মুক্তি গর্কে গর্কিত হইয়া। ভিক্রানাহে দিল লোকে অবিজ্ঞা করিয়া।। হেলম্ভি হৈয়া শাপ বাাসদেব দিলা। শাপ্র দিয়া পুনরপি ভিক্ষার চলিল।। উর্ক্ত দৃষ্টি হইয়া ভামিল সব পুরী। ক্রোন স্থানে ভিক্ষা কেহ না দিল সাদরী।। দিবাদেশ দেখিয়া লো-ভিক্ত দিবারের। ভিক্ষা পাত্র ক্ষেপণ করিল মুনিবর।। আলমে চলিল মুনি বিজ্ঞাবিত ইয়্রা। দেখিলেন দেবী ছাকে ভারেতে বসিয়া।। দেবাবাস জন্য জিক্ত ভিক্ত না লেখিল। অভিথি জ্বপ্রাপ্ত পতি উপ্রাস রৈল।। বলি বৈশ্ব

থি না কবি গৃহী জীম দদি থার। পিতৃপণ সহিত নরকে সেই যায়।। শীম করি আগমদ কর মুনিবর। পতি মম হৃদ্ধ অতি কুধাতে কাতর।। অতিথি স্ইয়া শীঘ্র রাধহ জীবন। হেন কথা শুনি গত জোধু তপোধন।। বিষ্ময় क्रिया छाटक क्रिक्षांना कत्र । असनी तक वर्षे जूमि कर्र विकास ।। ना तन-বেছি কথন তোমাকে কোনস্থানে। ধর্মময়ী মুর্ত্তি তুমি লয় মোর মনে।। ना १८४ ज्यन कृति आकृष्ठ त्रमती। कृति देथे देशयी माका स्वरूप त्याहिनी !! ে ধৰে সে হবৈ ভূমি কি মম চিস্তনে। আহলাদ হইন অভি ভোমার দেশেনে। তব বাকা বক্ষা আমি ভাষণা করিব। তপ্যাম বিলে যাছা বল ভা করিব। ভোমা সকলের বাকা ऋতি মাছি করে। কে তুমি বটছ সভা वलर आभारत ।। এত अनि गृहिनी विलिल सुनिवद्र । धाँहे गृहरञ्जत आर्था। জানহ আমারে।। শিষা মহ িক্ষা পর্যাটন করি নিজে। আমি ভোনা দেখি स्मिन तर्थ कार हिटले ।। वह वाका श्रादालन विद्यू न'हि करता अलाहन খাবৎ না ব্যবে দিবাকরে।। ভাবত অভিথি হৈনা করহ লোগন। অভি नुष्ठ अंकि भग तथिह की वस । अष्टलाने सूनि नाम लानह नाम । का ५ एस নিয়দ মোর করি নিবেদন ॥ কামাব নিয়দ যে গ্র'তে হা রক্ষা। জনাথা मा इब फर्ट कृति धक जिला। एशकी वहन एमि कट्ट खनवडी , खव कि নিয়ম শীস্ত্র বল মহামতি।। পতির প্রসালে মোর ক্রটি কিছু নাই। হেন শুনি মুনি বলে ভব'নীর টই ॥ অষ্ত শিষ্যের সহ আমার ভোজন। সুর্য্য अक्ट ना इटेटर नित्त त्यहेकन ॥ ठत्त जिक्का कति आर्थि १३ ५ निस्त्र । এতশুনি বলে দেবী চল সম্ভেম॥ বিলম্ব না কর শীত ভান শিবাগণ क्षिम द्वाने शूनकात करत निरंतिकत।। यशिष्ट आगात विकास कृत इत। अञ्चलाम आमि छात कि आहर नक्षत्र ॥ अपन शानित्रा (मनी कटश्चमिवदत्र ।-প্রতির প্রসাদে সর্ব্ধ সিশ্ব মোর ঘরে।। চলু শীম্র কবি মান অনার্থী সকল। विक इक्ष शकि देश्म कूपीटक निकल ॥ युर्वा व्यक्त ना इहेटक नहर दावन र्श्वन ६४ २८३ सूमि आर्टन भियानन ॥ जकन अर्र ।, वटन ४नइ जकटन। धातर, मा यात्र नियाकत अञ्चाहरल ।। अञ्चर्तः श्रीमरधा अरबन कतिन। পদ প্রকাশন করি ভোজনে বদিল।। অভি ভার পম যত দ্রার পরিপাটি। লোজন কবিল নৰে না হইল এটি।। ধ:ইতে না পারি জার না ধরে छैमटन । दहन विन बांखि बाल्य शांद्धत छैशदत ॥ कथेभ लोकम दहन मा করেছি আর। পরম্পর হেন বলি খাইল অপার।। ভদপরে পাত্র জ্যাপ पति दि। हमत । **कायून हम्मना**नि कन्निम अर्ग ।। भावत्ने द्या किन्ना यनिम

बिबान। आनीर्वाम कतित्रा नगटन टेक्ट मन । बुँकिया नृहेन्द्र शृहीनीटक मध्याधिल । ইक्रिक वृक्षिया एमवी व्याप्त किक्कोनिल ॥ कीर्थवानी स्माक्त धर्मी কহ মুনিবর। যেমতে করিব ভীর্থবাস নিরস্তর ॥ ব্যাস বলে শুন মান্তা করি নিবেদন। পতি পরিচার্য্য মোক ধর্মেতে গণন।। সর্ব্ধ ধর্ম জান তুমি পতি সেবাবলে। যদি জিলাসিলে মোরে শুন কুভূহলে।। ছব পতি বৃদ্ধ পছি सूच्याट इत्र। जकन धर्माट जिस्ताम धर्मा हत्र।। शृहिनी वालन जाहा পভিসেবা ধর্ম। জিজাসি সামান্য ধর্ম কহ ভার সর্মা। বাাস বলে শুন विन धर्म माधात्र। मान धान नम्ना धर्म आपि आहत्।। काम व्हार्थ বিনিগ্রহ অনুদ্রেগ বাণী। পরে ংকর্ষ সহিষ্ণতা ধর্মেতে বাখানি।। বিচার্য্য করিয়া আদি ধর্মেতে গণন। সদাকাল নিজভাগ্য উদয় চিন্তন।। গৃহস্ত বলেন শুন মুনি মহাশয়। তোমাতে এসব ধর্মো কি কর্ম আছম।। শুনি মুনি স্থগিত হইল বাকা নাই। গৃহস্থ বলিল পুনঃ বলনা গোঁসাঞি।। ভূমি य कहिल। यनि अ≷ धर्मा इय़। তোমাতে এসব धर्मा खाटह य निम्ह्या। দাস্তভা ভোষাতে দেখি আছে শাপ দান। দয়া ধর্ম তোমাতে উত্তম অ-ধিষ্ঠান। কাম জোধ বিগ্রহে ভোমার সম্ভাবনা। উদ্বেগ বি**র্ফ্তি** বাক্ট ভোমাতে ভাষণা।। বিচার্যা করিতা পর উৎকর্য সহন। ভোমাতে ভাছে যে ভাগা উরদ চিন্তন।। যা হৌক তা হৌক মোর এক কথা বল। আপনা অভাগ্য অর্থ দিছি নাহি হৈল।। তাতে ক্রোধ হৈয়া যেবা দেয় অভিশাপ। সে শাপ কাহাকে হবে কে ভুঞ্জিবে পাগ।। ব্যাস বলে অভাগ্যেতে অর্থ না লভয়। এই জোধ করে যদি অভিশাপ দেয়।। সে শাপ হইবে অভি-সন্তার উপরে। হেন শুনি গৃহত্ব কহিছে মুনিবরে।। তুমি পর্যাটয়া ভিকা না পাইলে যদি। কাশীবাসিজন সব কিবা অপরাধি।। শুনহ তপস্বী সম রাজধানী কাশী। উৎকর্ষণা নহে যেবা এই স্থানে বসি॥ মৃত অভিশাপ সব সে জনে ঘটর। আমার নগরে কভু শাপ নাহি হয়॥ না থাক প্রস্থানে ভুমি চল জ্বনা ঠাই। কাশীবাস যোগ্য ধর্মা ভুমি কর নাই।। এই কণে বিনি-র্গত হও ক্ষেত্র হৈতে। মোক্ষের সাধন ক্ষেত্র অযোগ্য ছোমাতে।। কাশী-বাসি প্রভি ষেবা দৌরাজ করর। তার পরিপাক রুদ্র পিশাচেতে হর।। হেন শুনি কন্দিত হইল তপোধন। গৌরীর চরণে ধরি লইল সার্গ।। আহি তাহি বলি মুনি কান্দিতে লাগিল। স্ততিবাদ করি মুনি কার্ডর ছইল বল সাতা শজুবাণী রখা নাহি হয়। গানিহ শরণাগত সধম তনর ॥ তবে Carl.

এক সংস্থান কর্জ মোর ভরে। চতুর্দণী জাইমীতে আদি কাশীপুরে।। ভববাকা মহাদেব না করে লঙ্কন। এতবলি দৃঢ় ক্রিধরিল চরণ।। ভবে শিবা শিবমুখ ইক্সিতে দেখিল। তথাস্ক বলিয়া দৌতে জ্যুর্ধান হৈল।।

অথ বাংষের কাশীতারি।

পরার। তবে বাস ক্ষেত্রহৈতে বাহির হইল। কাশী দুর্ফ হৈয়। অতি
নিকটেতে রৈল।। চতুর্দশী অইমী তিথিতে নিরস্তর। কাশীতে আসিরা
বাস করে মুনিবর।। লোলাকের অগ্নিকোণে গঙ্গা পুর্বভীয়ে। অদ্যাপি
রহিয়া বাস দেখে কাশীপুরে।। ক্ষম্ম বলে অগন্তা করহ অবধান। এই
মতে কাশীপুরে বাসে শাপ দেন।। ক্ষেত্রে শাপ করি ক্ষেত্রে বাহির হইবে
অতএব ক্ষেত্র স্তুত্তি সমত করিবে।। কাশীর স্তবনে শুভকর্মের উদর।
অভিশাপে অভিশাপ ভাহাতে কি হয়।। ব্যাস শাপ বিমোচন এই যে
অ্যার। শুনি হুর্গ উপ্সর্গ ভর মুক্তি পায়।। অহিকানিবাসী সীভানাথ
বর্ষাস। করিল ভাষাতে কাশীথণ্ডের প্রকাশ।। ব্রহ্মানন্দে ভাবে ব্রহ্মান্য করিল ভাষাতে কাশীথণ্ডের প্রকাশ।। ব্রহ্মানন্দে ভাবে ব্রহ্মান্য করিল ভাষাতে হইল বয়বতি অধ্যায়।।

ইতি ব্যৱতি অধ্যায় নামঃ সমাপ্তঃ!

ख्य रक्तिथ निक्क्षन ।

পরার। অগস্তা বলেন শুন দেব বড়ানন। ব্যাদের তপ্রা শুনি হৈল চিন্তমন।। আনন্দ কাননে তীর্থ যতেক আছর। যতেক আছর লিঙ্গ কর মহাশর।। এই কংগ্র পুর্নে শিবা শিবে জিঞ্জাসিল। কহি শুন সেই কথা শঙ্কর কহিল।। দেব বলেশুন দেবী লির্গতীর্থ নাম। জলাশর হর তীর্থ লিঙ্গ সন্ধিয়ান। এন্ধা বিষ্ণু অর্ক শিব গণেশ প্রভৃতি। শিবলিঙ্গ স্থিতি মথা সেই ভীর্থ ব্যাভি।। এন্ধা বিষ্ণু শিব মুর্য্য চন্দী লয়োদর। এই সব মূর্ত্তি শিব লিঙ্গ মূর্ত্তিধর।। এস্কল সমিধান তীর্থের কারণ। কাশীতে প্রথম ভীর্থ মহাদেব হন।। তাহার উত্তরে সারস্বত তীর্থ আছে। মূর্ত্তিমতি পশ্চি-মাংশে কাশী তারাকাছে।। মহাদেব পুর্নে লিঞ্জ গোর্থেক্ষ নামেতে। আন ছঙ্গোধ্যেক্ষ পুর্নেতে জারে দক্ষিণেতে।। ভাহার ক্ষিণো আছে লিঙ্গ জ্ঞানর।

তি। তাহার উত্তরে আদি কেশবের স্থিতি। উত্তরে সঙ্গদেশ্বর আছে টো ভাহার। প্রয়াগ সক্ষক লিঙ্গ ভার পূর্বসার ॥ শান্তি করি গৌরীর ভর্মাতে অধিষ্ঠান। বরুণাবতীর পুর্বের কৃত্তেশ্বর স্থান। তিষ্কুত্তরে কৃপিল ধারীর স্থাদ আছে। আছমে র্যমন লিঞ্জারকাছে।। গোপ্তেক উত্তরে লিঞ্জনু ইর্মে খর। সিদ্ধি বিনায়ক তার পুর্বে ত্রেষ্ঠবর।। হিরণাকশিপু লিস গণেশ शिक्टिम । जाहात शिक्टिम मुखासूरतेश्वत शास्त्र ॥ शास्त्रक के रेनश्वरक देव-ভেগর সংস্থিতি। ক্ষম্পেশ্বর মহাদেব প্রক্রিম বসতি।। বিশার্থেশ শার্থেশ পাথেতে আছে ভার। নৈগমেশ্বর লিঞ্চ তথা আছে আর। । নন্দীর্শাদি লিক্ষণণ কোটিং পরে। দেখিতে তথাতে শিবলিক্সের বিস্তাবে ॥ सम्बीभेत পশ্চিমেতে শিলা দশ স্থানে। হিরণ্যাক্ষেশ্বর লিঙ্গ তথা বিদ্যমানে।। ভট্টি-হানেশ্বর লিঞ্চ তাহার দক্ষিণে। প্রাসন্ম বদনেশ্বর তছ্কপ্তর স্থানে 🗈 উদ্ভুত্তর व्यनत्वापक कृष्म मत्नारत । अग्रेराम श्रीकृत्यत्य क्रूरे शृगकत ॥ विश्वमित বরুণেশ নামেতে সাক্ষাতে। বৃদ্ধ বশিষ্ঠের অউহাসের নৈশ্পতে॥ বৃদ্ধ বশি-र्छम् निकटि इटकमत । जाहात मिक्टन निक याखवरन्कामत ।। जाहात পশ্চিমে প্রহলাদেশ্বর আছয়। নখীল নামেতে লিফ তার পুর্বে ইয়। বৈরচণেশ্বর সিঙ্গ নথীল অগ্রেতে। ততুত্তরে বলীশ্বর আছেন সাক্ষাতে গ্র বাবেশ্বর লিঞ্চ তথা আছে সন্নিহিত। চন্দ্রেশ্বর পূর্বে বিদেশ্বর সংস্থাপিত মহালিঙ্গ বিরেশ্বর ভাহার দক্ষিণে। সেই স্থানে বিকটা আছেন বিদ্যমানে পঞ্চনুত্রা মহাপীঠ গেই স্থানে নাম। মহামন্ত্র ক্রপি শীঘ্র বাবে মনকার্ম পঞ্চমুত্র বায়ুকোনে আছে সগরেন। ভাষার ঈশানে বারীশরের আবেশ আছেন স্থগ্রীবেপর ভাষরে উপ্তবে। হতুমদীশ্বর ভথা লিঙ্গপুণাতরে। জায়ু বনীখর লিফ তথাতে অভিয়া গঙ্গার পশ্চিমে অশ্বিনেশ্বর **ছয়**।। ভট্তজুপ[্] ভীর্থ আছেতাহারউত্তরে। তাহারপশ্চিমতীরেলিঞ্ভদ্রেখনে ॥তাহারনৈঋতে উপশান্তশিব আছে। নতু ওরে চক্রেশ্বর লিঙ্গ বিরাজিছে। চক্রজ্ঞদ নাম্জ্রীর্থ আছেতছ্তরে। তাহার নৈখতে শুলেশর লিক্ষবরে। প্রজেদনাম কুও আছে त्तरे शातका ७९श्रुर्व्स नातम कुछ आहर विमामारन ॥ ७थारण मनतरमध्य निक्र मदनांचत । छात्रात श्रूदर्सटक निक्र बक्रांष्ठदक्षत ।। क्रमद्वारक कृतिकूर्य লিক অতীশর। ভাষার রায়ব্যে বিশ্ব হস্তা গ্রেশর।। অমদকেশর নিক্র তাহারে উত্তরে। অসারক কুপ্ত তথা আছে সনোহরে।। আছয়ে বন্ধণেরর कोशांत्र छेडदेतः। किशित्र शिक्टिंग रेगटमध्य मित्रपुद्धः॥ क्रिक्यितनिसं बार्ट्स यशित मिक्टिंग। क्लिंग्रिकन कीर्थ कथा खाटक विमामीटनः।। तम महायामीनः

ক্ষত্র তার অগ্নিকোণে। ফলালেশ শিবলিক আছে সেই স্থানে। কপাল মোচন জ্বত থাতে আছ্য। ভত্তরে কুণ্ডন্ন মোচন যে হর।। অঙ্গারক কুও তথা অঙ্গারকেশর। তছ্তরে, বিশ্বকর্মেশর লিক্ষরর।। মহাকুণ্ডেশর লিক তাহার দক্ষিণে। ওভোদক নাম কুও আছে বেই স্থানে।। মহাকুঙা দেবী ছথা গড়াক ঈশ্বর। ভাহার দক্ষিণে ভূবনেশ্বর ফ্রব্বর।। ভথাতে ভুবনেখর লিক্সের সংস্থিতি। তাহার দক্ষিণে বিমলেখরের বস্তি ॥ তাহার পশ্চিমে আছে ভুগু আয়তন। শুড়েশ্বর ছাহার দক্ষিণে সংস্থাপন। ভথাতে কলিল ধহা কলিল ঈশ্বর। যজেদক কুণ্ড তথা আছে পুণ্যকর। তাহার প্রক্রিয়ে প্রণবেশ্বর আছর। মৎস্যোদরী উত্তরেতে নাদেশ আলর।। ক্-পিলেশ উত্তরেতে উদ্ধানকেশ্র। **তত্ত্**রে বাক্**লীশ আছে** লিঙ্গবর।। আছরে কৌস্তভেশ্বর তাহার দক্ষিণে। শঙ্কুকর্ণেশ্বর তায় দক্ষিণে আপনে ঞ্চত্তারে অযোরে**শ নিক্ল পরাৎ**পর। **অযোরেশ কুণ্ড আ**ছে তাহার উত্তর লর্লেশ সমনেশার বিজ নেই স্থানে। বর্তাবাস কুপ্ত আছে তাহার দক্ষিণে ক্রাদ্রেশ্বর লিক তথা অভি পুণাকর। তাহার নৈশ্লতে লিক মহালয় বর।। পিভূকুণ্ড নাম ভীর্থ ভাহার পাথে তে। তথা বৈতরণী বাপি পশ্চিম আয়তে বৃহস্পতীশর ক্লন্ত কুণ্ড পশ্চিমেতে। কামেশ্বর লিঙ্গ রুদ্র বাস দক্ষিণেতে। কামকুত মনোহর ভার দক্ষিণেতে। নল কুবেরেশ লিক্ষ কামেশ পুর্বেতে নল কুবরাথা কুণ্ড ভাহার দাক্ষাতে। জ্যোতির্ময় নীল নল কুবর পুর্কেতে সুর্যে।শর চন্দ্রেশর আছে লিক্ষর। অর্চাকেশ লিক্স তার দক্ষিণে নিশ্চর।। সিন্ধের নাম লিক আছে সেই স্থানে। তথাতে মঞ্লেশর লিক বিদ্যমা-নে।। কামদণ্ড পূর্বভাগে আছে চাবনেশ। শুনকেশলিক্ষ তথা আছেন বিশেষ। তাহার পশ্চিমে আছে সন্থ্যারেশ। আছতীশ সেই স্থানে স্পার শনদেশ।। তাহার দক্ষিণে লিক্স পঞ্চ শিবেশ্বর। তৎপশ্চিমে মার্ক-ঙ্কের ফেব মনোহর।। ভচ্তরে আছে লিঙ্গ নাম কুমুমেশর। মার্কণ্ডের জ্ঞৰ পুর্বেষ্ট শান্তিল্য ঈশ্বর।। চণ্ডেশ্বর লিঙ্গ আছে ভাহার পশ্চিমে। কপা-লেশ দক্ষিণে শীকুগুকুগু নামে॥ মহালক্ষ্মীশ্বর লিজ সেই কুঞ্চ কাছে। স্থৰ্গৰায় স্থান দেই বিদিত যে আছে।। গায়ত্ৰীশ সাবিত্ৰীশ ভাহার দক্ষিণে সভাবতীশ্বর ভার পুর্ব সন্ধিধানে।। লক্ষ্মীশ্বর পুর্বের মহালিঞ্গ উত্তোশ্বর। জাহার দক্ষিণে উত্ত কুণ্ড মনোহর॥ করবীবেশ্বর দিঙ্গ সে কুণ্ড পশ্চিমে। মরিচীশ লিককুও বায়ুকোরে ক্রমে॥ তৎপশ্চিমে চন্দ্রকুও লিক চন্দ্রেশর ইত্তেশ দক্ষিণে কর্কট্টক বালিবর।। কর্কটেশ্বর লিঙ্গ তথাতে আছ্য়।

তাহার পশ্চিমে ক্লমি চণ্ডেশ আলম।। তদক্ষিণে ক্লমিকুও অভি পুণ্যকর। তাহার পশ্চিমে লিঙ্গ নাম অগ্নিশ্বর।। ভাহার পুর্বেতে অগ্রিকুও তীর্থবর ভাহার পুর্বেকে লিঙ্গ বাণচন্দ্রেশ্বর।। ভার চারিপাশে গণ লিঞ্গ বহুতর।। ৰাণ্চন্দ কুপ তথা আছে পুণাকর।। ভাছার পুর্বেতে লিজ মন বিশ্বের। বৃদ্ধকালেশ্বর তার পুর্বের পুণ্যকর।। কামোদক নাম কুগু আছে তার কাছে কালেশ দক্ষিণে মৃত্তীশ্বর লিক্স আছে।। দক্ষেশ্বর কালোদক কুণ্ডের উত্তরে দক্ষেশ্বর পুর্বের আছে মহাকালেশ্বরে ॥ মহাকাল কুণ্ড তথা ভীর্থ শ্রেষ্ঠ হয়: ভাহার দক্ষিণে অন্ত কেশব জালয়।। তাহার দক্ষিণে লিক হস্তী পালেশ্বর : ঐরাবত কুণ্ড তথা ঐরাবতেশ্বর।। দক্ষিণে মালতীশ্বর আছেন ভাহার[্]⊀া হস্তীশ উত্তরে জয়স্তীশ্বর সংকার।। মহাকর কুণ্ডের উত্তরে নন্দীশ্বর मम्मीकृष्ट कीर्य कथा चारह शूनाकत्र।। कथा अञ्चतीकृष्ट अञ्चदीश्वतः। ভুঙ্গেশ্বর তৃত্ব কুণ্ড আর বৈদ্যেশ্বর।। হলিকেশ লিক আছে তাহার উত্তরে তৃঙ্গেশ্বর দক্ষিণে আছেন শিবেশ্বরে।। যামন্যীশ্বর নিক্ত শিত্ত্বশালক্ষিণে। ভৈরবেশ লিক্ষকুপ পশ্চিমে যে স্থানে।। বে কুপ পশ্চিমে সিক্ষ আছে। শুকেশ্বর। তাহার নৈথতে ব্যাদেশ্বর লিজবর ॥ ব্যাসকুও মহাজীর্থ আছেন তথাতে। ঘন্টাকৰ হুদব্যাস তীৰ্থ পশ্চিমেতে।। পঞ্চূভাবালি ঘন্টাকৰ সন্নিধানে। পঞ্চুডেশ্বর লিক্তবাছে সেইস্থানে।। পৌরীকৃও তীর্থ তার দক্ষিণে আছয়। পঞ্চতুড় উত্তরে অশোক তীর্থ হয়।। ঘশোক উত্তরে মহাতীর্থ মন্দাকিনী। ততুত্তর মধ্যে ক্ষেত্র মধ্যমেশ পুনি। মধ্যমেশ হৈছে। ক্রোশ ক্রোশ পরিমাণ। চারিদিধে মুক্তিক্ষেত্র শাস্ত্রেতে বাখান।। यধ্য-মেশ দক্ষিণেতে বিশ্ববেদেশ্বর। তার পুর্বের বীতভ্যেশ্বর শুভ কর।। ভাচার, मिक्टिश अक्रवानी अधिकान । अक्रकानी शुम अथा आहर विनामान ॥ आशाह পুর্কেতে আপস্তন্তেশ্বর স্থিতি। ভন্নুত্তরে আপস্তম্ভ কূপ পুণা অতি।। আ ছয়ে শৌনক ক্লদ পশ্চিমে **ভা**হার। শৌনকেশ **লিঙ্গ**ূদ পশ্চিমেতে গার। তাহার দক্ষিণে অধুকেশ যে আছর। ততুত্তরে মাতকেশ আছেন নিশ্চয়। তার বায়,কোণে নানাবিধ লিক আছে। মুনি সবে লিকভাপি তথকা। করেছে।। মাত্তক্ষণ দক্ষিণেতে ব্রহ্মবর্ণেশ্বর। আল্পান্থেশ তথ্য প্রিভূলোক বহুতর।। তত্তকিশে সিদ্ধারুপ লিঙ্গ সিদ্ধেশ্বর। পশ্চিমে ভাহার নিদ্ধবাধী। মনোহর । সিদ্ধকুপ পুর্কো জাছে নাম ব্যাদ্রখর। জ্যেষ্টেখর ভাহার দক্ষিণ্ডে স্থিতকর।। দক্ষিণে ভাহার লিঙ্গ গ্রহ সীতেখর। অন্তরে নিবাদেশ লিজ পুণাকর।। চতুঃসমুদ্র নাবেতে কুপ সেই স্থানে। জ্যেষ্ঠাগোরী সেই স্থানে।

আছেন আপনে।। ব্যাডেশ দক্ষিণে লিক চণ্ডীশ্বর নাম। ভচ্নত্তরে খণ্ড-পতি कुक्ष विद्यामान ॥ योशीयर्क खर्चा ख्या योशी यदस्य । छाहात পশ্চিমে দেবলেশর সুন্দর।। শভকালেশর লিঞ্চ ভাহার নিকটে। তাহার ্দক্ষিণে সাভাভপেশ্বর বটে।। **হেভুকেশ ভাইার দক্ষিণে বিরাজয়**। অক্ষ शारमधेत जात प्रक्रिटगट**छ तथा। जमरकार कर्नाटमण कर्नाम** वाशिका। ভুতিখর তাহার দকিণে সংস্থাপিকা 🛊 অতিহন আঘাট্রাখর পশ্চিমে তাহার তৎপুর্কে তুর্কাদেশর লিঙ্গ চমৎকার।। ভার্ভুতেশর লিঙ্গ তাহার দক্ষিণে वारित्यतं शुर्वतं भव्य निथिष्ठ द्वांभरम् ॥ भरव्ययतं चार्ष्ट ष्ट्या निथिर्वण আর। তেজপাঞ্জ ছুই লিঙ্গ অভি চমৎকার।। অবধৃতেশ্বর লিঙ্গ ভাহার ঈশানে। অবধুত কুণ্ড মহাতীর্থ সেই স্থানে।। পশুপতীশ্বর লিজ তাহার পুর্কেছে। রোভিলেশ নাম নিঙ্গ ভার দক্ষিণেতে।। জীমূতবাছনেশ্বর পশ্চিমে তাহার। পঞ্চনদে মনুখার্দ্ধেশ্বর লিঞ্চ জার !৷ গভস্কীশ লিঞ্চ তথা আছে ওভকর। তছুত্তরে দধি কম্প কুপ মনোহর॥ দধিকম্পেশ্রর গভস্তীশ উত্তরেতে। মনলা গৌরী যে গভন্তীশ দক্ষিণেতে।। মুখপ্রেকেশ্বর লিঞ্চ **७**वा विनामान । ততুত্তরে আছে মুখ্পেকণার স্থান । সর্ব্ব সিচি করি দেবী শঙ্গনা দশ্বরৈ। নফ্রীশ্বর বৃত্তেশ্বর মুখ প্রেক্ষোত্তরে। তত্ত্তরে চর্চ্চিকা গৌরীয় काम धरतः। ठिक्किकार्धा द्वयरखन आर्ष्ट् निजयरतः।। श्रेक्षनरमध्यतं निक्र ছদত্রে স্থাপিত। মঙ্গলোদক কুপ ভার পশ্চিমে বিস্তৃত।। উপমন্ত্র মহা-লিক্স আছে নেই ধামে। ব্যায়পাদেশ্বর লিক্স ভাহার পশ্চিমে।। গভস্তীশ নৈশ্বতাংশে শূলাক্ষেশ আর। চৈত্রবেশ্বর লিঙ্গ পশ্চিমে ভাহার।। জৈমিনীশ রেবত্তেশ পশ্চিমে সুন্দর। নানা ঋষি স্থাপিত অনেক লিজবর ফৈমিনীশ বায়ব্যেতে রীবনেশ হয়। ভদ্দকিণ বরাহেশ লিঞ্জভকর।। সাথ্যবাবেশ্ব লিজ ভাহার দক্ষিণে। প্রচণ্ডেশ মহালিক্স-ভদ্যক্ষিণ স্থানে। ডফাক্ষণে আপনে আছেন থোগেশর। ভচ্চজ্যিণে বাভেশর অভি মনো-র্ব।। যোগেরর অত্যেতে সোমেশ গুণ্যকর। কনকেশ তাহার নৈয়তে স্থিতি কর।। ভত্তরে পঞ্চলঙ্গ পাণ্ডব খাপিত। তদর্গ্রেতে সমুক্তেশ লিঞ্চ চমকিত।। তৎ পশ্চিমে গেতেগর লিঞ্চ মনোহর। তৎপশ্চিমে কণশেষ লিন স্থিলিকর। তছজরে মহালিংগ চিত্রগুরেগুম্বর। তাহার পশ্চিমে দুড়ে-यत निभवत्।। कलरम्य मिक्करगर्क निक अर्ध्यत्। यमरह्यं विजयश পশ্চিমে স্কুমর। বাসদেবেশ্বর লিক উত্তরে উদয়। প্রহেশ্বর দক্ষিণ ভাগে-তে স্থিত হয়। কমলীশভর লিঙ্গ দক্ষিণে ভাহার। ভতুররে পতিবেশ

लिक ठमरकात ॥ जतारदत्रचत लिक उपहरू जाहर । जारहिस् अधिदेव शाश्मार्भम जालय । निर्कातम चाहाव से म्हिस निवनका छाहा নৈথতে লিজ পিতামহেশর।। প্রিতামহ ঝোড়িকা মানেতে ভীর্থ তথা कष्टिकार्ग वक्रद्रभम विक करिकेछि।। कारात मिकिर्ग मिक मांग वाराधत ক্যান্দেশ পিতামহ ভ্রোতের অন্তর। স্বাছরে রাক্ষ্যেশ্ব তাহার পূর্বেছে গক্ষেশ্বর নামলিংগ তার দক্ষিণেতে ৷ তত্ত্তেরে নিন্দগেশ লিংগ বহু আরু বৈবশ্বেভেশ্বর লিংগ তথা চমৎকার। ঈ্যাশুদেশরলিংগ তার দক্ষিণেতে। অভিশয় মনোহর ছাত্তেন রাক্ষাতে।। ব্রক্ষেধ্র ভার অগ্রে পর্জ্জপেনকর্ষে তার পর্বে নছশেষ আছমে নিশেষে। বিশালকৌথর লিংগ্ন বিশালকৌ তথা। অরাসম্বেশ্বর লিংগ ভতক্ষিণে ক্বিতা। ছিরণাক্ষেশ্বর লিংগভদত্ত আছর। তাহার পশ্চিমে গ্রাধীশ্বর আলম।। ভূগীরখেশ্বর নিংশ তাহার পশ্চিমে। खत्कम পশ্চিমে তথা দিলিপেশ নামে। তথাতে দিলিপকুও ভীর্থ অনুভ্রম বিলা। বসু স্থাপিত লিজেশ্বর নে আঞাম।। মুখেশ্বর পুর্বে ভার লিক্ষের প্রবর। ভাহার দক্ষিণে আছেন যে বিধীশ্বর।। বাজিদেধে পুর লিংগ তাহার দক্ষিণে। ছশাশ্বমেধিক ভীর্থ আছে সেই স্থানে।। ভত্ত দ্ধরে মাত তীর্থ অতি পুণাধান। ভবকুণ্ড দক্ষে পুষ্পদক্ষেমর নাম। তদ্ধি কোণেতে দেবঋষি লিংগ যক। ভূপানস্ত দক্ষিণেতে নিদ্ধীশন স্থিত। হক্ষি ক্ষুসেরলিংগভাছে সেই স্থানে। তৎপক্ষিমে নৈশ্বতেশ লিঙ্গের সংখ্যানে ভাছার দক্ষিণে লিংগ আভিরসেশ্র। ভদ্দক্ষিণে কেদারেশ দক্ষিণে চঞ্জ সূৰ্ব্যবংশি যত। যে সকল প্ৰতিষ্ঠিত লিংগ আছে কত।। নুৰ্ব্যাসা পুরক গণ লোলার্ক দক্ষিণে। ভাষার পশ্চিমে কবন্ধেশুর ত্রানে। ভাষার পশ্চিমে মহা তুর্গার বসন্তি। ভদ্দিদেশে শুকেশুর লিগেংর শংস্থিতি। ভাহার প্রক্রি মে জনকেশ্র প্রকাশ। ভছ্তরে শস্কু কর্ণ লিগেংর নিবার । ভাছার পুর্বে-তে লিংগ মহাসিদ্ধীশ্বর। সিন্তিকুণ্ড তীর্থ তথা অতি পুণাকর । শদ্ধ্ কর্ণ বার ব্যেতে বায়বোশ স্থিতি। তদত্রেতে বিভাওেশ বিলেংর বস্তি। তত্ত্তরে करहार्टिम बिश्वमरमाहत । घारतम्बन्धिशयथा घारतमी सुन्ततः ॥ त्रहेन्द्र रव ক্ষেত্র রক্ষিণগরভাতক্র। হরিদীশ্র লিংগ তথা কাজ্যায়নেশুরের বসতি। তা-श्रात शिक्त मुकू हि शृत मश्यिक । मुकू हिंग कुछ छथा छी दर्शत छात्रास्त শৃত্যুহুত্যার্থি জিগেংর যেই স্থান ৷ তাহার দৃক্ষিণে অদিতীশুর সংস্থিতি ভাহার সাক্ষাতে শতেশুরের বস্তি। ভাহার দক্ষিণে রজেশ্র লিংগবর । বেই স্থানে 😘 লিংগ নাম সভীশুর 🛚 ছচ্ডরে বছলিংগ লোকপালেশুর।

পর্মী গন্ধর্ম যক্ষ অভরা কিন্নর'।। কেবখাবি স্থাপিত যে লিংগ বছতর। সক্রেশ দক্ষিণে কাপ্তণেশ মনোইর।। মহা শশুপতেখন তাহার দক্ষিণে। ज्ञसूक्षेण कोश्रतः शक्तिम व्यविकीटन ॥ केष्ट्रेस्टित क्रिशादिशम निःश मटनाइत। नाश्नानीम निश्न ভात भूटर्स প্রভাকার।। नकूरनम कशिटनम कथा निश्न-স্কন্ধ। প্রতিকেশ লিংগ ভার নিকটে আভির ।। শুভোদক বাপীতথা ভাছে বিদাষানে। তাহার পশ্চিমে দগুপাণি বনিধানে। তার পুর্ব দক্ষিণ উত্তরে লিংগ্রের। ভারে শকালেশ শিলা দিশ নাম হয়।। অবিমুক্তেশর পারে আছে মোক্ষেত্র। তাহার উত্তরে বরুণেশ লিংগ বর ।। তার পুর্বের স্বর্ণকেশ উত্তরে জানেশ। তথাতে সৌভাগ্য গৌরী আছেন বিশেষ।। বিশেষ দক্ষিন ভাগে নিকুল্ডেশ স্থান। ক্ষেত্র ক্ষেমকর গণপতি অধিষ্ঠান।। নিকুছেশ দক্ষিণেতে বিরুপ্তকেষর। তত্তকিণে শুকেষর লিংগের প্রবর্যা দেবজানী-ষর লিংগ ছাহার উত্তরে। ওকেধর অগ্রে কচেধর লিংগবরে।। ওকে কুপ সহাতীর্থ জাটছ সৈ ধামে। ভবানী ঈশানে ছুই শুজেশ পশ্চিমে।। শুজে-শ্বর পুর্বেক কনকেশর আলয়। মন্তানদৌর্থর লিংগ সেই স্থানে হয়।। ভার श्रुट्स महामिश्त शर्मश्र माम। नटक्रश्त निश्ते छथे। महाभाभ क्रम् ॥ त्रहे স্থানে লিং আছে ত্রিপুরান্তক নাম। ভাহার দক্ষিণে দন্তা ত্রিয়েখর ধাম।। দক্ষিণেতে গোকর্ণেশ হরিকেশেশর। তথাতে গোকর্ণ হরিকেশ সরোবর।। ভাহার ওশ্চিমে লিংগ নামে ধ্রুবেশর। ভদত্রেতে ধ্রুবকুণ্ড অতি পুণ্যকর।। প্রিশাচেশ ভছত্তরে ত্রিপিশ তথাতে। তত্তকিলৈ পিতৃকুও জাছেন সাক্ষা-তে॥ ধ্রুবেসাত্রে ভারেরর সেই বৈদানাথে। মনুপ্রতিষ্ঠিত লিংগ নৈৠভ তথাতে।। প্রিরত্ততেখন লিংগ তারে।» **অপ্রেভে । স্বচুকুন্দেখন লিংগ তার** দক্ষিণেতে। গৌতমেশ লিংগ আছে পাদেতে তাহার। ডালেখর নান লিংগ জৎপশ্চিমে আর।। কাশীর উত্তর ভার্বে শিবপ্রিস্ন ধাম। তথা তেঁহ পঞ্চ-গৃহে করেন বিশ্রাম। সুদা সেই স্থানে মুম আছুরে বস্তি। ছেন আনি যার পাপ লিপ্ত নহে লভি।। সভ্য সভ্য সভ্য ত্রেয় মহাদেবে ভাবে। মম পদ ইক্ছা যদি থাকয়ে দেবিবে।। শীঘ্র করি যাইবেক মম কাশীপুরে। লিংগে র উদ্দেশ যাত্র কহিল বিস্তারে।। ছুই ভিন বার লিংগ স্থাপিয়াছে কভি। পুনঃ পুনঃ তাহার যে নাহিক আখ্যাতি॥ ভক্তি করি সকল প্রজিবে আদে-निष्ठ। इंशांट जनाथा नाहि इत्य जावहिन।। यन इंग्डि जिल्लकुछ वांशी कुण जारि। अञ्चाकति नकरल कतिर्धि जारिविधि।। अनव मर्नरन स्नारन कल ্পরাৎপর। কাশীপুরে লিংগ বাপী কুপ সরোবর॥ মুর্স্তি যত ইতি শঙ্কা

ক শীখন্ত।

কে করিতে পারে। আনন্দ কানন গত তুণ ব্রেষ্ঠতরে।। স্থান্থাত বেশ্বর্থ কৃ।তুলা নর। সর্বতীর্থ অন্মভূমি কাশীলিক ময়। মুম প্রিয় ছমানেরী তপোবলে ভূমি। স্বভাৰতঃ কাশী যথা বিজ্ঞানের ভূমি॥ সদামোদি হয়। काभी नामनत्र (य) ऋष नम्मीभाधा विभारशत सम (म। मिष्ट छक स्वरक যে মোক জান ভারে। ভক্তিভাবে কাশীপুরে যেবা বাস করে।। সুরান্তর নর নাগ ভূমি ভাব তরে। চরম বয়সে কাশীবাস যেবা করে।। অনাত্র निवानी विक व्यक्ति भरायन। कामीवानी अद्यादकर ना इस जनन।। नर्स-**छीर्थ तहना अधामा** श्रृयामम् । श्रीन कामी मर्शरनंत श्रुयालां उस्त ॥ श्रीकिः पिन প্রাতঃকালে পাঠ করে যে। সর্ব **তীর্ম দ**র্শনের কল লভে মে।। সর্ব্ব-লিঙ্গ কথা এই অধায় পঠর। যম যমপুত হতে তার নাহি ভর॥ আনাতে যাহার ভক্তি পঠিবে অধ্যায়। সর্ববিধি আ্চরণ ফল সেই পায়।। কাশী-ল্লিক বলি নাম সভত পঠিৱে। নিশ্বক মাহিক গঠে কভু নাহি দিৱে।। ব্ৰহ্মবধ আদি যত পাতক সঞ্চয়। অধ্যায় পঠনে সৰ্ব্ধ পাতক সংক্ষয়। পুঞ্জ পৌজ ধন ধানা আদি অভিলাব। পঠিয়া অধ্যায় হবে মন্পদের বাস।। ट्रिकी स्थारन एक देखि वातक कहिए । जावक आणिया नेकी मध्यो मध्यो निकास मन्द्रित निर्माण अटल देशक ममालन। सूत्रक रहेमा तथ देशक व्यक्तिमन् **प्रतिका नकरल (इश) अंतिया मिलिएह। श्रक्तक वाहरन विकुष्ठा**रत भार्खा-ইছে।। মুনিগণ সঙ্গে তব অবসর দেখে। চতুদ্দ শ লোক বাসী আদিছে ক্রৌভুকে।। জন্য তব প্রবেশিক উৎসব শুনিরা। সুরাসুর নরগণ মিলিত আনিয়া।। ক্ষম বলে কহি শুন লোপামুক্তা প্রতি। শুনিয়া নক্ষীর বাক্য দেব পশুপতি।। দেবী নঙ্গে দিবা রংখ করি আরোহণ ৮ ত্রিপিইল ক্ষেত্র হতে করিল গমনুনা অন্নিকা নিবানী নীকানাথ বসুদ্বিত। কাশীবভ ভাষা कति कतिल व्यकामा। जनानम भःदश् तःश हरेल. छेनहाँ। नय नदछी অধার সংগ তাতে হয় ॥

्रव्यथ तक्ष्मराख इत्रशास्त्रकोत् गमन।

পরার। ব্যাসদের স্থত স্থানে বলিল বচন। রংগমণ্ডে সদাশি বিপ্র-লেন তৎক্ষণ। অগন্তঃ প্রণাম করি কার্তিকে বলিল। রংগমণ্ডে মহাদের ক্রিকর্ম করিল।। বিশেষ করিয়া মোরে কছ যভানন। অপূর্ব জাখ্যায়

श्राप्ति कर्त्रिय ध्रवंगा। क्लिक कट्टम खन यूनि कटलाधन। खनिरन ज्ञानूक कर्शा शाश विरंगातम् ॥ देवज्ञमात्र सङ्कशक विश्व जरमानभी । मन्मत इहेटक भिव आंत्रित्यम कामी ।। देशार्ष्ठचरत शिकि भिव मुख्यिम ७ देवल । **ए**डिमन দৈখি তবে তথাতে টলিল।। কার্ত্তিকের শুক্লপক্ষ প্রতিপদ ভিথি। বুধবার সঞ্জাত ভারাশুদ্ধি অভি। উল্লেখ্যনে গ্রহণৰ খাকে সেই দিনে। মহা-मकी महारमय मध्येश शमरन।। इतरशीती भरता खना विकू रमवशन। মহর্ষি দেবর্ষি বৃত আর মুনিগণ।। পাতাল হইতে নাগ সকল আসিল। গদ্ধরি অপুসরাগণ আসিয়া মিলিল। বিদ্যাধরে পান বর্ণা সভত কর্ব। অপ্রা ইত্যাদি সবে চামর তুলায়।। স্বর্গ মন্ত্র পাতালাদি সকল মিলিল। মহাদেব অভিষেক দেখি**তে আ**দিল। পারিকাত মলা কেং দিল শিব অংগে। অগোর চন্দন সবে দিল মানারংগে ।। তুগন্ধি যে ধূপ দিল ওগুল খালিয়া। নানা খাতি পুস্স দিল আনন্দিত হৈয়া।। মৃত্তিমণ্ডে ধ্বৰ স্কার পভাকা উড়র। শ্বেত নীল রক্তবর্ণে অতি শোভা পার।। স্বর্ণকুম্ভ গৃহছারে कें कि सरभाजमा मश्तनां हत्व करत कूल धुराय ।। कामी भूरत हिरह शुटह आ-মন্দ অপার। নৃত্য গীভ বাদাধনি বাদ্যোদ্য দ আর ॥ মুক্তি মণ্ডে গৌরী সহ শক্ষর বসিল। কার্ত্তিক 'গণেশ আর গণেতে ঘেরিল।। এক্ষা স্নাসি ं जनभद्र व्यक्तिसंक करत्। मकरण क्रेन मध बामन मानद्र ॥ उन्ना विकृ ্নের স্ব কার্ত্তিক গণেশা নন্দি আদি গণ যত ঋষি যে অশেষ 🕫 মুনি ঋষি ভপস্বী যে যতেক আছিল। গশ্বৰ্ক কিন্তুর সৰ একত্র মিলিল।। সকলেতে মনোমত শিব পুজা কৈল। ভদপরে নারায়ণে মহেশ কহিল।। দেব সক-লেতে তুমি মম প্রিয় অভি। তব আকিঞ্চনে হৈল সম কাশী স্থিভি॥ দিবদার্লৈ রাজ্যুচ্যুত যম পদ দিলে। মন্দর ছইতে তুমি আলাকে আমিলে वत लश्नातात्र यथा हैका इत्र । अहारमध्य विकू करह कतित्र। विनन्त्र ॥ অনাবর নাহি চাই শুন খুলপাণি। তোমাতে অচন ভক্তি এই মম দাণী। শস্কর কচেন বিক্ষো শুনহ বচন । इति হর এক বস্তু ভ্রমে ভিন্ন কন।। তব পূজা বিমে যেবা মম পূজা করে। বিক্ল হইবে পূজা কহিল ভোমারে এইক্সে বছবিধ বিষ্ণুকে বলিল। তদপরে মহাদেক অন্য যে কহিল।। काभी नम जना शान गारि जिस्ता । देक्लांग बद्देशको भन्न अखि द्रवा शान পকিণাংশে মুজিমণ্ড অভি সুণ্যকর। নিষেবার্ক বাব হল আহয়ে বিশ্বর H মণিকণি স্নাদ করি দেখে বিশ্বশ্বরে । পুনর্কারপপ্তবাদ মাহিক আহার ।। अपेरे क्या मान त्यवा चिक कति करता। जमा चान देशक कारिश्व कन

-भरत ॥ खिवराचि छानदि धरे मुख्यियक एतः। कुक्रू वे मक्का बाचि इत्रहेन विभाग ॥ जमभरत राष्ट्रस्य करत निरंत्रका। क्यांक कृत्य हेम ए वस्य हिन ल्यां हुन । दारानाथ बदन विद्यां कर अवधान । महोनम्ह अक बिस गमा भीन কান। কুকর্মেকে মতি সদা হয় ছুরাচার। পর ক্রীলক্ষেতে রড থাকে আনিবার।। তাহার হইল ডুই পূজ মন্দমতি। কাশীপুরে জানি পরে করিন ল বসতি।। দ্বিন্ধ যে:কপটুবেশে কল্পে ব্যৱহার।কপালেকে দীর্ঘ ফ্রেড্রি শুল বস্ত্র আর্ব। বৈক্ষণ সভাকে যদি যায় দে তাক্ষণ। ভাষার সভের সভ करत जानार्थम । रेगव गांक चारन खिल- रच कारनर यात्र । रगरे सफ्र রাবহার করমে তথার। এই বাপে বছকাল কাশীপুরে থাকে। ভগ্ত রূপ তপ্যাদি করেন ঘনেকে। পর্বত হইতে এক চঙাল স্থাদিক। অর্থ কিছু जरक कृति कांभी शारविषक !! खाक्कारक छार्च बांम विव मरम कृति । माँ१-कर्नि घाटके शक्ति कतित अव्यक्ति ।। वस् अक विकाशन काष्ट्राव क्या है। हश्कान যাইরা সব ত্রাক্ষণে কুধার।। মম স্থাবে অর্থ কিছু আছে তিজপণ। তোনা সকলেতে তাহা করি সমর্পণ । ১৩খালের হেন বাক্য শুনিয়া শকলে। ভঞ তপস্থীর তরে দেখাইয়া দিলে।। তদপরে মহানন্দ ছিলে প্রণমিল। অর্থ किছू व ७ वित क्खांन वित्रता। क्खांत्वत कथा छनि महामण चिक। अर्थ · লোভে যোগভন্ন করিল অব্যাক্ষ । দ্বিজ বংগ, কত ধন কছত সন্থর । চ**ণ্ডাল**া বলেন যত চাহ ভিজবর ।। পরিপূর্ণ খন দিব করহ গ্রহণ। শুনি মহানক্ষ জিজ জানিস্তি মন।। কপট বচন ছিল্প বলিল ডডকণ। জনত হইকে কল মোরে দিলে দান।। প্রতিগ্রহ আমি নাহি করি কোনকালে। আইশ তপোধন আমি লইব যেবলে।।-ফুশবারি পুত্প আদি লইল ততক্ষণ। উৎ-गर्शित चौका गव कृतिन तुष्ठम ॥ क्षप्नत अभूना भन **४%**।न स्व भिन। मोनः করাইয়া সর আপুনি লইল। মহানদে দান করি চণ্ডাল সভর। নিকা-লয়ে চলি গেল হর্ষিত জন্তর।। চপ্তালের দান লইয়া ভূস্ট ভিজবর। স্বগ্ন ११८७ धन नासः (शत्नन उद्भात ।। ८५वि महानम विक कानीवामी यकः। চণ্ডালের দান কথা বলেন সক্ষত।। কোন স্থানে দ্বিজ্বর ভিন্তিতে না পারে কাক ভরে পেচক যে না হয় বাহিরে।। তদপরে মহানন্ম ন্ত্রী পুত্র লইয়া। कामी कांश कति श्रम निम्मिक इहेग्रा ।। कक्रमुद्र कामी बाजी इ**हेग** प्रसंसी ভাষার সঙ্গেতে দ্বিজ করিল প্রমন।। এক দিন পুথি মধ্যে ভূষ্ট জাসি মিজে व्यर्थ लाटक क्लांटित कानित जकरता।। धन रेलग्ना श्रानम्थ कटन व्यवस्थान। নেই বিক্স মৃত্যুকালে চিভিন্ন মহেশ।। পর স্ত্রীতে ব্যবহার ডথ্যযোগ করে

ভিতীর বে চপ্তালের দানপ্রহ পরে। অধিকন্ত চারিজন অপমৃত্যু হৈল।
তেকারণে কুরুটের থানি যে পাইল।। মৃত্যুকালে বিশেষরে মানস করিল
আনারাসে চারিজন জাতিশার হৈল।। কতদিন এই রপে গভ হৈরা যায়।
কাশী দর্শনের যাত্রী আসিল তথার।। মহনামধ্যে আনিল কুরুট চারিজন
এই সঙ্গে গেলে কাশী হবে দরশন।। পরদিন যাত্রী সঙ্গে কুরুট চলিল।
ক্রমে কাশীপুরে যকলে আসিল।। যথা বাস যাত্রীগণ করে নিরন্তর
কুরুট তথাতে থাকে শুনহ সম্বর।। দিনান্তেতে থাদ্য বস্তু যাত্রীগণ দের।
ভাহাই ভক্ষিয়া চারি প্রাণ যে রাধ্য়।। এই মতে বছকাল যাইল তথার।
ভাসপরে যাত্রীগণ নিজালর যায়।। চারিজন কুরুট রহিল কাশীপুরী।
ভাবশেষ প্রাণ্ড্যাগ অবিমুক্তে করি।। কুরুটেরা তেজারূপ করিয়া ধারণ।
মুক্তিমণ্ডে এই লিজে হবে প্রকেশন।। অভএব শুন বিফো কথা ভবিষ্যতি।
থকারণে কুরুর্দ্ধ মণ্ডপ হবে খ্যাভি।। মুক্তিমণ্ডে মহাদেহ অভিযেক কথা
শুনিলে জীবের মুক্তি হইবে সর্ক্যা।। সর্ক পাপে সেই জীব হয় বিমোচন
জনায়াসে থারাণ্ডী করিবে দর্শন।। কাশীনাথ পদ মম সন্ত চিন্তন। অই
নবভি অধ্যায় হৈল স্মাপ্র।।

পারা। থড়ানন তদন্তরে জগস্তো বলিল। মুক্তিমণ্ড হঘে শিব রঙ্গ মণ্ডে গেল।। তাহার বিশেষ শুন মুনি তপোধন। একা বিঞ্ আমি আর সব দেবগণ।। গণেশাদি নিদ্দিগণ মুনি ঋষি যত। সকলে চলিল সঙ্গে হৈয়া আনন্দিত।। রঙ্গমণ্ডে শিব আসি পুর্মমুখে বসি। বেন্তিত সকলদেব বন্দে সব ঋষি।। স্তব করে একা বিঞ্ আদি দেবগণ। চামর ঢুলায় কেহ দেয়ত চন্দন। জকস্মাৎ মহাজোতি পাতাল হইতে। শিব সন্নিধানে তেজ দেখ আচমিতে।। মহাদেব তদপরে বলে নারায়ণে। জ্যোতিরূপ শিবলিঞ্গ দেখহ নয়নে।। পরাৎপর জ্যোতি হয় সর্ম্ব লিজ সার। বিশ্বরূপ মুর্ত্তি মম শুনহ বিস্তার।। পশুপতি সিল্ক হয় এই লিজ পুজি। জিতেক্রিয় শুদ্ধজান সর্ম ছংখ ত্যেজি।। সেই যোগী হয় তবে শরীর নির্ম্বল। নিজা পঞ্চ উর্জ্ব-রেতা হয়ত সকল।। জিত ক্রোধ হৈয়া যোগী মুক্তিপদ পার। শিবের স্বর্মপ ধরি শিব স্থানে যায়।। আর কহি শুন বিষ্টো ত্রই জ্যোতির্ময়। এক্রযার পুজিলেহ জন্ম নাহি হয়।। পুজা দিয়া পুজা যেবা করেন সন্থর। রাজসুয় ফল প্রাপ্ত হয় সেই নর।। বন্ত্রপুত জল দিয়া এই লিজ পুকো। লক্ষ্ স্নালে হয় ভার পাপ বিমোচন।। পঞ্চামূত দিয়া পূজা করে লিকরাকে 🛦 পুরুষার্থ চতুর্চন কল পায় শেবে।। কপুরের বর্ত্তি দিয়া দীপ দান করে। কপুরি সুগন্ধ দেছ হয় তার পরে।। নৈবিদ্য প্রদান পুরুষ করেন সাধক্ 🌬 কৈলাসেতে সুখভোগ হয় অপারক। বিশ্বেশ্বর লিঙ্গ যেবা করয়ে পুজনে। হৈ লোক্য পুঞ্জিত হয় বন্দে শিবগণে।। ঘণীবাদ্য যেইজনে শিব স্থানে করে। আমার স্থীপে বাস হয় নিরস্তরে। জিল্লাতে ৰলয়ে ভক্তিকরি বিশ্বেগর। সংসার জাতনা হৈতে মুক্ত কলেবর । বিশ্বেশ্বর দেখি নর মরে স্থানান্তরে। জন্মান্তরে মোক লাভ কে যভিতে পাৰে।। বিধেশর লিজ্ तिथि व्हें बुक्त वृक्ष । नकी काकि श्रेन मरत बक्तमा क्रम्य । दिनका विरुग्ध বিশ্বনার্থ জপ করে। সেই জনে সদা খাকি নিয়ত অন্তরে।। দেবতা সকলে শুন অবশেষ কহি। ত্রিভুবনে বিশ্বেশ্বর সম লিজ নাহি॥ তীর্থমধ্যে মনি-কৰি ছাতি শ্ৰেষ্ঠ হয়। বন্মধ্যে জানন্দ কানন শ্ৰেষ্ঠ কয়।। বালাগনী মেত্ৰ-মধ্যে সব লিক্ষমর। তাহার মধ্যে অতি স্ক্রম মণিকর্ণি হয়।। রাজবানি কাশীক্ষেত্র মম প্রিয় বার। তার মধ্যে রঞ্গৃহ অভি চমৎকার।। রঞ্জ মঞ্জ मिकिर्गिट श्रेन निक्रिंग। मञ्जूष इस्त्रिक स्थान ब्रोका रून ॥ वामिन्रिया শতশ্বর হস্ত পরিমাণ। কাশীমধ্যে রাজগৃহ হয় এই স্থান। মণিকর্ণি পরি-মাণ। কাশীমধ্যে রাজগৃহ হয় এই স্থ,ন।। মণিকর্নি পরিমাণকহি শুন আর । পঞ্চনত হস্তদীয়ে সর্বস্থান সার ।। সপ্ত পাতাল ভেদিয়া বিশ্বেশ্বর আসি। লিঙ্গ ৰূপে বিরা**জিত দেই** বারাণসী॥ এই লিঙ্গ যেবাজনে জন্য ভাব করে। গর্ভ্রাস নিবারণ মাহি ছার তরে।। নিজ প্রির দ্রব্য ২দি। দের বিশ্বেষ্ণরে। ইহ্ফালে পাপনাশি মুক্ত কলেববে। দূরে থাফি বিশ্বেষ্ণরে মানসে যে পুজে। পরজম্মে রাস্ক্রকরে নেবতা সমাজে। তেলা তিকু সেবগণ শুনহ বচন। বিশ্বেশ্বর পুজা ফল বছবিধ হন।। শুদ্ধনক্ত উপাজ্জন ধনে পুজা করে। নির্মাণ ভাহার হয় কে খণ্ডিতে পারে । মণিকর্ণি পঞ্চকোশী আর বিশেষর। গাই ত্রয় বহুবিধ পাপ নাশকর। তদপরে নৌরীবছ দেব শূলপাণি। জ্যোতিলিক্তে প্রবেশন করিল আপনি।। জয় জয় শক্ত করে যত रम्यभागा शटारङ भारतम गरव यात रा **जूवन। का**म वर्ट जगरा दिन खनह বচন। ক্ষেত্রের মাহাত্ম সব করিলে শ্রবণ।। যথাসাধ্য তব স্থানে সার যে विलिल । তব আগমনে মুনি ভব মুক্তি হৈল ॥ তদপরে সুর্বাদেব অস্ত হৈরী যায়। কার্ত্তিকেয় মৌনী হৈয়া রহিল তথায়।। ব্যাস বলে শুন স্থত অপুর্ত্তি कथन। लाभाष्ट्रजा मह ७८५ धूमि उद्यापन।। यङ्गितम अगाम किहा

वस्त्रतः। वस्ता नाधनाटक प्रति श्राटन नस्त्र।। निक्धान निकः नर्क्षमत्र। काणीवाटन कित्राटक निर्काण लक्तः।। नवनवकी क्यात्र कथा कि भरताहतः। नीकामाथ वक्त्वाटक यथामकि श्रतः। नमाश्च क्यात्र देशल कनः सायुक्तमः। खन्नानम् श्राटन विश्व एत्र मिटन विद्या।।

रेकि नवनवछी अधाप्त नमाशः।

भन्नात । युक् करह वर्षन द्धारम भरत अगमित्रा। जुलि देशल कामी-<mark>খিশু প্রবণ করিয়া। কাশীর মাহার্ম অনুক্রমনি অ</mark>ধ্যায়। বিস্তারিয়া কহ প্রভু পূর্ব যাছে পার।। বাদে বলে ওন স্থত স্থির করি মন। জাতুকর্ব শুক্ আ্দিকরহ ক্রবণ। কাশীর মাহাত্ম জন্মুক্রমনি অধ্যায়। কহিতেছে শুনি-লে পাতক কর পার।। বিশ্বঃ নারদের কথা প্রথম অধ্যার। সভালোক মহিশা বিজীয়াতে **ভায়।। ভূজীরেতে অগস্তা** স্থানে দেব স্থাগমন। প্রতি-জ্ঞভা চরিত্র ভবপরেতে ধর্ণনা। জনপরে কাশী হৈতে অগন্তা প্রস্থান। তৎপরে ঠার্থের প্রশংশা অভিগান।। সপ্তপুরী বর্ণন কহিছে তার পরে। ভদপরে যমপুরী নিকপণ করে।। তদস্তরে মুর্ধালোক অপুর্ব বর্ণন। ইন্ত্র অগ্নিলোকে শিব শর্মার সমন।। অগ্নি উৎপত্তি কথা কংখ তার পরে। নৈথাত বরুণোপ্তর বলে তদন্তরে।। গন্ধবতী অলকা পতির অন্ম কা। তিতঃ-পরে চন্দ্রনোক সংবাদ যে গাঁথা॥ উজুলোক অমন্তরে শুক্র সমুদ্রব। কুজ 🤏 🛪 শনি লোক বর্ণনা এ শব।। সপ্তথায়ি লোক কথা দ্রুব তপ পরে। দ্রুব পদপ্রব লোক হিতি অনয়রে।। <mark>পরে শিবশর্মা সত্যলোক দর্গন। চতু-</mark> পূজি অভিবেক ভদমু বর্ণন।। শিবশর্ম্মা নির্দ্ধাণ বর্ণন তার পরে। কন্দ অগ-স্থিক কথা নর্ণে তদপরে।। মণিকণি সমুদ্ভব তদস্তরে অভি। গঙ্গার মহিমা পরে দশহরা স্তম্ভি। গঙ্গা আবিভাব পরে নাম সহত্রেক। বারাণসী প্রশং সন ডদতু সম্যক্ষ। ভৈরবের আবিজাব ভদতু বর্ণন। দণ্ডপাণি জন্ম জান-বাপী বিবরণ । কলাবতী কথা সদাচার নিত্রপণ। জাশ্রম ধর্মের যন্ত ইতি বিবরণ। এক্ষাসরি প্রকরণ স্ত্রীলক্ষ্ণ পরে। কুভ্যাক্সন্ত্য প্রকরণ কছে জন-স্তরে। তৎ পরেতে বর্ণিয়াছে অবিমুক্তেণর। গৃহস্থাশ্রম বর্ণন জাছে তদ-ৰ্ম্বর।। যোগ নিৰূপণ কাল জ্ঞান তার পরে। দিবোদান রাজার বর্ণন জ্ঞান স্তরে।। কাশীর বর্গন পরে যোগিনী বর্গন। উত্তরার্ক লোলার্কের ডালু क्षम।। क्रभाषिका जःमन माद्याषिका कथा। वक्रशांक शक्रदक्ष विवतन

ভথা।। দশাখনেধিক কথা কৰে তাম পত্রে। মন্দর হইতেরিণ আগমন করে।। পিশাচ মোচন কথা গণেশ প্রেরণ। মারাগরপতি আদি চুঞ্জি विवद्रभा विकू मात्रा व्यवश्रम कम्मूकथ्म। कम्भटत पिरवामाम ब्रामा दिद्र-च्छ न।। ভার পরে পঞ্চনদ উৎপত্তি কংস। ভদ্তরেই বিদ্দন্ধিবাদ্ভব সংসন।। তদত্ব বৈষ্ণব ভীৰ্মাছাত্ম বৰ্ণন। মক্ষর হইতে রুষ্ণাক্ষ আগমন জোর্চস্থানে যোগী স্বা সহেশ সংখাদ। ক্ষেত্রের রহস্য কথা পরে অভুবাদ কলুকেশ ব্যাভেগর কথা ভার পরে। শৈলেশ্বর রড়েশ্বর দর্শন অস্করে।। ক্ষতিবাস সমূৎপত্তি আগমনিগম। দেব অধিষ্ঠান মুর্গান্তর প্রাক্রম। চুর্গার विकास व्यनदिक्षत वर्गन । व्यनव माहापा अमूहव विद्याहन ॥ ब्रिट्साहन महिन না কেদার সমাখ্যান। ধর্মীশ মহিমা পক্ষি কথা অনুষ্ঠান । বিশ্বভ্নস্তা উপা খ্যান ছুৰ্গম অভাষ। তদপরে বীরেশ্বর লিঞ্চ আমিভার ।। বীরেশ মহিমা গঙ্গা তীর্থের মিলন। ভদস্তরে কান্সেশ্বর মহিমা বর্ণন।। বিশ্বকর্মেশ্বর জ্বা মাছাল্ম কথন। দক্ষমত **কথা সতীদেহ বিকক্ষ**েন্দ, দক্ষের সমুদ্ধৰ কৰে ভার পরে। তদসুপার্কতীশ্বর মহিমা বিস্তারে।।:গক্ষেশ দহিমা সর্গ্রদেশ্বর বর্ণন। সভীশ্বর অমৃতেশ আদির কথন। ব্যাস সুমত্তর বাবে শাশ বিমোল চন। ক্ষেত্র ভীর্থ সকল বিস্তার বিবরণ।। মূক্তি মঞ্চবের কথা কর্ডে ডার পরে। বিধেশ্ব জাবিভাব কহে কদস্তরে।। ধাত্রা পরিক্রম কথা ক্ষকু वर्गन। आधान भरमक करप्र कतिन कीर्सन। नर्से थश्यक्ति एन धरे प्रथा। হয়। অনুক্রমে আছে যাত্রাক্রমের নিশ্চর।। শুভ কহে শুন সভাবভীয় নক্ষন। ফুপা করি কহু যাত্র। বিধি নিরূপণ ॥ ব্যাস বলে শুন স্থভ যাত্রার: বিধান। যে ৰূপে করিবে লোক ধালা অনুষ্ঠান।। এখনে সবস্ক বচ পুঞ্চ-तिनी जान। त्मव लिङ् छर्लन डाफटन मिर्च मान ।। जामि रहालमी विष् দক্ষপাণি হরে। প্রণমিয়া চুণ্ডি বিনায়কে যাবে পরে।। ক্লানবাঙী কল-ক্ষাৰ্শ ননিকেশ গভি। ভারকেশ পুদা মহাকালেশ সংহতি॥ পুনঃ ৰঞ্জ-পাৰি পুৰা পঞ্চীৰ্থ এহি। প্ৰতিষদন যাত্ৰা করিবেক নিঃসম্পেহি। ছড:-প্রায়ে বিশেষর যাত্রা প্রদর্শন। করিবে অওরে যাত্রা দ্বিসপ্তায়তন। ক্রক প্রতিপদ আদি চতুদিশী সীমা। প্রতি চতুদিশী নিনে খাতার মহিমা।। সে সব ভীর্বের স্থান লিজের অর্চন। মৌনী ভৈয়া যাত্রা কিরিবেক সাধুজন 🛊 মংব্যোশরী স্থান প্রণয়েখন দর্শন। ত্রিপিউপে মহাদেবে করিবে পুঞ্চন্ত্র ক্ষুত্তিবাদেশার রুত্বেশার চন্দ্রেশার। কেদারেশ দর্যন করিবে তার পর। ধর্মে-त्यत्र वीरम्बन्न लारत् कारम्बत् । विधाकरण्यत्र लात् मनिकर्निषत् । अविमुर्त्छ-

थत शरत कुतिरव मुग्त । अमस्रदत्र विष्यत् कतिरव श्रृजन ॥ कागीवात्री करन (१) है बाजा जातभाक। याजा ना कतित्व विश्व मना मरसूरक ॥ जात जर्य जात्र তন যাত্রার বিধান। আর অন্য যাহার শুনহ অনুষ্ঠান।। শৈলেগর দর্শন ষরণা সান করি। সঙ্গদ্ধে মাজ্জিত হৈয়া সঙ্গদ্ধেশ হেরি।। স্থানিল তীর্থেতে क्षान चैनिन मर्भवा मन्त्रांकिनी आन वधादकश्वत शूक्रन । हित्रगागदर्ज न ভীর্থে করিবেক স্নান। হিরণাগত্তে শ পূজা কুরি অনুষ্ঠান। মণিকর্ণি স্নান জিশানেশ্বর দর্শন । গোতপ্রক কূপেতে স্নান, গোপ্রেক পুজন ।। র্যধ্বজ দর্শন কপিল ধারা যানা গুপন্ধান উপসায় লিক্স বরিবান। পঞ্চুত কদি স্থান কোর্ছ স্থানীর্চন। চতুঃসমুদ্রমজ্জন দেবতা দরশন। দেবের অর্থেতে বাপি জলম্পর্কর। শুক্রকুপ স্থান দেখে শুক্রেশ সাদরি।। দপ্তথাত স্লানংব্যায়েশুবুরর দর্শন। সৌনকেশ কুণ্ডে স্লান জমুকেশার্চন॥ আবশ্যক য়াত্রা এই করে অনুষ্ঠান। সর্ব পাপে মুক্ত সেই শুনহ বিধান । ক্লফ প্রতি-अम चानि हकूर्त्रम् हित्त। कटम याजा इत्तर हकूर्त्रम् आत्रकत्न।। এकामम আয়তনি যাত্রা কৃহি আরে। সাবধানে শুন সূত যাত্রার বিস্তার।। অগ্রিধক मर्मन अधिश्रक कुर्ण अन्। उनकू छेर्सनीयत श्रुका अकूर्यान ॥ नकूलीय আ্বাযাড়ীশ ভার ভূতেখন। ত্রিপুরাস্তকেশ লাঙ্গলীশ ভারপর॥ পরে মনঃ প্রকামেশ প্রতিকের আর। তিলপদ্মেশ্বর একাদশ হাত্রা সার।। গৌরী যাজা কহি স্থ**ত শুন দিয়া মন। শুক্লপক্ষ তৃতীয়াতে ক**রি <mark>আ</mark>রন্তন। মুখ निर्जालका (परी क्षांटश्रकु भक्कत। ब्लार्षवाशी सान ब्लार्ष। शांती [नम-র্চ্চন। সৌভাগা গৌরীর পুজা জ্ঞানবাপী স্থান। শৃঙ্গার কুণ্ডেতে স্থান করিয়া বিধান। শৃস্থার গৌরীর পূজা করি অনন্তরে। বিশাল গঙ্গাতে স্নান বিশাল।ক্ষী পরে ॥ ললিতা তীর্থের স্নান হলিতা দর্শন। ভবার্নী তীর্থেতে সান ভবানী পুরুন।। বিন্দু তীর্থে স্ক:ন আর মঙ্গলা অর্চ্চন। তদসু যাইবে মহালক্ষ্মীর সদন। গণেশের বরা প্রতি চতৃথীতে লয়। ত্রাক্ষণে মোদক লানে গণেশ প্রণয় ।। কাল চৈরবের যাত্রীমঙ্গল বাসরে । রবি যাত্র। বেক প্রতি রবিবারে।। রবিবারে যথীতে বিশেষ যাত্র। ইতার অন্যথা নাহি বলিল নিশ্চয় ।। রবি সপ্তমীতে রবি যাত্রা আবল্যক। চ্ণ্টীয়াত্রা আউ-মী নবমী নিৰূপক।। প্ৰতি সমুৎসরে অন্তর্গৃহ বাতা হয়। প্ৰতিশান করি शक्ष भारतम श्रूकन ।। निर्वति मश्राप्त विषयमत नम्स्य न । अवस्त्र मानान त्रिक्षीम महाद्वा । कत्रमायकत् वास्कीयत् ७० शहरः। शर्कारकम श्री

্র সঙ্গা কেশব অন্তরে।। ললিভা স্থানী পরে অরাসম্বেশ্বর । ধ্যাপ্রাথ পুঞ্জ कतर अनस्त ॥ शर्डाटसम मनम दर सरमाम भूमन । क्योरशम भूकिन व रुतिएक नात्।। देवनामाथ श्रे कि छट्व अपूर्वन नर्मम। द्रश्कर्वम श्रेकी शहित्कथत अर्फन ॥ अश्वित्कर्ण अकार्रभटक किकेन क्षेत्र । हिट्टा पत्र वीरत-শ্র যাবে ভার পর ॥ চিত্রগুরেশর চিত্রঘণ্টা মন্ত্রশ্রন। প্রপতীশ্র পরে: করিবে পুজন।। ভার ভূতেখন সমটি ভার পর। পিভামটেখন পরে সকল केश्वत । विद्यार्थित अधीश्वत माद्यश्वत शद्य । एति असे विद्यार्थि मानु গণেশবে।। দৈন। বিনায়ক জার ৰশিষ্ঠ সাক্ষাতে। বাসদেব মৃতিষ্ট্র चाट्डन यथाटा। तीमा विमानक बक्रटेंग्येन कर्यगटन जिनट्याम विमेन लाकी शृक्षा अवस्तरतः। धर्मायतं विश्ववीतं एकतीतं कर्मन। आमा विमात्रक बक्ताविका गमर्कन।। ठकुर्मा ख्रा श्रृका खाकिन प्रमेन । श्रूनः खकारमन क्रमारमध्य भूकम ॥ छ्छी छ्छीसत भरत जनामी महिता ए छी विमाहक পরে রাজরাজেখর। লাকলীশ নতুলীশ পরীলেশ পরে 🛊 পর**ভবোধর** পুজা প্রতি গৃহেশ্বরে।। লিফলক্ষেশ্বর মার্কণ্ডেশ্বর আর । পরে অপ্সরেশ পুলার প্রজার॥ গঙ্গেশ্বর সমর্চন ক্যানবাপী স্থান। মস্পাকেশ ভারকেশ পুজা অনুষ্ঠান।। মহাকালেশ্র দণ্ডপানি মহেশ্র। মেক্সের বীরভঞ্জেশ্র ছার পর।! অবিমুক্তেশ্বর পঞ্চ গণেশ পুজন। <mark>অনন্ত</mark>তে বিশেশব লিজে দরশন।। মৌনী পরিহরি পরে পঠিবে মন্ত্রদায়। মুক্তিম্প্রপেতে 🖛 বিশ্রাম করম। অন্তর্গু যাত্রার এইত পরিমাণ। সম্বংগরে আর্শ্যক ক্রি-द्युक विधान ॥ ध्वकाममी विधिद्य देवस्थव छीदर्व स्नाम । देवस्थवी मूर्किन भूजा যাত্র। অনুষ্ঠান।। কুলস্তম্ভ যাত্রাতে নবমী পঞ্চদশী। ভজিভাবে যাত্র। করিবেক ভ র্থবাসী।। সকল পর্কতে যাতা করিবে বিলেয়ে। যাত্রা विटन मन्त्रा ना कतिरवक शिवटन ॥ श्रीकिनिन क्रे योजा आवेगाक करत । উত্তর বাহিনী স্নান স্বার বিশ্বেশরে ।। যাত্রা হীন দিনে পিস্কুগণের প্রিস্নাস कालगर्भ मःगर्दा घट्य गर्सनाम।। मनिकृति सान जात विद्यय पर्मन। সভা সভা পুন: সভা তিসভা বচন।। নিভা বিশেষর পুকা আবশাক হয়। মণিকৰি স্নান নিত্য এই যাত্ৰাৰয়।। ব্যাস যলে ওত কাশীৰপ্তের অবলে। नतक ना नटल महा महाभाशी बरन ॥ गर्स छीर्थ साम कति स्वरं कन इंड्र काणीथ् अवर्गाट मा क्या निक्षा। गर्व मान गर्व यक्य कृति बाइद्वर् र्य कल (म कल थेश कतित अवेग।। महा जनगारक नाक हत रबह कता काभी थश्व खातरन रम कल खातिकल ।। छ्युर्सिन स्थापन मार्क खाँह बद्धन

वर कम्म बर्ग केल अपि अस्मिदिता अम्भिक मारम वथा िकृत्वि क्रम क्षा लिक कुछ क्षेत्र क्षारण निकारण कानीयथ अन जर्स रे परनत क्षा । नर्स १ में केल जिहे ता छरने नक्षा ॥ छनि अकाशान नक्षे करके। का नी प्रश्र धारण स्मितिक कि कारण है कि कारण स्मित्र के करण स्मित्र के कारण स्मित्र के क एत । शिक्षान सका विक्रामित भारमाम्ब । नगत मर्किक कि এक श्लोक जाता व्यवन कत्र ता राया राष्ट्र क्या ताल विकास की व रस्कृ जारक निरव দ্বান। তাহার ভূটিতে বিশেষর ছুই আৰু ইন্দীৰত পাঠ যথা করে कार्य । ११ ठेक करिएटर कान इंग्रिय हैं थात्र ॥ कामीथश्र निशीकति करत न पार्य में अधिक शूर्व कि एति सूचा अध्यक्ष ।। काशीचाल अधात यटक दल्लाक গাল। পদ পূর্ব পার্রপদ্ধি প্রিদাণ । তথে সন্ধ্র যত পঠে তন্ত্র যত হর পুত্র গড়াক ছিল মুক্তেই আহিছা। তার কুন সহস্র তাহার স্বর্গবাস।গুনি ल ब प्रमतात क्षेत्रकात्राम् ॥ अश्वनं उत्त श्रृव उत्ति क्रिकारत । वर्रक किक्य गर्व महिमानक लाडिया स्तरम्हण थाकि करत् चरश्रत स्रवन कामीनाग कन तरम क्रेक्ट्र चाकन ।। मर्क्क विकास कामीश्ररक खतरन । रमोजांगा वा-काम दान कानी यक्ष करन ।। विरम्भत कृषी सात अवरनरक मिछ। नकन नकत रेश्टकार्यकालकाछ।। य जन भूखक गृहर करात्र छोकन।। मछक अक्स छोत् इक्ट्स माधन।। खन्तानमः मटक त्रदक करेत्र। छनत्र। मछक्म थ ধাার সমাৰ ভাতে হয়। সীভানাথ বহু দাস ছুর্মা ছুর্মা করি। কাশী क्षापुर का स्थितित यन कति।।

শৃতি প্রতিষ্ঠ কলেশ্বর শুমৃতেখন সভীখন বাংসের কশীভাগ বিশেষর মৃতিশ্বত শ্রাবেশ কাশীক্ষেত্র সাহাত্যা নামোভাদল কর্ম:

क्षिक कामीबंध गण्या न।